वार्षिक रिपोर्ट
2016-17

सत्यमेव जयते

रक्षा मंत्रालय
भारत सरकार

भारतीय वायुसेना का सारंग टीम करतब दिखाते हुए

मुखपृष्ठ
दक्षिणावर्त

1) सियाचीन बैटल स्कूल में सेनाकर्मी का प्रशिक्षण प्रवेश
2) हल्का युद्धक विमान तेजस अपनी खूबियां दिखाते हुए
3) भारतीय सेना का क्वाड्रट मिसाइल रक्षा प्रणाली
4) आईसीजीएस समुद्र पावक गश्त लगाते हुए
5) भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा नेपाल में राहत अभियान
6) डीआरडीओ द्वारा विकसित मानवरहित हवाई यान रूस्तम-।।

वार्षिक रिपोर्ट
2016-17

सत्यमेव जयते

रक्षा मंत्रालय
भारत सरकार

विषय सूची

1.	सुरक्षा परिवेश	1
2.	रक्षा मंत्रालय का संगठन और कार्य	7
3.	भारतीय सेना	13
4.	भारतीय नौसेना	25
5.	भारतीय वायु सेना	35
6.	भारतीय तटरक्षक	43
7.	रक्षा उत्पादन	51
8.	रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन	73
9.	अंतर सेवा संगठन	93
10.	भर्ती एवं प्रशिक्षण	115
11.	पूर्व सैनिकों का कल्याण एवं पुनर्वास	137
12.	सशस्त्र सेनाओं तथा सिविल प्राधिकारियों के बीच सहयोग	149
13.	राष्ट्रीय कैडेट कोर	157
14.	विदेशों के साथ रक्षा सहयोग	167
15.	समारोह और अन्य कार्यकलाप	177
16.	सतर्कता यूनिटों के कार्य	189
17.	महिला कल्याण और सशक्तिकरण	197

परिशिष्ट

I	रक्षा मंत्रालय के विभागों के कार्यों की सूची	205
II	1 जनवरी, 2016 से आगे पदासीन मंत्री, सेनाध्यक्ष और सचिव	209
III	महत्वपूर्ण लेखा परीक्षा टिप्पणियों का सारांश-रक्षा मंत्रालय	211
IV	नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की रिपोर्टों/लोक लेखा समिति की रिपोर्टों में की गई टिप्पणियों के संबंध में 31.12.2016 के अनुसार की गई कार्रवाई संबंधी स्थिति	217

1

सुरक्षा परिवेश

अध्याय 1

सुरक्षा परिवेश

1.1 अन्तरराष्ट्रीय सुरक्षा परिदृश्य में विद्यमान अनिश्चितताओं और चुनौतियों के कारण भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा आवश्यकताओं और इसकी बढ़ती हुई क्षेत्रीय और वैश्विक भूमिका ने विदेशी मित्र राष्ट्रों के साथ रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में मजबूत और गतिशील भागीदारी को आवश्यक बना दिया है।

1.2 पिछला वर्ष कुछ ऐसे परिवर्तनों का साक्षी रहा है जिन्होंने वैश्विक और क्षेत्रीय सुरक्षा परिदृश्य पर सीधा प्रभाव डाला है। वर्तमान अन्तरराष्ट्रीय सुरक्षा परिवेश तीव्र गति से परिवर्तनशील और निरंतर अस्थिर बनी हुई है जहां बड़ी शक्तियों की नीतियों और गतिविधियों में अनिश्चितता है और एक बड़ा भू भाग सतत रूप से अस्थिर बना हुआ है। भारत उभरती हुई चुनौतियों का निराकरण करने और क्षेत्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय शांति और स्थिरता बढ़ाने के उद्देश्य से बड़ी संख्या में विदेशी राष्ट्रों के साथ मजबूत रक्षा भागीदारी का निर्माण करने हेतु निरंतर प्रयास करता रहा है।

1.3 निरंतर राष्ट्र-पारीय आतंकवाद महत्वपूर्ण सुरक्षा चुनौती बना रहता है जो अतिवादी आदर्शों और अलगाववादी हिंसा को बढ़ावा देने के लिए अक्सर छद्म युद्ध की तरह प्रयोग में आ रहे राज्य और गैर-राज्यीय कारकों के बीच की अन्योन्यक्रिया द्वारा और भी उद्वेलित होता रहता है। पश्चिम एशिया, अफगानिस्तान और अफ्रीका का एक बड़ा भू-भाग बड़ी अस्थिरता और हिंसा से जूझ रहा हे जो एशिया और यूरोप के एक बड़े क्षेत्र की स्थिरता के लिए खतरा बनकर उभर रहा है। समुद्री क्षेत्रों सहित राजक्षेत्रीय विवादों के फिर से उभरने के कारण राष्ट्रों के बीच तीखे मतभेद पैदा हुए हैं जो सैन्य गतिविधियों और अन्तरराष्ट्रीय व्यवहार के साथ-साथ अन्तरराष्ट्रीय विधि के मानकों के लिए भी चुनौतियों के रूप में सामने आ सकते हैं। महत्वपूर्ण पश्चिमी देशों सहित विश्व में राष्ट्रवाद का उदय और कई देशों में लोकतांत्रिक संरचना तथा प्रक्रियाओं की निरंतर चुनौतियां समाज के भीतर और उनके बीच वार्ता हेतु सुलह के प्रयासों के प्रभाव को सीमित कर सकते हैं। कमजोर आर्थिक वृद्धि के साथ-साथ उभरती हुई आकांक्षाओं की क्रांति और विविध प्रकार की पर्यावरणीय और सामाजिक तंगियां समाजिक संरचना पर अतिरिक्त बोझ डालती हैं। अक्सर राज्य इनसे निपटने में असमर्थ होते है। भारत के निकटतम पड़ोसी देश सहित राज्य की असफलता की ऐसी तत्काल और अक्सर गंभीर सुरक्षा प्रभावों के साथ वर्तमान परिदृश्य का अभिन्न अंग बन गई हैं।

1.4 अधिकतर पड़ोसी राज्यों की समग्र सुरक्षा और राजनीतिक पहलू के निरंतर अस्थिर बने रहने के कारण भारत के निकटतम दक्षिण एशियाई पड़ोसी राष्ट्रों की स्थिति कठिन बनी रहती है। सीमा पर आतंकवाद के विरुद्ध संगठित नजरिया अपनाए जाने की जरूरत को मिल रही पहचान के कारण दक्षेश शिखर सम्मेलन का रद्द हो जाना और आतंकवाद मुक्त वातावरण में बैठक आयोजित करने की मांग करना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम था। ब्रिक्स-बिम्सटेक (बीआरआईसीएस-बीआईएमएसटीईसी) आउटरिच समिट और बीबीआईएन (बांग्लादेश, भूटान, भारत बंगाल, नेपाल) जैसे क्षेत्रीय प्रयासों के जरिए बे ऑफ बंगाल इनिशिएटिव फॉर मल्टी-सेक्टोरल टेक्निकल एंड इकोनॉमिक कोऑपरेशन (बीआईएमएसटीईसी) को प्रोत्साहन मुहैया कराने के प्रयास आपसी सहयोग बढ़ाने और आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देने की वैकल्पिक संरचना

उपलब्ध करा सकते है। भारत की निरंतर आर्थिक वृद्धि दर बनाए रखने की दक्षिण एशिया के कुछ राज्यों की योग्यता और उनके सामाजिक विकास सूचकों में सुधार अन्य सकारात्मक आयाम हैं जो क्षेत्र में लंबे समय तक स्थिरता बने रहने के शुभ संकेत देते हैं।

1.5 अफगानिस्तान में अफगान राष्ट्रीय सुरक्षा बलों ने सुरक्षा का उत्तरदायित्व ले लिया है और वे समानीत अन्तरराष्ट्रीय युद्धक समर्थन के साथ विद्रोहियों से लड़ने की भयावह चुनौती का सामना कर रहे हैं। तालीबान ने इस समय वर्ष 2001 में अपने उदय के बाद से अब तक में सबसे अधिक भू-भाग को अपने कब्जे में ले लिया है और अपने अलग सैन्य एवं राजनीतिक उद्देश्यों को पूरा करने में लगा है। पाकिस्तान छद्म युद्धों के रूप में विद्रोही समूहों का उपयोग करके अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश में लगा है। भारत अफगान सुरक्षा बलों को प्रशिक्षण देने और क्षमता निर्माण में उनकी मदद करने में अहम भूमिका निभाता रहा है। भारत ने अफगानिस्तान में विकास के लिए अब तक 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर मुहैया कराया है और आगे क्षमता एवं सामर्थ्य निर्माण के लिए 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर और देने का वादा किया है।

1.6 जबकि बांग्लादेश में राजनीतिक स्थिति स्थिर बनी हुई है, अतिवादी आदर्शों के समर्थक बंग्लादेशी समाज के भीतर अपनी विचार-धारा के प्रचार-प्रसार का निरंतर प्रयास करते रहते हैं। ऐसे संगठनों की गतिविधियों ने पिछले वर्ष बंग्लादेश की सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौतियां पैदा की हैं। नेपाल में सितम्बर, 2015 में संविधान प्रख्यापित होने के पश्चात वहां मधेशी आंदोलन के रूप में लंबे समय तक उथल-पुथल चलता रहा। वहां की आंतरिक स्थिति में उसके बाद सुधार हुआ है परंतु अभी भी तनाव बरकरार है। म्यांमार लोकतंत्र की ओर बढ़ा है। वहां नई सरकार ने जातीय संघर्ष को समाप्त करने तथा शांति स्थापित करने की दिशा में प्रयास किए हैं। जबकि श्रीलंका में सुरक्षा की स्थिति स्थिर बनी हुई है तथापि नए कराधान व अन्य पहलों के जरिए राजस्व सृजित करने हेतु सरकार के प्रयासों के बावजूद आर्थिक परिदृश्य चुनौती भरा है।

1.7 पाकिस्तान में राजनीतिक स्थिति उसके समावेशी और संतुलित आर्थिक विकास के बड़े घाटे के कारण कमजोर बनी रहती है। पाकिस्तान ने अपने सैन्य बलों, विशेषकर न्यूक्लियर और मिसाइल क्षमताओं को निरंतर बढ़ाना जारी रखा है। देश क्षेत्रीय-जातिगत संघर्षों से विदीर्ण हो गया है और संघर्ष का क्षेत्र पाकिस्तान-अफगान सीमा पर के आदिवासी क्षेत्रों से लेकर भीतरी पृष्ठ प्रदेश तक फैला है। यद्यपि सेना ने देश की सुरक्षा की स्थिति को सुधारने के प्रयास किए हैं तथापि इन्होंने पड़ोसियों को निशाना बनाने वाले पाकिस्तानी जिहादियों और आतंकी संगठनों के विरुद्ध कार्रवाई करने से परहेज किया है। आतंकी समूह जेईएम के सरगना मसूद अजहर को अन्तरराष्ट्रीय आतंकवादी की सूची में शामिल करने के भारत सहित अन्तरराष्ट्रीय समुदाय के जारी प्रयासों के बावजूद ऐसे समूहों को सहयता दिया जाना जारी है। ऐसे संगठनों को जम्मू और कश्मीर एवं अन्य क्षेत्रों में नियंत्रण रेखा और सीमा रेखा पर भारी गोलीबारी के बीच कवर देते हुंए सालों भर भारत में घुसपैठ करने के लिए उकसाया जाता है। पाकिस्तान स्थित भूभाग से भारत के सैन्य बेसों पर हमला हुआ जिसका भारतीय सशस्त्र बलों ने मुंहतोड़ जवाब दिया।

1.8 हिंद महासागर में भारत की केंद्रीय उपमहाद्वीपीय स्थिति और भू-राजनीतिक परिस्थितियों ने इसे समुद्र में भरोसेमंद बना दिया है। भारत का तेल आयात 80 प्रतिशत तक बढ़ गया है जिसमें लगभग पूरी सामग्री की ढुलाई समुद्री मार्ग से ही होती है। भारत के कुल विदेशी व्यापार का लगभग 95% पानी के जहाजों द्वारा होता है। विश्व के समुद्री कार्गो का एक तिहाई और लगभग आधे कंटेनर हिंद महासागर से होकर गुजरते हैं। इसलिए वाणिज्य और व्यापार की सुरक्षा भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हरमूल और मलक्का जलडमरूमध्यों की अवस्थिति और बहुराष्ट्रीय समुद्री बलों की उपस्थिति ने हिंद महासागर क्षेत्र में परिदृश्य को गतिशील बना दिया है।

1.9 पिछले एक वर्ष में हिंद महासागरीय क्षेत्र में हुई गतिविधियों ने भारत की सुरक्षा चुनौतियों को और बढ़ा दिया है। इसका निराकरण करने के लिए भारत ने इस

क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखने के लिए सक्रिय कदम उठाए हैं। रक्षा और सुरक्षा सहयोग के लिए जारी पहलों सहित हिंद महासागर क्षेत्र के तटीय देशों के साथ भारत के संबंधों से एक स्थिर समुद्री वातावरण बनाने में मदद मिलेगी। हमनें कई भागीदारों के साथ 'व्हाइट शिपिंग' करार किए और अपने कुछ पड़ोसी देशों के साथ तटीय और अनन्य समुद्री क्षेत्र की निगरानी पर सहयोग संबंधी करार भी किए हैं। भारत ने समुद्री सुरक्षा के लिए कई व्यवस्थाओं में जैसे कि रिकैप (एशिया में समुद्री पोतों में होने वाली समुद्री डकैती और लूटपाट से लड़ने के लिए क्षेत्रीय सहयोग करार) और एसओएम (मलक्का और सिंगापुर राज्य) में सक्रिय रूप से भाग लिया है। हमने अपने पूर्व और पश्चिम दोनों ओर समुद्री डकैती से लड़ने में सक्रिया भूमिका अदा की है। वर्ष 2008 से अब तक भारतीय नौसेना ने अदन की खाड़ी में 50 से अधिक चौर्य-रोधी बचाव अभियान चलाए हैं जिससे इस क्षेत्र में वृहत्तर समुद्री सुरक्षा में सहायता मिली है। वर्ष 2004 की सुनामी राहत कार्य के अनुभव के आधार पर भारत ने यमन में बड़ी संख्या में सुरक्षित मानव निकासी से लेकर मालदीव को पेयजल की आपूर्ति करने और फिजी तथा श्रीलंका को हवाई मार्ग से राहत आपूर्ति मुहैया कराने जैसे कई एचएडीआर अभियान चलाए हैं। एआरएफ और एडीएमएम प्लस के तत्वावध ान में कार्यशालाओं, सम्मेलनों और टेबल-टॉप अभ्यासों सहित, अपनी क्षमता में वृद्धि करने के लिए हमने कई क्षेत्रीय गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भाग लिया है।

1.10 चीन ने पीपुल्स लिबरेशन आर्मी को पुनर्संगठित करने के लिए महत्वपूर्ण पहल किए हैं जिसका उद्देश्य पार्टी का मजबूत नियंत्रण और चल अभियानों, बहुआयामी रक्षा और सुरक्षा, अपतटीय समुद्री जल में सुरक्षा तथा खुले समुद्र में संरक्षण के साथ-साथ अपना हवाई क्षेत्र बनाने तथा पारंपरिक और नाभिकीय मिसाइलों के निर्माण में सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए एकजुटता से कार्य कर सके। पाक अधिकृत कश्मीर से होकर गुजरने वाला चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी) भारत की संप्रभुता के लिए चुनौती है। दक्षिण चीन सागर एक महत्वपूर्ण समुद्री जलमार्ग है और लगभग 5 ट्रिलियन अमेरिकी डालर का व्यापार इस क्षेत्र में इस समुद्री लेन के जरिए होता है। उपलब्ध सूचना के आधार पर, भारत के व्यापार का 55% से अधिक दक्षिण चीन सागर और मलक्का जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है। इस क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखना भारत के लिए अति महत्वपूर्ण है। भारत दक्षिण चीन सागर के तटवर्ती देशों के साथ तेल और गैस के क्षेत्रों में सहयोग सहित अन्य कई प्रकार की गतिविधियां करता है। दक्षिण चीन सागर में हाल की गतिविधियों से क्षेत्र की शांति और स्थिरता पर पड़ने वाले प्रभाव को ध्यान में रखते हुए भारत की स्थिति इस मुद्दे पर बिल्कुल दृढ़ है और इसे कई अवसरों पर बहुपक्षीय मंचों और द्वीपक्षीय रूप से बार-बार दोहराया गया है। भारत यूएनसीएलओएस में यथा परिभाषित अन्तरराष्ट्रीय विधि के सिद्धांतोंके आधार पर इस क्षेत्र में नौवाहन और उड़ान भरने की स्वतंत्रता और निर्बाध व्यापार एवं वाणिज्य का समर्थन करता है। भारत का यह विश्वास है कि राष्ट्र बिना किसी बल प्रयोग और धमकियों के शांतिपूर्ण प्रयासों के जरिए विवादों का समाधान कर सकता है और उन्हें शांति और स्थिरता को प्रभावित करने वाले विवादों को जटिल बनाने अथवा बढ़ावा देने वाली गतिविधियों में आत्मसंयम बरतना चाहिए। यूएनसीएलओएस का एक पक्षकार राष्ट्र होने के नाते सभी पक्षकारों को यूएनसीएलओएस, जो समुद्र और महासागरों में अन्तरराष्ट्रीय कानून व्यवस्था स्थापित करता है, के प्रति पूर्ण सम्मान रखने की अपील करता है।

1.11 रक्षा के क्षेत्र में अधिक से अधिक व्यय की बढ़ती हुई प्रवृति के बावजूद दक्षिण-पूर्व एशिया में व्यापक ट्रेंड सतत आर्थिक वृद्धि के साथ-साथ एक सुस्थित तस्वीर पेश करते हैं। तथापि, यह क्षेत्र सामरिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है क्योंकि प्रशांत महासागर के दोनों ओर के राष्ट्रों के नीतिगत परिवर्तन से नए आर्थिक और सुरक्षा संबंधी गठबंधन बन सकते हैं। भारत ने विभिन्न स्तरों पर सामरिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सैन्य क्रियाकलापों में 'एक्ट ईस्ट' नीति को सतत रूप से केन्द्र में रखा है जिसके कारण क्षेत्रीय सुरक्षा में एक जवाबदेह पणधारी के रूप में भारत की भूमिका की पुष्टि हुई है। भारत ने मार्च, 2016 में आसियान रक्षा मंत्रियों की मीटिंग प्लस फार्मेट के तहत एक बहुराष्ट्रीय

शांति निर्माण और मानवीय माइन एक्शन फील्ड प्रशिक्षण अभ्यास की मेजबानी की जिसमें 18 देशों ने भाग लिया।

1.12 कोरियाई उपमहाद्वीप में स्थिति गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है। हमने डीपीआरके से आहवान किया है कि इस क्षेत्र में और आगे की शांति और स्थिरता पर विपरीत प्रभाव डालने वाले कार्यों से बचें। भारत नाभिकीय और मिसाइल प्रौद्योगिकियों के ऐसे प्रसार से हमेशा चिंतित रहता है जिससे क्षेत्रीय सुरक्षा परिवेश पर विपरीत प्रभाव डाला है।

1.13 मध्य एशिया में भारत का हित उसकी भू-सामरिक अवस्थिति, पर्याप्त ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता और प्राचीन ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों पर आधारित है। यह क्षेत्र अतिवादी आतंकी समूहों का हमेशा से निशाना रहा है जो इस क्षेत्र में धर्मनिरपेक्ष ताकतों को कमजोर करना चाहते हैं। भारत, ईरान और रूस मिलकर जिस अन्तरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण ट्रेड कोरिडोर का निर्माण करने में लगे हैं उससे इस क्षेत्र में कई प्रकार के आर्थिक और व्यापारिक संपर्क बनेंगे। भारत भी टीएपीआई पाइपलाइन के साथ साथ संपर्क को बनाए रखने हेतु डिजिटल लिंकों जैसे अन्य पहलों में भागीदार रहा है।

1.14 पश्चिम एशिया की सुरक्षा स्थिति सतत रूप से तेल की घटती कीमतों के कारण अवनत आर्थिक परिदृश्य के संदर्भ में अपना प्रभाव जमाने के लिए अन्तरराज्यीय प्रतिस्पर्धाओं के साथ-साथ बढ़ती हुई सांप्रदायिक वैमनस्यताओं के कारण अस्थिर बना रहता है। इराक, सीरिया, यमन और लीबिया जैसे देशों की आंतरिक स्थिति अस्थिर और हिंसक बनी रही यद्यपि, स्थिति धीरे-धीरे विद्रोही और आतंकी समूहों के विरोध में बननी शुरू हो गई है, सत्ता में आई शक्ति फिर भी सुभेद्य बने हुए है। इस क्षेत्र में भारत का महत्वपूर्ण हित निहित है जो हमारी ऊर्जा जरूरतों के 66 प्रतिशत को पूरा करने के साथ-साथ आठ मिलियन भारतीयों का निवास स्थान भी है। आर्थिक नजरिए के अतिरिक्त यह क्षेत्र आईएसआईएस जैसे रूढ़ीवादी आतंकी संगठनों के पनपने के कारण भी महत्वपूर्ण बने हुए हैं जो भारत सहित पूरी दुनिया में अपना दबदबा कायम करना चाहते हैं।

आंतरिक सुरक्षा की स्थिति

1.15 सरकार की सतत और क्रमिक प्रयास के कारण देश की सुरक्षा स्थिति मजबूती से नियंत्रण में है। भारत में आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियों को मोटे तौर पर चार खतरों में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है अर्थात जम्मू और कश्मीर में सीमापार से आतंकवाद, पूर्वोतर में युद्ध संघर्ष, कुछ राज्यों में व्याप्त वामपंथी चरमपंथ और आंतरिक इलाकों में आंतकवाद। इनमें से, आंतरिक इलाकों में आतंकी हमलो तथा वामपंथी अतिवाद द्वारा बढ़ावा दी गई हिंसा में भारी कमी आई है।

1.16 जम्मू और कश्मीर की सुरक्षा स्थिति वर्ष के पूर्वार्द्ध में स्थिर बनी रही। जुलाई, 2016 में आतंकी सरगना के मारे जाने के पश्चात आतंकी तंजीमों और अलगाववादी विरोध प्रदर्शन करने और आम जीवन की शांति भंग करने में लग गए। राज्य सरकार और सुरक्षा बलों के सतत प्रयास के कारण, जम्मू और कश्मीर में स्थिति वर्तमान में तनावपूर्ण परंतु नियंत्रण में है।

1.17 पूर्वोत्तर राज्यों में सुरक्षा स्थिति में वर्ष 2015 में काफी सुधार हुआ और यह समग्र रूप से वर्ष 2016 में भी बरकरार रहा। वर्ष 2015 में विद्रोहिता संबंधी हिंसा की घटनाओं में वर्ष 2014 की तुलना में 30 प्रतिशत तक कमी आई। इस वर्ष भी इस क्षेत्र में सुरक्षा की स्थिति में काफी सुधार हुआ है क्योंकि पहले दस महीनों में विद्रोहिता संबंधी घटनाओं की संख्या 502 से घटकर 429 तक आ गई है। सुरक्षा बलों के शहीद होने की संख्या भी इस वर्ष 15.11.2016 तक 40 से घटकर 9 तक आ गई है। जबकि सिक्किम, मिजोरम और त्रिपुरा राज्यों में विद्रोहिता संबंधी हिंसा की कोई घटना नहीं हुई है तो असम, अरूणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर और मेघालय में इनकी संख्या में काफी कमी आई है। बातचीत/वार्ताओं की नीति के अनुसरण में कुछ संगठन सरकार के साथ वार्ता करने आगे आए हैं और ससपेंशन

ऑफ ऑपरेशन (एसओओ) जैसे करार किए हैं और कुछ संगठनों ने व्यवस्था ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं तथा कुछ समूहों ने स्वयं को विघटित कर दिया। उन संगठनों, जो हिंसक घटनाओं में लिप्त हैं, के विरूद्ध लगातार विद्रोहिता - रोधी अभियान चलाए जा रहे हैं।

1.18 वर्ष 2016 में एलडब्ल्यूई परिदृश्य में उल्लेखनीय सुधार हुआ। 10 राज्यों के लगभग 106 जिले एलडब्ल्यूई से प्रभावित थे जो वर्ष 2016 में सिमटकर 68 जिलों तक रह गए जिसमें से दो राज्यों के केवल 24 जिलों में ही 80 प्रतिशत हिंसा की घटना की रिपोर्ट मिली है। एलडब्ल्यूई की समस्या से निपटने के लिए भारत सरकार के पास बहु-दीर्घावधिक रणनीति है जिसमें सुरक्षा के उपाय, विकास के उपाय, स्थानीय समुदायों के अधिकार और हकदारी आदि सुनिश्चित करना शामिल हैं। एलडब्ल्यूई प्रभावित राज्यों में अधिक संख्या में सुरक्षा बलों की उपस्थिति, बन्दी बनाए जाने, आत्म समर्पण करने और एलडब्ल्यूई कर्मियों के चले जाने से काडरों/ संवर्गों की कमी, क्षेत्र में विकास योजनाओं की बेहतर मानीटरिंग और एलडब्ल्यूई काडरों में विद्रोह के कारण थकान होने से भारत में एलडब्ल्यूई की स्थिति में काफी सुधार हुआ है।

2

रक्षा मंत्रालय का संगठन और कार्य

अध्याय 2

रक्षा मंत्रालय का संगठन और कार्य

संगठनात्मक ढांचा और कार्य

2.1 स्वतंत्रता के बाद रक्षा मंत्रालय का गठन एक कैबिनेट मंत्री के अधीन किया गया था और प्रत्येक सेना को उसके अपने कमांडर-इन-चीफ के अधीन रखा गया था। 1955 में, कमांडर-इन-चीफ का सेनाध्यक्ष, नौसेनाध्यक्ष तथा वायुसेनाध्यक्ष के रूप में पुनः नामकरण किया गया था। नवंबर, 1962 में रक्षा उपस्करों के अनुसंधान, विकास तथा उत्पादन संबंधी कार्य के लिए रक्षा उत्पादन विभाग का गठन किया गया था। नवंबर, 1965 में, रक्षा आवश्यकताओं के आयात प्रतिस्थापन के लिए रक्षा पूर्ति विभाग बनाया गया। बाद में, इन दोनों विभागों को मिलाकर रक्षा उत्पादन एवं पूर्ति विभाग बना दिया गया था। वर्ष 2004 में रक्षा उत्पादन एवं पूर्ति विभाग का नाम बदलकर रक्षा उत्पादन विभाग रख दिया गया। वर्ष 1980 में रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग बनाया गया। वर्ष 2004 में भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग बनाया गया।

2.2 रक्षा सचिव, रक्षा विभाग के प्रमुख के रूप में कार्य करते हैं और इसके अलावा, मंत्रालय के चारों विभागों के कार्यों में समन्वय बनाए रखने के लिए भी उत्तरदायी हैं।

मंत्रालय और इसके विभाग

2.3 इस मंत्रालय का मुख्य कार्य रक्षा और सुरक्षा संबंधी सभी मामलों में नीति-निदेश बनाना और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए सेना मुख्यालयों, अंतर-सेवा संगठनों, उत्पादन स्थापनाओं और अनुसंधान तथा विकास संगठनों को भेजना है। मंत्रालय को यह भी सुनिश्चित करना होता है कि सरकार के नीति-निर्देशों को प्रभावी रूप से कार्यान्वित किया जाए और अनुमोदित कार्यक्रमों का निष्पादन आबंटित संसाधनों के अंतर्गत किया जाए।

2.4 इन विभागों के प्रमुख कार्य इस प्रकार है:-

(i) रक्षा विभाग, एकीकृत रक्षा स्टाफ, तीनों सेनाओं और विभिन्न अंतर सेवा संगठनों से संबंधित कार्य करता है। यह विभाग रक्षा बजट, स्थापना मामलों, रक्षा नीति, संसदीय मामलों, अन्य देशों के साथ रक्षा सहयोग और रक्षा संबंधी सभी कार्यकलापों के समन्वय संबंधी कार्य के लिए भी उत्तरदायी है।

(ii) रक्षा उत्पादन विभाग के प्रमुख एक सचिव हैं और यह विभाग रक्षा उत्पादन कार्यों, आयात किए जाने वाले सामान, उपस्करों और कलपुर्जों के देशीकरण, आयुध निर्माणी बोर्ड और रक्षा क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रमों की विभागीय उत्पादन इकाइयों के बारे में योजना तैयार करने तथा उन पर नियंत्रण रखने से संबंधित कार्य करता है।

(iii) रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के प्रमुख एक सचिव हैं। इस विभाग का कार्य सैन्य उपस्करों और संभारतंत्र से संबंधित वैज्ञानिक पहलुओं पर सरकार को सलाह देना और तीनों

सेनाओं द्वारा अपेक्षित साज-समान के अनुसंधान, डिजाइन और विकास कार्यों के लिए योजनाएं तैयार करना है।

(iv) भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग के प्रमुख एक सचिव हैं और यह विभाग भूतपूर्व सैनिकों के पुनर्वास, कल्याण तथा पेंशन संबंधी सभी मामलों को देखता है।

2.5 रक्षा मंत्रालय के विभिन्न विभागों और वित्त प्रभाग द्वारा निपटाई जाने वाली मदों की सूची इस रिपोर्ट के **परिशिष्ट-I** में दी गई है।

2.6 इस रिपोर्ट की अवधि के दौरान रक्षा मंत्रालय के मंत्रियों, सेनाध्यक्षों और मंत्रालय के विभागों के सचिवों और सचिव (रक्षा वित्त)/वित्त सलाहकार (रक्षा सेवाएं) के पदों पर कार्यरत अधिकारियों से संबंधित सूचना इस रिपोर्ट के **परिशिष्ट-II** में दी गई है।

मुख्यालय एकीकृत रक्षा स्टाफ

2.7 कारगिल समीक्षा समिति पर मंत्रिसमूह की सिफारिशों के आधार पर मुख्यालय एकीकृत रक्षा स्टाफ 1 अक्तूबर, 2001 को अस्तित्व में आया। सेनाध्यक्षों की समिति के अध्यक्ष के समग्र नियंत्रण और कमान में यह संगठन सेनाओं के बीच सम्बद्धता तथा सहक्रियाशीलता के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में कार्यरत है। इसके बनने से लेकर अब तक, इस मुख्यालय ने संयुक्त और एकीकृत योजना, आसूचना का समन्वय और रक्षा आपदा प्रबंधन समूहों के जरिए मानवीय सहयता और आपदा राहत तथा अधिप्राप्तियों को प्राथमिकता के आधार पर वर्गीकृत करने/सरल बनाने में कई उपलब्धियां हासिल की हैं। वर्ष के दौरान मुख्यालय एकीकृत रक्षा स्टाफ की प्रमुख उपलब्धियों के बारे में नीचे दिए गए पैराओं में उल्लेख है।

2.8 **सेनाध्यक्षों की समिति के अध्यक्ष का बदल जाना:** वायुसेनाध्यक्ष, जो सेनाध्यक्षों की समिति के पूर्व अध्यक्ष थे, के अधिवर्षिता पर सेवा से निवृत्त होने के परिणामस्वरूप नौसेना अध्यक्ष ने दिनांक 31 दिसम्बर, 2016 (पूर्वाह्न) को सेनाध्यक्षों की समिति के अध्यक्ष का भार संभाला। दिनांक 29 दिसम्बर, 2016 को इस प्रयोजन के लिए बेटन सौंपे जाने का समारोह आयोजित किया गया जिसमें सेना मुख्यालयों और एकीकृत रक्षा स्टाफ मुख्यालय के कई वरिष्ठ अधिकारियों ने शिरकत की।

2.9 **यूनिफाइड कमांडर्स कन्फ्रेंस:** एकीकृत मुख्यालय रक्षा स्टाफ ने दिनांक 23-24 जून, 2016 को नई दिल्ली में यूनिफाइड कमांडर्स कन्फ्रेंस (यूसीसी) का आयोजन किया। इस सम्मेलन को माननीय रक्षा मंत्री ने संबोधित किया और इसमें तीनों सेनाओं से संबंधित मुद्दे देखने वाले वरिष्ठ सैन्य एवं सिविल अधिकारियों ने भाग लिया।

2.10 **समन्वित गश्त (कोरपैट):** अंडमान एवं निकोबार कमान के विमान एवं पोतों ने इंडोनेशिया, थाईलैंड और म्यांमार के नौसैनिकों के साथ समन्वित

गश्त 'कोरपेट' में भाग लिया। इसका लक्ष्य नौसेनाओं के बीच आपसी समझ और अन्तर संक्रियात्मकता को बढ़ावा देना और संयुक्त गश्त लगाकर अवैध गतिविधियों में संलिप्त यानों को पकड़ना है।

2.11 **रक्षा संचार नेटवर्क (डीसीएन):** डीसीएन परियोजना को एक सामरिक, बिल्कुल अलग और तीनों सेनाओं के लिए बहुत ही सुरक्षित संचार नेटवर्क के रूप में शामिल किया गया है जो राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी कमान, नियंत्रण और निर्णय लेने की प्रक्रिया को सुकर बनाएगी। इसका उद्घाटन माननीय रक्षा मंत्री द्वारा 30 जून, 2016 को किया गया।

2.12 **मानवीय सहायता और आपदा राहत (एचएडीआर):** एकीकृत मुख्यालय रक्षा स्टाफ ने तीनों सेनाओं और अन्य पणधारियों जैसे एनडीआरएफ और स्थानीय सिविल कर्मचारियों को शामिल करते हुए मानवीय सहायता और आपदा राहत के तीन महत्वपूर्ण अभ्यास संचालित किए। ये तीन अभ्यास और सिमुलेटेड आपदा स्थिति में 28-30 जून, 2016 तक गुवाहाटी में चलाया गया। **जल राहत** (शहरी क्षेत्र में बाढ़) अभ्यास, 30 अगस्त से 1 सितम्बर, 2016 तक विशाखापत्तनम में संचालित अभ्यास **प्रकम्पन** (तटीय क्षेत्रों में महा चक्रवात) और 14-16 सितम्बर, 2016 तक भुज में संचालित अभ्यास **सहायता** (भयंकर भूकंप) शामिल हैं।

2.13 **भारतीय राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय (इंदू):** राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी मुद्दों को देखने के लिए एक अग्रणी भारतीय विश्वविद्यालय के रूप में इंदू की स्थापना के कार्य में अच्छी प्रगति हुई है। इंदू विधेयक के मसौदे पर आम जनता के परामर्श ऑनलाइन प्राप्त हुए हैं और चिन्हित निर्माण स्थल पर बाउंड्री पिलरों का निर्माण कार्य प्रारंभ हो गया है। विधेयक के मसौदे को संसदीय सुधार के लिए 2017 में प्रस्तुत किए जाने की संभावना है।

2.14 **राष्ट्रीय युद्ध स्मारक और संग्रहालय:** राष्ट्रीय युद्ध स्मारक और संग्रहालय दोनों के लिए एक विश्व स्तरीय डिजाइन प्रतियोगिता आयोजित की गई है। चयनित डिजाइनों को अंतिम रूप दिए जाने के पश्चात राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के लिए इंडिया गेट कम्प्लेक्स में और राष्ट्रीय युद्ध संग्रहालय के लिए प्रिंसेस पार्क कम्प्लेक्स में निष्पादन चरण पूरा होगा।

सशस्त्र बल अधिकरण

2.15 सरकार ने संघ की सशस्त्र सेनाओं के सदस्यों को शीघ्रता से न्याय देने की व्यवस्था करने के लिए तीनों सेनाओं (सेना, नौसेना और वायुसेना) के सदस्यों के सेवा संबंधी मामलों से संबंधित शिकायतों और विवादों तथा कोर्ट मार्शल के निर्णयों से उत्पन्न अपीलों के अधिनिर्णय के लिए एक सशस्त्र सेना अधिकरण की स्थापना की है।

2.16 वर्तमान में दिल्ली स्थित प्रधान पीठ सहित चेन्नै, जयपुर, लखनऊ, चंडीगढ़, कोलकाता, कोच्चि, गुवाहाटी, मुंबई, जबलपुर और श्रीनगर स्थित क्षेत्रीय पीठें कार्यरत हैं।

सीमा सड़क संगठन

2.17 सीमा सड़क संगठन एक सड़क निर्माण संगठन

है जो सेना की अंगीभूत इकाई और सहयोगी है। इसने महज दो परियोजनाओं के साथ सन 1960 में कार्य करना प्रारंभ किया। अब यह 18 परियोजनाओं वाला संगठन बन गया हे। बीआरओ की 9 परियोजनाएं पश्चिम भारत (4 जम्मू और कश्मीर में, 2 हिमाचल प्रदेश में, 2 उत्तराखंड में और 1 राजस्थान में) में स्थित हैं, 8 परियोनाएं पूर्वी भारत (1 सिक्किम में, 4 अरुणाचल प्रदेश में, 1 नागालैंड, 1 मिजोरम और 1 त्रिपुरा में) में और 1 भूटान में स्थित है।

2.18 बीआरओ को रक्षा आवश्यकताओं के मद्देनजर मुख्यत: सीमा क्षेत्रों में सड़क निर्माण का कार्य सौंपा जाता है। इन सड़कों का विकास और रखरखाव विभिन्न शीर्षों के तहत मुहैया कराई गई निधियों के जरिए किया जाता है।

2.19 मंत्रिमंडल सचिवालय ने सीमा सड़क विकास मंडल और सीमा सड़क संगठन से संबंधित सभी मामलों को रक्षा मंत्रालय के अधीन लाने के लिए दिनांक 9 जनवरी, 2015 की अधिसूचना के तहत भारत सरकार कार्य आबंटन नियमावली, 1961 को संशोधित किया है। बीआरओ द्वारा विकसित अवसंरचना का कार्यान्वयन और उसकी मानीटरिंग रक्षा राज्य मंत्री की अध्यक्षता में गठित सीमा सड़क विकास बोर्ड द्वारा की जा रही है।

2.20 सीमा सड़क संगठन ने कठिन, पृथक और दुर्गम भूभाग पर प्रतिकूल जलवायु वाली परिस्थितियों में सड़क निर्माण करने और उसका रखरखाव करने वाली एकमात्र एजेंसी के रूप में ख्याति अर्जित की है। बीआरओ ने देश के इन क्षेत्रों में लगभग 51,000 किमी सड़कों, 45263 मी. लंबाई वाले 498 महत्वपूर्ण स्थायी पुलों और 19 एयरफील्डों का निर्माण किया है। वर्तमान में बीआरओ 852 सड़को (39049 किमी.) पर कार्य कर रहा है जिनमें नए निर्माण, सिंगल लेन से डबल लेन में बदलने का कार्य (530 सड़कों पर 22803 किमी. तक) और लगभग 16247 किमी. तक 322 सड़कों का रखरखाव शामिल हैं। इन 852 सड़कों में 61 भारत-चीन सीमा सड़क भी शामिल हैं। 22 भारत-चीन सीमा सड़कों का निर्माण कार्य पूरा कर लिया गया है और 26 अन्य सड़कों से उसे प्रारंभिक रूप से जोड़ा गया है। बीआरओ पांच एयरफील्डों का भी रखरखाव कर रहा है। इसके अतिरिक्त, दो सुरंगों अर्थात हिमाचल प्रदेश में रोहतांग सुरंग (8.8 किमी.) और सिक्किम में थेंग (0.578 किमी.) निर्माणाधीन है।

रक्षा (वित्त)

2.21 रक्षा मंत्रालय में वित्त प्रभाग, वित्तीय प्रभाव डालने वाले सभी मामलों का कार्य देखता है। इस प्रभाग के प्रमुख सचिव (रक्षा वित्त)/ वित्त सलाहकार (रक्षा सेवाएं) हैं और यह रक्षा मंत्रालय के साथ पूर्णत: एकीकृत है। यह एक सलाहकार की भूमिका भी निभाता है।

2.22 शीघ्रता से निर्णय लेने के लिए, रक्षा मंत्रालय को वर्धित वित्तीय शक्तियां प्राप्त हैं। इन शक्तियों का प्रयोग वित्त प्रभाग की सहमति से किया जाता है। रक्षा अधिप्राप्ति मामलों के संबंध में इन शक्तियों के कार्यान्वयन की पारदर्शिता और निर्धारित नीति संबंधी मार्ग-निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से रक्षा अधिप्राप्ति प्रक्रिया तथा रक्षा अधिप्राप्ति मैनुअल को समय-समय पर अद्यतन किया जाता है।

2.23 वित्त प्रभाग रक्षा सेवा प्राक्कलनों, सिविल प्राक्कलनों तथ रक्षा पेंशनों से संबंधित प्राक्कलनों को तैयार करता है तथा उसकी मानीटरी करता है। रक्षा सेवा प्राक्कलनों से संबंधित वर्ष 2014-15 और वर्ष 2015-16 के वास्तविक व्यय और 2016-17 के लिए संशोधित प्राक्कलन तथा वर्ष 2017-18 के लिए बजट अनुमान के ब्यौरे तालिका संख्या 2.1 में दिए गए हैं तथा इससे संगत ग्राफ/चार्ट इस अध्याय के अंत में दिया गया है।

2.24 रक्षा मंत्रालय के कार्यकरण पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की एक अद्यतन रिपोर्ट का सारांश इस वार्षिक रिपोर्ट के **परिशिष्ट-III** पर दिया गया है।

2.25 नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की रिपोर्टों/ लोक

लेखा समिति की रिपोर्टों में की गई टिप्पणियों पर की गई कार्रवाई संबंधी नोट की दिनांक 31.12.2016 के अनुसार स्थिति इस वार्षिक रिपोर्ट के **परिशिष्ट-IV** पर दी गई है।

सारणी 2.1

रक्षा व्यय का सेना/विभाग-वार ब्यौरा

(करोड़ रु. में)

सेना/विभाग	2014-15 वास्तविक (राजस्व+पूंजी)	2015-16 वास्तविक (राजस्व+पूंजी)	संशोधित प्राक्कलन 2016-17 (राजस्व+पूंजी)	बजट प्राक्कलन 2017-18 (राजस्व+पूंजी)
सेना	114559.95	114329.37	131283.69	145167.22
नौसेना	35948.53	34866.73	37410.27	37841.98
वायुसेना	52537.48	52219.27	52057.38	58372.50
आयुध निर्माणी महानिदेशालय	1577.05	1101.61	2147.73	1987.95
गुणता आश्वासन महानिदेशालय	813.19	867.08	991.97	1073.51
अनुसंधान तथा विकास	13257.98	13289.27	13154.54	14818.74
योग	**218694.18**	**216673.33**	**237045.58**	**259161.90**

डी जी ओ एफ - आयुध निर्माणी महानिदेशालय
डी जी क्यू ए - गुणता आश्वासन महानिदेशालय
आर एंड डी - अनुसंधान तथा विकास

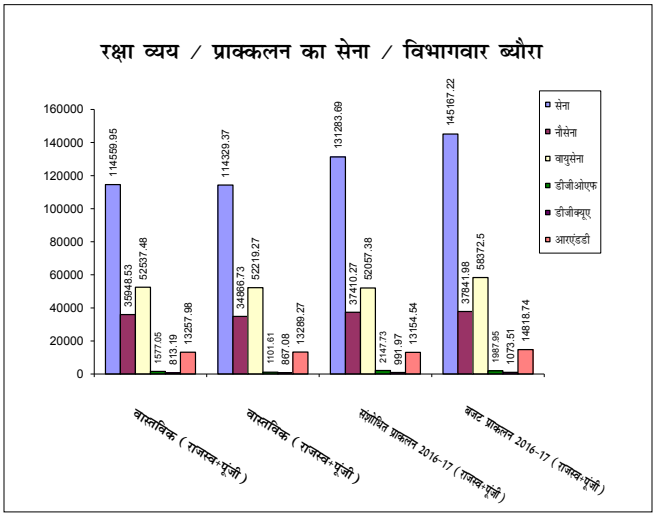

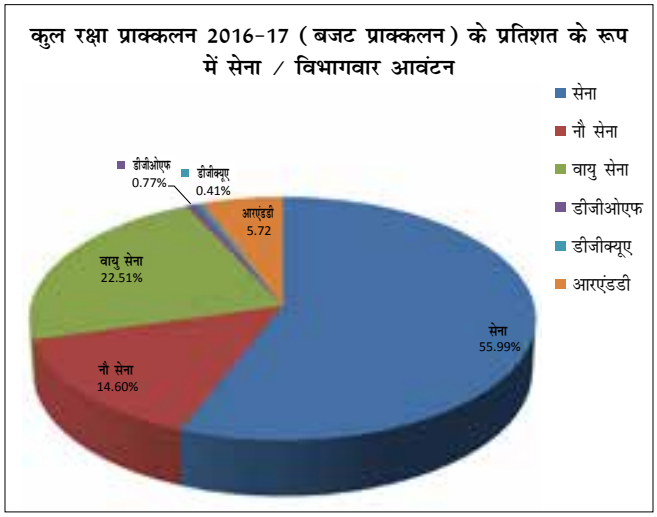

3

भारतीय सेना

अध्याय 3

भारतीय सेना

3.1 बदलती हुई वैश्विक भू-राजनीतिक परिस्थितियों के कारण राष्ट्र के समक्ष सुरक्षा संबंधी अनेक चुनौतियां हैं। प्रत्यक्ष दिखाई दे रही सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए भारतीय सेना अपनी संक्रियात्मक तैयारी स्थिति की लगातार समीक्षा करते हुए युद्ध के सभी मोर्चो पर आंतरिक एंव बाहरी खतरों से देश की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके साथ ही, विपत्ति/प्राकृतिक आपदा के समय में, आपदा-ग्रस्त लोगों को राहत एंव सहायता प्रदान करने में भारतीय सेना सबसे आगे रही है।

जम्मू एंव कश्मीर

3.2 जम्मू एंव कश्मीर में सुरक्षा स्थिति एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है। पाकिस्तान द्वारा लगातार युद्ध विराम समझौते का उल्लंघन करने के कारण नियंत्रण रेखा पर सेना की कार्य प्रणाली में-बदलाव आया है। इन उल्लंघनो का विविध स्तरों पर माकूल जवाब दिया गया है। अन्य सुरक्षा बलों के साथ मिलकर सेना द्वारा भीतरी प्रदेशों मे चलाए गए अनवरत आंतकवादरोधी ऑपरेशनों ने भारत के खिलाफ छदम युद्ध उकसाने की पाकिस्तान की योजनाओं को विफल कर दिया है। आतंकवादियों ने आंदोलनकारी भीड़ के साथ मिलकर सुरक्षा बलों को निशाना बनाने के लिए प्रतिकूल आंतरिक सुरक्षा परिस्थितियों का इस्तेमाल करने की कोशिश की है। प्राप्त रिपोर्ट से पता चलता है। कि प्रत्यक्ष रूप से शांति होने के बावजूद वहां की स्थानीय जनता में भारी अंसतोष है, और (पाकिस्तान, अलगाववादियों और आंतकवादियों के) सामूहिक गठजोड़ द्वारा इसका फायदा उठाया जा सकता है।

3.3 **युद्ध विराम उल्लंघन (सी एफ वी):** वर्ष 2016 के दौरान पाकिस्तान द्वारा 228 युद्ध विराम उल्लंघन किए गए जबकि वर्ष 2015 में युद्ध विराम के 152 मामले सामने आए थे। युद्ध विराम उल्लंघनों के खिलाफ विविध स्तरों पर जवाबी कार्रवाई की गई।

3.4 **घुसपैठ की विफल की गई कोशिशें:** वर्ष 2016 के दौरान (22 नवंबर, 2016 तक), घुसपैठ की 27 कोशिशों को विफल किया गया जिनमें 37 आंतकवादी मारे गए। 2015 में, सेना ने घुसपैठ की 18 कोशिशों को नाकाम किया था, जिनमें 30 आतंकवादी मारे गए थे।

भीतरी क्षेत्र में स्थिति

3.5 **आतंवाद रोधी ऑपरेशन:** वर्ष 2016 के दौरान विश्वसनीय आसूचना नेटवर्क के आधार पर, लोगों की सुरक्षा का ध्यान रखते हुए चलाए गए अनवरत एंव सर्जिकल आपरेशनों की बदौलत भीतरी क्षेत्र में 102 आतंकवादियों को मार गिराया गया और भारी मात्रा में युद्ध सामग्री जब्त की गई। वर्ष 2015 में, सेना के जवानों ने जम्मू एवं कश्मीर के भीतरी क्षेत्र में 67 आतंकवादियों का खात्मा किया था। इस वर्ष घुसपैठ रोधी आतंकवाद रोधी ऑपरेशन करते हुए जम्मू एंव कश्मीर में सेना के 63 जवान शहीद हुए हैं।

3.6 **आतंकी घटनांए:** वर्ष 2016 के दौरान, 92 आतंकी घटनाएं हुई जिनमें 7 आतंकवादी मारे गए। वर्ष 2015 में, भीतरी क्षेत्र में 48 आंतकी घटनांए हुई थीं।

उत्तर-पूर्व

3.7 पूरे वर्ष जहां-तहां हिंसा की घटनाओं के साथ, उत्तर-पूर्वी राज्यों में सुरक्षा की स्थिति जटिल और अस्थिर रही है। सुरक्षा बलों द्वारा चलाए गए आसूचना आधारित ऑपरेशनों और उनकी सक्रिय कार्रवाई के परिणाम

स्वरूप उत्तर-पूर्व के विद्रोह संभावित क्षेत्रों में हिंसा की घटनाओं में कमी आई है। विद्रोही समूहों के खिलाफ सुरक्षा बलों की व्यापक कार्रवाई योजना के सफल क्रियान्वयन की बदौलत, हिंसा की घटनाओ में लगभग 15% की कमी दर्ज की गई, जिसमें इस क्षेत्र मे सुरक्षा बलों और सरकारी तंत्र का मनोबल बढ़ा हैं।

3.8 सुरक्षा बलों ने अपने सक्रिय ऑपरेशनों को जारी रखा और 2016 में आर्मी असम राइफल ने 911 आतंकियों को नाकाम किया (42 मारे गए 869 को गिरफ्तार कर लिया गया) और उनसे 874 हथियार जब्त किये। इसके अतिरिक्त, मुख्य रूप से सुरक्षा बलों के प्रयासों की बदौलत उत्तर-पूर्व में स्थायी राजनीतिक समाधान की तलाश करने और शांतिपूर्ण माहौल सुनिश्चित करने की प्रक्रिया में सहयोगी शासन तंत्र द्वारा इस दिशा में कार्य करने की पर्याप्त संभावनाएं बनी हैं।

3.9 **असमः** राज्य में सुरक्षा की स्थिति सामान्य रूप से शांत एंव नियंत्रण में रही। सुरक्षा बलों द्वारा चलाए गए समायोजित, एकजुट एंव तालमेलपूर्ण ऑपरेशनों ने विद्रोही गुटों के ऑपरेशन चलाने के इलाके को अत्यंत सीमित कर दिया। एनडीएफबी(एस) को परे ला दिया गया है जिसके चलते इनकी टुकड़ियां हताश हो गई हैं ओर इसके प्रभाव से बाहर आ गई है। विद्रोही गुट पैसे की भारी कमी का सामना कर रहे हैं और अपना औचित्य सिद्ध करने के लिए जहां-तहां हिंसात्मक कार्रवाई का सहारा ले रहे हैं। अप्रैल 2016 में असम विधानसभा चुनावों का शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न होना इस क्षेत्र में शांति एंव विकास की बढ़ती हुई इच्छा का संकेत है।

3.10 **नागालैंडः** वर्ष 2015 से राज्य की सुरक्षा स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। सुरक्षा बलों द्वारा लक्ष्य केन्द्रित कांउटर इमरजेंसी ऑपरेशनों के कारण एन एस सी एन (खपलांग) अलग-थलग पड़ गया है और वर्तमान में इसकी गतिविधियां पूर्वी नागालैंड और म्यांमार नागा हिल्स तक ही सीमित हैं। भारत-म्यांमार सीमा पर सुरक्षा बलों द्वारा किए गए सम्मिलित एंव अनवरत ऑपरेशनों ने आंतकी गुटों को शारीरिक एंव मानसिक रूप से काफी हद तक कमजोर कर दिया है।

3.11 नागा राजनीतिक गुटों के खिलाफ लोगों का असंतोष बढ़ता जा रहा है। अगेंस्ट करप्शन एंड अनअबेटेड टैक्सेशन (एनपीजी), नागा ट्राइबल कांउसिल (एन सी टी नागालैंड की नागा जनजातियों की शीर्ष संस्था) और लोथा होहो ने नागा राजनीतिक गुटों द्वारा अनीधिकृत कराधान को अस्वीकार कर दिया है। इन संगठनों ने एन एस सी एन की धमकी की निंदा भी की। सामाजिक संगठनों द्वारा नागा गुटों का खुला विरोध एक सकारात्मक बात है। तथापि, एन एस सी एन (आई एम) का वित्तीय और सैन्य रूप पूरी तरह से मजबूत बना हुआ है।

3.12 **मणिपुरः** उत्तर-पूर्वी राज्यों मे मणिपुर सबसे अशान्त राज्य चल रहा है। यहां अधिकांश हिंसा, घाटी में सक्रिय आंतकी समूहों द्वारा की जा रही है, क्योंकि मणिपुर में होने वाली लगभग 55% हिंसा के लिए उन्हें जिम्मेदार पाया गया है वर्ष 2016 के दौरान जनजातियों की आपसी दुश्मनी और स्थानीय एंव बाहरी लोगों के बीच मतभेद प्रमुख रूप से स्पष्ट थे।

3.13 इनर लाइन परमिट के क्रियान्वयन की मांग और इसका विरोध मणिपुर में प्रतिरोध के मुख्य कारण थे। नाकाबंदी और बंद की राजनीति जारी रही और यह तीन बड़े समुदायों- मेटी, नागा एंव कुकी के बीच बढ़ते मतभेदों का कारण बना। मणिपुर सरकार द्वारा नए जिले बनाने के प्रस्ताव के विरोध में 1 नवम्बर 2016 से यूनाइटेड नागा कांउसिल के नेतृत्व में आर्थिक नाकाबंदी की गई। 8 दिसम्बर 2016 को मणिपुर में सात नए जिले बनाने संबंधी घोषणा के कारण आर्थिक नाकाबंदी और ज्यादा उग्र हो गई तथा क्षेत्र में हिंसक गतिविधियां भड़क गई। इस घोषणा ने मौजूदा जातीय स्थिति को भी बदल दिया और नागाओं के खिलाफ मेटी एंव कुकी जनजाति एकजुट हो गए। मार्च 2017 में राज्य मे होने वाले विधानसभा चुनावों के कारण यह जातीय ध्रुवीकरण और भी प्रबल हो सकता है।

3.14 **अरूणाचल प्रदेशः** दक्षिण अरूणाचल प्रदेश वाले हिस्सों को छोड़कर राज्य में सुरक्षा की स्थिति हिंसक गतिविधियों में आई कमी आम नागरिको के

हताहत होने की घटनाओं में कमी, आतंकवादियों की गिरफ्तारी में वृद्धि के साथ धीरे-धीरे सुधर रही है। सुरक्षा बलों के साथ तालमेलपूर्ण ऑपरेशनों ने विद्रोहियों की गतिविधियों के क्षेत्र को सीमित कर दिया है।

3.15 विविध विद्रोही गुटो की उपस्थिति ने राज्य के लॉन्गडिंग, टिरप और चैंगलैंग जिलों को बुरी तरह प्रभावित किया है। ये विद्रोही ग्रुप अपना प्रभुत्व जमाने के प्रयास जारी रखें हैं। एन डी एफ बी (एस) और उल्फा (आई) के कैडर असम और म्यांमार की सीमा से सटे राज्य के इलाकों का प्रयोग (पनाह पाने, आने जाने के लिए) करते हैं।

3.16 **मेघालय:** जी एन एल ए द्वारा की गई हिंसा मुख्य रूप से गारो हिल्स तक ही सीमित रही। इन समूहों की छुटपुट घटनाएं असम स्थित पड़ोसी जिलों-गोलपाड़ा और दुबरी में भी देखने को मिलीं।

भारत-चीन सीमा पर स्थिति

3.17 भारत-चीन सीमा पर स्थिति शांतिपूर्ण बनी हुई है। इस सीमा पर कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहां वास्तविक नियंत्रण रेखा के बारे में भारत और चीन में मतभेद है। दोनों देश अपने-अपने मतानुसार निर्धारित की गई वास्तविक नियंत्रण रेखा तक गश्त लगाते हैं। वास्तविक नियंत्रण रेखा पर ऐसे क्षेत्रों में चीन के गश्ती दलों द्वारा किए गए अतिक्रमण के उल्लेखनीय मामले हॉट लाइनों, फ्लैग मीटिंगों और सीमा कार्मिक बैठकों जैसी स्थायी प्रक्रिया द्वारा चीनी प्राधिकारियों के समक्ष उठाए जाते हैं।

3.18 **सीमा रक्षा सहयोग समझौता (बीडीसीए) लागू करना:** इस वर्ष के दौरान बी डी सी ए लागू करने के बारे में दोनो देशों के बीच कई मुद्दों पर बातचीत हुई है। इस दिशा में, नॉन कॉन्टैक्ट गेम्स तथा त्यौहारों को मनाने के लिए संयुक्त समारोहों के आयोजन को शमिल कर सीमा कार्मिक बैठकों के दायरे को बढ़ाया गया है। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित विश्वास निर्माण के उपाय (सी बी एम) क्रियान्वयन की प्रक्रिया में हैं:-

(क) **नई बी पी एम प्रणाली:** इस प्रणाली का प्रयोग सभी विवादास्पद मुद्दों पर स्थानीय स्तर पर चर्चा करने के लिए किया जाता है। यह बी पी एम प्रणाली भारत-चीन सीमा पर शांति और अमन कायम रखने में सहायक रही है। वर्ष 2015 में उत्तरी सीमाओं पर भारत और चीन के बीच दो नई बी पी एम प्रणालियां (अरूणाचल प्रदेश में पूर्वी लद्दाख एंव किबिथु में ट्रैक जंक्शन) शुरू की गई। कई अन्य बी पी एम साइटों पर विचार किया जा रहा है।

(ख) **भारत और चीन के बीच हॉटलाइन:** भारत और चीन बी डी सी ए 2013 के भाग के रूप में, दोनों देशों के सैन्य मुख्यालयों के बीच हॉटलाइन स्थापित करने पर सहमत हो गए। इसे यथाशीघ्र चालू करने के लिए बातचीत जारी है।

(ग) **संयुक्त मानवीयवादी सहायता आपदा राहत (एच ए डी आर) अभ्यास:** भारत और चीन के बीच सीमा निगरानी ट्रूपों के बीच सी बी एम के भाग के रूप में, 2015 में पूर्वी सेक्टर में एक और 2016 में पश्चिमी सेक्टर में दो प्लाटून स्तर पर संयुक्त एच ए डी आर अभ्यास आयोजित किए गए।

3.19 **छठा संयुक्त प्रशिक्षण अभ्यास (जेटीई)** छठा संयुक्त प्रशिक्षण अभ्यास 16-26 नवंबर, 2016 तक पुणे (भारत) में आयोजित किया गया और इसका उद्देश्य सकारात्मक सैन्य संबंधो और इंटर-ऑपरेबिलिटी को बढ़ावा देना तथा आतंक रोधी परिवेश में संयुक्त ऑपरेशन करना है। इन अभ्यासों से व्यावसायिक सैन्य बातचीत के लिए बेहतर अवसर प्राप्त हुए हैं और परस्पर विश्वास में वृद्धि हुई है।

मित्र राष्ट्रों के साथ रक्षा कार्यो में सहयोग

3.20 रक्षा सहयोग से संबंधित कार्य हमारे राष्ट्रीय हितों को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण साधन हैं। हाल ही के वर्षो में विश्व में भारत की उभरती हुई छवि को ध्यान

में रखते हुए भारतीय सेना द्वारा किए गए रक्षा सहयोग संबंधी कार्यों में काफी बढ़ोतरी हुई है। तदनुसार, ज्यादा से ज्यादा मित्र राष्ट्रों ने भारतीय सेना के साथ युद्धाभ्यास करने में काफी रूचि दिखाई है जो कि न केवल विश्व में दूसरी सबसे बड़ी सक्रिय सेना है बल्कि व्यापक समाघात अनुभव के साथ-साथ उल्लेखनीय प्रशिक्षण मानकों वाली एक व्यावसायिक और गैर-राजनीतिक सेना है। वर्तमान समय में भारतीय सेना 98 देशों के साथ रक्षा सहयोग संबंधी कार्य कर रही है।

3.21 **योजनाबद्ध सहयोग:** भारत सरकार ने 54 देशों के साथ समझौता ज्ञापन/रक्षा सहयोग करार किया है। भारतीय सेना 12 देशों के साथ एक-एक करके परस्पर आर्मी स्टाफ स्तर (एग्जिक्यूटिव स्टियरिंग ग्रुप सहित) की वार्ताए आयोजित करती है। ये हमारे रक्षा सहयोग प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए औपचारिक आधार प्रदान करते हैं। नेपाल के साथ सहयोग के लिए रक्षा मंत्रालय, विदेश मंत्रालय का एक संयुक्त मेकैनिज्म है जिसे नेपाल भारत द्विपक्षीय परामर्शक ग्रुप (एन आई बी सी जी) के नाम से जाना जाता है। रूस के साथ भी ऐसी ही एक बहुमंत्रालयी सहयोगी योजना है।

3.22 70 सैन्य रक्षा अताशे हैं जिसमें सेना के 31 अताशे भी शामिल है जो विदेशों में 44 रक्षा विंग में तैनात हैं।

3.23 **नेपाल :** भारत व नेपाल के बीच चल रहे रक्षा सहयोग के भाग के रूप में दोनों देशों की सेनाओं के पारस्परिक संबंधों को विभिन्न क्षेत्रों में सुद्वढ़ किया जा रहा है जैसे रक्षा उपस्कर प्रदान करना नेपाली सैन्य कार्मिकों का प्रशिक्षण देना मेडिकल टीमों ट्रैकिंग टीमों व वरिष्ठ अफसरों के दौरों की व्यवस्था करना नेपाली सेना की क्षमता में बढ़ोत्तरी करने की दिशा में भी कार्रवाई की जा रही है।

3.24 **भूटान:** भूटान के साथ लंबे समय से चले आ रहे निकट संबंधों को देखते हुए सामरिक संबंधों को और सुद्वढ़ करने के लिए रॉयल भूटान आर्मी व रॉयल बॉडी गार्ड्स की क्षमता में बढ़ोतरी के लिए सहायता प्रदान की जा रही है।

3.25 **म्यांमार:** म्यांमार सेना को 12 सितंबर 2016 को मोरेह के निकट आयोजित एक समारोह के दौरान 48,12,990/- रूपये के अनुमानित मूल्य वाले 26 खच्चर/ घोड़े भेंट किये गये थे। भारतीय सेना की आर वी सी से दो सदस्यों वाले प्रतिनिधि मंडल ने 22-28 सितंबर, 2016 तक सात दिनों के लिए म्यांमार का दौरा किया ताकि वे म्यांमार में अश्व प्रजनन सुविधाओं के लिए आवश्यक अवसंरचना स्थापित करने में सहायता प्रदान कर सकें।

3.26 **कम्बोडिया:** कम्बोडियन सेना के 15 सदस्यों वाले दल ने 18 अक्टूबर 2016 से 9 नवंबर 2016 तक आर वी सी सेंटर व कॉलेज, मेरठ कैन्ट में तीन सप्ताह के (डॉग हैंडलर्स कोर्स)में भाग लिया। 10 नवंबर 2016 को कम्बोडियन सेना को 15 स्विफर डॉग्स (एम डी) भेंट किए गए। कम्बोडियन सेना को 15 स्विफर डॉग्स (एम डी) सौंपने व कम्बोडिया में कैनाइन बेस स्थापित करने के लिए भारतीय सेना के पांच सदस्यों वाले एक प्रतिनिधि मंडल ने 10-16 नवंबर 2016 तक सात दिनों के लिए कम्बोडिया का दौरा किया।

प्रशिक्षण व संयुक्त अभ्यास

3.27 मित्र राष्ट्रों (एफ एफ सी) के साथ संयुक्त अभ्यास भारत के रक्षा सहयोग संबंधी क्रियाकलापों का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। इन क्रिया-कलापों से वैश्विक स्तर पर इसके कौशल का प्रदर्शन होता है और इससे इसके ट्रपों को काफी उपयोगी अनुभव प्राप्त होते हैं। इसमें अपने अनुभव को साझा करना मिलिट्री ऑपरेशनों की बदलती स्थितियों को समझना इंटर-ऑपरेबिलिटी विकसित करना और मानवीय सहायता व आपदा राहत (एच ए डी आर) कार्यों सहित संयुक्त ऑपरेशनों के लिए प्रापण प्रक्रियाओं को सरल और कारगर बनाना शामिल है। अभी तक भारतीय सेना ने 19 देशों के साथ 24 अभ्यास किए हैं। वर्ष 2016-2017 के लिए 20 अभ्यासों की योजना बनाई गई थी जिनमें से नंवबर 2016 के अंत तक 12 अभ्यास पूरे कर लिए गए हैं। ये अभ्यास यू एन चार्टर मानवीय सहायता व आपदा राहत

के तहत प्रति विद्रोहिता / आंतक रोधी गतिविधियों से संबंधित है। सिंगापुर के साथ किए गए युद्धभ्यास फील्ड फायरिंग से संबंधित है और इन्हें भारत में किया गया।

3.28 भारतीय प्रशिक्षण संस्थानों में चलाए जा रहे पाठ्यक्रमों को उनको व्यावसायिक विषय–वस्तु व गैर–राजनीतिक प्रकृति के कारण पूरे विश्व में काफी महत्व दिया जाता है। वर्ष 2015–16 में 2426 विदेशी अ ञसरों व एन सी ओ ने इस तरह का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। दूसरी ओर भारतीय सेना के 65 अफसरों ने भी विदेशी सैन्य संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। अफगानिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश व कुछ सी ए आर व अफ्रीकी रष्ट्रों के कार्मिकों / जवानों को उनके ऐच्छिक क्षेत्रों में उनकी आवश्यक्ता के अनुरूप प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही भारतीय संस्थानों के अनुदेशको व उनके समकक्ष विदेशी संस्थानों के अनुदेशकों के बीच स्ट्रक्चर्ड एक्सचेंज भी होते हैं।

3.29 भारतीय सेना की टुकड़ियों ने विदेशी सेनाओं के साथ बहु–पक्षीय व्यावसायिक प्रतियोगिताओं में भी हिस्सा लिया। भारतीय ट्रूपों ने रूस में आयोजित टैंक बॉएथलॉन व यूके में कैम्ब्रियन पैट्रोल में भाग लिया जहां भारतीय टीम ने गोल्ड स्टैंर्डड हासिल किया। भारतीय सेना ने रूस, कजाकिस्तान व श्रीलंका में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भी कई ऑब्जर्वर भेजे। माननीय प्रधान मंत्री के जापान दौरे के दौरान भारतीय सेना बैंड ने जापान में आयोजित संगीत समरोह में हिस्सा लिया। भारत के महामहिम राष्ट्रपति के नेपाल दौरे के दौरान भारतीय सेना बैंड ने नेपाल में अपने हुनर का प्रदर्शन किया।

एशियान रक्षा मंत्रालयी बैठक प्लस (एडीएमएम)

3.30 एसियान रक्षा मंत्रालयी बैठक (ए डी एम एम) प्लस कंस्ट्रक्ट के तहत् वर्ष 2013–2017 के लिए हयूमैनिटेरियन माइन एक्शन पर कार्यकारी वर्किंग ग्रुप के लिए भारत वियतनाम के साथ सह–अध्यक्षता कर रहा है। इसके साथ ही बारूदी सुरंग हटाने (डीमाइनिंग) आपरेशनों व अविस्फोटित, सामग्री को कब्जे में लेने तथा संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना आपरेशनों में कम्बोडियन सेनाओं को प्रशिक्षण देने के लिए भारतीय सेना की प्रशिक्षण टीम को भेजने जैसे कई परस्पर हितकारी प्रयास किए गए है। भारत वर्ष 2017 से तीन वर्षों के लिए सैन्य चिकित्सा (मिलिट्री मेडिसिन) विशेषज्ञ वर्किंग ग्रुप के सह–अध्यक्ष के रूप में काम करेगा।

3.31 **फील्ड प्रशिक्षण अभ्यास (एफटी एक्स) 2016:** भारतीय सेना ने मार्च 2016 में एक फील्ड प्रशिक्षण अभ्यास के लिए ए डी एम एम प्लस के सभी सदस्यों की मेजबानी की। यह अभ्यास हयूमैनिटेरियन माइन एक्शन व संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना ऑपरेशनों पर आधारित था। 361 सहभागी व ऑब्जर्वस ने इस युद्धाभ्यास में हिस्सा लिया।

प्रशिक्षण दल

3.32 प्रत्येक देश के लिए विनिर्दिष्ट अधिदेश के अनुसार मेजबान देश के अनुरोध पर प्रश्क्षिण दल तैनात किए जाते हैं। मोटे तौर पर अधिदेश में अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण, सैन्य रणनीति, संभारिकी सूचना प्रोद्योगिकी इंजीनियरिंग व संचार आदि के क्षेत्र में तकनीकी सहायता प्रदान करना शामिल है। इसके साथ ही, कुछ देशों में टीम लीडरों को मेजबान देशों के सैन्य व सुरक्षा सलाहकारों की जिम्मेवारी भी सौंपी गई है।

3.33 वर्तमान समय में वियतनाम, लाओ पी डी आर म्यांमार, तजाकिस्तान, सेशल्स, नामीबिया, युगांडा, बांग्लादेश व भूटान आदि मित्र राष्ट्रों में भारतीय सेना के इस प्रशिक्षण दल तैनात है। कई प्रशिक्षण दलों की नफरी बढ़ाने का काम चल रहा है। श्रीलंका, किर्गिस्तान, मोजाम्बिक व नाइजीरिया में भी प्रशिक्षण दलों / विशेषज्ञों की तैनाती के संबंध में विचार किया जा रहा है।

सैन्य सिविक एक्शन कार्यक्रम

3.34 सेना ने ऑपरेशन सद्भावना के तहत भारत सरकार द्वारा प्रायोजित व वित्त पोषित सैन्य सिविक एक्शन कार्यक्रम चालू किए है जिनका उद्देश्य जम्मू–कश्मीर व उत्तर पूर्वी राज्यों के आतंकवाद व विद्रोह से प्रभावित क्षेत्रों की जनता का विश्वास व उनका दिल जीतना है। इन क्षेत्रों

में ऑपरेशन सद्भावना का उद्देश्य अच्छी शिक्षा महिला सशक्तिकरण सामुदायिक व अवसरंचनात्मक विकास करना स्वास्थ्य एवं पशु चिकित्सा, गुज्जर बकरवाओं का निकास व राष्ट्र निर्माण जैसे मुख्य सामाजिक मुद्दो पर ध्यान देना था।

3.35 भारतीय सेना ने ऑपरेशन सद्भावना के तहत चल रहे कार्यक्रम में पशुचिकित्सा सुविधा प्रदान कराई व शत्रु की कार्रवाइयों से प्रभावित पूर्वी व उत्तरी मोर्चों पर काफी बड़ी संख्या में पशुओं का उपचार किया। वर्ष 2016 के दौरान पूर्वी व उत्तरी कमान में विभिन्न पशु चिकित्सा सहायता कैम्पों में कुल 82,740 पशुओं का उपचार किया गया।

आधुनिकीकरण व उपस्कर

3.36 सेना की प्रमुख खरीद में आधुनिकीकरण एवं नई क्षमताएं विकसित करने के साथ-साथ साजोसामान की कमी की पूर्ति करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है और इस प्रक्रिया में स्वदेशीकरण पर उचित बल दिया गया है। इस वर्ष के दौरान भारतीय सेना ने प्रापण समयावधि में कमी लाने का भी प्रयास किया है। गुणात्मक जरूरतों का पता लगाने प्रस्ताव के लिए अनुरोध तैयार करने और फील्ड मूल्यांकन के बेहतर तरीकों का पता लगाना जिसमें सभी मानक प्रचालन प्रक्रियाओं (एस ओ पी) को रक्षा प्रापण प्रक्रिया-2016 के अनुरूप बनाना शामिल हैं, इन बदलावों के लिए विशेष कदम उठाए गए हैं। इन बदलावों से खरीद प्रक्रिया और अधिक कारगर बन सकेगी।

3.37 वित्त वर्ष 2016-17 के दौरान (दिसंबर 2016 तक) कुल 1180.21 करोड़ रूपये की लागत वाली आठ संविदाओं पर हस्ताक्षर किए गए। इनमें रॉकेट प्रणालियों, हॉविटजर्स व बैलिस्टिक हेल्मेट्स के लिए संविदाए शामिल है। पंजी प्रापण का उद्देश्य भारतीय सेना की फायर पावर क्षमता को बढ़ाने के साथ-साथ फील्ड में कार्यरत इन्फैंट्री सैनिकों को मूल भूत सुरक्षा प्रदान करना है। विभिन्न सेनागों व सेनाओं के पास अपने स्तर पर कई ऐसी योजनाएं हैं जो कि खरीद प्रक्रिया में अंतिम चरण पर हैं। इनमें से समाघात क्षमता में वृद्धि करने वाले कारक निम्नलिखित है:-

3.38 **मैकेनाइज्ड सेनाएं**- भावी युद्धक्षेत्र को जरूरतों को पूरा करने के लिए मैकेनाइज्ड सेनाओं का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए सेना में प्रयोग किए जा रहे उपस्करों को रात में प्रयोग करने लायक बनाना आधुनिक फायर कंट्रोल सिस्टम, बेहतर पावर पैक, एंटी टैंक गाइडिड मिसाइल तथा विस्फोटक रिएक्टिव आर्मर को अपग्रेड करने की दिशा में काम किया जा रहा है। इसके साथ-साथ देश में भावी काम्बेट व्हीकल प्लेंटफार्म विकसित करने का कार्य भी आरम्भ किया गया है। डी आर डी ओ द्वारा विकसित मेन बैटल टैंक अर्जुन मार्क-2 के परीक्षण का काम चल रहा है।

3.39 **आर्टिलरी** - आर्टिलरी उपस्करों की प्रापण प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य 155 मि॰मि॰ कैलीवर का आधुनिकीकरण लॉन्ग रेंज वेक्टर्स का प्रापण, युद्धक्षेत्र पारदर्शिता, मानवरहित एरियल प्लेटफार्म तथा वेपन का पता लगाना है। लान्ग रेंज वेक्टर्स को शामिल करने से भारतीय सेना की फायर पावर और कारगर बन सकेगी। निगरानी क्षमता में इजाफा करने के लिए मीडियम रेंज (एम आर) बैटलफील्ड सर्वेलेंस रडार के प्रापण का काम चल रहा है और इसके प्रापण की प्रक्रिया अंतिम चरण में हैं।

3.40 **इन्फैंट्री** - इन्फैंट्री सैनिक को आधुनिक अस्त्र प्रणाली से लैस करने का उद्देश्य उसकी मारक क्षमता में इजाफा करना तथा उसे स्वयं का सुरक्षा प्रदान करना है। इस उद्देश्य के लिए ए टी जी एम सब मशीन गन एसाल्ट राइफल, अंडर बैरेल ग्रेनेड लांचर (यूबीजीएल) तथा क्लोज क्वार्टर बैटल (सीक्यूबी) कार्बाइन जैसे आधुनिक हथियारों के प्रापण संबंधी मामलों पर कार्रवाई जारी है। ट्रूप्स की सुरक्षा में इजाफा करने के लिए वैलिस्टिक हेल्मेट तथा बुलेट प्रूफ जैकेट्स का प्रापण किया जा रहा है। इन्फैंट्री वेपन क्रू में वृद्धि करने के लिए लाइट स्पेशलिस्ट व्हीकल तथा लाइट स्ट्राइक व्हीकल के प्रापण के संबंध में कार्रवाई की जा रही है। जिसमें निगरानी क्षमता बढ़ेगी जिससे इन्फैंट्री बटालियनों की किसी भी स्थिती के संबंध में जानकारी में बढ़ोतरी होगी।

3.41 **सेना हवाई रक्षा** – सेना वायु रक्षा कोर अपनी गनो, मिसाइलों तथा रडार सिस्टम को अपग्रेड करने की दिशा में अहम प्रयास कर रही है। मौजूदा विंटेज उपस्करों के स्थान पर मीडियम रेंज सर्फेसट एयर मिसाइल (एमआरएसएएम), शार्ट रेंज सर्फेस टू एयर मिसाइल (क्यूआरएसएएम) क्विक रिएक्शन सर्फेस टू एयर मिसाइल (एसआरएसएएम) सेल्फ प्रोपेल्ड एयर डिफेंस (एसएडी) गन मिसाइल सिस्टम तथा वेरी शार्ट रेंज एयर डि ेंस सिस्टम के प्रापण के लिए प्रक्रिया जारी है। वर्तमान उपस्करों को अपग्रेड करने का कार्य भी किया जा रहा है।

3.42 **सेना विमानन** – समय के साथ पुराने हो रहे चेतक तथा चीता हेलीकॉप्टरों तथा एडवांस्ड लाइट हेलीकॉप्टरों के स्थान पर कामोव हेलीकॉप्टरों जैसे प्रमुख उपस्करों के प्रापण के मामले चल रहे हैं। हल्के लड़ाकू हेलिकाप्टरों की अधिप्राप्ति के लिए आवश्कता हेतु स्वीकृति भी दे दिया गया है। एएलएच के लिए रॉकेट एम्युनिशन एडवांस्ड हेलीकॉप्टर वेपन सिस्टम इंटीग्रेटिड के लिए एयर टू एयर मिसाइल तथा खोज एवं बचाव उपस्कर के प्रापण की प्रक्रिया जारी है।

3.43 **इंजीनियर कोर** – उपस्कर प्रोफाइल के आधुनिकीकरण के लिए प्रयासों में और तेजी लाई गई है। प्रापण संबंधी कई मामलों में काफी प्रगति हुई है जिनमें सर्फेस माइन क्लियरिंग सिस्टम, ड्यूल टैंक माइन डिटेक्टर्स, 7/2 टन एक्सकेवेटर्स तथा 10 मीटर शॉट स्पैन ब्रिज शामिल हैं। डी आर डी ओ जैसे विकासशील सहयोगियों के साथ समय-समय पर बातचीत, बारीकी से मॉनीटरिंग तथा आपसी सांमजस्य काफी लाभदायक सिद्ध हुआ है। फरवरी 2016 में नई कांउटर पॉलिसी लागू होने के साथ इम्प्रूव्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस के खतरों से निपटने में इसकी कुशलता के प्रति विश्वास और पुख्ता हुआ है।

3.44 **वार्षिक अर्जन योजना (एएपी) 2016-18** – वित्त वर्ष आरंभ में भाग ए में 120 तथा भाग बी में 137 मामलों पर कार्रवाई आरंभ की गई थी। भाग ए में 120 मामलों मे से आठ संविदाओं के संबंध में कार्रवाई पूरी कर ली गई है। प्रापण के 33 मामले अंतिम चरण में हैं। चालू वित्त वर्ष में सात नए एओएन दे दिए गए हैं।

3.45 **एम्युनिशन** – आमुध फैक्ट्रियों की मौजूदा उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए एम्युनिशन की आठ श्रेणियों का निर्माण भारतीय उद्योग को सौंपने का प्रस्ताव है। 18 नवम्बर 2016 को सरकार के ई-अधिप्राप्ति पोर्टल पर इस संबंध मे। सूचना देने के लिए अनुरोध किया गया था। 9 दिसम्बर 2016 को दिल्ली में भारतीय उद्योग तथा रक्षा मंत्रालय के सैन्य मुख्यालय के प्रतिनिधियों के बीच उद्योग संबंधी वार्ता की गई। इस प्रोजेक्ट के परिणामस्वरूप बेहतर एम्युनिशन रिजर्व तथा भारत में एम्युनिशन उत्पादन के स्वदेशीकरण की दिशा में उन्नति तथा आयात पर निर्भरता को कम करने में सफलता मिलेगी।

3.46 **एम्युनिशन रोल ऑन प्लान** – आयुध फैक्ट्री बोर्ड के समक्ष पंचवर्षीय रोल ऑन इन्डेट प्रस्तुत करके एम्युनिशन प्रबंधन का कदम उठाया गया है ताकि यह अपने उत्पादन की योजना बना सके। यह मांग पत्र ओएफबी की उत्पादन क्षमता को मद्दे नजर रखते हुए परस्पर सहमति के आधार पर निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार प्रस्तुत किया जाता है।

(क) वर्ष 2010 से 2014 तक के लिए प्रथम पंचवर्षीय रोल ऑन मांग पत्र फरवरी 2010 में ओ एफ बी के समक्ष प्रस्तुत किया गया। यह 113 एम्युनिशन मुद्दो के संबंध में था तथा इस पर 24,311 करोड़ रूपये की लागत आनी थी। ओ एफ बी ने 18,314 करोड़ रूपये की लागत के एम्युनिशन का उत्पादन किया।

(ख) वर्ष 2014 से 2019 तक के लिए पंचवर्षीय परिदृश्य योजना की बताई गई जरूरत के लिए द्वितीय रोल ऑन मांग पत्र अक्टूबर 2013 में ओ एफ बी के समक्ष प्रस्तुत किया गया। ओ एफ बी के उत्पादन रिपोर्टो की मासिक आधार पर मॉनीटरिंग की जा रही है।

3.47 **एम्युनिशन रोड मैप** – एम्युनिशन के संबंध में पंचवर्षीय रोल ऑन योजना के मध्यकाल मूल्यांकन के दौरान महसूस किया गया कि संकटपूर्ण स्थितियों से निपटने के लिए एम्युनिशन रोड मैप तैयार करने की जरूरत है। एम्युनिशन की जरूरत संबंधी संकटपूर्ण

स्थितियों से निपटनें के लिए रक्षा मंत्रालय द्वारा एक एम्युनिशन रोड मैप को अनुमोदन प्रदान किया गया है। बजटीय विवक्षाओं सहित एम्युनिशन प्रापण योजना को निम्नानुसार अनुमोदन प्रदान किया गया है:-

(क) **एक्सआयुध फैक्ट्री** - वित्त वर्ष 2013-14 के लिए 963 करोड़ रूपये की लागत से एम्युनिशन की 22 मदों तथा वित्त वर्ष 2014-15 के लिए 1964 करोड़ रूपये की लागत से एम्युनिशन की 30 मदों के निर्माण के लिए आयुध फैक्ट्रियों के समक्ष अतिरिक्त मांग पत्र प्रस्तुत किए गए।

(ख) **एक्स आयात** - एम्युनिशन रोड मैप में 16,637 करोड़ रूपये की लागत वाली एम्युनिशन की 35 मदों के लिए अनुमोदन प्रदान किया गया है।

3.48 युद्धसामग्री

(क) **एक्स ओएफबी युद्धसामग्री** - वार्षिक संभार समीक्षा के आधार पर ऐसी युद्धसामग्री के निर्माण के लिए ओ एफ बी के समक्ष मांग पत्र प्रस्तुत किया गया है जिसके उत्पादन के लिए ओ एफ बी के पास क्षमता एवं तकनीक मौजूद है। जिन युद्धसामग्रियों का निर्माण ओ एफ ने किया है उनमें 84 मि॰मि॰ आर एल एम के-3 7.62 मि॰मि॰ एम एम जी 105 मि॰मि॰ एल एफ जी तथा धनुष शामिल हैं।

(ख) **एक्स आयात युद्धसामग्री** - तकनीक उपलब्ध न होने, अपर्याप्त क्षमता तथा देश में हथियार विकसित करने की योग्यता न होने की वजह से कुछ युद्धसामग्री का आयात किया जाता है। वर्तमान एक्स आयात खरीद में 84 मि॰मि॰ आर एल एम के-3, 3 एम॰ एम॰ ए जी एस / ए जी एल / 40 मि॰मि॰ यू बी जी एल, 7.62 मि॰ मि॰ गैलिल स्नाइपर राइफल तथा 9 मि॰ मि॰ सब मशीन एम पी-9 गन शामिल हैं।

3.49 **वेपन नाइट साइट्स तथा निगरानी यंत्र** - भारतीय सेना के आर्म फाइटिंग व्हीकल तथा गैर-ए एफ वी एप्लिकेशन्स के लिए इमेज इंटेसीफायर नाइट विजन डिवाइस की जरूरत को मैसर्स (बीईएल एंड ओएलएफ) द्वारा पूरा किया जाता है। मैसर्स बी ई एल से की जाने वाली मौजूदा खरीद संबंधी मामलों में हेल्ड थर्मल इमेजर लेजर रेंज फाइटर वाले पैसिव नाइट विजन गौगल्स, पैसिव नाइट विजन वाइनोकुलर्स राइफल / एल एम जी के लिए पैसिव नाइट साइट्स तथा (ओएलएफ) से की जाने वाली खरीद में (एएफवी) प्लेटफॉर्म्स के लिए इमेज इंटेसीफायर तथा थर्मल इमेजरी साइट्स शामिल हैं।

3.50 **विविध उपस्कर :** विभिन्न सेनांगों से संबंधित अधिग्रहण के साथ-साथ विशिष्ट वाहनों, रेल संचालन के लिए मैटीरियल हैंडलिंग उपस्कर और महत्वपूर्ण रोलिंग स्टॉक को शामिल करने की प्रक्रिया चल रही है। नवीनतम वेयरहाउसिंग सुविधाओं और लेखाकरण प्रणाली वाले संभारिकी अधिष्ठापनों के आधुनिकीकरण का काम भी चल रहा है। इलैक्ट्रॉनिक युद्ध पद्धति संचार और युद्धक्षेत्र प्रबंधन संबंधी प्रोजेक्ट भी चल रहे हैं।

राष्ट्रीय राइफल्स

3.51 राष्ट्रीय राइफल्स ने अपनी स्थापना के बाद से जम्मू और कश्मीर की सुरक्षा और इसके सामाजिक-आर्थिक विकास में बहुमूल्य सहयोग दिया है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान राष्ट्रीय राइफल ने कई अनवरत आंतकरोधी ऑपरेशनों को सफलतापूर्वक पूरा किया है। जुलाई 2016 में लश्कर-ए-तैयबा आंतकी बुरहान वानी के मारे जाने के बाद कश्मीर घाटी में भड़के अशांत माहौल के दौरान राज्य में शांति बहाल करने के लिए राष्ट्रीय राइफल ने एकजुट होकर अहम भूमिका अदा की।

3.52 अत्यधिक धैर्य एवं दृढ़प्रतिज्ञा के साथ-साथ त्वरित कार्रवाई करते हुए अथक प्रयासों को सफल ऑपरेशनों में तबदील किया जा सका। इस अवधि के दौरान, राष्ट्रीय राइफल की यूनिटें आंतकवादियों और उनके समर्थकों पर निरंतर दबाव बनाने में सफल रहीं। आंतकी ताकतों के खिलाफ किए गए सेना के अथक ऑपरेशनों से क्षेत्र में शांति बनी रही और स्थिति लगभग सामान्य सुनिश्चित हो पाई

3.53 **श्री अमरनाथ जी यात्रा:** राष्ट्रीय राइफल्स युनिटों और फार्मेशनों ने समय से पहले बहुस्तरीय तैनाती सुरक्षा पर अपनी मजबूत पकड़ और मजबूत आसूचना

नेटवर्क से अमरनाथ यात्रा की सफलतापूर्वक आवा-जाही मे अहम भूमिका निभाई। श्रद्वालुओं की आवाजाही को आसान करने के लिए मेडिकल कवर सहित हर तरह की सहायता प्रदान की गई।

3.54 **जन कल्याणकारी ऑपरेशनः** राष्ट्रीय राइफल ने सेना के बारे में लोगो की सोच को एक आकार देने के लिए बड़ी संख्या मे जन कल्याणकारी गतिविधियां की जिससे अवाम और जवान के बीच सैहार्दपूर्ण संपर्क बढ़ने के अलावा सेना के बारे मे लोगों की सोच मे भी काफी बदलाव आया है। राष्ट्रीय राइफल द्वारा आयोजित युवा रोजगार एंव मार्गदर्शन नोडस वाई ई जी एन मे प्रभावी रूप से देश के बेरोजगार युवा वर्ग को लक्ष्य किया गया और उनके लिए उच्च शिक्षा और रोजगार के साधन जुटाने मे उनकी मदद की गई। इस तरह उन्हे आंतकवाद के माध्यम से आसानी से धन मिलने के

लालच और अपनी क्षमता के गलत प्रयोग से दूर रहने के लिए उनका मार्गदर्शन किया।

3.55 दीर्धकालिक चित्र परिदृश्य को ध्यान मे रखते हुए देश मे विशेष रूप से बनाए गए एकमात्र प्रति विद्रोहिता / आंतकरोधी [सी आई / सी टी] बल के रूप मे राष्ट्रीय राफल्स का गठन युद्वनीतिक निर्णयो के सर्वोत्तम उदाहरणों मे से एक है। इनके द्वारा अर्जित विशेषज्ञता व्यापक राष्ट्रीय शक्ति का निर्माण करने मे बहुत महत्वपूर्ण है और इसे सतत रूप से बनाए रखने की आवश्यकता है।

प्रादेशिक सेना

3.56 प्रादेशिक सेना एक्ट 1948 मे बनाया गया था। प्रादेशिक सेना तैयार करने का उददेश्य लाभकारी रूप से नियोजित नागरिको को अंशकालिक सैन्य प्रशिक्षण प्रदान करना है। जो यह प्रशिक्षण पाने के बाद सक्षम सैनिक बन जाते है।

3.57 **प्रादेशिक सेना दिवसः** प्रादेशिक सेना दिवस 9 अक्टूबर 2016 के अवसर पर प्रादेशिक सेना दिवस परेड, आर्मी परेड ग्राउण्ड दिल्ली कैंट मे आयोजित की गई और प्रादेशिक सेना दिवस परेड का निरीक्षण सेनाध्यक्ष द्वारा किया गया। इस परेड मे मार्च करती हुई दस टुकड़ियों ने हिस्सा लिया जिसमे इन्फैन्ट्री यूनिटें एवं होम एवं हर्थ यूनिटे दस इन्फैन्ट्री बटालियान यूनिट पाइप बैंड और विभाग यूनिटों की तीन झांकियां थी। प्रादेशिक सेना दिवस के चित्र भाग के रूप मे प्रादेशिक सेना के अफसरों, जे सी ओ, अन्य रैंक और उनके परिजनों ने 06 अक्तूबर 2016 को राष्ट्रपति भवन मे माननीय राष्ट्रपति से मुलाकात की।

3.58 **वर्ष 2016-17 के लिए सीओएएस रजतट्रॉफी:** 42 प्रादेशिक सेना यूनिटो इन्फैंट्री तथा होम एंव हर्थ युनिटे मे से 159 इन्फैंट्री बटालियन डोगरा को सर्वश्रेष्ठ इन्फैंट्री बटालियन घोषित किया गया।

3.59 प्रादेशिक सेना यूनिटों का योगदान

क) **स्फिति विद्रोहिता/आतंक रोधी कार्रवाई तथा आतंरिक सुरक्षा:** वर्तमान मे प्रादेशिक सेना यूनिटों मे से लगभग 75% जम्मू एवं कश्मीर तथा उत्तर पूर्व क्षेत्र मे प्रति विद्रोहिता/आतंकरोधी भूमिका मे तैनात हैं तथा सौंपे गए टास्क को पेशेवर तरीके से पूरा करने मे नियमित सेना के सहायक के रूप मे अहम भूमिका निभा रही है।

ख) **पारिस्थितिकि का सरक्षण:** आठ ई टी एफ बटालियनें देश के अवक्रमित तथा दुर्गम इलाकों मे पारिस्थितिकी को पुनर्जीवित करने की दिशा मे उत्कृष्ट कार्य कर रही है। इन यूनिटों ने लगभग 71618 हेक्टेयर क्षेत्र मे लगभग 6.42 करोड पौधे लगाए हैं। ई टी एफ बटालियनों के इन प्रयासों की सभी और से सराहना की गई।

3.60 **तीन इंजीनियर रेंजिमेंट प्रादेशिक सेना की स्थापना:** उत्तर कमान जम्मू एवं कश्मीर मे नियंत्रण रेखा की मरम्मत तथा रखरखाव के लिए मार्च 2015 मे तीन इंजीनियर रेजिमेंटों की स्थापना की गई। इन रेजिमेंटों ने फरवरी 2016 से कार्य करना शुरू कर दिया।

3.61 **प्रादेशिक सेना मे कमीशन प्रदान करना:** ओ एन जी सी मे कार्यरत एक साहायक कार्यकारी अभियता को 811 इंजीनियर रेजिमेंट ओ एन जी सी प्रादेशिक सेना मे लेफ्टिनेंट के रैंक मे कमीशन प्रदान किया गया। उन्हे 30 सितम्बर 2016 को कमीशन प्रदान किया गया तथा वह प्रादेशिक सेना की ऑयल सेक्टर विभाग यूनिट मे अफसर के रूप मे शामिल होने वाली प्रथम महिला बनी। वह न केवल प्रादेशिक सेना ऑयल सेक्टर यूनिट मे शामिल होने वाली प्रथम महिला अफसर हैं बल्कि वह आज तक प्रादेशिक सेना मे एकमात्र महिला अफसर हैं।

3.62 वर्ष 2016 के दौरान 64 व्यक्तियों को प्रादेशिक सेना मे कमीशन प्रदान किया गया है। इस संबंध मे विवरण इस प्रकार है -

(क) गैर विभागीय यूनिटें - 33

(ख) विभागीय यूनिटें - 31

संयुक्त राष्ट्र मिशन

3.63 वर्ष 1950 मे 346 कार्मिकों वाले एक भारतीय सेना अस्पताल को कोरिया मे स्थापित किया गया था तब से संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना ऑपरेशनों मे भारत का सक्रिय योगदान रहा है। फिलहाल विश्वभर मे चल रहे आठ संयुक्त राष्ट्र मिशनों मे भारत के करीब 6800 कार्मिक तैनात हैं। वर्ष 1950 से भारत ने कुल 69 यू एन मिशनों मे से 49 यू एन मिशनों मे भाग लिया है। और अब तक इनमे करीब 2,20,000 से ज्यादा भारतीय ट्रूप भेजे जा चुके हैं। इन मिशनो के दौरान भारतीय सेना के 153 जवानो ने सर्वोच्च बलिदान दिया है।

3.64 यू एन मिशनों मे तैनात हमारी टुकड़ियों के पास जो उपस्कर वाहन थे उनकी उपयोज्यता को बढ़ाने के लिए कई कदम उठाए गए हैं जिससे उनकी ऑपरेशनल उपयुक्त सुधार हुआ है। हमारी सेना वर्तमान समय मे यू एन मिशनों मे जो योगदान दे रही है उनके बारे मे आगे के पैरा मे बताया गया है।

3.65 **कांगो गणराज्य में संयुक्त राष्ट्र मिशन** मोनस्को मे भारत का योगदान वर्ष 1999 मे मिलिट्रि ऑब्जर्वर्स की तैनाती के साथ शुरू हुआ। वर्तमान समय मे भारत के चार इन्फैंन्ट्री बटालियन ग्रुप्स के साथ एक इन्फैन्ट्री ब्रिगेड ग्रुप ब्रिगेड सिग्नल कम्पनी व एक लेवल III अस्पताल तैनात किया है। ब्रिगेड ने सौपे गए कार्यो के आधार पर ऑपरेशनल लक्ष्यों को हासिल करने के लिए काफी सराहनीय कार्य किए हैं। भारतीय शांतिस्थापना दलों के कुछ जवान 8 नवंबर 2016 को आई ई डी विस्फोट मे घायल हो गए और भारतीय टुकड़ी ने 11

सशस्त्र ग्रुप कैडरों को खात्मा करके व एक को कब्जे मे लेकर सिविलियनों की रक्षा की। भारत पहले से तैनात भारतीय बटालियन ग्रुप को रैपिड डिप्लॉएबल बटालियन मे तबदील करने पर सहमत हो गया है और इस प्रक्रिया पर काम चल रहा है।

3.66 **दक्षिणी सूडान मे संयुक्त राष्ट्र मिशन (यू एन एम आई एस एस)** मे भारत ने सबसे ज्यादा ट्रूप भेजे हैं और इस मिशन मे दो इन्फैंट्री बटालियन ग्रुप स्टाफ अफसर और मिलिट्री ऑब्जर्वर्स तैनात किए हैं तथा साथ ही ज्यूबा मे एक नया लेवल II अस्पताल भी स्थापित किया है। दक्षिणी सूडान मे काम करने की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियां भारतीय टुकड़ियों को उन्हें सौंपा गया कार्य पूरा करने से विचलित नही कर पाई। मार्च व अक्तूबर 2016 मे क्रमशः मालाकल वा ज्यूबा मे चल रहे सघर्षों के दौरान भारतीय टुकड़ियों द्वारा सही समय पर व कठोर कार्रवाई से कई जिंदगियां बचाई जा सकी।

3.67 **लेबनान मे सयुक्त राष्ट्र अंतरिम बलः** यूनीफिल मे भारतीय सेना का योगदान एक इन्फैन्ट्री बटालियन ग्रुप लेवल I अस्पताल और स्टाफ अफसरों के रूप मे रहा है। बटालियन को सख्त निर्देश हैं कि वह लेबनॉन तथा इजराइल अधिकृत चीबा फामर्स के बीच के लाइन ऑफ विदड्रावल के किसी भी प्रकार के उल्लंघन के लिहाज से ब्लू लाइन की निगरानी करे। बटालियन के आपरेशन का क्षेत्र संवेदनशील है और युद्व विराम के किसी भी प्रकार के उल्लंघन को अंतर्राष्ट्रीय मीडिया द्वारा कवर किया जाता है। इस क्षेत्र में शांति बनाए रखने के लिए भारतीय टुकड़ी बड़ी ही कुशलता के साथ काम कर रही है।

3.68 **यूनाइटेड नेशन्स डिस इंगेजमेट आब्जर्व फोर्स यू एन डी ओ एफ** सीरिया मे चल रही युद्वग्रस्त स्थिति के कारण मिशन को सितम्बर 2014 से अपने सशक्त बलों की तैनाती इसके ऑपरेशन क्षेत्र के केवल एक भाग तक ही सीमित करने पर बाध्य होना पड़ा। भारत ने मिशन मे लॉजिस्टिक सैन्य दल तैनात किया है जो मिशन को सेकेण्ड लाइन लॉजिस्टिक सपोर्ट प्रदान करने के लिए उत्तरादायी है। मेजर जनरल जे एस मेनन वी एस एम मार्च 14,2016 से इस मिशन के फोर्स कमांडर रहे हैं। मिशन अब अपने ऑपरेशन क्षेत्र के दूसरे भाग पर फिर से अपनी पकड़ बना रहा है जिसके लिए भारतीय लॉजिस्टिक बटालियन सहित मिशन के सभी पहलुओ को पुनर्गठित करना आवश्यक है। मिशन को सेकेण्ड लाइन लॉजिस्टिक सपोर्ट प्रदान करने के लिए भारतीय लॉजिस्टिक बटालियन के एक भाग को मिशन के सीरियाई ऑपरेशन क्षेत्र मे तैनात किया गया है।

3.69 **सेंटर फॉर युनाइटेड नेशन्स पीसकीपिग (सी यू एन पी के सेंटर फॉर युनाइटेड नेशन्स पीसकीपिग (सी यू एन पी के)** देश में शांति स्थापना से संबंधित प्रशिक्षण देने के लिए नोडल एजेंसी है हर वर्ष यह तीनों सेनाओं केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों [सी ए पी एफ] तथा मित्र राष्ट्रों से भी बड़ी संख्या मे आए अफसरों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। सी यू एन पी के द्वारा चलाए जा रहे पाठ्यक्रमों की उनके व्यापक सामग्री और निर्बाध संचालन के कारण विभिन्न विदेशी मित्र राष्ट्रों और संयुक्त राष्ट्र द्वारा सराहना की गई है।

4

भारतीय नौसेना

अध्याय 4

भारतीय नौसेना

4.1 भारत एक समुद्री राष्ट्र है और यह बडी संख्या में मौजूद उन व्यस्त अंतराष्ट्रीय पोत परिवहन लेनों पर स्थित है जो हिंद महासागर से होकर जाती है। मात्रानुसार हमारे व्यापार का 90% और मूल्य के अनुसार 70% समुद्र द्वारा परिवहन किया जाता है। तेजी से बढ़ती हुई हमारी अर्थव्यवस्था के लिए जो दुनिया भर में नए बाजारों की खोज कर रही है ये व्यापार के आंकड़े भविष्य में और उपर जाएंगे।

4.2 भारत की आर्थिक प्रगति सीधे तौर पर इसके विदेशी व्यापार और ऊर्जा की आवश्यकता पर निर्भर करती है जिसमें से अधिकांश समुद्र के रास्ते संपन्न होता है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद [जी डी पी] में 40% से अधिक हिस्सा वाणिज्यक व व्यापार का है जिसके आने वाले समय में बढ़ने की संभावना है। यही कारण है कि सुरक्षित समुद्री माहौल को बनाए रखना जिससे आर्थिक गतिविधियाँ अबाधित रूप से चलती रहें समग्र आर्थिक विकास और देश की सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं।

4.3 पिछले दस वर्षो में यह देखा गया है कि भारत की उसके समुद्री वातावरण पर निर्भरता में उल्लेखनीय विस्तार हुआ है क्योंकि इसकी आर्थिक सैनिक और प्रौद्योगिकीय क्षमता मे वृद्वि हुई, इसका वैश्विक आदान प्रदान बढ़ा और धीरे-धीरे इसकी राष्ट्रीय सुरक्षा आवश्यकताओं और राजनीतिक हितों में हिन्द महासागरीय क्षेत्रो से परे भी बढ़ोतरी हुई। इस कारण 21वीं सदी को भारत के लिए समुद्रों की शताब्दी के रूप मे माना जा सकता है और उसके वैश्विक पुनरूत्थान में समुद्र महत्वपूर्ण सहयोगी बना रहेगा।

4.4 हिंद महासागरीय क्षेत्रों में अपनी बहुआयामी क्षमताओं और सक्रिय उपस्थिति के कारण भारतीय नौसेना समुद्र में नेतृत्व प्रदान करने का कार्य करती आ रही है। भारत के समुद्री पडोस मे बढती अस्थिरता, गहराती भू-राजनीतिक और जातीय दोष-पूर्णता, बढ़ती सैनिक क्षमता और सुरक्षा चुनौतियों और व्यापक भिन्नताओं के चलते वातावरण गतिशील बना हुआ है। ये सभी भारत के लिए समुद्र से आने वाली और समुद्र में उत्पन्न परम्परागत और उप-परम्परागत खतरे प्रस्तुत करती है। इन खतरों और चुनौतियों के कारण भारतीय नौसेना के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वह हर किस्म के समाघात ऑपरेशनों के लिए स्वयं को कारगर बनाये रखे और भविष्य में पेश आने वाली चुनौतियों का समाना करने के लिए स्वयं को तद्नुसार ढाले।

4.5 भारतीय नौसेना देश की समुद्री प्रभुसत्ता और असंख्य समुद्री कार्यकलापों के प्रयोग की गारंटी देती है और इस कार्य को सभव बनाती है। यह कार्य भारतीय नौसेना अपनी चार भूमिकाओं-सैन्य कूटनीतिक रक्षा और क्ल्याणकारी भूमिका के माध्यम से करती है। भारतीय नौसेना की सैन्य भूमिका का उद्देश्य किसी भी ऐसे कार्य और हस्तक्षेप का निवारण हैं जो हमारे राष्ट्रीय हितो के विरूद्ध है और युद्व स्थिति मे शत्रु को करारी हार देने में सक्षम होना है। नौसेना की रक्षीदल का मुख्य कार्य भारतीय तट रक्षक और अन्य केन्द्र तथा राज्य एजेंसियों के सहयोग से तटीय और अपतटी सुरक्षा सुनिश्चित करना और समुद्री डकैती रोधी उपायो को लागू करना है।

4.6 भारतीय नौसेना हिन्द महासागरीय क्षेत्रों में मित्र देशों की नौसेनाओं की क्षमता वृद्वि और सामर्थ्य निर्माण की दिशा मे सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु भारत हार्डवेयर और प्लेटफार्म उपलब्ध

करा पा रहा है। जिसमें ई ई जेड निगरानी के लिए पोत और विमान सम्मिलित हैं। मित्र राष्ट्रों के सामुद्रिक ढांचे को विकसित करने मे भी भारतीय नौसेना सहायक रही है। भारतीय नौसेना समुद्र मे कार्य करने वालों के संक्रियात्मक और तकनीकी कौशल को विकसित करने में भी सहयोग के लिए तैयार हैं क्षेत्र में नौसेना समुद्री बलों को अतिरिक्त हिस्से पूर्जे, एआईएस उपस्कर, पोत हैंडल करने वाले सिमुलेटर, गोला–बारूद, संचार उपस्कर, तटीय निगरानी रेडार, नौका जैसे महत्वपूर्ण सहयोग से भारत की छवि बेहतर बनी है तथा द्विपक्षीय संबंधो को मजबूती प्रदान करने मे इसने बड़ी भूमिका निभाई है।

4.7 अक्तूबर 2008 से एक अग्रिम पंक्ति का बेड़ा पोत भारतीय और विदेशी राष्ट्रों के जहाजों को सुरक्षित एस्कोर्ट प्रदान करने और समुद्री डकैतों के हमलों से बचाव के लिए अदन की खाड़ी क्षेत्र मे तैनात है।

4.8 हाल ही मे शामिल किए गए इमिडिएट सपोर्ट वेसल [आई एस वी] की तैनाती से अपतटीय परिसम्पत्तियों जिसमे अपतटीय विकसित क्षेत्र [ओडी ए] शामिल है की सुरक्षा मे वृद्वि हुई। ओडीए प्लेटफार्म जो कि भारतीय ऊर्जा संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है की और सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए ओडीए पर नियमित अभ्यास आयोजित किए गए है।

तटीय सुरक्षा

4.9 भारतीय नौसेना वह केन्द्रीय एजेंसी है जो तटीय सुरक्षा और अपतटीय सुरक्षा सहित समग्र समुद्री सुरक्षा के लिए उत्तरदायी है। विभिन्न राष्ट्रीय एजेसियों और संगठनो के समन्वय से तटीय सुरक्षा मामलों पर आवश्यक जोर दिया गया है। भारतीय नौसेना तटीय सुरक्षा के प्रयोजनार्थ बी एस एफ / सी आई एस एफ /राज्य मरीन पुलिस को नौकाओं के प्रापण अनुरक्षण और प्रचालन मे सहायता प्रदान कर रही है। इसके अतिरिक्त पोताश्रय के निर्माण ए एम सी के संपादन के लिए, जहाँ कही आवश्यक हो तकनीकी सलाह भी दी जा रही है। भारतीय नौसेना मरीन पुलिस /सी ए पी एफ के लिए नियमित रूप से संक्षिप्त प्रशिक्षण कोर्स कैप्सूल का भी संचालन कर रही है गुजरात मे स्थापित होने वाले मरीन पुलिस प्रशिक्षण संस्थान (एम पी टी आई) के लिए प्रशिक्षण (पाठ्यक्रम) की संकल्पना, सर्वेक्षण और रूप रेखा तैयार करने मे सहायता की है। भारतीय नौसेना ने सतर्क मछुआरों/तटीय निवासियों की पहचान के लिए मई 2016 मे एक नीति भी जारी कि है।

4.10 राष्ट्रीय कमान नियंत्रण संचार आसूचना नेटवर्क [एन सी आई] जो भारतीय नौसेना के 51 स्टेशनों एवं आई सी जी को आपस मे जोड़ता है और बहु संवेदको [मल्टीपल सेंसरो] को एकीकृत करता है उसका कारगर उपयोग विषय के संबंध मे जागरूकता को पैदा करने और एजेंसियों के बीच परस्पर सहयोग के लिए समुद्री क्षेत्रीय जागरूकता और नेटवर्क आधारित आपॅरेशनों के संबंध मे किया जा रहा हैं। भारतीय नौसेना भारतीय तट रक्षक बल, भारतीय वायु सेना, केन्द्रीय और राज्य समुद्री एजेंसियों सहित सभी समुद्री साझेदारों के बीच समुद्री क्षेत्रीय जागरूकता और नेटवर्क आधारित आपॅरेशनो के संबंध समन्वयन को बढ़ा रही है। इसके अतिरिक्त हमारी नौसेना हिन्द महासागरीय क्षेत्र [आई ओ आर] और इसके बाहर मित्र राष्ट्रो के मध्य श्वेत पोत परिवहनों और हवाई यातायात सूचनाओं को साझा करने के लिए होने वाले समझौतों पर काम कर रही है।

4.11 तटीय एंव अपतटीय सुरक्षा को मजबूत बनाने के लिए भारतीय नौसेना में तीव्र अवरोधक विमान और तत्काल सहायता वाहन शामिल किए जा रहे हैं। अपतटीय सुरक्षा के लिए 23 आई एस वी को शामिल कर लिया गया है और अपतटीय व्यवस्थापनों की सुरक्षा के लिए उन्हे लगातार तैनात किया जा रहा है। भारतीय नौसेना ने 95 एफ आईसी में से 83 को सागर प्रहरी बल में शामिल किया है और शेष को 2017 तक शामिल

तटीय सुरक्षा की गश्त करता स्वदेश मे विकसित वायोडीजल से चलता तीव्र अवरोधक विमान

करने की योजना हैं। इन एफ आई सी को तटीय सुरक्षा मिशनों के लिए इष्टतम रूप से नियुक्त किया जा रहा है।

4.12 मौजूदा तंत्रों को सरल व कारगर बनाने, अंतर अभिकरण समन्वय को सुधारने और समुद्री तटीय और अपतटीय सुरक्षा को मजबूत बनाने के लिए सभी तटीय राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों मे तटीय और अपतटीय सुरक्षा 'अभ्यास लगातार संचालित किए जा रहे हैं।' तट सुरक्षा नामक संयुक्त तटीय सुरक्षा अभ्यास का आयोजन अप्रैल 2016 मे अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में किया गया जिसमे भारतीय नौसेना, थल सेना, वायुसेना, भारतीय तटरक्षक बल और सिविल साझेदारों ने हिस्सा लिया। इसके अतिरिक्त एक अपतटीय सुरक्षा अभ्यास प्रस्थान का आयोजन 22अप्रैल 2016 को मुंबई तट से दूर एक ऑयल प्लेटफॉर्म पर किया गया। भारतीय नौसेना मछुआरों और तटीय समुदायो के साथ पारस्परिक मेलजोल के कार्यक्रमों के द्वारा उनको समुद्री सुरक्षा ढांचे मे एकजुट करने के काम मे लगातार सक्रिय रूप से लगी हुई है।

4.13 **तटीय सुरक्षा सेमिनार 2016:** भारतीय नौसेना

अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह मे तटीय सुरक्ष अभ्यास

ने 24 जून 2016 को मुंबई में तटीय सुरक्षा सेमिनार का आयोजन किया जिसमें महाराष्ट्र स्थित तटीय सुरक्षा संरचना के विभिन्न संगठनों से 33 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। सेमिनार का उद्देश्य यह था कि राज्य के तटीय सुरक्षा ढांचे के सभी भागीदार एक मंच पर उपस्थित होकर अपने कार्यात्मक स्तर के मेलजोल को सुकर बनाएं।

4.14 महाराष्ट्र के छः तटीय जिलों मे 22 जुलाई से 28 अगस्त 2016 तक एक तटीय सुरक्षा जागरूकता और डाटा संग्रहण अभियान का आयोजन किया गया। इस अभियान का उद्देश्य तटीय सुरक्षा मामलों से स्थानीय लोगों को अवगत कराना तथा महाराष्ट्र तट पर संवेदनशील स्थानों और अवतरण संबंधी डाटा बैक को अद्यतन करना था। भारतीय नौसेना भारतीय तट रक्षक, मरीन पुलिस, सीमा शुल्क मत्स्य विभाग और ओ एन जी सी के प्रतिनिधियों ने लगभग 3000 मछुआरों से मुलाकात की और तटीय सुरक्षा तथा इस पर उनके प्रत्याशित योगदान से जुड़े मामलों पर बात की।

समुद्री डकैती रोधी ऑपरेशन

4.15 समुद्री डकैती रोधी एस्कोर्ट डयुटी के लिए अक्तूबर 2008 से भारतीय नौसेना ने अदन की खाड़ी मे 61 पोतों को तैनात किया है। उन तैनातियो के दौरान भारतीय नौसेना ने करीब 3325 व्यावसायिक पोतों का मार्गरक्षण (388 भारतीय ध्वजयुक्त) किया है जिसमें करीब 24450 भारतीय समुद्री यात्री सवार थे भारतीय नौसेना द्वारा की गई कड़ी काईवाई और निरंतर सतर्कता के कारण मार्च 2012 से पूर्वी अरब सागर में समुद्री डकैती का कोई मामला रिपोर्ट नहीं किया गया है।

4.16 पूर्वी अरब सागर मे समुद्री डकैती की कोई भी घटना न घटने के परिणामस्वरूप भारत ने कई अंतराष्ट्रीय मंचों पर समुद्री डकैती के अति जोखिम वाले क्षेत्र के संशोधन का मामला उठाया है। भारतीय नौसेना द्वारा अन्य साझेदारों के साथ मिलकर किए गए सतत प्रयासों के फलस्वरूप नौवहन उद्योग की गोलमेज वार्ता हुई, जिससे एच आर ए की पूर्वी सीमाएं अक्तूबर 2015 में भारत के पश्चिमी तट से 65^0 पू0 देशान्तर को पीछे चली गई। समुद्री डकैती उच्च जोखिम क्षेत्र के संशोधन से यह संभावना हैं कि शिपिंग उद्योग में पर्याप्त वित्तीय बचत होगी।

4.17 मेजबान सरकारों के अनुरोध पर भारतीय नौ सेना के पोत और वायुयान मालदीव मॉरीशस और सेशेल्स के ईईजेड की निगरानी के लिए भी नियमित तौर से तैनात किए जा रहे हैं।

विदेशों में ऑपरेशन

4.18 आई एन एस तबर ने 12 मार्च 2016 को आयोजित मॉरीशस के राष्ट्रीय दिवस समारोह में और

आई एन एस त्रिखंड ने 29 जून 2016 को सेशेल्स के राष्ट्रीय दिवस समारोह मे भाग लिया।

4.19 आई एन एस ब्यास ने 29-30 मार्च 2016 को क़तर मे आयोजित दोहा अंतराष्ट्रीय समुद्री रक्षा प्रदर्शनी मे भाग लिया।

4.20 आई एन एस सुमेधा को अंतराष्ट्रीय बेड़ा समीक्षा मे भाग लेने के लिए अप्रैल 2016 मे इंडोनेशिया के पड़ांग मे तैनात किया गया।

4.21 आई एन एस ऐरावत ने समुद्री सुरक्षा और आतंक रोधी विषय पर 2 से 10 मई 2016 तक ब्रुनई और सिंगापुर मे आयोजित एडीएमएम प्लस युद्धाभ्यास में हिस्सा लिया। भारत के एक्ट ईस्ट पॉलिसी के अनुसरण में भारतीय नौसेना पिछले दो वर्ष से लगातार एडीएमएम प्लस अभ्यास में भाग लेती रही है।

4.22 जुलाई 2016 में भारतीय नौसेना पोतों के केलांग पत्तन पर आगमन के दौरान मलेशिया के समुद्र मे रॉयल मलेशियन नेवी के साथ प्रथम टेबल टॉप एक्सरसाइज का आयोजन किया गया।

4.23 **पूर्वी बेड़े की विदेशों मे तैनाती ओ एस डी:** भारतीय नौसेना पोत सतपुरा शक्ति सहयाद्रि और किर्च मई से जुलाई 2016 के दौरान ओ एस डी के लिए तैनात किए गए। इस तैनाती को राजदूत-16 नाम दिया गया और यह दक्षिण पूर्ण एशिया के समुद्री पड़ोसी देशों के साथ संपर्क साधने के लिए निरंतर चलने वाली प्रक्रिया हैं। भारतीय नौसेना पोतों ने कैम रन्ह बे (वियतनाम) सुबिक बे (फिलीपीन्स) सेसेबो (जापान) बुसान (दक्षिण कोरिया) और केलांगफि (मलेशिया) में पोर्ट कॉल किए।

4.24 **पश्चिमी बेड़े की विदेशों में तैनाती (ओ एस डी):** भारतीय नौसेना पोत विक्रमादित्य और मैसुर को जनवरी 16 के अंत से फरवरी 2016 तक श्री लंका और मालदीव मे तैनात किया गया। भारतीय नौसेना पोत दीपक, तरकश और दिल्ली को मई 2016 में दुबई कुवैत मनामा और मस्कट मे तैनात किया गया। भारतीय नौसेना पोत गंगाा और त्रिकंड 20 से 30 मई 2016 तक ईरान में तैनात किए गए। भारतीय नौसेना पोत आदित्य, त्रिकंड और कोलकाता ने अगस्त से अक्तूबर 2016 तक हिन्द महासागरीय क्षेत्र और पूर्वी अफ्रीका में स्थित पत्तनों का दौरा किया जहाँ मॉरीशस तट रक्षक बल पोत बाटाकुडा को तकनीकी सहायता और मेडागास्कर के एंबीलोबे मे घटित अग्नि त्रासदी के पीडितों को मानवीय सहायता पहुँचाई गई। इसके अतिरिक्त सेशेल्स मॉरीशस और केन्या की नौसेना तट रक्षक बलों के साथ पासेक्स संपन्न किया गया।

4.25 अगस्त 2016 में आई एन एस सतपुरा वह प्रथम भारतीय नौसेना पोत था जिसने मार्शल दीप समूह के मेजुरो और माइक्रोनेशिया के पोहनपेई पत्तनो पर प्रथम पोर्ट कॉल किया। इस तैनाती का उद्देश्य प्रशांत दीप समूह के देशों के साथ बेहतर पारस्परिक संबंध बनाने और मित्रता कायम करने का था।

4.26 अंतराष्ट्रीय बेड़ा समीक्षा मे भाग लेने के लिए आई एन एस सुमित्रा को न्युजीलैंड के ऑकलैंड मे 18 से 22 नवम्बर 2016 तक तैनात किया गया। इस पोत ने नवम्बर 2016 में ऑस्ट्रेलिया के सिडनी मे संपन्न हुए भारत-ऑस्ट्रेलिया के द्विपक्षीय संबंधों के स्वर्ण जयती समारोह मे भी लिया। तैनाती के दौरान इस पोत ने फिजी के सुवा और इंडोनेशिया के सुराबाया की भी यात्रा की।

4.27 पहली प्रशिक्षण स्क्वाड्रन के भारतीय नौ सेना पोतों ने कैडेटों के समुद्री प्रशिक्षण के हिस्से के रूप मे मार्च अप्रैल 2016 मे थाईलैंड और श्रीलंका ताथ अक्तूबर नवंबर 2016 मे थाईलैडं म्यांमार और बंग्लादेश का दौरा किया।

अंतरराष्ट्रीय बेड़ा समीक्षा 2016

4.28 **अंतरराष्ट्रीय बेडा समीक्षा 2016:** अंतरराष्ट्रीय बेड़ा समीक्षा 2016 का आयोजन विशाखापत्तनम के रामकृष्ण समुद्रतट पर किया गया। इस आयोजन मे 6 दस्तों में लंगर डाले हुए 70 पोतों और संभारिकी / सुरक्षा ग्रुप के 11 पोतों समेत कुल 97 पोतों ने भाग लिया। आई एफ आर 16 में लगभग 50 देशों से आई 21 विदेशी नौसेनाओं के 24 पोतों 22 नौसेनाध्यक्षों और लगभग 50

देशों के 26 प्रतिनिधिमंडलों ने हिस्सा लिया। राष्ट्रपति द्वारा समीक्षा के अतिरिक्त नौसेनाध्यक्षों तथा अफसरो और नौसैनिकों के मध्य अलग से परस्पर संवाद और आदान प्रदान किए गए। अनेक विदेशी युद्वपोतों के उनके अपने देश के लिए वापस प्रस्थान करने से पहले 09 फरवरी 2016 को उनके साथ मार्ग अभ्यास (पेसेक्स) किए गए।

आईएफआर-16 चार्ट का अनावरण करते हुए

4.29 नवीन प्रयोगों को प्रदर्शित करने तथा राष्ट्र द्वारा स्वदेशीकरण / स्वाावलंबन के प्रयासों को दर्शाने के लिए आंध्र विश्वविद्यालय के मैदान पर स्थित अंतरराष्ट्रीय बेड़ा समीक्षा ग्राम ने एक समुद्री प्रदर्शनी का आयोजन आई एफ आर 16 के एक हिस्से के रूप मे किया गया। इस प्रदर्शनी मे भारतीय नौसेना के अतिरिक्त निजी और सार्वजानिक भारतीय उद्योगों शिपयार्डो तथा शैक्षाणिक संस्थानों ने हिस्सा लिया।

राष्ट्रपति समीक्षा दस्ता

4.30 रक्षा मंत्री ने 7 फरवरी 2016 को विशाखापत्तनम में अन्तर्राष्ट्रीय नौसेना सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस आयोजन में आई एफ आर 16 में भाग लेने वाले राष्ट्रो के गणमान्य व्यक्तियों एंव रक्षा मंत्रालय एंव तीनों सेनाओं के पदाधिकारियों ने भाग लिया।

प्रमुख अभ्यास

4.31 अप्रैल 2016 मे अंडमान एंव निकोबार द्वीप समूह मे जल प्रहार नामक जल-थल अभ्यास किया गया। इस अभ्यास में भारतीय नौसेना के जल-थल पोत/वायुयान/हेलीकॉप्टर, भारतीय सेना के सैनिको/साजौ सामान तथा भारतीय वायु सेना के वायुयान/हेलीकॉप्टरों ने भाग लिया।

जल प्रहार अभ्यास के दौरान जलथल प्रहार

4.32 नवंबर 2016 में पश्चिमी सी बोर्ड पर पश्चिम लहर युद्धाभ्यास किया गया। इस युद्धाभ्यास में नौसेना वायुसेना तथा तटरक्षक बल के 30 पोतों 3 पनडुब्बियों 5 इमीडिएट सपोर्ट वैसल तथा 37 वायुयानों ने भाग लिया।

4.33 मई 2016 मे सातवीं खोज एंव बचाव वर्कशॉप तथा युद्धाभ्यास 2016 [सारेक्स-16] का आयोजन किया गया जिससे समुद्र मे खोज एंव बचाव की तैयारी तथा जवाबी उपाय की जाँच की जा सके। तटरक्षक दल ने अभ्यास का परिचालन किया तथा भारतीय नौसेना तथा तटरक्षक बल ने इस युद्धाभ्यास मे समन्वित रूप से भाग लिया। नौ समुद्री राष्ट्रों के 25 अन्तर्राष्ट्रीय पर्यवेक्षकों ने समुद्र में इस अभ्यास को देखा।

4.34 अप्रैल 2016 में समुद्र में बचे लोगों का पता लगाने के लिए भारतीय नौसेना एंव भारतीय वायु सेना द्वारा खोज नामक संयुक्त युद्धाभ्यास किया गया। इस युद्धाभ्यास मे भारतीय नौसेना के हेलीकॉप्टरों तथा भारतीय तट रक्षक बल एंव भारतीय वायु सेना के वायु कर्मी दल ने भाग लिया।

खोज तथा बचाव युदाभ्यास खोज

हिन्द महासागर क्षेत्र में तटवर्ती नौसेनाओं के साथ समन्वित गश्त (कारपेट)

4.35 सन 2013 से भारतीय नौसेना तथा म्यांमार नौसेना ने प्रति वर्ष समन्वित गश्त की है। फरवरी 12-18, 2016 को चौथी कॉर्पेट आयोजित की गई, जिसका उद्घाटन 12, फरवरी 2016 को पोर्ट ब्लेयर में किया गया।

4.36 सन 2005 से नियमित रूप से हिन्द-थाई समन्वित गश्त नियमित रूप से आयोजित किए जा रहे हैं। प्रत्येक वर्ष दो कॉर्पेट किए जा रहे है और अब तक कुल 23 कॉर्पेट किए गए है। सन 2016 मे 22वां कॉर्पेट अप्रैल 2016 में तथा 23वा कॉर्पेट नवम्बर 2016 मे आयोजित किया गया।

4.37 जनवरी 2001 मे भारत एवं इंडोनेशिया के मध्य रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर होने के परिणामस्वरूप आवधिक समन्वित गश्तों के रूप मे दो राष्ट्रों की नौसेनाओं मे पारस्परिक क्रिया मे गौरतलब वृद्धि हुई है। इंड-इंडो कॉर्पेट नामक इस गश्त को आई एम बी एल के साथ हर वर्ष मार्च/अप्रैल तथा सितंबर/अक्तूबर में किया जाता है। अब तक 28 कॉर्पेट किए जा चुके है। इनके साथ ही 27वां तथा 28वां कॉर्पेट को क्रमश: अप्रैल-मई 2016 तथा अक्तूबर में किया जा रहा है। साथ ही अक्तूबर 2016 मे 28वें कॉर्पेट चक्र के साथ इंड इंडो द्विपक्षीय युद्धाभ्यास के द्वितीय चरण को क्रियन्वित किया गया।

28वें इन्ड-इन्डो कॉर्पेट के दौरान संयुक्त समन्वित गश्त

विदेशी सहयोग

4.38 जनवरी 2016 में भा नौ पो सतलज को मक्वानी बंदरगाह तंजानिया के रास्तों के सर्वेक्षण के लिए मेजबान सरकार के अनुरोध पर तैनात किया गया। इसके अतिरिक्त हाइड्रोग्राफी के क्षेत्र मे बेहतर सहयोग देने के लिए मार्च 2016 मे प्रथम संयुक्त इंडो तंजानिया हाइड्रोग्राफी सम्मेलन दारे सल्लाम तजानियां मे आयोजित किया गया।

प्रथम भारत-तंजानिया संयुक्त जल सर्वेक्षण बैठक

4.39 भारतीय नौसेना की हाइड्रोग्राफी सर्वेक्षण टीम ने दिसंबर 2015 से अप्रैल 2016 तक अंटार्कटिका मे आयोजित 35वें भारतीय वैज्ञानिक अभियान मे भाग लिया जिसमें भारतीय खाड़ी क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया।

4.40 मॉरीशस कोस्ट गार्ड के लिए गोवा, शिपयार्ड लिमिटेड मे निर्मित दो मे से एक वाटर जेट फास्ट पैट्रोल वैसल को सितंबर 2016 मे सुपुर्द किया गया। 'विक्टरी' नामक इस पोत के निर्माण का पर्यवेक्षण भारतीय नौसेना ने किया।

मॉरीशस तटरक्षक पोत 'विक्टरी' की सुपुर्दगी

4.41 भारतीय नौसेना ने आस्ट्रेलिया, इजराइल, जापान, मालदीव (आरंभिक) मलेशिया, म्यांमार, श्री लंका, सिंगापुर, थाइलैंड, युनाइटेड किंगडम, युनाइटेड स्टेट्स तथा वियतनाम (आरंभिक) से नौसेना सहयोग तथा द्विपक्षीय मामलों पर स्टाफ स्तर पर बातचीत की। इस स्टाफ स्तरीय बातचीत मे हाइड्रोग्राफी मे सहयोग प्रशिक्षण और व्हाइट शिपिंग इंफोरमेशन तथा द्विपक्षीय युद्धाभ्यासों का आयोजन करने जैसे मामलों पर चर्चा की गई।

4.42 वियतनाम पीपल्स नेवी ने 49 कार्मिको की एक टीम प्रतिनियुक्त की है इसमे सात अफसर तथा 42 एन सी ओ शामिल हैं जिन्हें एम-15 गैस तर्बाइन की मरम्मत एंव अनुरक्षण के लिए 15 माह के प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए आई एन एस एक्सिला भेजा गया है। भारतीय नौसेना ने मेजबान के अनुरोध पर वीपीएन के लिए प्रशिक्षण प्रोग्राम पूरा कर लिया है।

कमीशनिंग

4.43 भा नौ पो, कदमत, जो कैमोरता श्रेणी के एंटी सबमरीन युद्ध कोरवेट का द्वितीय पोत है को नौसेनाध्यक्ष ने 7 जनवरी 2016 को विशाखापत्तनम में कमीशन किया और ये राष्ट्र की जटिल आयुध प्रणाली तथा उपस्करों को विकसित करने की क्षमता दर्शाते है।

4.44 भा नौ पो चैन्ने, कोलकाता वर्ग की विध्वंसक श्रेणी के तीसरे पोत को रक्षा मंत्री ने नवंबर 21 को मुंबई में कमीशन किया। इसका डिजाइन नौसेना के इन हाउस संगठन नौसेना डिजाइन निदेशालय ने तैयार किया तथा इसका निर्माण मझगाँव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड मुंबई मे किया गया। इस पोत में उन्नत हथियार एंव सेंसर लगे हुए हैं। आत्मनिर्भरता के जरिए समुद्री सुरक्षा की राष्ट्रीय संकल्पना को साकार करते हुए कोलकाता श्रेणी के पोतों मे दिल्ली श्रेणी के पोतों की तुलना मे उच्च दर्जे का स्वदेशीकरण किया गया हैं।

4.42 दो वाटर जेट फास्ट अटैक क्रॉफ्ट आई एन एस तारमुगली तथा आई एन एस तिहायु को क्रमशः 6 और 21 अक्तूबर 2016 को विशाखपत्तनम में कमीशन किया गया। मेसर्स जी आर एस ई कोलकाता द्वारा डिजाइन एंव निर्मित ये पोत भारतीय नौसेना की स्थानीय नौसेना प्रतिरक्षा तथा तटीय सुरक्षा संबंधी प्रयासों को बढाएगें।

4.46 नौसेनाध्यक्ष ने 12, जुलाई 2016 को विशाखापत्तनम में भा नौ पो कर्ण नामक नौसेना बेस को कमीशन प्रदान किया, भा नौ पो कर्ण पूर्वी तट पर समुद्री कमांडो के लिए संक्रियात्मक बेस के रूप मे कार्य करेगा।

नौसेना विमानन

4.47 आज नौसेना विमानन आधुनिकीकरण के निर्णायक मोड़ पर खड़ी है। भावी शक्तिशाली, पेशेवर तौर पर सक्षम तथा संक्रियात्मक रूप से तैयार वायु सेनांग सुनिश्चित करने के हमारे प्रयासो के तौर पर अनेक पहल की गई हैं। इसके लिए पी 81, हॉक ए जी टी

तथा मिग-29 के लड़ाकू विमान जैसे आधुनिक तथा अत्याधुनिक वायुयान शामिल किए गए हैं।

4.48 मिग 29 के बहु भूमिका वाले पोत आधारित लड़ाकू विमान हैं और वर्तमान मे भारतीय नौसेना मिग 29 केयुबी वायुयान के दो स्क्वाड्रेनों को ऑपरेट कर रही हैं। आई एन ए एस 303 अग्र पंक्ति का संक्रियात्मक लड़ाकू स्क्वॉड्रन है जो जनवरी 2014 से भा नौ पो विक्रमादित्य से पोतारोहण संक्रिया कर रहा है। प्रशिक्षण स्क्वाड्रन आई एन ए एस 300 को गोवा मे मई 2016 करे कमीशन किया गया और यह मिग 29 केकेयूबी पर लड़ाकू पायलट प्रशिक्षण देता है। सभी 45 मिग 29 के विमानों की सुपुर्दगी पूरी कर ली गई है।

मिग 29 के लड़ाकू विमान

4.49 पी 8 आई लम्बी दूरी की समुद्री टोही लांग रेज मैरिटाइम रिकॉनिसेंस तथा पनडुब्बी रोधी युद्धपद्धति एंटी सबमैरीन वारफेयर एल आर एम आर ए एस डब्ल्यू वायुयान को भारतीय नौसेना में शामिल किए जाने से भारतीय समुद्री निगरनी क्षमता बढ़ी है सभी आठ वायुयानों को भारतीय नौसेना मे शामिल किया जा चुका है और उनका इष्टतम प्रयोग किया जा रहा है।

4.50 विशाखापत्तनम स्थित हॉक एडवांस्ड जेट ट्रेनर्स स्क्वॉड्रन लड़ाकू पायलटों को प्रशिक्षण देता है तथा यूनिटों के अन्य कार्यों को भी करता है। सभी 17 हॉक एम के 132 ए जे टी जिनकी संविदा हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड से की गई है को भारतीय नौसेना को सुपुर्द कर दिया गया है और उनका इष्टतम प्रयोग किया जा रहा है।

महत्वपूर्ण घटनाएं

4.51 3 अगस्त 2016 को भारी वर्षा के दौरान महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के माहद मे सावित्री नदी पर बना पुल टूट गया था तथा कुछ वाहन इसमे गिर गए जिसकी वजह से कई जाने गई। भारतीय नौसेना ने अगस्त 3-14, 2016 खोज ऑपरेशन के लिए 3 जेमिनी विमान तथा दो सी किगं हेलिकॉप्टर के साथ 22 कार्मिको की एक विशेषज्ञता प्राप्त गोताखोर टीम को प्रतिनियुक्त किया। भारतीय नौसेना की इस गोताखोर टीम ने नदी से डूबे राज्य सरकार की दो बसों, एक एस यू वी तथा 14 व्यक्तियों को बाहर निकालने मे मदद की।

4.52 24, जून 2016 को किल्तान तथा अगाती द्वीपों से गंभीर रूप से बीमार मरीजों को चिकित्सकीय उपचार हेतु बाहर निकाल कर कोच्चि लाने के लिए एक डार्नियर तथा एक ए एल एच को लक्षद्वीप द्वीपसमूह में तैनात किया गया।

एलएंडएम द्वीप समूहों से चिकित्सीय उपचार हेतु निकासी

4.53 प्रोजेक्ट 15 बी के द्वितीय पोत यार्ड 12705 (मोरमेगोवा) 11, सितंबर 2016 का जलावहित किया गया। पोत का डिजाइन भारतीय नौसेना के इन हॉउस संगठन नौसेना डिजाइन निदेशालय ने तैयार किया तथा यह कोलकाता वर्ग के गाइडेड मिसाइल विध्वंसक का परवर्ती संस्करण है। एम डी एल मुंबई इन पोतों का निर्माण कर रहा है। सीरिज उत्पादन के लाभ को बढाने के लिए पी 15 बी पोत का डिजाइन तो पी-15 ए पोत जैसा ही है फिर भी इन पोतों की आयुध प्रणाली एंव सेंसर सूट बेहतर एंव अत्याधुनिक है जिनके कारण ये विश्व मे सर्वाधिक शक्तिशाली प्लैटफार्मों मे से एक बन जाते हैं।

4.54 बढ़ते हुए प्रशिक्षण भार को कम करने तथा समय सारणी परीक्षा तैयार करने, परीक्षा निरीक्षण और मूल्यांकन करने के भार कम करने के लिए भारतीय नौसेना मे सभी अर्हता पाठ्यक्रमों के लिए ऑनलाइन परीक्षा आयोजित करने की योजना तैयार की गई हैं। इस के अनुसरण में 7, जनवरी 2016 को भा नौ पो शिवाजी मे 50 थिन क्लाइंट्स के साथ ''परीक्षा'' नामक आनॅलाइन परीक्षा केन्द्र को आरंभ किया गया है।

5

भारतीय वायुसेना

अध्याय 5

भारतीय वायुसेना

5.1 भारतीय वायु सेना आधुनिकीकरण के पथ पर अग्रसर है और पूरी क्षमता के साथ स्वयं को एक सामरिक वांतरिक्ष शक्ति में परिवर्तित कर रही है। अपनी संक्रियात्मक क्षमता और प्रभाविता को मजबूत करने के लिए नए-नए उपस्कर शामिल कर क्षमता में वृद्धि करने, पुराने उपस्करों के स्थान पर अत्याधुनिक उपस्कर शामिल करने और विरासत में प्राप्त हथियारों को अपग्रेड करने के लिए मंच तैयार किए गए हैं। आगे आने वाले दौर में राफेल वायुयान, अटैक हेलिकॉप्टर, हैवी लिफ्ट हेलिकॉप्टर, फोर्स इन्हैन्सर, सतह से हवा में मार करने वाले हथियार और हवाई रक्षा रडार हासिल करना भविष्य के लिए वरदान साबित होना। भारतीय वायु सेना की पहली तेजस स्क्वाड्रन शामिल होना भी राष्ट्रीय गौरव की बात है। इसके साथ ही, हवाई मैदानों की आधारिक संरचना के आधुनिकीकरण कार्यक्रम और संचार नेटवर्क में अपग्रेडेशन से कारगर ऑपरेशनों के लिए सहायक ढांचे को मजबूती मिली है। अपने आधुनिकीकरण के दौरान भारतीय वायु सेना ने 'मेक इन इंडिया' योजना में सक्रिय और सतत योगदान दिया है ताकि अन्य वैमानिकी उपस्करों के अतिरिक्त लड़ाकू वायुयान, हेलिकॉप्टरों, वेपन सेंसरों और सिस्टमों के स्वदेशी उत्पादन को आगे बढ़ाया जा सके। सजग और समृद्ध घरेलू विमानन क्षमता से हमें सामरिक सैन्य स्वतंत्रता हासिल होगी और इससे हमारी आर्थिक वृद्धि को भी बढ़ावा मिलेगा।

5.2 वांतरिक्ष क्षेत्र में आत्मनिर्भरता भारतीय वायु सेना के लिए एक महत्वपूर्ण परिणामी क्षेत्र है। अनुसंधान और विकास के क्षेत्र के साथ-साथ निर्माण क्षेत्र में तेजी से कदम बढ़ाए हैं ताकि विदेशी स्रोतों पर निर्भरता को कम किया जा सके। रक्षा निर्माण क्षेत्र में 'मेक इन इंडिया' पहल को बढ़ावा देने और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए, भारत में निर्मित उपस्कर को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है।

शामिल और अपग्रेड करना (कोटि उन्नयन)

5.3 **एस यू.30 एम के आई:** भारतीय वायु सेना में एस यू.30 एम के आई वायुयान को शामिल करने की प्रक्रिया जारी है और भारतीय वायु सेना में पहले से ही कई स्क्वाड्रन ऑपरेशनल हैं। एस यू.30 एम के आई वायु यान की मौजूदा खेप का प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के माध्यम से एच ए एल में निर्माण किया जा रहा है। उन्नत स्वदेशी हथियार जैसे ब्रहमोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल और 'अस्त्र बियोन्ड विजुअल रेंज (बीवीआर)' मिसाइलें तैयार की जा रही हैं और वायुयान से इनका टेस्ट फायर किया जा रहा है।

एसयू 30 एमकेआई

5.4 **तेजस लाइट कॉम्बेट एयरक्राफ्ट:** लाइट कॉम्बेट एयरक्राफ्ट (एलसीए) तेजस वायुयान के साथ भारतीय वायु सेना की पहली लड़ाकू स्क्वाड्रन 1 जुलाई,

तेजस

राफेल

2016 को गठित की गई। लाइट कॉम्बेट एयरक्राफ्ट (एलसीए) 'तेजस' एक ऐसा पहला उन्नत लड़ाकू वायुयान है जिसे भारत में डिजाइन, विकसित और निर्मित किया गया। इसे कम्प्यूटर की सहायता से ऑपरेट (फ्लाई बाई वायर) किया जा सकता है। तेजस चौथी पीढ़ी का वायुयान है जिसमें ग्लास कॉकपिट लगा है। यह अत्याधुनिक सैटेलाइट ऐडेड इनर्शियल नेवीगेशन सिस्टम से सुसज्जित है। तेजस ने राष्ट्रीय नेतृत्व और विश्व को अपनी परिचालन एवं संक्रियात्मक क्षमता का परिचय देते हुए 21-33 जनवरी 2016 में बहराइन में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय हवाई प्रदर्शन में में सफलतापूर्वक भाग लिया और मार्च, 2016 में आयरन फिस्ट अभ्यास 2016 में भी भाग लिया।

5.5 **राफेलः** उड़ान भरने की स्थिति में, 36 राफेल वायुयान की खरीद के लिए भारत सरकार और फ्रांस गणराज्य के बीच अंतर सरकारी अनुबंध पर 23 सितम्बर, 2016 को हस्ताक्षर किए गए हैं। राफेल आधुनिकतम वायुयानों में से एक है जिससे भारतीय वायु सेना की मारक क्षमता बढ़ेगी और दुश्मन पर बढ़त हासिल होगी।

5.6 **सी-130 जेः** भारतीय वायु सेना ने पहले ही सी-130जे वायुयान हासिल कर लिया है और शेष वायुयानों की डिलीवरी जुलाई, 2017 तक पूरी होने की संभावना है। बेड़े के लिए नाइट विजन गोगल्स की खरीद की जा रही है जिससे रात में वायुयान की संचालन क्षमता में वृद्धि होगी। सी-130 ने नेपाल, चेन्नई तथा माले इत्यादि में मानवीय सहायता और आपदा राहत अभियानों में असाधारण सेवा प्रदान की है।

सी-130जे

5.7 **अपाचे अटैक हेलिकॉप्टरः** भारत सरकार और संयुक्त राज्य सरकार (सं रा स) के बीच अनुबंध पत्र पर 28 सितम्बर 2015 को हस्ताक्षर किए गए थे और ए एच 6ई अपाचे हेलिकॉप्टरों के प्रापण के लिए अमरीका की बोइंग कंपनी के साथ संविदा पर भी हस्ताक्षर किए गए। हेलिकॉप्टरों की डिलीवरी जुलाई 2019 में आरंभ

एएच 6ई अपाचे

होगी और मार्च 2020 तक पूरी होने की संभावना है। अपाचे हेलीकॉप्टर के इसके उन्नत फायर कंट्रोल रडार और घातक हथियारों से युद्ध क्षेत्र में भू लक्ष्यों, रडार और दुश्मन के आर्मर के विरूद्ध मारक क्षमता में वृद्धि होगी।

5.8 **चिनूक हैवी लिफ्ट हेलिकॉप्टर:** भारतीय वायु सेना सीएच-47 एफ(आई) चिनूक हैवी लिफ्ट हेलिकॉप्टरों का प्रापण कर रही है। इन हेलिकॉप्टरों की डिलीवरी मार्च, 2020 तक पूरी होने की संभावना है। भारतीय वायु सेना को ये हेलीकॉप्टर भारी लोड दुर्गम क्षेत्रों तक ले जाने की विलक्षण क्षमता प्रदान करेगा। मानवीय सहायता और आपदा राहत ऑपरेशनों (एचएडीआर) के लिए भी ये एक महत्वपूर्ण परिसंपत्ति होंगे।

चिनूक

5.9 **एयरक्राफ्ट अपग्रेड:** विभिन्न बेड़ों की क्षमताओं में वृद्धि करने और उनकी संक्रियात्मक महता सुनिश्चित करने के लिए व्यापक उन्नत कार्यक्रम चिन्हित किए गए हैं। मिराज 2000 और मिग 29 वायुयानों को अपग्रेड किए जाने का कार्य प्रगति पर है और अपग्रेड किए गए कुछ वायुयान भारतीय वायु सेना में पहले से ही प्रचालन में हैं। जगुआर वायुयान का डीएआर आईएन III अपग्रेड के लिए आईओसीडी एंड डी पूरी हो गई है और सीरीज अपग्रेड प्रगति पर है। एन एन 32 का पुन: सज्जित करने का कार्य भी प्रगति पर है। भारतीय वायु सेना से अपने आईएल-76/78 बेड़े, एमआई-17 हेलिकॉप्टरों को भी अपग्रेड करेगी और एसयू-30 एमकेआई वायुयान की क्षमताओं में वृद्धि की जाएगी।

मिराज 2000

हथियार और मिसाइल

5.10 **हथियार:** हथियार उन्नत बनाने के लिए अत्याधुनिक प्लेटफार्मों को भारतीय वायु सेना में शामिल किया जा रहा है, उच्च परिशुद्धता और घातक क्षमता वाले आधुनिक हथियारो को शामिल किया जा रहा है। बियोन्ड विजुअल रेंज मिसाइलें, सटीक मारक क्षमता वाले हथियार, स्मार्ट बम, एंटी-शिप मिसाइलें आदि को प्राप्त किया जा रहा है। डी एंड डी और आधुनिक हथियारों का स्वदेश में उत्पादन पर बल दिया जा रहा है।

बी वी आर मिसाइल

5.11 **ब्रहमोस सतह से सतह मिसाइल फायरिंग:** भारतीय वायु सेना ने 27 मई 2017 को पोखरन फील्ड फायरिंग रेंज में सतह से सतह पर प्रहार करने वाली पहली ब्रहमोस मिसाइल को सफलतापूर्वक दागा।

5.12 **एमआईसीए हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलः** भारतीय वायु सेना ने अपग्रेड एयरक्राफ्ट मिराज 2000 से एक युक्ति चालन लक्ष्य (मनुवरिंग टारगेट) पर लबी रेंज की बियोन्ड विजुअल रेंज' हवा से हवा में मार करने वाली एमआईसीए मिसाइल को सफलतापूर्वक दागा। छोटे लक्ष्य के साथ संलिप्त जटिलताओं के बावजूद मिशन को अत्यंत सटीकता के साथ अंजाम दिया गया। ऑनबोर्ड प्रणालियों द्वारा प्रस्तुत लांच रेंजों को मान्यता प्रदान की गई और इस मिशन की सफलता के साथ भारतीय वायु सेना विश्व की उन चुनिंदा वायु सेनाओं में शामिल हो गई है जिनके पास ऐसी लंबी दूरी की हवा से हवा में प्रहार करने वाली मिसाइलों की क्षमता है।

एमआईसीए मिसाइलों के साथ मिराज 2000 अपग्रेड एयरक्राफ्ट

5.13 **मध्यम दूरी की सतह से हवा में प्रहार करने वाली मिसाइल (एमआरएसएएम):** एमआरएसएएम डीआरडीओ का इजराइल केसाथ एक संयुक्त डी एंड डी प्रोजेक्ट है। एमआरएसएएम अत्यंत नीचे से अधिक ऊंचाई पर और बहुत नजदीक से मध्यम दूरी के लक्ष्यों को इंगेज करने में सक्षम है। यह अपने एंगेजमेंट जोन के तहत जिसमें सघन जैमिंग वातावरण की स्थिति एवं अत्यंत नीचे रडार क्रास सेक्शन भी शामिल है, उनमें दुश्मन के सभी प्रकार के लक्ष्यों को भेद सकेगी।

एमआरएसएएम

5.14 **स्पाइडर एलएलक्यूआरएम प्रणालीः** भारतीय वायु सेना स्पाइडर लो लेवल क्विक रिएक्शन सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली को शामिल करने की प्रक्रिया में है जो पाइथन 5 और डर्बी मिसाइल से लैस है। यह दुश्मन के एयरक्राफ्ट, हेलिकॉप्टर, क्रूज मिसाइलों, मानवरहित हवाई वाहन (यूएवी) और प्रिसीजन गाइडेड म्यूनिसन्स (पीजीएम) के विरुद्ध जवाबी हमला करने की बेहतर प्रणाली है। यह प्रणाली लघु से मध्यम रेंज के इंटरसेप्ट के लिए संक्रियात्मक लचीलापन और मल्टी शॉट क्षमता प्रदान करती है। यह प्रणाली बहुलक्ष्य भेदी घातक आक्रमणों की व्यापक प्रतिक्रिया देती है।

स्पाइडर

5.15 **आकाश मिसाइल प्रणालीः** भारतीय वायु सेना ने पहले से ही सतह से हवा में मार करने वाली स्व्देशी

आकाश मिसाइल

लघु रेंज की आकाश मिसाइल प्रणाली के लिए अनुबंध किया है। इस प्रणालियों की डिलीवरी का काम प्रगति पर है। भविष्य में भारतीय वायु सेना की आकाश मिसाइल प्रणाली के उन्नत रूप की फायरिंग यूनिट को शामिल करने की योजना है। ये मिसाइल प्रणालियां हमारे प्रमुख क्षेत्रों और प्रमुख स्थानों को हवाई रक्षा प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण घटक हैं।

वायु रक्षा रडार

5.16 निगरानी और पता लगाने की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए भारतीय वायु सेना में कई रडार ऑपरेशन में लगाया गया है। पिछले कुछ वर्षों में भारतीय वायु सेना में मध्यम क्षमता रडार, निम्न स्तर ट्रैकिंग रडार तथा निम्न स्तर के हल्के रडार शामिल किए गए हैं।

वायु रक्षा रडार

5.17 **मध्यम क्षमता रडार (एमपीआर):** हाल ही में मध्यम क्षमता के रडारों को भारतीय वायु सेना में शामिल किया गया है। एमपीआर चरणबद्ध अलंकृत तकनीक के साथ ठोस अवस्था के टीआर मॉड्यूलों पर आधारित होते हैं। इन रडारों के डिजिटल आउटपुट को भारतीय वायु सेना की एकीकृत वायु कमान तथा नियंत्रण प्रणाली (आईएसीसीएस) से जोड़ा गया है।

5.18 **लो लेवल ट्रांसपोर्टेबल रडार:** बॉर्डर के साथ लो लेवल रडार की कमी को पूरा करने के लिए, लो लेवल के नएट्रांसपोर्टेबल रडारों (एलएलटीआर) को भारतीय वायु सेना में शामिल किया जा रहा है। ये रडार मोबाइल रडार है और संक्रियात्मक जरूरतों के अनुसार इन्हें कहीं भी तैनात किया जा सकता है। एलएलटीआर मोबाइल संचार प्रणाली से सुसज्जित है जो लैंडलाइन और सैटकॉम (एसएटीसीओएम) कनेक्टिविटी को दूरसस्थ स्थान से कमान और नियंत्रण (सी 2) केन्द्र को जोड़ता है।

लो लेवल ट्रांसपोर्टेबल रडार (एलएलटीआर)

5.19 **लो लेवल लाइट वेट रडार:** मोबाइल ऑब्जर्वेशन फ्लाइटों (एमओएफ) को इलैक्ट्रॉनिक आंख प्रदान करने के लिए लो लेवल के लाइट वेट रडार शामिल किए

मध्यम क्षमता के रडार (एमपीआर)

लो लेवल लाइट वेट रडार (एलएलएलडब्ल्युआर)

जा रहे हैं। ये फ्लाइटों की लो लेवल एरियल संकट के लिए स्कैन करते हैं और समय पूर्व चेतावनी दी जाती है। प्रारंभ में ये रडार आयात किए जाते थे, परंतु अब ये देश में ही मैसर्स बीईएल द्वारा निर्मित किए जा रहे हैं।

अभ्यास

5.20 **अभ्यास-आयरन फिस्ट 2016** भारतीय वायु सेना ने 18 मार्च, 2016 को पोखरन फील्ड फायरिंग रेंज, राजस्थान में फायर शक्ति प्रदर्शन अभ्यास आयरन फिस्ट 2016 आयोजित किया गया। इस अभ्यास में लड़ाकू, परिवहन, प्रशिक्षक वायुयान तथा हेलीकॉप्टरों ने भाग लिया। पहली बार मिग 29 अपग्रेड वायुयान से स्वदेशी बियोन्ड विजुअल रेंज (बीवीआर) हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइल 'अस्त्र आर-73 एएएम और लाइट कॉम्बेट हेलीकॉप्टर से 70 एमएम रॉकेट की फायरिंग का प्रदर्शन किया गया। इसके अलावा रात में एम आई-17 वी 5 हेलिकॉटर द्वारा स्वत: बमबारी, सतह से सतह मार करने वाली 'आकाश' मिसाइल की फायरिंग और सी-17 से पैरा-ड्रॉप का भी प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

एयरोस्पेस संग्रहालय

5.21 **एयरोस्पेस संग्रहालय:** वायुसेना स्टेशन, पालम में 43 एकड़ रक्षा भूमि पर एयरोस्पेस संग्रहालय बनाए जाने की योजना है। भारतीय वायुसेना के समृद्ध इतिहास को दर्शाने वाला यह एक विश्व स्तरीय संग्रहालय होगा।

(प्रस्तावित एयरोस्पेस स्टेशन का हवाई दृश्य)

स्वदेशीकरण

5.22 भारतीय वायुसेना के मुख्य क्षेत्रों में से एक रक्षा उपस्करों के आयात पर निर्भरता को कम करना और स्वदेशीकरण तथा रक्षा उपस्करों में विनिर्माण का समर्थन करना रहा है। जबकि हल्के लड़ाकू विमान, आकाश मिसाइल और उन्नत हल्के हेलिकॉप्टरों को पहले ही शामिल किया जा चुका है। भारतीय वायुसेना हल्के लड़ाकू हेलिकॉप्टरों, स्वदेशी रिमोटली पायलेटेड विमानों, मध्यम क्षमता के रडारों, लो लेवल ट्रैकिंग रडारों और कई आयुधों और अन्य प्रणालियों के अभिकल्पन और विकास में सक्रिय सहायता प्रदान कर रही है।

हल्के लड़ाकू हेलिकॉप्टर

5.23 **मेक इन इंडिया:** स्वदेशीकरण को बढ़ावा देने और रक्षा विनिर्माण आधार तथा पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने के लिए आधुनिकीकरण योजना चलाई जा रही है। भारतीय वायुसेना ने उन रक्षा उपकरणों की पहचान कर ली है जिनका मेड इन इंडिया के तहत विनिर्माण किया जा सकता है। भारत में रक्षा मंत्रालय भी रक्षा उपस्कर के उत्पादन में, के-226 टी हेलिकॉप्टर का निर्माण, उपयुक्त फाइटर वायुयान इत्यादि के निर्माण में निजी क्षेत्रों को शामिल करने पर विचार कर रहा है जिससे 'मेक इन इंडिया' पहल को प्रोत्साहन मिलेगा और इसने वैश्विक रक्षा हस्तियों को भारत में निर्माण कार्य की शुरुआत करने में जबरदस्त रुचि पैदा की है। यह न केवल रोजगार का सृजन एवं कौशल स्तर को बढ़ाएगा बल्कि देश में अंतरिक्ष क्षेत्र के विकास के लिए प्रमुख प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने में सहायता करेगा।

6

भारतीय तटरक्षक

अध्याय 6

भारतीय तटरक्षक

6.1 राजनीतिक मामलों संबंधी मंत्रिमंडल समिति द्वारा एक अंतरिम तटरक्षक संगठन स्थापित किए जाने के लिए अनुमोदन देने पर भारतीय तटरक्षक 1 फरवरी, 1977 को अस्तित्व में आया। तटरक्षक अधिनियम, 1978 के विधान के साथ ही इस सेवा की एक स्वतंत्र संगठन के रूप में 19 अगस्त, 1978 को औपचारिक रूप से स्थापना हुई। भारतीय नौसेना से प्राप्त दो फ्रिगेटों और सीमा शुल्क विभाग से प्राप्त पाँच गश्ती नौकाओं के साथ तटरक्षक ने 1978 में अपना सफर शुरू किया। अपनी स्थापना के समय से, भारतीय तटरक्षक ने शांति काल के दौरान उसे सौंपे गए कार्यों को पूरा करने तथा युद्ध के दौरान भारतीय नौसेना के प्रयासों की अनुपूर्ति करने के लिए सतह और वायुवाहित दोनों ही प्रकार की व्यापक क्षमताएं हासिल की हैं।

6.2 **संगठनः** तटरक्षक की कमान और नियंत्रण नई दिल्ली स्थित महानिदेशक, भारतीय तटरक्षक (डीजीआईसीजी) के द्वारा की जाती है। इस संगठन के गांधीनगर, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता और पोर्ट ब्लेयर स्थित 5 क्षेत्रीय मुख्यालय हैं। ये क्षेत्रीय मुख्यालय भारत के तटवर्ती राज्यों में स्थित चौदह तटरक्षक जिला मुख्यालयों के माध्यम से भारत की संपूर्ण तटरेखा से लगे समुद्र में कमान और नियंत्रण संभालते हैं। कमांडर तटरक्षक (पश्चिमी समुद्रतट) के पदनाम से अपर महानिदेशक (पश्चिम) का एक पद मुंबई में 04 मार्च 2015 को सृजित किया गया है। इसके अलावा, खोज एवं बचाव कार्य तथा समुद्री निगरानी के लिए पोतों व विमानों की प्रभावी रूप से तैनाती करने हेतु विभिन्न सामरिक स्थानों पर 42 स्टेशन, 2 वायु स्टेशन, 7 एयर एंक्लेव और 1 स्वतंत्र वायु स्क्वाड्रन स्थापित किए गए हैं।

6.3 **कार्य तथा प्रकार्यः** तटरक्षक को निम्नलिखित कार्य सौंपे गए हैः

(क) समुद्री क्षेत्रों में कृत्रिम द्वीपों, अपतटीय टर्मिनलों, संस्थापनाओं तथा अन्य संरचनाओं और साधनों की सुरक्षा तथा संरक्षा सुनिश्चित करना।

(ख) समुद्र में संकट के दौरान मछुआरों की सहायता करने सहित उनको संरक्षण प्रदान करना।

(ग) ऐसे उपाय करना जो समुद्री पर्यावरण की संरक्षा एवं सुरक्षा तथा समुद्री प्रदूषण के निवारण और नियंत्रण के लिए आवश्यक हों।

(घ) तस्करी-रोधी अभियानों में सीमा-शुल्क तथा अन्य प्राधिकरणों की सहायता करना

(ड.) समुद्री क्षेत्रों में उस समय लागू अधिनियमों के उपबंधों को प्रवर्तित करना।

(च) समुद्र में जान और माल की सुरक्षा करने के लिए उपायों सहित अन्य मामलों पर कार्रवाई करना तथा यथानिर्दिष्ट वैज्ञानिक आंकड़ों का संग्रहण करना।

6.4 समय के दौरान, भारतीय तटरक्षक को निम्नानुसार अतिरिक्त कार्य भी सौंपे गए हैंः

(क) राष्ट्रीय समुद्री खोज एवं बचाव समन्वय प्राधिकरण;

(ख) राष्ट्रीय तेल बिखराव की घटनाओं हेतु समन्वय प्राधिकरण;

(ग) अपतटीय तेल क्षेत्रों में सुरक्षा के लिए समन्वय;

(घ) एशिया में क्षेत्रीय सहयोग समझौते के तहत जलदस्युता और सशस्त्र डकैती रोधी कार्रवाइयों में समन्वय के लिए भारत में केंद्र बिंदु;

(ड.) समुद्री सीमाओं के लिए प्रमुख आसूचना एजेंसी।

6.5 **विद्यमान बल स्तर:** भारत के समुद्री क्षेत्रों की नियमित रूप से निगरानी करने के लिए भारतीय तटरक्षक में इस समय 62 पोत, 64 नौकाएं/होवरक्राफ्ट, और 62 वायुयान का बलस्तर है। वर्ष 2016 में भारतीय तटरक्षक के बेड़े में 2 अपतटीय गश्ती पोत (ओपीवी), 6 तीव्रगामी गश्ती पोत (एफपीवी), और 2 अंतर्रोधी नौकाओं(आईबी) को शामिल किया गया है।

तटीय सुरक्षा

6.6 भारतीय तटरक्षक को तटीय पुलिस द्वारा गश्त किए जाने वाले समुद्री क्षेत्र सहित भू-भागीय समुद्र में तटीय सुरक्षा के लिए जिम्मेदार प्राधिकरण के रूप में अतिरिक्त रूप से नामोद्दिष्ट किया गया है। महानिदेशक, भारतीय तटरक्षक को कमांडर, तटीय कमान के रूप में भी नामोद्दिष्ट किया गया है और वे तटीय सुरक्षा से संबंधित सभी मामलों में केंद्रीय तथा राज्य एजेंसियों के बीच समग्र समन्वय के लिए उत्तरदायी हैं।

6.7 **तटीय सुरक्षा अभ्यास:** भारतीय तटरक्षक, नौसेना के साथ समन्वय से, संपूर्ण तटीय रेखा की गश्त तथा निगरानी कर रहा है। वर्ष के दौरान, समन्वित गश्त की प्रभावकारिता सुनिश्चित करने तथा मानक प्रचालन क्रियाविधि को विधिमान्य करने के लिए कुल 18 तटीय सुरक्षा अभ्यास आयोजित किए गए हैं।

6.8 **तटीय सुरक्षा अभियान:** अनन्य आर्थिक क्षेत्र में गश्त करने के अलावा तटीय सुरक्षा हेतु तटरक्षक पोतों तथा वायुयानों की तैनाती में वृद्धि की गई है। वर्ष 2016 के दौरान, सभी हितधारकों के साथ समन्वय से, कुल 63 तटीय सुरक्षा अभियान आयोजित किए गए।

6.9 **समुदाय संपर्क कार्यक्रम:** भारतीय तटरक्षक, समुदाय संपर्क कार्यक्रम के माध्यम से मछुवारा समुदायों के साथ नियमित रूप से संपर्क करता है। मछुवारों को सुरक्षा एवं संरक्षण के मुद्दों पर सचेत करने के लिए तथा संकट चेतावनी ट्रांसमीटर, रक्षा बोया और जीवन-रक्षी जैकेटों आदि जैसे जीवन-रक्षक उपकरणों के उपयोग के बारे में जानकारी देने के लिए, वर्ष 2016 के दौरान कुल 749 समुदाय संपर्क कार्यक्रम आयोजित किए गए।

महत्वपूर्ण लक्ष्य और उपलब्धियां

6.10 **मुंद्रा के पास राष्ट्रीय स्तर का 6ठा प्रदूषण प्रतिक्रिया अभ्यास (एनएटीपीओएलआरईएक्स-VI):** भारतीय तटरक्षक ने कच्छ की खाड़ी में मुंद्रा के पास 20-21 दिसंबर, 2016 के दौरान राष्ट्रीय स्तर का 6ठां प्रदूषण प्रतिक्रिया अभ्यास (एनएटीपीओएलआरईएक्स-VI) आयोजित किया। केंद्र और राज्य सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों, पत्तनों, तेल संचालन एजेंसियों के प्रतिनिधियों और अन्य हितधारकों ने अभ्यास में भाग लिया। इसके अलावा, तेल उद्योग सुरक्षा निदेशालय के प्रतिनिधि और तीन विदेशी राष्ट्रों के पर्यवेक्षक भी एनएटीपीओएलआरईएक्स-VI अभ्यास के दौरान उपस्थित थे। 26 हितधारकों और संसाधन एजेंसियों से कुल 40 प्रतिभागियों ने टेबल टॉप अभ्यास में भाग लिया तथा वे समुद्र में प्रदूषण प्रतिक्रिया क्षमता के प्रदर्शन का जायजा लेने के लिए तटरक्षक पोत सारथी, समुद्र प्रहरी

और समुद्र पावक पर पोतारोहित हुए। तटरक्षक पोत सारथी पर अभ्यास के दौरान गुजरात के मुख्य मंत्री और महानिदेशक भारतीय तटरक्षक भी उपस्थित थे। प्रदूषण प्रतिक्रिया अभ्यास में उपस्थित हुए विदेशी पर्यवेक्षक श्रीलंका, बांग्लादेश एवं आस्ट्रेलिया से आये थे।

राष्ट्रीय स्तर का 6ठा प्रदूषण प्रति किया अभ्यास

6.11 04 अप्रैल, 2016 को भारतीय तटरक्षक पोत (आईसीजीएस) शूर और 09 सितंबर, 2016 को भारतीय तटरक्षक पोत (आईसीजीएस) सारथी नामक दो अपतटीय गश्ती पोत (ओपीवी) को कमीशन किया गया।

6.12 14 जनवरी, 2016 को भारतीय तटरक्षक पोत समुद्र पावक नामक एक प्रदूषण नियंत्रण पोत (पीसीवी) को कमीशन किया गया।

6.13 वर्ष 2016 के दौरान, भारतीय तटरक्षक पोत अर्नवेश, भारतीय तटरक्षक पोत अरूष, भारतीय तटरक्षक पोत आर्यमान, भारतीय तटरक्षक पोत अतुल्य, भारतीय तटरक्षक पोत रानी गाईदिन्ल्यू तथा भारतीय तटरक्षक पोत आयुष नामक छह तीव्रगामी गश्ती पोतों (एफपीवी) की कमीशनिंग की गई।

6.14 सी-156 और सी-158 नामक दो अंतर्वोधी नौकाओं (आईबी) की कमीशनिंग वर्ष 2016 के दौरान की गयी।

6.15 10 सितंबर, 2016 को न्यू मंगलौर में तटरक्षक वायु एंक्लेव सक्रिय किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

6.16 महानिदेशक भारतीय तटरक्षक ने म्यांमार नौसेना के साथ उच्च स्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए 06 जनवरी से 09 जनवरी, 2016 के दौरान यांगोन, म्यांमार का दौरा किया।

6.17 वाइस एडमिरल हिदेयो हनामिजु, उप कमांडेंट, जापान तटरक्षक के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने एक उच्च स्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए 13 जनवरी, 2016 को तटरक्षक मुख्यालय, नई दिल्ली का दौरा किया।

6.18 कमीशनर जनरल, कोरिया तटरक्षक (केसीजी) के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने महानिदेशक भारतीय तटरक्षक के साथ उच्च स्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए 08 जून, 2016 को तटरक्षक मुख्यालय, नई दिल्ली का दौरा किया।

6.19 महानिदेशक भारतीय तटरक्षक के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने भारतीय तटरक्षक और पाकिस्तान समुद्री सुरक्षा एजेंसी (पीएमएसए) के बीच उच्च स्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए 13 जुलाई से 14 जुलाई, 2016 के दौरान पाकिस्तान का दौरा किया तथा बैठक 13 जुलाई, 2016 को इस्लामाबाद में आयोजित की गयी।

6.20 महानिदेशक भारतीय तटरक्षक के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने भारतीय तटरक्षक और श्रीलंका तटरक्षक (एसएलसीजी) के बीच उच्च स्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए 16 अगस्त से 20 अगस्त, 2016 के दौरान श्रीलंका का दौरा किया।

6.21 एशियाई तटरक्षक एजेंसियों के प्रमुखों की 12वीं बैठक (एचएसीजीएएम) 11 अक्तूबर से 14 अक्तूबर, 2016 के दौरान जकार्ता, इंडोनेशिया में आयोजित की गयी थी। 12वीं एचएसीजीएएम की बैठक में महानिदेशक भारतीय तटरक्षक के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया।

6.22 महानिदेशक, बांग्लादेश तटरक्षक (डीजी बीसीजी) नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने महानिदेशक भारतीय तटरक्षक के साथ उच्च स्तरीय बैठक में भाग

लेने के लिए 08 दिसंबर, 2016 को तटरक्षक मुख्यालय, नई दिल्ली का दौरा किया।

6.23 22 जनवरी, 2016 को भारतीय तटरक्षक अंतर्वोधी नौका सी-405 सेशेल्स सरकार को उपहार स्वरूप दी गयी।

6.24 रॉयल ओमान पुलिस (तटरक्षक) के साथ 22 मई, 2016 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की गयी।

6.25 **भारतीय तटरक्षक पोतों का विदेश में परिनियोजन:** भारतीय तटरक्षक पोतों द्वारा किए गए विदेशी परिनियोजनों का विवरण निम्नवत है:

क्रम सं.	भारतीय तटरक्षक पोत का नाम	अवधि	देश
(क)	भा.त.र. पोत वरद	05 जनवरी से 13 जनवरी, 2016	म्यांमार
(ख)	भा.त.र.पोत समर्थ	13 से 21 जनवरी, 2016 26 से 29 जनवरी, 2016 01 से 04 फरवरी, 2016 09 से 12 फरवरी, 2016	सेशेल्स मॉरीशस मेडागास्कर केन्या
(ग)	भा.त.र. पोत संकल्प	24 से 28 जनवरी, 2016 30 जनवरी से 2 फरवरी, 2016 04 फरवरी से 07 फरवरी, 2016 09 फरवरी से 13 फरवरी, 2016	कतर सऊदी अरब यूएई ओमान
(घ)	भा.त.र. पोत समर्थ भा.त.र. पोत विश्वस्त	18 अगस्त से 20 अगस्त, 2016	श्रीलंका
(च)	भा.त.र. पोत अनमोल	24 अगस्त से 2 सितंबर, 2016 5 सितंबर से 9 सितंबर, 2016 14 सितं. से 17 सितंबर, 16 (ओटीआर) 19 सितंबर से 23 सितंबर, 2016	बांग्लादेश म्यांमार पोर्ट ब्लेयर थाईलैंड
(छ)	भा.त.र. पोत समर	25 सितंबर से 5 अक्तूबर, 2016	मालदीव
(ज)	भा.त.र. पोत सम्राट	12 अक्तूबर से 16 अक्तूबर, 2016 23 अक्तूबर से 27 अक्तूबर, 2016 29 अक्तूबर से 2 नवंबर, 2016 8 नवंबर से 11 नवंबर, 2016	इंडोनेशिया वियतनाम चीन कंबोडिया
(झ)	भा.त.र.पोत समुद्र पावक	25 अक्तूबर से 29 अक्तूबर,2016	मालदीव
(ट)	भा.त.र. पोत समर	19 दिसंबर से 29 दिसंबर, 2016	मालदीव
(ठ)	भा.त.र. पोत समर्थ	29 दिसंबर से 31 दिसंबर, 2016	मलेशिया

भारतीय तटरक्षक की उपलब्धियां

6.26 तटरक्षक की कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियां, जो राष्ट्र की सेवा में भारतीय तटरक्षक द्वारा निभाई गयी भूमिका को प्रदर्शित करती हैं, निम्नवत हैं:

क्रम संख्या	1 जनवरी, 2016 से 31 दिसंबर, 2016 की अवधि के दौरान उपलब्धियां	
(क)	कुल खोज एवं बचाव (एसएआर) मिशन	223
(ख)	खोज एवं बचाव (एसएआर) सार्टियां	444
(ग)	समुद्र में जीवन बचाव	610
(घ)	समुद्र में चिकित्सा निकासी	18
(च)	पकड़े गये अनधिकृत मछली शिकार वाले ट्रॉलर	11 नौकाएं व 69 कर्मी
(छ)	समुद्री वन्य जीवन उल्लंघन पर गिरफ्तारी	11 नौकाएं व 104 कर्मी
(ज)	मछुवारों का प्रत्यावर्तन	श्रीलंका से 333 भारतीय मछुवारे। भारत से 9 श्रीलंकाई मछुवारे।

6.27 खोज एवं बचाव

(क) **भारतीय वायुसेना के लापता विमान एन-32 (एएफ 330)** की खोज के लिए 22 जुलाई से 29 सितंबर, 2016 तक **ऑपरेशन 'तलाश 01/16'** चलाया गया। वायुयान 29 यात्रियों को लेकर चेन्नई से पोर्ट ब्लेयर के लिए रवाना हुआ था। खोज अभियान के दौरान कुल 29 (11 भारतीय तटरक्षक +18 भारतीय नौसेना) भारतीय तटरक्षक और भारतीय नौसेना के पोतों को 22 जुलाई से 29 सितंबर, 2016 तक परिनियोजित किया गया। इसके अलावा, समुद्री हवाई समन्वित खोज के लिए 22 जुलाई से 18 सितंबर, 2016 के दौरान भारतीय तटरक्षक/भारतीय नौसेना/भारतीय वायुसेना के वायुयानों को भी परिनियोजित किया गया। कुल 301 पोत दिवस और 280 सॉर्टियों में 1222 घंटों की उड़ान को निष्पादित किया गया। 01 अगस्त, 2016 से कुल 61 दिनों की उप-सतह खोज भी क्रियान्वित की गयी। भारतीय वायुसेना के लापता विमान एन-32 (एएफ 330) की खोज के लिए ऑपरेशन 'तलाश' को, 29 सितंबर, 2016 को समाप्त कर दिया गया। हालांकि, क्षेत्र से गुजरने वाले पोतों और वायुयानों ने सामान्य निगरानी सार्टियों/परिनियोजन के दौरान क्षेत्र में लगातार निगरानी बनाये रखी।

(ख) **भारतीय तटरक्षक एवं बांग्लादेश तटरक्षक के बीच खोज एवं बचाव अभियान:** 09-20 अगस्त, 2016 के दौरान बंगाल की उत्तरी खाड़ी में 2 दबाव (डिप्रेशन) देखे गये, जिसके फलस्वरूप खराब मौसमी परिस्थिति के कारण समुद्र में 285 कर्मियों के साथ 22 मछुवाही नौकाएं लापता हो गयीं। 257 भारतीय मछुवारों और 66 बांग्लादेशी मछुवारों का बचाव किया गया तथा उनका तुरंत ही समुद्र में प्रत्यावर्तन किया गया।

(ग) **खोज एवं बचाव अभ्यास (सारेक्स-16):** 02 मई से 03 मई, 2016 के दौरान मुंबई में राष्ट्रीय समुद्री

खोज एवं बचाव अभ्यास (सारेक्स-16) आयोजित किया गया। कुल 13 पोतों, 1 होवरक्रॉफ्ट और 6 वायुयानों ने खोज एवं बचाव यूनिटों (एसआरयू) के रूप में भाग लिया। अभ्यास में सभी संसाधन एजेंसियों ने सक्रिय रूप से भागीदारी की। सारेक्स-16 का आयोजन, न केवल समुद्री एवं हवाई खोज एवं बचाव के अनुरूप हमारी क्षमताओं को प्रदर्शित करता है बल्कि हिंद महासागर क्षेत्र में मुख्य समुद्री खोज एवं बचाव प्रदाता के रूप में हमारी महत्ता को भी प्रबलित करता है।

(घ) **राष्ट्रीय समुद्री खोज एवं बचाव बोर्ड की 15वीं बैठक:** 27 जुलाई, 2016 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में राष्ट्रीय समुद्री खोज एवं बचाव बोर्ड (एनएमएसएआरबी) की 15वीं बैठक आयोजित की गयी। भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (आईएनसीओआईएस) द्वारा अभिकल्प और विकसित खोज एवं बचाव सहायता उपकरण ('एसएआरएटी') के उद्घाटन और प्रमोचन के लिए केंद्रीय पृथ्वी विज्ञान मंत्री मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

6.28 चिकित्सा निकासी:

(क) **पोत एमवी 'एमपी पेनामैक्स-5' से चिकित्सा निकासी:** 08 अगस्त, 2016 को भारतीय तटरक्षक अंतर्रोधी नौका (सी-418) ने सागर द्वीप के 30 समुद्री मील दक्षिण पश्चिम की स्थिति में पोत 'एमपी पेनामैक्स-5' (भारतीय पोत) से घायल कर्मी (कैडेट दिलावर अहलावत) की निकासी की।

(ख) **ओखा में पोत एमवी फ्लीट फीनिक्स से चिकित्सा निकासी:** 09 सितंबर, 2016 को भारतीय तटरक्षक नौका (सी-411) ने ओखा के 20 समुद्री मील उत्तर पश्चिम की स्थिति में पोत एमवी फ्लीट फीनिक्स (पनामा पंजीकृत) से एक कर्मी की निकासी की तथा उसे आगे के चिकित्सा उपचार के लिए ओखा में स्थानीय एजेंट के सुपुर्द कर दिया गया।

पोत एमवी एमपी पेनामेक्स-5 से चिकित्सा निकासी

ओखा में पोत एमवी फ्लीट फीनिक्स से चिकित्सा निकासी

45

7

रक्षा उत्पादन

अध्याय 7

रक्षा उत्पादन

7.1 रक्षा उत्पादन विभाग (डी डी पी) की स्थापना नवंबर, 1962 में रक्षा के लिए आवश्यक हथियारों/प्रणालियों/प्लेटफार्मों/उपस्करों का उत्पादन करने के लिए व्यापक बुनियादी ढांचे के विकास के उद्देश्य से की गई थी। पिछले वर्षों में इस विभाग ने आयुध निर्माणियों और रक्षा क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रमों के माध्यम से विभिन्न रक्षा उपकरणों के लिए व्यापक उत्पादन सुविधाएं स्थापित की हैं। विनिर्मित उत्पादों में हथियार एवं गोलाबारूद, टैंक, बख्तरबंद वाहन, भारी वाहन, लड़ाकू विमान एवं हेलिकॉप्टर, युद्ध पोत, पनडुब्बियां, प्रक्षेपास्त्र, गोलाबारूद, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, अर्थ मूविंग इक्विपमेंट, विशेष मिश्र धातुएं और विशेष प्रयोजन वाले इस्पात शामिल हैं।

7.2 रक्षा उत्पादन विभाग के अंतर्गत निम्नलिखित प्रमुख संगठन हैं:

- आयुध निर्माणी बोर्ड (ओ एफ बी)
- हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (एच ए एल)
- भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बी ई एल)
- भारत डायनामिक्स लिमिटेड (बी डी एल)
- बी ई एम एल लिमिटेड (बी ई एम एल)
- मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि)
- माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एम डी एल)
- गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड (जी आर एस ई)
- गोवा शिपयार्ड लिमिटेड (जी एस एल)
- हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड (एच एस एल)
- गुणता आश्वासन महानिदेशालय (डी जी क्यू ए)
- वैमानिकी गुणता आश्वासन महानिदेशालय (डी जी ए क्यू ए)
- मानकीकरण निदेशालय (डी ओ एस)
- योजना एवं समन्वय निदेशालय (डाइरेक्टोरेट आफ पी एण्ड सी)
- रक्षा प्रदर्शनी संगठन (डी ई ओ)
- राष्ट्रीय रक्षा पोत निर्माण अनुसंधान व विकास संस्थान (निर्देश)

7.3 रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के उद्देश्य से आयुध निर्माणियां और सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रम अपनी क्षमताओं को निरंतर आधुनिक और उन्नयित तथा अपनी उत्पादन रेंज को विस्तृत कर रहे हैं। प्रौद्योगिकी अंतरण के माध्यम से बहुत से उत्पादों एवं उपस्करों का उत्पादन करने के अलावा इन हाउस अनुसंधान एवं विकास संबंधी पहलों के माध्यम से कई प्रमुख उत्पादों का विकास किया गया है।

7.4 कर पश्चात् लाभ सहित आयुध निर्माणियों और सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रमों का उत्पादन एवं कारोबार, क्रमश: सारणी सं. 7.1 व सारणी सं0 7.2 में दर्शाया गया है।

सारणी सं. 7.1
कार्य परिणाम
सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रमों और ओएफबी का उत्पादन मूल्य

(करोड़ रुपए में)

सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रम	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 (दिसम्बर, 2016 तक) (अनंतिम)
एच ए एल	15867	16289	17273	9980
बी ई एल	6127	6659	7782	5211
बी ई एम एल	2814	2599	2740.01	1515.15
बी डी एल	1804	2770	4299.84	2978.68
जी आर एस ई	1611.67	1612.66	1706.60	701.18
जी एस एल	508.90	569.55	725.96	739.17
एच एस एल	453.40	294.16	593.29	404.32
एम डी एल	2865.51	3592.60	4121.65	1932.80
मिधानि	572	640.04	678.78	518.84
ओ एफ बी	11123	11364	13047	8398
कुल	**43746.48**	**46390.01**	**52968.13**	**32379.14**

सारणी सं. 7.2
डीपीएसयू का कर पश्चात लाभ

(करोड़ रुपए में)

सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रम	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 (दिसम्बर, 2016 तक) (अनंतिम)
एच ए एल	2693	2388	1654	1090
बी ई एल	932	1167	1358	755.88
बी ई एम एल	5	6.76	52.65	-140.93
बी डी एल	346	419	563.24	351.88
जी आर एस ई	121.46	43.45	160.71	52.87
जी एस एल	-61.09	78.24	61.89	70.25
एच एस एल	-46.21	-202.84	19.00	6.15
एम डी एल	397.61	491.59	637.82	353.73
मिधानि	83	102.13	118.03	68.53
कुल	**4470.77**	**4493.33**	**4625.34**	**2608.36**

7.5 सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रमों और आयुध निर्माणियों ने, नीति के रूप में, अपनी जरूरतों का बहुत सारा काम बाहर से करवाया है और पिछले वर्षों में एक व्यापक विक्रेता आधार विकसित किया है जिसमें भारी उद्योग के अलावा अनेक मध्यम और लघु उद्यम भी शामिल हैं। इसके अलावा, सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रम और आयुध निर्माणी बोर्ड अपने विनिर्मित उपस्करों एवं उत्पादों में स्वदेशी मात्रा बढ़ाने के लिए भी प्रयासरत हैं।

निजी क्षेत्र की भागीदारी

7.6 जहां भी प्रौद्योगिकीय रूप से साध्य और आर्थिक रूप से व्यवहार्य हो, रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने और स्वदेशीकरण करने के लिए सतत प्रयास किए जा रहे हैं।

7.7 मई, 2001 में, रक्षा उद्योग क्षेत्र को जो कि अब तक सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित था, लाइसेंस के अधीन 26 प्रतिशत तक के प्रत्यक्ष विदेशी निवेश सहित शत-प्रतिशत तक की भारतीय निजी क्षेत्र की भागीदारी के लिए खोल दिया गया था। तथापि, हाल ही में, औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने प्रेस नोट सं. 5 (2016 श्रृंखला) (प्रेस नोट के बाद अधिनियमों एवं नियमों के अंतर्गत www.dipp.nic.in पर उपलब्ध), के द्वारा स्वचालित मार्ग (आटोमैटिक रूट) के तहत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) सीमा को बढ़ाकर 49 प्रतिशत तक कर दिया है और उन मामलों में जहां इससे आधुनिक और नवोन्नत प्रौद्योगिकी प्राप्त होने की संभावना हो अथवा अन्य कारणों के लिए जिन्हें रिकार्ड किया जाना होगा, इसे 49 प्रतिशत से अधिक कर दिया गया है। उक्त प्रेस नोट की अन्य शर्तें निम्नलिखित हैं:-

(क) किसी उस कंपनी में जो औद्योगिक लाइसेंस की माँग नहीं कर रही है, अनुज्ञेय स्वचालित मार्ग स्तर के अंतर्गत किसी ऐसे नए विदेशी निवेश को लेने के लिए सरकार के अनुमोदन की आवश्यकता होगी जिसके फलस्वरूप स्वामित्व प्रतिरूप में बदलाव होता है अथवा मौजूदा निवेशक द्वारा नए विदेशी निवेशक को पण (स्टेक) का अंतरण होता हो।

(ख) लाइसेंस आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा और लाइसेंस औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के द्वारा रक्षा मंत्रालय और विदेश मंत्रालय के परामर्श में दिए जाते हैं।

(ग) इस क्षेत्र में विदेशी निवेश रक्षा मंत्रालय की सुरक्षा मंजूरी और मार्गनिर्देशों के शर्ताधीन है।

(घ) निवेशित कंपनी को उत्पाद अभिकल्पन और विकास के क्षेत्रों में आत्मनिर्भर होने के लिए संरचित होना चाहिए। निवेशित/संयुक्त उद्यम कंपनी के पास विनिर्माण सुविधा के साथ-साथ भारत में विनिर्मित किए जा रहे उत्पाद के अनुरक्षण और जीवन चक्र समर्थन की सुविधा होनी चाहिए।

7.8 औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग (डी आई पी पी) ने रक्षा मंत्रालय के परामर्श से शस्त्रों एवं गोलाबारूद के लाइसेंस के उत्पादन के लिए प्रेस नोट सं. 2 (2002 श्रृंखला) दिनांक 04 जनवरी, 2002 के अंतर्गत जनवरी, 2002 में विस्तृत दिशानिर्देश जारी किए हैं। परिणामस्वरूप निजी क्षेत्र की भूमिका कच्चे सामग्री, संघटकों, उप-प्रणालियों के आपूर्तिकर्ता से बढ़ाकर पूर्ण उन्नत उपस्कर/प्रणाली के विनिर्माण में भागीदार बनने की हो गई है। निजी क्षेत्र की भागीदारी को अनुमत करने का मुख्य उद्देश्य, निजी क्षेत्र में उपलब्ध सुविज्ञता का उपयोग करना और रक्षा विनिर्माण क्षेत्र में समस्त आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की ओर कार्य करना है। निजी क्षेत्र के अंतर्निहित लाभ, इसके पास प्रबंधन, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी दक्षता का होना तथा संसाधन जुटाने के लिए इसकी सक्षमता का होना है।

7.9 लाइसेंसशुदा रक्षा मदों के विनिर्माण के लिए औद्योगिक लाइसेंस प्रदान करने हेतु औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग (डी आई पी पी) से प्राप्त सभी आवेदनों और आर्थिक कार्य विभाग (डी ई ए) की एफ आई पी बी इकाई से प्राप्त प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफ डी आई) के प्रस्तावों पर विचार करने तथा संबंधित विभागों के प्रस्तावों पर क्रमशः रक्षा मंत्रालय की सिफारिशें देने के लिए रक्षा उत्पादन विभाग में रक्षा उत्पादन में निजी

क्षेत्र की भागीदारी पर एक स्थाई समिति का गठन किया गया है। वर्तमान में, नौसेना मुख्यालय, वायुसेना मुख्यालय, थल सेना मुख्यालय, डी जी क्यू ए, डी जी ए क्यू ए, रक्षा विभाग, महानिदेशक (अर्जन) ओ एफ बी, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन और बी ई एल जैसे विविध क्षेत्रों से सदस्यों सहित संयुक्त सचिव (डी आई पी) इस स्थायी समिति के अध्यक्ष हैं।

7.10 औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग (डी आई पी पी) ने अब तक 205 कंपनियों को कवर करते हुए निजी कंपनियों को कई प्रकार की रक्षा मदों के विनिर्माण के लिए उन्हें जून, 2016 तक 342 औद्योगिक लाइसेंस (आई एल) जारी किए हैं। अब तक 52 लाइसेंस प्राप्त कंपनियों ने 83 औद्योगिक लाइसेंस को कवर करते हुए उत्पादन आरंभ करने की सूचना दी है।

7.11 रक्षा उद्योग क्षेत्र को, वर्तमान नीतियों के अनुसार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफ डी आई) के साथ भारतीय निजी क्षेत्र की भागीदारी के लिए खोलने के पश्चात सार्वजनिक और निजी दोनों ही क्षेत्रों में विभिन्न रक्षा उपस्करों के विनिर्माण के लिए रक्षा क्षेत्र में 36 एफ डी आई प्रस्तावों/संयुक्त उद्यमों को अनुमोदन दिया जा चुका है। अप्रैल 2000, से सितंबर, 2015 तक रक्षा औद्योगिक क्षेत्र को 25.84 करोड़ रुपए (5.12 मिलियन यूएस डालर) की राशि प्राप्त हुई (स्रोत http://www.dipp.nic.in पर एफडीआई आंकड़े)।

7.12 रक्षा उत्पादन विभाग ने औद्योगिक (विकास एवं विनियमन), 1951 के अंतर्गत लाइसेंसिंग प्रयोजनार्थ रक्षा उत्पादों की सूची को अंतिम रूप दे दिया है। डी आई पी पी ने प्रेस नोट संख्या 3 (2014 श्रृंखला) के द्वारा अपनी वेबसाइट पर रक्षा उत्पादों की सूची डाली है। डी आई पी पी ने 2015 श्रृंखला के प्रेस नोट 10 द्वारा औद्योगिक लाइसेंस की वैधता को 15 वर्षों की अवधि के लिए बढ़ा दिया है, जो प्रशासनिक मंत्रालय की मंजूरी से 18 वर्षों के लिए और बढ़ाई जा सकती है। ये दोनों प्रेस नोट डी आई पी पी की वेबसाइट htpp://www.dipp.nic.in पर अधिनियम और नियम के बाद और प्रेस नोट से पहले उपलब्ध हैं।

7.13 विभाग द्वारा एक 'मेक इन इंडिया' पोर्टल भी शुरू किया गया है, जहाँ रक्षा उत्पादन से संबंधित सभी नीतियां, प्रक्रियाएं और प्रोत्साहनात्मक उपाय एक ही प्लेटफार्म पर उपलब्ध हैं। इस पोर्टल पर संवाद भी किया जा सकता है जहाँ निवेशक कोई प्रश्न पूछ सकता है, स्पष्टीकरण माँग सकता है और उनका उत्तर 3 कार्य दिवसों के अंदर दिया जाता है। इस पोर्टल को उद्योग से बहुत उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है।

7.14 विभाग ने निजी क्षेत्र के रक्षा उद्योगों के लिए एक सुरक्षा नियमावली को अंतिम रूप दिया है। सुरक्षा नियमावली, कंपनियों के लिए फिजिकल, प्रलेखन और आईटी सुरक्षा मुहैया कराती है। यह सुरक्षा नियमावली प्रकाशन/रिपोर्ट के तहत डीडीपी की वेबसाइट (www.ddpmod.gov.in) पर उपलब्ध है। इस सुरक्षा नियमावली को अनुपालन के उद्देश्य से तीन भागो: श्रेणी 'क', 'ख', 'ग' वर्ग में बांटा गया है। उत्पादों/हथियारों/उपस्करों पर निर्भर करते हुए, कंपनियों को सुरक्षा प्रोटोकॉल का अनुपालन करने की जरूरत होगी। यह रक्षा उत्पादन विभाग की वेबसाइट पर भी उपलब्ध है। इन श्रेणियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

श्रेणी 'क' : इस श्रेणी के उत्पाद सुरक्षा के दृष्टिकोण से उच्च रूप से वर्गीकृत और संवेदनशील होंगे और इन मदों के निर्माण में उच्च स्तर की सुरक्षा की जरूरत होगी।

श्रेणी 'ख' : इस श्रेणी के उत्पादों में अधबने उत्पाद सब असेंबलियां, मुख्य हथियारों की उप-प्रणालियां/उपस्कर/प्लेटफार्म और कम संवेदनशील प्रकृति के कुछ तैयार उत्पाद शामिल हैं।

श्रेणी 'ग' : इस श्रेणी के उत्पादों में वैसे उत्पाद शामिल होंगे जिनमें किसी वर्गीकृत/ गुप्त सूचना का प्रयोग शामिल नहीं होता है और वे सामान्यत: बहुत ही सामान्य प्रकृति की होती हैं। इस श्रेणी के उत्पादों को सामान्यतया सेना के प्रयोग के लिए विशिष्ट रूप से अभिकल्पित या संशोधित नहीं किया जाएगा और अत: इन्हें न्यूनतम स्तर की सुरक्षा की आवश्यकता होगी।

भारतीय रक्षा उद्योग की निर्यात संबंधी रूपरेखा:

7.15 नवम्बर, 2014 में अनापत्ति प्रमाण पत्रों (एनओसी) को जारी करने के लिए आवेदन पत्रों को स्वीकार करने के लिए ऑनलाइन प्रणाली को शुरू करने के बाद इस प्रणाली को उद्योगों के अनुकूल बनाने के लिए और सरल बनाया गया है। अब अनापत्ति प्रमाण पत्र ऑनलाइन जारी किए जा रहे हैं ताकि समय की बचत हो और यह प्रणाली और अधिक पारदर्शी हो सके। उद्योग संघों/निजी निर्यातकों से समय-समय पर प्राप्त हुई सूचना के आधार पर प्रणाली में नियमित रूप से सुधार किए जा रहे हैं।

7.16 विदेशों में कारोबार के अवसरों को खोजने में सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रमों और निजी रक्षा उद्योग की सहायता करने की दृष्टि से इस उद्देश्य के लिए सैधांतिक मंजूरी दी जा रही है। कई देशों ने घरेलू तौर पर विकसित उत्पादों जैसे कि मल्टी फंक्शन हैण्ड हैल्ड थर्मल इमेजर, लाइट वेट टारपिडोज, एंटी सबमेरीन वारफेयर अपग्रेड सूट, आकाश एयर डिफेंस सिस्टम आदि में रुचि दर्शायी है।

7.17 सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रमों (डीपीएसयू), आयुध निर्माणी बोर्ड (ओएफबी) तथा निजी क्षेत्र की कंपनियों द्वारा (जारी किए गए अनापत्ति प्रमाण पत्रों के आधार पर) रक्षा निर्यात का मूल्य वित्तीय वर्ष 2015-16 के 2059.18 करोड़ रुपए की तुलना में वित्तीय वर्ष 2016-17 (दिसंबर, 2016 तक) 1105.20 करोड़ रुपए (अनंतिम) है। दिसम्बर, 2016 तक कुल 193 अनापत्ति प्रमाणपत्र जारी किए गए हैं, जिनमें 166 निजी उद्योग को जारी किए गए हैं। निजी क्षेत्र की लगभग 12-14 कंपनियों ने रक्षा निर्यात में योगदान दिया है।

7.18 रक्षा उत्पादों के लिए कुछ प्रमुख निर्यात गंतव्य देश केन्या, भूटान, इथोपिया, इजराइल, ताइवान, यूके, नेपाल, बेल्जियम, वियतनाम और फिलीपीन हैं। निर्यात की जा रही प्रमुख रक्षा मदें हैं - पर्सनल प्रोटेक्टिव आइटम्स, टर्बो चार्जर्स व बैटरियां, इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम (ईओपीओडी एएलएच सिस्टम), लाइट इंजीनियरिंग मैकेनिकल पार्टस आदि।

आयुध निर्माणी संगठन

7.19 भारतीय आयुध निर्माणियां सबसे पुरानी और सबसे बड़ी औद्योगिक स्थापना है जो उत्कृष्ट युद्धभूमि उपकरणों से सैन्य बलों को सुसज्जित करने में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के प्रारंभिक उद्देश्य के साथ आयुध निर्माणी बोर्ड (ओएफबी) के अंतर्गत कार्य करती हैं।

7.20 **आयुध निर्माणियों की प्रमुख सक्षमता:**

हथियार	छोटे, मध्यम और बड़े कैलीबर हथियार एवं मोर्टार उपकरण
गोलाबारूद, विस्फोटक एवं प्रोप्लेंट	छोटे, मध्यम एवं बड़े कैलीबर गोलाबारूद, मोर्टार बम, संकेतक एवं संबद्ध मदें, रॉकेट एवं एरियल बम, फ्यूज, विस्फोटक, रसायन व प्रोप्लेंटस
सैन्य वाहन	ट्रक, सुरंगरोधी एवं विशेष सुरक्षा वाले वाहन
कवचित वाहन	टैंक व इसके संस्करण, कवचित सैनिक वाहक (एपीसी) एवं इंजन
औजार एवं ऑप्टीकल डिवाइस	नाइट एण्ड डे विजन साइट्स और औजार
पैराशूट	ब्रेक पैराशूट, मैन ड्रॉपिंग एवं रसद गिराने वाला पैराशूट
ट्रूप कंफर्ट एवं सामान्य वस्तुएं	तम्बू, परिधान, वैयक्तिक उपकरण, ब्रिजेज, नौकाएं, केबल्स इत्यादि

7.21 **उत्पादन उपलब्धियां :** वित्त वर्ष 2015-16 के दौरान कारोबार 14158 करोड़ रुपए था। वर्ष 2016-17 के लिए दिसम्बर, 2016 तक कर और शुल्कों सहित कारोबार 9154 करोड़ रुपए है।

7.22 **आधुनिकीकरण :** ग्राहकों की वर्तमान और दीर्घकालिक भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए आयुध निर्माणी बोर्ड (ओएफबी) पुरानी मशीनों के स्थान पर नवीनतम मशीनें लगाकर अपनी मौजूदा सुविधाओं को निरंतर आधुनिक बना रहा है। इस संबंध में, बारहवीं पंचवर्षीय योजना के लिए आयुध निर्माणी के आधुनिकीकरण के लिए एक वृहत आधुनिकीकरण योजना तैयार की गई है और इस योजना के तहत, 5663 करोड़ रुपए का व्यय किए जाने की योजना है।

7.23 **गुणवत्ता प्रबंधन :** प्रक्रिया को निम्नलिखित उपायों के द्वारा सुदृढ़ किया गया है:- निजी कंपनियों के लिए आयुध निर्माणियों में परीक्षण की सुविधाएं मुहैया करायी गई हैं, विनिर्माण प्रक्रियाओं की लेखा परीक्षा के लिए दस गुणता लेखा परीक्षा समूहों (क्यूएजी) की स्थापना, शिकायतों का समाधान करने के लिए केन्द्रीय एवं अग्रेषण डिपुओं के साथ प्रत्यक्ष वार्ता के लिए टीमों की प्रतिनियुक्ति, प्रत्येक निर्माणी में असफलता समीक्षा बोर्ड का गठन जिसमें डीजीक्यूए का प्रतिनिधि सदस्य के रूप में शामिल होगा, और आदान सामग्रियों की इन-हाउस परीक्षण सुविधा क्षमता को बढ़ाना।

7.24 **उपलब्धियाँ और पुरस्कार :**

- आयुध निर्माणी मेडक ने डीआरडीओ के सहचार्य में पहले एनबीसी वाहन का घरेलू तौर पर विकास किया है और भारतीय सेना को उसकी आपूर्ति की है।
- ओएफबी ने 130 मिमी गन के 155 मिमी x 45 कैलीबर गन में उन्नयन (अपगनिंग) की आरएफपी केभाग लिया है और ओएफबी की इस गन में प्रयोक्ता द्वारा जारी आरएफपी के प्रति पीएफएफआर पोखरन में सफलतापूर्वक फील्ड परीक्षण किए हैं।
- कवच एमओडी–II चैफ लाँचर का विकास और विनिर्माण किया गया है और उसे आईएनएस चैन्नई पर लगाया गया है। कवच एमओडी-II की लंबी और मध्यम दूरी वाले लांचरों की अधिष्ठापन टैस्ट फायरिंग पहली बार किसी नौसैन्य पोत से सफलतापूर्वक की गई।
- ओएफबी ने एके-47 के एक विकल्प के तौर पर 7.62 मिमी 39 मिमी असाल्ट राइफल 'घातक' का विकास किया है।
- ओएफबी ने बाई-मोड्यूलर चार्ज सिस्टम (बीएमसीएस) को सफलतापूर्वक विकसित किया है और उसे भारतीय सेना को जारी किया है।
- ओएफबी की नवीनतम विकसित 155 मिमी X 45 कैलिबर गन, 'धनुष' जो कि 'मेक इन इंडिया' विषय वस्तु के तहत प्रमुख उत्पाद है, को नई दिल्ली में आयोजित 2017 की गणतंत्र दिवस पर प्रदर्शित किए जाने के लिए चुना गया था।

एनबीसी रेकी वाहन

बाई-मॉड्यूलर चार्ज सिस्टम

सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रम (डी पी एस यू)

हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल)

7.25 हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल), एक नवरत्न कंपनी है, जिसके पूरे देश में स्थित 20 उत्पादन डिवीजन, 11 अनुसंधान एवं विकास केन्द्र और 01 सुविधा प्रबंधन डिवीजन हैं। इसने अब तक घरेलू अनुसंधान एवं विकास से 17 प्रकार के विमानों का उत्पादन किया है जिनमें एचटीटी-40 (बेसिक ट्रेनर एअरक्राफ्ट) और लाइट यूटीलिटी हैलिकाप्टर (एलयूएच) नवीनतम हैं। प्रमुख वायुयानों/हेलीकॉप्टरों की वर्तमान उत्पादन रेंज निम्नवत है:- एसयू-30 एमकेआई हॉक, हल्के लड़ाकू विमान (एलसीए), डोर्नियर डू 228 एएलएच और चीतल हेलीकॉप्टर। कंपनी ने दिसंबर 2016 तक 8619 करोड़ रू0 (अनंतिम) का कारोबार अर्जित किया है। दिसंबर 2016 तक 335 करोड़ रू0 की निर्यात बिक्री अर्जित की है।

17 जून, 2016 को एचएएल हवाई अड्डे, बेंगलुरू में एचटीटी-40 विमान की प्रथम उड़ान के दौरान रक्षा मंत्री जी विमान के कॉकपिट में।

7.26 **वर्ष 2016-17 के दौरान मुख्य घटनाएं/ उपलब्धियां**

(i) एएलएच बेड़े के लिए एमआरओ हब स्थापित करने के लिए भारतीय सेना के साथ एक समझौता ज्ञापन पर 9 मई, 2016 को हस्ताक्षर किए गए थे। भारतीय सेना के एएलएच बेड़े के लिए मरम्मत एवं रखरखाव संबंधी सहायता शीघ्र मुहैया कराने के लिए मामून एवं मिस्सामारी में एमआरओ हब स्थापित करने की योजना है।

(ii) एचटीटी-40 ने अपनी पहली उड़ान रक्षा मंत्री जी की उपस्थिति में 17 जून, 2016 को भरी थी।

(iii) ब्रहमोस सुपरसॉनिक क्रूज मिसाइल से लैस सुखोई-30 एमकेआई विमान की प्रथम कैरिज उड़ान 25 जून, 2016 को सफलतापूर्वक भरी गई थी।

(iv) उन्नत मिराज-2000 विमान की प्रथम 'अंतिम प्रचालनात्मक अनापत्ति' प्राप्त होने के बाद इसने 28 जुलाई, 2016 को उड़ान भरी थी जोकि अप्रचालन संबंधी मामलों से निजात पाने और इन विमानों की विश्वसनीयता एवं रखरखाव में बढ़ोतरी करने के लिए प्लेटफार्मों के मध्य जीवनकाल को उन्नत करने में एक महत्वपूर्ण चरण है।

(v) एचएएल के स्वदेशी एलयूएच की प्रथम तकनीकी उड़ान 6 सितंबर, 2016 को सफलतापूर्वक भरी गई थी।

(vi) कमोव हेलीकॉप्टरों के संयुक्त उत्पादन के लिए रूसी हेलीकॉप्टर, रोसोबोरोनएक्सपोर्ट के साथ 15 अक्तूबर, 2016 को गोवा में आयोजित शिखर सम्मेलन के दौरान पणधारी समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे।

(vii) शक्ति एवं टीएम 3332 बीडी इंजनों के आरओएच के लिए हेलीकॉप्टर इंजन एमआरओ प्राइवेट लि0, एक संयुक्त उद्यम कंपनी का गठन।

(viii) एक संपूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी नैनी एरोस्पेस लिमिटेड का गठन।

(ix) एशिया पैसिफिक एरोस्पेस क्वालिटी ग्रुप (एपीएक्यूजी) ने 'मतदान करने के अधिकार सहित पूर्ण सदस्य' श्रेणी के तहत एचएएल को सदस्यता प्रदान की है जिससे भारत एपीएक्यूजी में शामिल होने वाला 7वां राष्ट्र बन गया है।

7.27 **वर्ष 2016-17 के दौरान प्राप्त पुरस्कार:**

(i) सार्वजनिक क्षेत्र प्रबंधन में उत्कृष्ट योगदान के लिए राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा स्कोप उत्कृष्टता पुरस्कार से नवाजा गया है।

(ii) एचएएल द्वारा हासिल की गई उपलब्धियों और राष्ट्र के प्रति योगदान के लिए भारतीय

औद्योगिक इंजीनियरिंग संस्थान (आईआईआईई) द्वारा 'निष्पादन उत्कृष्टता पुरस्कार 2015' से सम्मानित किया गया है।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल)

7.28 भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) जो कि 1954 में रक्षा मंत्रालय के अधीन स्थापित, एक नवरत्न कंपनी है, की रडारों एवं हथियार प्रणालियों, सोनार, संचार, ईडब्ल्युएस, इलेक्ट्रो-आप्टिक्स एवं टैंक इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में बुनियादी क्षमताओं के साथ पूरे भारत में नौ इकाइयां हैं। गैर-रक्षा क्षेत्र में बीईएल की उत्पाद श्रेणी में ईवीएम, टैबलेट पीसी, माइक्रो सर्किट, सेमी कंडक्टर, सोलर सेल इत्यादि शामिल हैं।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा सेशल्स में समुद्री निगरानी प्रणाली का उद्घाटन

हल माउण्टेड सोनार

7.29 **अनुसंधान एवं विकास:** बीईएल ने आत्म-निर्भरता प्राप्त करने के लिए सभी नौ इकाइयों में अनुसंधान एवं विकास (आर एण्ड डी) सुविधाएं स्थापित की हैं। कंपनी ने भावी कार्यक्रमों एवं विभिन्न प्रौद्योगिकियों, ज्ञान प्रबंधन पोर्टल इत्यादि की पहचान करते हुए एक तीन वर्षीय आर एण्ड डी योजना तैयार की है। प्रति वर्ष औसतन 10 नए उत्पाद शुरू किए जाते हैं। बीईएल अपने कारोबार का लगभग 9 प्रतिशत भाग आर एण्ड डी पर खर्च करता है।

7.30 **वर्ष 2016-17 के दौरान प्रमुख उपलब्धियां:**

(i) निम्मालुरू, आंध्र प्रदेश में स्थापित उन्नत नाइट विजन उत्पाद निर्माणी ने काम करना शुरू कर दिया है।

(ii) डब्ल्यु एल आर के फायरिंग परीक्षण सफलता पूर्वक पूरे कर लिए गए हैं।

(iii) सिक्योर सीडीएमए सेल्युलर नेटवर्क (15 सीईएसआर) श्रीनगर में लगाया गया है।

(iv) देवनगेरे (कर्नाटक) में 8.4 मेगावाट का पवन ऊर्जा पॉवर संयंत्र लगाया गया है।

(v) जीते गए पुरस्कारों में डन एवं ब्रेड स्ट्रीट भारत का शीर्ष पीएसयू पुरस्कार 2016, पीएसई उत्कृष्टता पुरस्कार 2015, भारत कौशल पुरस्कार 2016, कर्नाटक निर्यात उत्कृष्टता पुरस्कार 14-15 इत्यादि शामिल हैं।

7.31 **भावी चुनौतियां:** रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स बाजार को निजी भागीदारी के लिए खोले जाने से प्रतिस्पर्धा और बढ़ गई है। इस प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए, बीईएल ने संगठनात्मक संरचना में बदलाव करने, नए उत्पाद के विकास पर और अधिक बल देने, विविधीकरण, प्रक्रियाओं, अवसंरचना में सुधार इत्यादि करने जैसी कई रणनीतियां अपनाई हैं।

7.32 **स्वदेशीकरण:** बीईएल ने अपने कारोबार का लगभग 80 प्रतिशत भाग स्वदेशी रूप से विकसित उत्पादों से अर्जित किया है। हाल के वर्षों में विकसित कुछ प्रमुख उत्पादों में 3डी, एल-बैंड 2डी हवाई एवं समुद्री निगरानी रडार, मैन-पैक सैटकॉम टर्मिनल, सॉफ्टवेयर परिभाषित रेडियो, उन्नत सामरिक संचार प्रणाली, नागरिक सत्यापन

डिवाइस तथा एस3/एस4 प्लेटफार्म के लिए एकीकृत सोनार सूट, पहाड़ी भू-भाग के लिए एकीकृत ई डब्ल्यु प्रणाली, टी 90 टैंक के लिए लेजर वार्निंग सिस्टम एवं गनर साइट, एमबीटी अर्जुन / अर्जुन कैटापुट के लिए ड्राइवर साइट शामिल हैं।

7.33 **आधुनिकीकरण:** बीईएल सुविधाओं के आधुनिकीकरण में निरंतर निवेश करता रहा है जो स्वदेशी प्रयास के लिए आवश्यक है। हाल के प्रमुख निवेशों में इमेज इन्टेसिफायर ट्यूब मैन्यूफैक्चरिंग, नियर फील्ड टेस्ट रेंज सुविधाएं, ईएमआई / ईएमसी टेस्ट चैम्बर्स, सुपर कंपोनेंट्स असेम्बली / टेस्ट सुविधा, रडारों एवं प्रक्षेपास्त्र प्रणालियों इत्यादि के लिए इनडोर / आउटडोर टेस्ट प्लेटफार्म शामिल हैं। बीईएल अपनी आंतरिक प्राप्तियों से वर्ष 2016-17 के लिए पूंजीगत व्यय (कैपेक्स) की दिशा में लगभग 500 करोड़ रुपए का निवेश करेगा।

आकाश

भारत डायनामिक्स लिमिटेड (बीडीएल)

7.34 भारत डायनामिक्स लिमिटेड (बीडीएल) को रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत वर्ष 1970 में निगमित किया गया था जो देश में टैंकरोधी निर्देशित मिसाइल के विनिर्माण में अग्रणी है। बीडीएल नई पीढ़ी की एटीजीएम, सतह से हवा में मार करने वाली शस्त्र प्रणालियों (एसएएम), सामरिक महत्व के हथियारों, लांचरों, अंतर्जलीय हथियारों, डिकॉयज और परीक्षण उपस्करों के विनिर्माण में शामिल है। बीडीएल सभी प्रमुख उत्पादों के क्षमता संवर्धन के द्वारा सशस्त्र सेनाओं की मांग को पूरा करने के लिए पूरी तरह तैयार है।

- मिलान, कोनकर्स-एम, इनवार एवं आकाश प्रभागों को एरो स्पेस मानक, एएस 9100सी के तहत प्रत्यायित किया गया है।
- बीडीएल ने उद्यम संसाधन योजना / एसएपी का सभी इकाइयों में कार्यान्वयन किया है।
- बीडीएल, आकाश (सेना) के लिए अग्रणी इंटीग्रेटर है। आकाश हथियार प्रणाली स्वदेशी रूप से उत्पादित प्रमुख उत्पादों में से है और भारतीय सेना / वायु सेना को इसकी आपूर्ति की जा रही है। बीडीएल, एमआरएसएएम का भी अग्रणी इंटीग्रेटर है।

7.35 **स्वदेशीकरण:** बीडीएल, आत्म-निर्भरता में वृद्धि करने, विदेशी मुद्रा प्रवाह में कमी करने और लागत कम करने के उद्देश्य से एटीजीएम के स्वदेशीकरण के लिए सतत प्रयत्न कर रहा है। कोनकर्स-एम, इनवार और मिलान 2टी जैसे उत्पादों का क्रमशः 90%, 76.4% एवं 71% स्वदेशीकरण हासिल कर लिया गया है।

7.36 **कैपेक्स एवं आधुनिकीकरण:** संयंत्र एवं मशीनरी और अन्य अवसंरचनात्मक विकासों के आधुनिकीकरण के लिए कैपेक्स पर वर्ष 2016-17 के लिए 250 करोड़ रुपए चिह्नित किए गए हैं।

7.37 **वित्तीय निष्पादन:** वर्ष 2015-16 में बीडीएल ने 3785 करोड़ रुपए का कीर्तिमान बिक्री कारोबार (निवल) अर्जित किया है। वर्ष 2016-17 में 4400 करोड़ रुपए से अधिक की बिक्री का लक्ष्य है।

बीईएमएल लिमिटेड

7.38 कंपनी के विनिर्माण कॉम्प्लेक्स, कोलार गोल्ड फील्ड (केजीएफ), बेंगलुरू, मैसूर और पालाक्कड में तथा सहायक इस्पात फाउंड्री-विज्ञान इंडस्ट्रीज लिमिटेड, तारीकरे, चिकमंगलूर जिले में हैं। ये खनन व निर्माण, रक्षा एवं रेल व मेट्रो उत्पादों के क्षेत्रों की वृहत रेंज की डिजाइन, विकास, विनिर्माण, बिक्री एवं बिक्री पश्चात् क्रियाकलापों में लगे हुए हैं। अंतरराष्ट्रीय व्यापार 66 देशों में फैला हुआ है।

7.39 **अनुसंधान एवं विकास पहलें और नए उत्पादों का विकास:** कंपनी अपने कारोबार का लगभग 2.5

प्रतिशत भाग अनुसंधान एवं विकास पर व्यय कर रही है। आर एण्ड डी विकसित उत्पादों ने पिछले तीन वर्षों में कारोबार में 50 प्रतिशत से अधिक योगदान दिया है। वर्ष 2016-17 में टेलिस्कोपिक स्ट्रक्चरल फ्रेमों के प्रमोचन एवं पुन: प्राप्ति के लिए रोप प्रणाली युक्त डबल कंपार्टमेंट विंच के डिजाइन एवं विकास के लिए पेटेंट प्राप्त हुए हैं।

निर्माणाधीन टी-72 हल

विमान टोइंग ट्रैक्टर 4X4

बीडी 80 बुलडोजर

7.40 **स्वदेशीकरण:** खनन एवं निर्माण उत्पादों और रेल उत्पादों में स्वदेशीकरण का स्तर 90 प्रतिशत, मेट्रो कारों में 50 प्रतिशत है। रक्षा उत्पादों अर्थात् पीएमएस ब्रिज, एटीटी, एयरक्राफ्ट वेपन लोडर, 50टी ट्रेलर में स्वदेशीकरण का स्तर 100 प्रतिशत है। हैवी ड्यूटी ट्रकों के लिए एक्सल एवं पीटीओ (टाइप-बी असेम्बली) का स्वदेशीकरण वर्ष 2016-17 में कर दिया गया है।

7.41 **प्राप्त पुरस्कार:**

- वर्ष 2013-14 के लिए सार्वजनिक क्षेत्र प्रबंधन-विशिष्ट संस्थानात्मक श्रेणी (टर्नएराउण्ड) में उत्कृष्ट एवं सर्वोत्तम योगदान के लिए स्कोप पुरस्कार।
- कौशल विकास एवं सीएसआर संबंधी पहलों के लिए युगल पुरस्कार।

मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि)

7.42 मिधानि विशिष्ट धातु एवं धातु एलॉयज का विनिर्माण करने वाली 'लघु रत्न श्रेणी-I' की एक मुख्य कंपनी है जिसकी स्थापना 20 नवंबर, 1973 को भारतीय रक्षा उद्योग के सामरिक क्षेत्रों और परमाणु ऊर्जा, उपग्रह प्रक्षेपण वाहनों, विमान इत्यादि जैसे क्षेत्रों के लिए अपेक्षित महत्वपूर्ण सामग्रियों का विनिर्माण करने के लिए की गई थी। मिधानि ने वाणिज्यिक उत्पादन 1983 में आरंभ किया था और तब से यह ग्राहकों को विशिष्ट धातुओं एवं मिश्र धातुओं (एलॉयज) की आपूर्ति सफलतापूर्वक करता रहा है।

7.43 **वित्तीय निष्पादन:** गत दस वर्षों के दौरान, मिधानि ने बिक्री में लगभग 14.75 प्रतिशत का प्रभावशाली सीएजीआर अर्जित किया है और इसने निरंतर 'उत्कृष्ट' निष्पादन रैटिंग भी अर्जित की है।

7.44 **ग्राहकों को समय पर सुपुर्दगियां:** मिधानि, प्रभावी अंत: क्रिया एवं व्यापार संबंधी गठजोड़ों को बढ़ाने के जरिए आउटसोर्सिंग कार्यकलापों का दक्षतापूर्ण ढंग से प्रबंधन करके आपूर्तियों में होने वाले विलंब को कम करने पर अधिक बल देता है। इसके परिणामस्वरूप विलंबित ऑर्डरों में कमी आई है और 6000 टन की फोर्ज प्रेस के लग जाने से विलंबित ऑर्डर में तेजी से

कमी आने की संभावना है जिससे हमारे सभी ग्राहकों को समय पर सुपुर्दगियां सुनिश्चित होंगी।

7.45 **अनुसंधान एवं विकास में सुधार करने के लिए सक्रिय कार्रवाई:** मिधानि के अनुसंधान एवं विकास कार्यकलापों में नए एलॉयज और उत्पाद शामिल हैं। अनुसंधान एवं विकास कार्यकलापों में नए क्षेत्रों/ ग्राहकों/ उत्पाद विकास की पहचान करना भी शामिल है। मिधानि ने एसएआईएल/ आरडीसीआईएस, बीएचईएल/ कार्पोरेट आरएण्डडी एवं एनटीपीसी/एनईटीआरए के साथ समझौता ज्ञापन(एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं तथा नए उत्पादों को विकसित करने के लिए भारतीय रेल के साथ बातचीत चल रही है। मिधानि ने आईआईटी रुड़की, आईआईटी गुवाहाटी और आईआईटी कानपुर की संबंधित विशेज्ञता के क्षेत्रों में काम करने के लिए इन संस्थानों के साथ भी समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। ज्ञानी एवं अनुभवी वैज्ञानिकों/इंजीनियरों/सुविख्यात व्यक्तियों के प्रौद्योगिकी सलाहकार बोर्ड(टीएबी) की बैठक हुई है और आरएंडडी की भावी दिशा पर चर्चा हुई है।

7.46 **स्वदेशीकरण का स्तर:** मिधानि में विनिर्मित ज्यादातर एलॉयज/उत्पाद आयात प्रतिस्थापन हैं और मिधानि ने घरेलू अनुभव का प्रयोग करते हुए, कई महत्वपूर्ण एलॉयज/उत्पादों की रिवर्स इंजीनियरिंग भी की है। कई एलॉयज/उत्पादों का इन-हाउस विकास सफलतापूर्वक किया गया है। हाल ही में विकसित किए गए कुछ उत्पाद एमडीएन 465 प्रिसिपिटेशन हार्डेनिंग स्टेनलेस स्टील की छड़े, उन्नत अल्ट्रा सुपर जटिल कार्यक्रम के लिए सुपर्नी 740एच, हॉट रोल्ड बार्स एवं वायर्स, सेमी- क्रायो-इंजन के लिए सुपर्नी 750 एमडब्ल्यु तथा अडूर इंजन के लिए टाइटेनियम एलॉय वाईआई26 फोर्जिंग हैं।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल):

7.47 माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल), सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रम शिपयार्डों में एक अग्रणी शिपयार्ड है जो युद्धपोतों एवं पनडुब्बियों के निर्माण में लगा हुआ है। वर्तमान में एमडीएल भारतीय नौसेना के लिए युद्धपोत के उत्पादन में आत्म-निर्भरता प्राप्त करने के उद्धेश्य से मिसाइल विध्वंसकों, स्टील्थ फ्रिगेट और पनडुब्बियों का निर्माण कर रहा है।

7.48 **कमीशनिंग एवं जलावतरण:** पी15ए के तीसरे पोत, आईएनएस चेन्नई को 21 नवंबर, 2016 में चलाया गया था। पी15बी के दूसरे पोत, मोरमुगाव का जलावतरण 17 सितंबर, 2016 में किया गया था। पी75 की दूसरी पनडुब्बी खंदेरी का जलावतरण 12 जनवरी, 2017 को किया गया था। पी75 की पहली पनडुब्बी, कलवरी के समुद्री परीक्षण चल रहे हैं और इसे नौसेना को सुपुर्द किए जाने के लिए तैयार किया जा रहा है।

आईएनएस चेन्नई को 21 नवंबर, 2016 को प्रवर्तित किया गया।

खंदेरी का 12 जनवरी, 2017 को जलावतरण किया गया।

7.49 **अनुसंधान एवं विकास पहलें:**

- 31 दिसंबर, 2016 तक अनुसंधान एवं विकास संबंधी कार्यकलापों पर 35.60 करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं।
- उपस्करों की इंटीग्रिटी सुनिश्चित करने के लिए परिवेश मुहैया कराने हेतु शोर इंटीग्रेशन सुविधा स्थापित की।
- डिजाइन में हस्तक्षेप से बचने की दृष्टि से संगतता सुनिश्चित करने हेतु 3डी परिवेश में

एचवीएसी अभिन्यास किया गया,

- पोत विस्तृत डिजाइन में श्रमप्रभाविकी,
- मॉड्यूलर निर्माण के लिए मॉडलिंग मेगा ब्लॉक्स में निहित प्रयत्नों की परिकल्पना करने के लिए ब्लॉक्स की 3डी कैड मॉडलिंग की गई।

7.50 **आधुनिकीकरण:** 28 मई, 2016 को उद्घाटित पनडुब्बी असेम्बली वर्कशॉप को पनडुब्बियों के लिए द्वितीय असेम्बली लाइन के रूप में विकसित किया गया है। गोलिएथ क्रेन के पथ में विस्तार किया गया है। रिची ड्राई डॉक को गहरा किया गया है और सूखा संबंधी कठिनाइयों से निजात पाने के लिए चैनल की योजना बनाई गई है।

पनडुब्बी सेक्शन असेम्बली वर्क शॉप का रक्षा मंत्री जी द्वारा 28 मई, 2016 को उद्घाटन किया गया था।

7.51 **स्वदेशीकरण:** एमडीएल में पहले ही से समर्पित स्वदेशीकरण विभाग है और इसका एक 'मेक इन इंडिया' वेबपेज है जो रक्षा मंत्रालय की वेबसाइट से जुड़ा हुआ है। सात प्रमुख मदों का स्वदेशीकरण किया गया है। स्वदेशीकरण खंड को शामिल करने के लिए अधि प्राप्ति नियमावली में संशोधन किया गया है। जागरूकता फैलाने और भारतीय विक्रेताओं को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न सम्मेलनों एवं प्रदर्शनियों का आयोजन किया और इनमें भाग लिया। पिछले वर्षों में, एमडीएल में पोत निर्माण के स्वदेशीकरण का प्रतिशत वर्ष 1997 में 42 प्रतिशत (दिल्ली वर्ग) से बढ़कर वर्ष 2016 में 78 प्रतिशत (कोलकाता वर्ग) हो गया है।

7.52 **पुरस्कार:** एमडीएल ने हिंदी पत्रिका, जल तरंग के लिए राष्ट्रपति से पुरस्कार हासिल किया है।

गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड (जीआरएसई)

7.53 गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड (जीआरएसई), एक लघु रत्न श्रेणी-I कंपनी है जो पिछले 23 वर्ष से मुनाफा कमाने वाला एवं लाभांश देने वाला सार्वजनिक क्षेत्र का रक्षा उपक्रम है। यह भारत की बढ़ती समुद्री जरूरतों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलता रहा है और एक अग्रणी पोतनिर्माणी यार्ड के रूप में जाना जाता है।

7.54 वर्तमान में, जीआरएसई में 19 युद्धपोत निर्माणाधीन हैं, जिनमें तीन स्टील्थ फ्रिगेट, दो पनडुब्बीरोधी वारफेयर कार्वेट (एएसडब्ल्युसी), सात लैंडिंग क्राफ्ट युटिलिटी (एलसीयू) पोत, दो वाटर जेट फास्ट अटैक क्राफ्ट (डब्ल्युजेएफएसी) और पांच तीव्र गश्ती जलयान शामिल हैं। भारतीय नौसेना को चार युद्धपोतों (तीन डब्ल्यूजेएफएसी एवं एक एलसीयू) की सुपुर्दगी की गई और तीन युद्धपोत (एक डब्ल्युजेएफएसी व दो एलसीयू) 31 दिसम्बर, 2016 तक लांच किए गए थे।

7.55 **आधुनिकीकरण:** निर्माण में मॉड्यूलर पोत निर्माण को कार्यान्वित करने के लिए शिपयार्ड का आधुनिकीकरण किया गया है। डीजल इंजन संयंत्र की आधुनिकीकृत 'डीजल इंजन असेम्बली शॉप' का अप्रैल, 2016 में रांची में उद्घाटन किया गया था।

7.56 **अनुसंधान एवं विकास / स्वदेशीकरण:** जीआरएसई ने इस अवधि के दौरान अर्थात 31 दिसंबर, 2016 तक उत्पादन में लगभग 93 प्रतिशत स्वदेशीकरण की मात्रा अर्जित कर ली है। इसके अलावा, प्रदर्शनी / स्वदेशीकृत शो केसिंग / स्वदेशीकृत की जाने वाली मदों के लिए एक प्रदर्शन कक्ष की स्थापना की गई है। जीआरएसई ने स्वदेशीकरण को बढ़ावा देने के लिए एक मेक-इन-इंडिया प्रकोष्ठ का भी सृजन किया है और इससे संबंधित विस्तृत सूचना जीआरएसई की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

7.57 **पुरस्कार एवं अभिज्ञान:**

(क) राजभाषा कीर्ति पुरस्कार - राजभाषा के कार्यान्वयन में उत्कृष्टता के लिए प्रथम पुरस्कार और राजभाषा कीर्ति पुरस्कार-कंपनी की हिंदी पत्रिका राजभाषा जागृति के लिए वर्ष 2015-16 के लिए द्वितीय पुरस्कार।

(ख) गुणवत्ता नेतृत्व पुरस्कार-2016

(ग) अंतरराष्ट्रीय समागम गुणवत्ता नियंत्रण सर्कल गोल्ड पुरस्कार।

गोवा शिपयार्ड लिमिटेड (जीएसएल):

7.58 गोवा शिपयार्ड लिमिटेड (जीएसएल) एक लघु रत्न, समूह-1 दर्जे की कंपनी है जो भारतीय रक्षा सेनाओं एवं निर्यात बाजार सहित अन्य विविध ग्राहकों के लिए उन्नत उच्च प्रौद्योगिकी वाले युद्धपोतों का इन-हाउस डिजाइन बनाने एवं निर्माण करने में सक्षम है। जीएसएल, भारतीय उपमहाद्वीप में पोतों का सबसे बड़ा निर्यातक है और इसने सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त किए हैं।

7.59 **वर्ष के दौरान सुपुर्दगियां / जलावतरण:** जीएसएल ने भारतीय तटरक्षक बल को दो 105 मीटर अपतटीय गश्ती जलयानों(ओपीवी), मॉरीशस सरकार को एक तीव्र गश्ती जलयान एवं 11 फास्ट इंटरसेप्टर नौकाओं तथा म्यामांर की नौसेना को एक डैमेज कंट्रोल सिम्युलेटर की सुपुर्दगी संविदा अनुसूची से पहले की है। इस वर्ष तीन अपतटीय गश्ती जलयानों (ओपीवी) (भारतीय तटरक्षक बल के लिए दो और श्रीलंका की नौसेना के लिए एक) का जलावतरण किया गया।

105 मीटर अपतटीय गश्ती जलयान

7.60 **मेक-इन-इंडिया पहल:** जीएसएल को 'मेक-इन-इंडिया' पहल के तहत 12 सुरंग रोधी उपाय जलयानों (एमसीएमवी) के स्वदेशी निर्माण के लिए उत्पादन एजेंसी के रूप में चुना गया है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इन आधुनिकतम पोतों का देश में पहली बार निर्माण करने के लिए यार्ड विशेष अवसंरचना का सृजन कर रहा है। तदनुसार, एमसीएमवी के लिए अवसंरचना संवर्धन का चार चरणों में निष्पादन किया जा रहा है। जिसमें से चरण 1 व 2 मार्च 2011 में पूरे कर लिए गए हैं। जनवरी 2013 में शुरु किए गए चरण 3ए के काम को अगस्त 2016 में पूरा कर लिया गया है और गोवा में आयोजित कार्यक्रम के दौरान 13 नवंबर, 2016 को प्रधानमंत्री जी द्वारा इसका उद्घाटन किया गया था।

प्रधानमंत्री जी द्वारा गोवा में 13 नवंबर, 2016 को सुविधाओं का उद्घाटन

7.61 **अनुसंधान एवं विकास कार्यकलाप:** नौसेना की भावी आवश्यकताओं के लिए उत्पाद के विकास के रूप में जीएसएल ने उन्नत एएसडब्ल्यु शैलो वाटर क्राफ्ट्स के डिजाइन का विकास किया है। इसके अलावा, बेहतर ईंधन दक्षता एवं संवर्धित सहनशक्ति हासिल करने के लिए नोदन संरूपण युक्त 50 मीटर फास्ट अटैक प्लेटफार्म का संशोधित डिजाइन कार्य विकास चरण में है। जीएसएल ने एक प्रशिक्षण पोत का विकास भी किया है और भारतीय तटरक्षक बल को इसकी सुपुर्दगी

तीव्र गश्ती जलयान की मॉरीशस को सुपुर्दगी

अगस्त 2016 में की है। श्रीलंका की नौसेना के लिए इस श्रेणी के प्रथम इन-हाउस डिजाइन युक्त नवीनतम नौसैन्य अपतटीय गश्ती जलयान का जलावतरण जून 2016 में किया गया था और वर्ष 2017 के मध्य तक इसकी सुपुर्दगी की जानी है। इस श्रेणी के प्रथम नए डिजाइन किए गए निर्यात वाटर जेट तीव्र गश्ती जलयान की मारीशस के राष्ट्रीय तटरक्षक बल को सुपुर्दगी सितंबर, 2016 में की गई थी।

हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड (एचएसएल)

7.62 हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड सबसे बड़ा और रक्षा मंत्रालय (रक्षा उत्पादन विभाग) के अधीन सामरिक रूप से अवस्थित शिपयार्ड है। इस यार्ड ने अपने आरंभ से ही रक्षा और समुद्री क्षेत्र के लिए 178 जलयानों का निर्माण किया है और 1949 जलयानों की मरम्मत की है।

7.63 **प्रमुख उपलब्धियां:** एचएसएल ने अपनी स्थापना के 75 वर्ष पूरे होने पर वर्ष 2016 में प्लेटिनम जयंती मनाई है। संयोगवश, वित्तीय वर्ष 2015-16 में, बगैर किसी सरकारी वित्तीय अनुदान के 19 करोड़ रु. का निवल लाभ दर्ज करके अहम उपलब्धि हासिल की गई है। अर्जित आय एवं उत्पादन मूल्य भी कंपनी के आरंभ से क्रमशः दूसरे एवं तीसरे सर्वोत्तम हैं।

7.64 **पोत निर्माण:** राष्ट्र की गौरवशाली परियोजना (वीसी 11184) का एक भव्य समारोह में 25 अप्रैल, 2016 को प्रवर्तन किया गया था। इस कैलेण्डर वर्ष में, एचएसएल ने भारतीय नौसेना को 25 टन के 3 टग्स और भारतीय तटरक्षक बल को एक आईपीवी, 'आईसीजीएस' रानी गैडिनलू' की सुपुर्दगी की है। यह उल्लेखनीय है कि आईएन टग्स बलवान और सहायक का निर्माण अंतरराष्ट्रीय बेड़ा समीक्षा 2016 की आश्यकताओं के अनुरूप नौतल रखने की तारीख से 10 माह के रिकार्ड समय में किया गया था।

आईसीजीएस रानी गैडिनलू

आईएन टग बलवान

7.65 **पोत मरम्मत:** विभिन्न प्रकार के सात जलयानों की मरम्मत अप्रैल से दिसम्बर, 2016 के दौरान की गई है।

7.66 **पनडुब्बी रिफिट्स / विनिर्माण:** रूसी मूल की पनडुब्बियों के रिफिट में यार्ड द्वारा अर्जित विशेषज्ञता को ध्यान में रखते हुए, एचएसएल को भारतीय नौसैनिक पोत सिन्धुवीर की सामान्य रिफिट को शुरू करने के लिए नामित किया गया है (अप्रैल, 2017 में रिफिट शुरू किया जाना है)। यार्ड द्वारा 18 अगस्त, 2016 को दो छोटी पनडुब्बियों (एसओवी परियोजना) के निर्माण के लिए प्रस्ताव पत्र प्रस्तुत हुआ है।

7.67 **अनुसंधान एवं विकास:** एचएसएल के पास एक सुसज्जित अभिकल्प विभाग है जिसे वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा एक इन-हाउस अनुसंधान व विकास एकक के रूप में मान्यता दी गई है। (मान्यकरण और पंजीकरण का पत्र, 30 मार्च, 2016 को डीएसआईआर द्वारा जारी कर दिया गया है)।

7.68 **स्वदेशीकरण का उच्चतर स्तर:** आयात प्रतिस्थापन को बढ़ावा देने के लिए, भारतीय विक्रेताओं के लिए क्रय प्राथमिकता खंड की शुरूआत की गई

है। कुछ मदों को केवल एमएसई और स्टार्ट अप से ही अधिप्राप्त किए जाने के लिए चिन्हित किया गया था।

7.69 **आधुनिकीकरण:** एलपीडी परियोजना के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा स्वीकृत निधियों से मौजूदा अवसंरचना और सुविधाओं का आधुनिकीकरण तेजी से किया जा रहा है। इसके अलावा, एचएसएल को कोरिया गणराज्य के साथ भारत सरकार के समझौते के अंतर्गत सामरिक प्रकृति की पोत निर्माण परियोजनाओं को शुरू करने के लिए नामांकित किए जाने की संभावना है।

गुणता आश्वासन महानिदेशालय (डीजीक्यूए)

7.70 गुणता आश्वासन महानिदेशालय (डीजीक्यूए) एक अंतर सेवा संगठन है जो रक्षा मंत्रालय के रक्षा उत्पादन विभाग के अंतर्गत कार्य करता है। गुणता आश्वासन महानिदेशालय थल सेना, नौसेना के लिए, (नौसेना आयुधों के अलावा) आयातित एवं स्वदेशी दोनों प्रकार के सभी रक्षा भंडारों और उपस्करों और वायुसेना के लिए निजी क्षेत्र, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों और आयुध निर्माणियों से अधिप्राप्त सामान्य उपभोक्ता मदों के गुणता आश्वासन के लिए उत्तरदायी है।

7.71 **संगठनात्मक ढाँचा और कार्य:** गुणता आश्वासन महानिदेशालय संगठन ग्यारह तकनीकी निदेशालयों में विभाजित है जिनमें से प्रत्येक निदेशालय एक भिन्न प्रकार के उपकरण श्रेणी के लिए जिम्मेदार है। कार्यात्मक उद्देश्यों के लिए तकनीकी निदेशालयों को दो स्तरों में संरचित किया गया है जिनमें उनके नियंत्रणालय और फील्ड गुणता आश्वासन स्थापनाएं शामिल हैं। इसके अलावा हथियारों और गोलाबारूदों की जाँच करने के लिए आयुध शाखा में जांच स्थापनाएं हैं।

7.72 **उपलब्धियाँ**

(i) **स्टोरों का गुणता आश्वासन:** डीजीक्यूए संगठन ने वर्ष 2016-17 के दौरान (दिसम्बर 2016 तक) 18212.31 करोड़ रुपए के रक्षा स्टोर्स का निरीक्षण किया।

(ii) विगत तीन वर्षों के दौरान निरीक्षित विनिर्माणकर्ता-वार स्टोर्स का मूल्य (करोड़ रु. में) निम्नलिखितानुसार है:

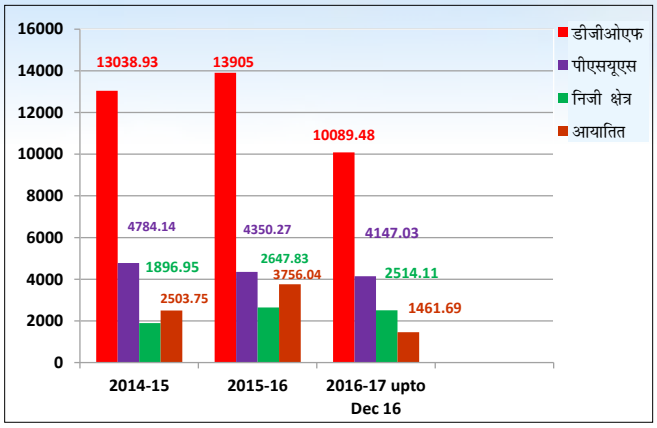

ऑडिट किए गए गुणता स्टोर्स के मूल्य (करोड़ रुपए में)

(iii) **डीजीक्यूए तकनीकी मूल्यांकन:** वर्ष 2016-17 (दिसम्बर, 2016 तक की अवधि) के दौरान डीजीक्यूए ने विभिन्न स्टोरों, गोलाबारूद एवं उपस्करों जिसमें कई जटिल उपप्रणालियां शामिल हैं, के कुल 80 तकनीकी मूल्यांकन किए एवं 63 प्रयोक्ता परीक्षणों में भाग लिया। वर्ष 2016-17 (दिसम्बर 2016 तक) के दौरान विभिन्न उपस्करों/स्टोर्स के 20 पीडीआई और 85 जेआरआई किए गए थे।

(iv) **155 मिमी कैलीबर एफएच तोप 'धनुष':** डीजीक्यूए; पीएफएफआर, बीएफएफआर एवं एनएफएफआर (विनिर्माण फायरिंग रेंजों) में प्रयोक्ता उपयोग के दौरान एकीकृत प्रकार्यात्मक जाँच, स्ट्रक्चरल प्रूफ एण्ड एसोसिएशन जाँच करता है।

155 मिमी कैलीबर एफएच गन 'धनुष'

7.73 **भावी चुनौतियाँ** : डीजीक्यूए को विक्रेता

पंजीकरण की जिम्मेवारी पुनः सौंपी गई है। यह 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के साथ रक्षा उद्योग में स्वदेशीकरण को मजबूती देगा और जिसके परिणामस्वरूप नए विक्रेताओं की संख्या में वृद्धि होगी। गुणवत्ता का एक समरूप मानक बनाए रखने और डीजीक्यूए द्वारा अपनाए जा रहे कठोर मूल्यांकन मापदण्डों का अनुपालन करने के लिए समकृति प्रबंधन (सीएम) की संकल्पना अपनाई जा रही है ताकि सामग्री का इसके संपूर्ण जीवनकाल में तकनीकी साख नियंत्रण सुनिश्चित किया जा सके।

7.74 **छः चयनित आयुध निर्माणियों में अग्रगामी परियोजना का कार्यान्वयन :** रमनपुरी समिति की रिपोर्ट की सिफारिशों के अनुसार रक्षा मंत्रालय ने छः चयनित आयुध निर्माणियों अर्थात आयुध निर्माणी खमरिया (ओएफके), आयुध निर्माणी बडमाल (ओएफबीएल), आयुध निर्माणी अंबाझरी (ओएफएजे), आयुध निर्माणी मेडक (ओएफएमके), आयुध उपस्कर निर्माणी कानपुर (ओएफसी) और गन कैरिज निर्माणी (जीसीएफ) में अग्रगामी परियोजना को कार्यान्वित करने का निर्णय किया है।

7.75 **आधुनिकीकरण :** डीजीक्यूए ने अपनी विद्यमान जाँच सुविधाओं को एनएबीएल अनुबंध के अनुरूप उन्नत किया है। यह स्वदेशीकरण के उद्देश्य हेतु निजी विक्रेताओं को प्रयोगशाला जाँच सुविधाएँ एवं प्रूफ सुविधाएँ मुहैया करा रहा है।

7.76 **प्रशिक्षण पहल :** गुणता आश्वासन रक्षा संस्थान (डीआईक्यूए), गुणता प्रबंधन के क्षेत्र में डीजीक्यूए के अधिकारियों और अन्य संगठनों के अधिकारियों को प्रशिक्षण दिलाता है।

वैमानिकी गुणता आश्वासन महानिदेशालय (डीजीएक्यूए):

7.77 वैमानिकी गुणता आश्वासन महानिदेशालय, रक्षा उत्पादन विभाग, रक्षा मंत्रालय के अधीन एक नियामक प्राधिकरण है, जो हवाई शस्त्रास्त्र और मानवरहित विमान (यूएवी) सहित सैन्य विमानों के सहायक हिस्से पुर्जों/सामान और अन्य वैमानिकी साजो-सामान के डिजाइन/विकास उत्पादन/ओवरहॉल/मरम्मत आशोधन व उन्नयन कार्य करता है। डीजीएक्यूए रक्षा मंत्रालय, सेना मुख्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रमों व मुख्य ठेकेदारों को रक्षा एयर मदों की अधिप्राप्ति और इन-हाउस विनिर्माण के विभिन्न चरणों के दौरान तकनीकी परामर्श मुहैया कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। डीजीएक्यूए का नई दिल्ली स्थित मुख्यालय पूरे देश में फैली 34 फील्ड स्थापनाओं/डिटेचमेंट्स के नेटवर्क के माध्यम से कार्य करता है।

7.78 डीजीएक्यूए, प्रक्षेपास्त्र प्रणालियां, गुणता आश्वासन एजेंसी(एमएसक्यूएए) और सामरिक प्रणालियां गुणता आश्वासन समूह (एसएसक्यूएजी) के लिए नोडल एजेंसी भी है। ये त्रिसेवाएं (डीजीएक्यूए, डीजीक्यूए एवं डीजीएनएआई) संगठन स्वदेशी टैक्टीकल एवं सामरिक प्रक्षेपास्त्रों के अभिकल्पन, विकास एवं उत्पादन के दौरान क्रमशः गुणवत्ता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए है।

7.79 **स्वीकृत स्टोरों का मूल्य :** चालू वर्ष एवं गत तीन वर्षों के दौरान डीजीएक्यूए द्वारा गुणवत्ता कवरेज दिए गए स्टोरों का मूल्य निम्नवत है -

वित्त वर्ष	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	
				01.04.2016 से 30.11.2016 तक	प्रत्याशित (01.12.2016 से 31.03.2017 तक)
मूल्य करोड़ रू0 में	21,803	19,829	23,067	11,261	12,339 (लगभग)

7.80 वैमानिकी गुणता आश्वासन महानिदेशालय के गुणता आश्वासन कवरेज के अंतर्गत प्रमुख परियोजनाएँ :

(क) **विकास/विनिर्माण परियोजनाएँ**

(i) एसयू-30 (एमकेआई) और उन्नत जेट ट्रेनर (हॉक एमके-132): मूल उपस्कर विनिर्माता (ओईएम) से लाईसेंस के तहत विनिर्माण

(ii) उन्नत हल्का हेलीकॉप्टर (एएलएच): विनिर्माण

(iii) हल्का युद्धक विमान (एलसीएच): विकास एवं विनिर्माण

(iv) हल्की उपयोगिता वाला हेलीकॉप्टर (एलयूएच): विकास

(v) हल्का युद्धक विमान (एलसीए): विनिर्माण

(vi) डोर्नियर (डीओ-228): विनिर्माण

(vii) मध्यवर्ती जेट ट्रेनर (आईजेटी) और हल्का युद्धक हेलीकॉप्टर (एलसीएच): विकास/विनिर्माण

(viii) सारस परिवहन विमान (सैन्य रूपांतर): विकास

(ix) पायलट रहित टारगेट विमान (पीटीए-लक्ष्य) : विनिर्माण

(x) डोर्नियर (डीओ-228): विनिर्माण

(ख) **मरम्मत एवं ओवरहॉल (आरओएच) परियोजनाएं:** एसयू-30 एमकेआई/मिग-21 बिसन/ मिग-27 विमान, जगुआर/किरन जेट ट्रेनर/मिराज-2000 विमान, डोर्नियर (डीओ-228)/एव्रो (एचएस-748) विमान, आईएआई मलाट, इजरायल से प्रौद्योगिकी अंतरण के तहत मानवरहित विमान का डिपो स्तर पर रखरखाव

(ग) विमानों के नियमित विनिर्माण/मरम्मत/ओवरहॉल के अलावा जब भी जहाँ अपेक्षित होता है डीजीएक्यूए द्वारा गुणता आश्वासन कवरेज के लिए विभिन्न उन्नयन व आशोधन कार्य किए जाते हैं।

7.81 **लिए गए महत्वपूर्ण नीतिगत निर्णय :**

(i) सभी इंजनों (डार्ट एमके 533.2) के लिए एक बार की ओवरहॉल जाँच को अनिवार्य करने की सिफारिश की गई जिनका कंप्रेशर केसिंग की उनके पुराने हो जाने की वजह से असफलता के कारण पहले ही चौथा ओवरहॉल किया गया है।

(ii) डीजीएक्यूए ने उत्पादन एजेंसी के गुणवत्ता रेटिंग के लिए अंतर्राष्ट्रीय वैमानिकी गुणवत्ता समूह (आईएक्यूजी) पर आधारित एक मॉडल तैयार किया है। यह मॉडल संगठन/फर्म के गुणवत्ता रेटिंग को सुनिश्चित करके संगठन की गुणवत्ता परिपक्वता और प्रभाव का आकलन करेगा। एचएएल के दो प्रभाग एचएएल (एएमडी) नासिक व एचएएल (एमआरओ) बैंगलोर को इस मॉडल के प्रायोगिक परियोजना के तौर पर कार्यान्वित करने के लिए चिन्हित किया गया है।

(iii) डीजीएक्यूए से आयुध निर्माणी बोर्ड (ओएफबी) के निरीक्षण की जिम्मेवारी स्थानांतरित करने पर मानक प्रचालन प्रक्रिया (एसओपी) को अंतिम रूप दिया गया है और दोनों पणधारियों द्वारा इस पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

(iv) फर्मों/विक्रेताओं के पंजीकरण और क्षमता आकलन पर मानक प्रचालन प्रक्रिया (एसओपी) को अंतिम रूप दिया गया है और उसे डीजीएक्यूए की वेबसाइट पर अपलोड कर दिया गया है।

7.82 **प्रमुख उपलब्धियाँ :**

(क) एलसीए तेजस ने बहरीन इंटरनेशनल एयर शो में हिस्सा लिया। डीजीएक्यूए के प्रतिनिधियों ने गुणता आश्वासन कवरेज प्रदान किया और विनिर्दिष्ट प्रक्रिया के अनुसार जाँच के पश्चात उड़ान के लिए प्रमाण पत्र निर्गत किए।

(ख) हल्की उपयोगिता वाले हेलीकॉप्टर (एलयूएच) के प्रथम आदिप्रारूप (पीटी-I) को इसकी पहली उड़ान के लिए 28 अक्टूबर, 2016 को अनुमति दी गई।

(ग) हिन्दुस्तान टर्बो ट्रेनर (एचटीटी-40) के प्रथम आदिप्रारूप ने 31 मई, 2016 को अपनी पहली उड़ान भरी।

(घ) मानवरहित विमान (यूएवी) रुस्तम-II ने टेस्टरेंज चित्रदुर्ग में अपनी पहली उड़ान भरी डीजीएक्यूए ने यूएवी के लिए गुणता कवरेज प्रदान किया।

(ड) एलसीए तेजस ने 18 मार्च, 2016 को पोखरण में हुए आयरन फिस्ट 2016 में भाग लिया। एलसीए विमान ने लेजर निदेशित बॉम्ब एवं लाइव आर-73 प्रक्षेपास्त्र के लिए वास्तविक फायरिंग के साथ अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया। डीजीएक्यूए प्रतिनिधियों ने क्यूए कवरेज के साथ-साथ उड़ान सुरक्षा प्रमाणपत्र प्रदान किए।

मानकीकरण निदेशालय (डीओएस)

7.83 मानकीकरण निदेशालय की स्थापना 1962 में तीनों सेनाओं की रक्षा वस्तु सूची को नियंत्रित करने और इसे उपस्करों/संघटकों में उभयनिष्ठा स्थापित करके न्यूनतम करने के लिए की गई थी जिसे विभिन्न मानकीकरण दस्तावेजों को तैयार करके, रक्षा सामान सूची का संहिताकरण करके और प्रविष्टि नियंत्रण के द्वारा क्रमिक रूप से प्राप्त किया जाता है।

7.84 **लक्ष्य एवं उपलब्धियाँ :** रोल ऑन योजना 2016-17 के अनुसार 37 नए दस्तावेजों और 470 संशोधित दस्तावेजों को पूरा कर लिया गया है और लगभग 6755 मानक दस्तावेजों को 31 दिसंबर, 2016 तक परिचालित किया गया है।

7.85 **संबद्ध समिति** - 135 के टीयर-1 के सदस्य के रूप में जो एनएटीओ के अधीन कोडिफिकेशन का शीर्ष निकाय है, मानकीकरण निदेशालय वैश्विक कोडिफिकेशन प्रणाली की नई संकल्पना लाया है जो भारतीय उद्योगों को अंतर्राष्ट्रीय संभारिकी प्रणाली का हिस्सा बनने और अंतर्राष्ट्रीय रक्षा अधिप्राप्ति प्रणाली में भाग बनने में समर्थ बनाएगा। इसके अलावा, वेब आधारित साफ्टवेयर के कार्यान्वयन से भारतीय उद्योगों की अंतर्राष्ट्रीय संभारिकी डाटाबेस तक पहुँच बनेगी और विश्व स्तर पर उनकी दृष्यता बढ़ेगी।

7.86 डीएलआईएस-यूएसए के साथ कोडिफिकेशन सूचना साझा करने के लिए एक एफएमएस मामले के रूप में द्विपक्षीय समझौते पर जून, 2016 में हस्ताक्षर किए गए।

योजना एवं समन्वय निदेशालय

7.87 योजना एवं समन्वय निदेशालय, जो रक्षा उत्पादन विभाग का एक संबद्ध कार्यालय है, की स्थापना 1964 में की गई थी। इस निदेशालय को प्राथमिक रूप से विभिन्न सक्षम नीतियों जैसे कि भारत 'मेक इन इंडिया' पहल, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) नीति का उदारीकरण, औद्योगिक लाइसेंसिंग नीति, निजी क्षेत्र को समान अवसर मुहैया कराना और स्वदेशी रूटों से अधिप्राप्ति को प्राथमिकता देने के माध्यम से रक्षा क्षेत्र में स्वदेशीकरण को बढ़ावा देने का कार्य सौंपा गया है। यह निदेशालय रक्षा वेबसाइट पर 'मेक इन इंडिया' पोर्टल का रख-रखाव करने और इसे अद्यतन करने के लिए जिम्मेवार है। यह निदेशालय रक्षा क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ाने और अन्य देशों को रक्षा उपस्करों के निर्यात का संवर्धन करने के लिए प्रयत्न करता है।

7.88 इसके अलावा, यह निदेशालय, सेना मुख्यालयों के पूँजीगत अधिग्रहण प्रस्तावों पर रक्षा उत्पादन विभाग के परिप्रेक्ष्य से परामर्श देता है और रक्षा अधिप्राप्ति प्रक्रिया को सुप्रवाही बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह निदेशालय शिपयार्डों के चल रहे आधुनिकीकरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

रक्षा प्रदर्शनी संगठन (डीईओ)

7.89 रक्षा प्रदर्शनी संगठन का मुख्य कार्य भारतीय रक्षा उद्योग द्वारा विकसित और विनिर्मित रक्षोन्मुखी उत्पादों और सेवाओं के निर्यात में अभिवृद्धि करने के दृष्टिकोण से देश और विदेश में रक्षा प्रदर्शनियों का आयोजन और समन्वय करना है।

7.90 **भारत में अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी:** भारतीय रक्षा उद्योग को इसकी अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित करने के लिए एक प्लेटफार्म मुहैया कराने हेतु, रक्षा प्रदर्शनी संगठन (डीईओ) भारत में दो द्विवार्षिक अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियां नामत: एयरो इंडिया और डेफएक्सपो इंडिया का आयोजन करता है। जबकि एयरो इंडिया, एयरोस्पेस और उड्डयन उद्योग को समर्पित है, डेफएक्सपो का फोकस भू और नौसेना प्रणालियों पर होता है।

(i) एयरो इंडिया जिसकी शुरूआत 1996 में हुई थी, एयरोस्पेस, रक्षा, नागरिक उड्डयन, विमान पत्तन अवसंरचना और रक्षा इंजीनियरिंग पर एक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के रूप में पहले ही ख्याति प्राप्त कर चुका है। एयरो इंडिया-2017

के 11वें संस्करण का आयोजन वायुसेना स्टेशन येलाहांका, बेंगलुरु में किया गया था।

(ii) डेफएक्सपो इंडिया को एयरो इंडिया की अनुपूरक प्रदर्शनी के रूप में मानते हुए डेफएक्सपो इंडिया का आरंभ 1999 में किया गया था। डिफेंस एक्सपो इंडिया के नवें संस्करण का आयोजन 28-31 मार्च, 2016 को साउथ गोवा के क्वेपेम तालुका में नक्वेरी क्विटोल, गोवा राज्य में किया गया था। डिफेंसएक्सपो इंडिया स्पष्ट रूप से वृद्धि के मार्ग पर चल रहा है, और प्रत्येक संस्करण के साथ जबरदस्त और अभूतपूर्व प्रतिक्रिया प्राप्त कर रहा है। इस प्रदर्शनी ने रक्षा क्षेत्र में निवेश के लिए एक आकर्षक गंतव्य के रूप में भारत उदय को प्रदर्शित किया है और रक्षा उद्योग को मैत्री और संयुक्त उद्यम के लिए एक प्लेटफार्म के रूप में कार्य किया है। लगातार बैठकों, प्रदर्शकों के प्रेस सम्मेलनों, उत्पाद प्रमोचनों के साथ-साथ रक्षा अधिप्राप्ति प्रक्रियाओं और ऑफसेट नीति पर संवादी संगोष्ठियों का आयोजन भी नियमित रूप से किया जाता है ताकि भागीदारों को नवीनतम विकास से रूबरू कराया जा सके। इस शो ने अंतर्राष्ट्रीय सरकार और सैन्य एजेंसियों के अभूतपूर्व नेटवर्क को भी आकर्षित किया है। डिफेंसएक्सपो 2016 के दौरान डीआरडीओ, भारत फोर्ज और टाटा के द्वारा पहली बार लाइव प्रदर्शन आयोजित किया गया था।

(iii) इन प्रदर्शनियों के अलावा डीईओ ने निम्नलिखित प्रदर्शनियों में भाग लिया/उनका आयोजन किया:

(क) अंतरराष्ट्रीय फ्लीट रिव्यू (आईएफआर)-2016: भारतीय नौसेना का अंतरराष्ट्रीय फ्लीट रिव्यू 03 से 06 फरवरी, 2016 को विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश में हुआ जिसे डीईओ द्वारा आयोजित किया गया था।

(ख) मेक इन इंडिया, मुंबई : मेक इन इंडिया सप्ताह 2016, का आयोजन सीआईआई द्वारा 13-18 फरवरी, 2016 को एमएमआरडीए मैदान, बांद्रा - कुरला कॉम्पलेक्स मुंबई में किया गया था। ओएफबी, डीआरडीओ और सभी सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रमों ने इस शो में भाग लिया था। ओएफबी, डीआरडीओ सभी सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रमों (डीपीएसयू) का समन्वय रक्षा प्रदर्शनी संगठन (डीईओ) द्वारा किया गया था।

(ग) वाइब्रेंट गुजरात-2017 : 8 वां. वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल ट्रेड शो/शिखर सम्मेलन 2017 का आयोजन 9-13 फरवरी, 2017 को गांधीनगर, गुजरात में किया गया था। डीईओ द्वारा समन्वित इस शो में ओएफबी, डीआरडीओ और सभी डीपीएसयू ने भाग लिया।

7.91 **विदेशों में अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी :**

(क) भारतीय रक्षा उद्योग की निर्यात संभावना को बढ़ावा देने के दृष्टिकोण से रक्षा प्रदर्शनी संगठन (डीईओ) विदेशों में लगने वाली प्रमुख रक्षा अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में 'भारतीय पैवेलियन' लगाता है ताकि भारतीय रक्षा उद्योग द्वारा निर्मित किए जा रहे रक्षा उत्पादों के लिए बाजार को विकसित किया जा सके।

(ख) चालू वित्त वर्ष 2016-17 के दौरान, भारतीय पवैलियन निम्नलिखित अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में लगाया गया था :

(i) 01 से 04 जून, 2016 आईएलए बर्लिन एक्सपो सेन्टर एयरपोर्ट, बर्लिन, जर्मनी में आईएलए बर्लिन शो।

(ii) 13 से 17 जून, 2016 पेरिस, फ्रांस में यूरोसेटरी-2016 प्रदर्शनी।

(iii) 11 से 17 जुलाई, 2016 यूनाइटेड किंगडम में फर्नबोरो एयर शो 2016।

(iv) 14 से 18 सितम्बर, 2016 साउथ अफ्रीका में अफ्रीका एयरोस्पेस और रक्षा (एएडी) 2016।

(v) 12 से 15 अक्टूबर, 2016 टोक्यो, जापान में, जापान अंतरराष्ट्रीय एयरोस्पेस प्रदर्शनी।

राष्ट्रीय रक्षा पोत निर्माण अनुसंधान एवं विकास संस्थान (निर्देश)

7.92 राष्ट्रीय रक्षा पोत निर्माण अनुसंधान एवं विकास संस्थान (निर्देश) की स्थापना चेलियम, कोझीकोड, केरल में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के उद्देश्य से की गई है। ऐसी परिकल्पना की गई है कि यह संस्थान भारत के भविष्य के पोत निर्माण कार्यक्रम के लिए एक प्रमुख केन्द्र होगा। पोत निर्माण में वृद्धि करने के लिए इस संस्थान का प्रमुख बल उद्योग इन्टरफेसिंग के साथ-साथ अनुसंधान एवं विकास, अभिकल्पना, प्रौद्योगिकी विकास और प्रशिक्षण पर फोकस करना है। रक्षा मंत्री निर्देश के अधिशासी संगठन (बोर्ड ऑफ गवर्नर्स) के अध्यक्ष हैं जिसमें रक्षा मंत्रालय, भारतीय नौसेना, तटरक्षक, डीआरडीओ और सार्वजनिक क्षेत्र के शिपयार्डों के प्रतिनिधि सदस्य के रूप में होते हैं। यह मुख्य केंद्र, मौजूदा क्षमताओं को आपस में जोड़ने और मजबूत करने, नई क्षमताओं को विकसित करने और विद्यमान अंतरों को हटाने के लिए उत्तरदायी होगा। निर्देश ने परिभाषित अधिदेश के अनुसार अपने कार्यकलाप शुरू कर दिए हैं।

8

रक्षा अनुसंधान एवं विकास

अध्याय 8

रक्षा अनुसंधान एवं विकास

पृष्ठभूमि

8.1 रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डीआरडीओ) देश का अग्रणी संगठन है जो स्वदेशी रक्षा प्रणालियों को डिजाइन तथा विकसित करने में लगा है। इस संगठन का लक्ष्य मिसाइल, रेडार, सोनार, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध-पद्धति, इंजीनियरिंग प्रणाली, निगरानी तथा रेकी प्रणाली के साथ अन्य रक्षा उपस्करों में भारत को अपने आप में पूर्ण बनाना है। डीआरडीओ अत्याधुनिक संचार प्रणालियों, इलेक्ट्रो-ऑप्टिक्स, रात्रि दृष्टि उपकरणों, सूचना सुरक्षा उत्पादों, नौसेना तथा वायुवाहित शस्त्रों आदि को भी मुहैय्या कराने में लगा है। इनमें से प्रत्येक को अधिकतम सीमा तक स्वदेशी निर्माण तथा परीक्षण सुविधाओं का इस्तेमाल कर विकसित किया गया है।

8.2 डीआरडीओ ने देश के लिए उत्पादों/प्रणालियों का निर्माण करने के लिए आयुध निर्माणी बोर्डों (ओएफबी) और रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों (डीपीएसयू) के साथ मिलकर विशिष्ट रूप से कार्य किया है। परन्तु, डीआरडीओ ने भारत के निजी क्षेत्रक को आवश्यकता के कारण और भारत के रक्षा उद्योग के आधार को विस्तृत करने के लिए अपनी ओर आकर्षित किया है। यह भारत को वैश्विक निर्माणकर्ता और प्रवर्तनकर्ता के उस केन्द्र के रूप में परिवर्तन करने के सरकार के 'मेक इन इंडिया' विजन के अनुरूप है जिसका उत्पाद उत्कृष्ट गुणवत्ता का पर्याय हो गया है और वैश्विक उपभोक्ताओं में विश्वास बढ़ाता है।

संगठनात्मक संरचना

8.3 डीआरडीओ के प्रमुख सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग होते हैं जो डीआरडीओ के महानिदेशक (डीजी, डीआरडीओ) के रूप में प्रशासनिक प्रमुख भी होते थे। सितंबर, 2016 में सरकार ने डीजी डीआरडीओ के पद को अध्यक्ष डीआरडीओ के रूप में पुनर्नामित किया।

8.4 डीआरडीओ प्रयोगशालाओं को सात प्रौद्योगिकी समूहों अर्थात् वैमानिक प्रणालियां (एयरो), आयुध तथा समाघात इंजीनिरयिंग प्रणालियां (एसीई), इलेक्ट्रॉनिकी तथा संचार प्रणालियां (ईसीएस), जैव विज्ञान (एलएस), माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा संगणनात्मक प्रणालियां (एमईडी एवं सीओएस), मिसाइल तथा सामरिक प्रणालियां (एमएसएस) और नौसेना प्रणालियां एवं सामग्रियों (एनएसएंडएम) में समूहीकृत किया जाता है। इनमें से प्रत्येक समूह, समूह के डीजी के अधीन कार्य करता है। सात महानिदेशालयों के कार्यालय बेंगलुरू (एयरो तथा ईसीएस), पुणे (एसीई), दिल्ली (एमईडी तथा सीओएस और एलएस), हैदराबाद (एमएसएस) और विशाखापत्तनम (एनएसएंडएम) में स्थित हैं। प्रत्येक समूह के डीजी के अधीन प्रयोगशालाओं का उल्लेख सारणी सं. 8.1 में किया गया है।

8.5 डीआरडीओ में तीन मानव संसाधन संस्थान अर्थात् कार्मिक प्रतिभा केन्द्र (सेप्टेम), प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आईटीएम) और भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र (आरएसी) भी हैं। आरडीओ के अंतर्गत तीन प्रमाणन एजेंसियां अर्थात् सैन्य उड़ान योग्यता और उड़ान योग्यता उत्पादों का प्रमाणन केन्द्र (सेमिलैक), अग्नि तथा विस्फोटक के लिए अग्नि विस्फोटक तथा पर्यावरण सुरक्षा केन्द्र (सीफीस) और सूचना सुरक्षा उत्पादों की ग्रेडिंग के लिए वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एसएजी) भी

सारणी 8.1

घटक प्रयोगशालाओं सहित प्रौद्योगिकी क्षेत्र आधारित समूहों के प्रमुख

समूह के महानिदेशक	प्रयोगशालाएं
डीजी (एयरो)	एडीई, एडीआरडीई, कैब्स, जीटीआरई
डीजी (एसीई)	*आयुध :* एआरडीई, सीफीस, एचईएमआरएल, पीएक्सई *समाघात वाहन :* सीवीआरडीई, डीटीआरएल, आरएंडडीई(ई), एसएएसई, वीआरडीई
डीजी (ईसीएस)	चेस, डेयर, डील, डीएलआरएल, आईआरडीई, लास्टेक, एलआरडीई
डीजी (एलएस)	डेबेल, डीएफआरएल, डिबेर, डिहार, डिपास, डीआईपीआर, डीआरडीई, डीआरएल(टी), इनमास
डीजी (मेड एवं कॉस)	*माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक उपकरण :* अनुराग, एमटीआरडीसी, एसएसपीएल *संगणनात्मक प्रणालियां :* केयर, जेसीबी, एसएजी
डीजी (एमएसएस)	एएसएल, डीआरडीएल, आईटीआर, आरसीआई, टीबीआरएल
डीजी (एनएसएंडएम)	*नौसेना प्रणालियां :* एनएमआरएल, एनपीओएल, एनएसटीएल *सामग्रियां :* डीएलजे, डीएमआरएल, डीएमएसआरडीई

हैं। ये प्रमाणन एजेंसियां न केवल डीआरडीओ बल्कि भारत सरकार के अन्य संगठनों को भी सेवाएं प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त, सेमिलैक के अधिकार क्षेत्र में प्रादेशिक सैन्य उड़ान योग्यता केन्द्र (आरसीएमए) देश के विभिन्न स्टेशनों में स्थित हैं। सामरिक महत्व के क्षेत्रों में शैक्षणिक जगत में बुनियादी अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए डीआरडीओ के निधिकरण से चार अनुसंधान बोर्ड (वैमानिकी, नौसेना, आयुद्ध तथा जैव विज्ञान) कार्य करते हैं।

8.6 इसके अलावा, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग का एक स्वायत्त निकाय अर्थात् बेंगलुरू में वैमानिकी विकास एजेंसी, एक संयुक्त उद्यम अर्थात् दिल्ली में ब्रह्मोस एयरोस्पेस और एक मानद विश्वविद्यालय अर्थात् पुणे में रक्षा उन्नत प्रौद्योगिकी (डायट) है।

डीआरडीओ मुख्यालय

8.7 दिल्ली स्थित डीआरडीओ मुख्यालय जो संगठन के संपूर्ण कार्य का समन्वय करता है, सरकार तथा समूह मुख्यालयों और प्रयोगशालाओं के बीच एक इंटरफेस है। कॉर्पोरेट मुख्यालय के क्रियाकलापों का निरीक्षण करने के लिए पांच मुख्य नियंत्रक अनुसंधान एवं विकास (सीसीआरएंडडी) हैं। कॉर्पोरेट मुख्यालय का संगठन चार्ट सारणी 8.2 में है। इसके अलावा, एक सीसी आर एंड डी उस ब्रह्मोस के सीईओ तथा एमडी के रूप में कार्य करते हैं जो भारत/रूस का संयुक्त उद्यम है जिसमें डीआरडीओ एक साझीदार है।

सारणी 8.2

डीआरडीओ की कॉर्पोरेट संरचना

मुख्य नियंत्रक (अनु. एवं वि.)	कॉर्पोरेट मुख्यालय
सीसी आर एंड डी (एच आर)	कार्मिक एवं प्रतिभा प्रबंधन केन्द्र (सेप्टेम), रक्षा उन्नत प्रौद्योगिकी संस्थान (डायट), रक्षा वैज्ञानिक सूचना एवं प्रलेखन केन्द्र (डेसीडॉक), मानव संसाधन विकास (एचआरडी), प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थान (आईटीएम), कार्मिक, जनसंपर्क, भर्ती एवं मूल्यांकन केन्द्र (आरएसी), सूचना का अधिकार (आरटीआई) प्रकोष्ठ
सीसी आर एंड डी (आर एंड एम)	बजट, वित्त एवं लेखा (बीएफ एंड ए), सिविल निर्माण कार्य तथा संपदा (सीडब्ल्यूएंडई), साइबर सुरक्षा (सीएस), रक्षा प्रौद्योगिकी कमीशन (डीटीसी) सचिवालय, प्रबंधन सेवाएं, सामग्री प्रबंधन, संसदीय कार्य, योजना एवं समन्वय (पी एंड सी), कार्यक्रम कार्यालय (पीओ-I एवं पीओ-II), राजभाषा एवं ओ एंड एम, सतर्कता एवं सुरक्षा (वी एंड एस)

मुख्य नियंत्रक (अनु. एवं वि.)	कॉर्पोरेट मुख्यालय
सीसी आर एंड डी (पीसी एंड एसआई)	औद्योगिक संपर्क तथा प्रौद्योगिकी प्रबंधन (आईआईटीएम), वाणिज्य के लिए सेना के साथ बातचीत (आईएसबी), अंतर्राष्ट्रीय सहयोग (आईसी) और जेवी, निम्न तीव्रता संघर्ष (एलआईसी), गुणता, विश्वसनीयता और सुरक्षा (क्यूआर एंड एस), प्रमुखों के वैज्ञानिक सलाहकार, विदेश में तकनीकी सलाहकार
सीसी आर एंड डी (टीएम)	बाह्य अनुसंधान तथा बौद्धिक संपदा अधिकार (ईआर एंड आईपीआर), भविष्यवादी प्रौद्योगिकी प्रबंधन (एफटीएम), अनुसंधान बोर्ड, अनुसंधान नव-प्रवर्तन केन्द्र (आरआईसी), उत्कृष्टता केन्द्र
सीसी आर एंड डी (सैम)	पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), सिमुलेशन और मॉडलिंग केन्द्र (सैम-सी)
**साइबर सुरक्षा निदेशालय डीजी (मेड एंड कॉस) के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सीआईएसओ के रूप में कार्य करता है।*	

कार्मिक शक्ति

8.8 डीआरडीओ की कुल नफरी में 24.578 कर्मचारी हैं जिसमें से 7410 रक्षा अनुसंधान तथा विकास सेवा (डीआरडीएस), 9297 रक्षा अनुसंधान तथा तकनीकी संवर्ग (डीआरटीसी) और 7871 प्रशासनिक तथा संबद्ध संवर्ग के हैं।

बजट

8.9 वर्तमान वित्त वर्ष 2016-17 के दौरान डीडीआर एंड डी को 13,593.78 करोड़ रु (बीई) आबंटित किया गया है जो कुल रक्षा बजट का लगभग 5.5% है। पूंजीगत शीर्ष के अंतर्गत कुल 6865.73 करोड़ रू और राजस्व शीर्ष के अंतर्गत 6728.05 करोड़ रू का आबंटन किया गया है।

कार्यक्रम और परियोजनाएं

8.10 कैलेंडर वर्ष के दौरान 3723 करोड़ रू लागत की 78 नई परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है और 1353 करोड़ रू कुल लागत की 42 परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं।

8.11 वर्तमान में डीआरडीओ में 291 परियोजनाएं (सामरिक परियोजनाओं को छोड़कर) चल रही हैं जिनकी लागत लगभग 49,030 करोड़ रू (प्रयोक्ता के हिस्से सहित) है। चल रही 291 परियोजनाओं में से 42 बड़ी परियोजनाओं (लागत > 100 करोड़ रु) की लागत 42,643 करोड़ रु (डीआरडीओ का हिस्सा कुल हिस्से का 70%) है।

8.12 वर्ष 2016 में डीआरडीओ को कई महत्वपूर्ण लाभ/उपलब्धियां प्राप्त हुए जिनमें से कुछ का विस्तृत विवरण बाद के पैराओं में है:

हल्का लड़ाकू विमान (एलसीए) 'तेजस': स्वदेश में विकसित एलसीए एक उन्नत प्रौद्योगिकी, सुपरसोनिक, हल्के वजन का, सभी मौसम, बहु-भूमि समाघात वायुयान है जिसकी डिजाइनिंग बहु-समाघात भूमिकाओं के लिए की गई हैं। वर्तमान में 13 तेजस वायुयान हैं जिनका उड़ान परीक्षण (नौसेना रूपांतर सहित) किया जा रहा है। 31 दिसंबर, 2016 तक 16 तेजस वायुयानों पर कुल 3310 उड़ान परीक्षण पूरे किए जा चुके हैं। 'तेजस' ने जनवरी, 2016 में बहरिन अंतर्राष्ट्रीय वायु प्रदर्शनी में हिस्सा लेकर अपनी अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनाई। संयुक्त राज्य अमेरिका के एफ-22 तथा यूरो फाइटरों के साथ इसने प्रभावशाली मैनूवर का प्रदर्शन किया जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। इसने मार्च 2016 में भारतीय वायुसेना के आयरन फिस्ट अभ्यास में भी सहभागिता की। अभ्यास के दौरान इसकी बहुभूमिका क्षमता को दर्शाने के लिए वायु-से-वायु में मार करने वाली मिसाइलों तथा लेजर निर्देशित बमों (वायु से भूमि शस्त्र) को फायर किया गया। एलसीए को शामिल करना एक उपलब्धिपूर्ण घटना थी जब एचएएल ने 01 जुलाई, 2016 को एएसटीई बेंगलुरू में संपन्न एक समारोह में पहले दो तेजस वायुयानों को सौंपा जो 'फ्लांइग डैगर्स' 45 के नाम से एलसीए के प्रथम स्क्वॉड्रन का निर्माण करेगा। अक्तूबर, 2016 में भारतीय वायुसेना बेस जैसलमेर में वायु से भूमि शस्त्र परीक्षण संपन्न हुए। प्रतिवर्ष 8 वायुयानों की उत्पादन दर के लिए हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स

लिमिटेड (एचएएल) में उत्पादन सुविधा की स्थापना का कार्य चल रहा है।

एलसीए नौसेना: एलसीए नौसेना को वायुयान वाहकों के डेक से प्रचालन करने हेतु डिजाइन किया गया है और इसमें उड़ान भरने के दौरान स्काई जंप रैंप के दौरान लगाए गए बलों के अवशोषण के लिए मजबूत लैंडिंग गीयर शामिल है। दो एलसीए नौसेना प्रोटोटाइप, दो सीट वाले ट्रेनर (एनपी1) वायुयान और एकल सीट वाला लड़ाकू (एनपी2) वायुयान पर कुल 115 उड़ानें (31 दिसंबर, 2016 तक) पूरी हो चुकी हैं। अन्य परीक्षणों में एसबीटीएफ से स्काई-जंप लांच, आरजीएस से स्काई जंप/रात्रि स्काई जंप, ईंधन सन्निक्षेप परीक्षण, लेवकॉन-30 सार्टिज, एप्रोच परीक्षण, गर्म पुनर्ईंधन भरण, अवतरण क्षेत्र से डेक दाब तथा उच्च निमज्जन दर अवतरण सहित लघु उड़ान भरना शामिल है।

वायुवाहित पूर्व चेतावनी तथा नियंत्रण (एईडब्ल्यू एवं सी) प्रणाली : एईडब्ल्यू एवं सी प्रणाली में वायुवाहित तथा समुद्री सतह लक्ष्यों के वायु तथा भूमि स्टेशनों तथा शत्रु उत्सर्जन की पूर्व चेतावनी तथा अवस्थिति का पता लगाने हेतु वायुयान पर सेंसर होते हैं। सभी मिशन प्रणालियों को पहले दो वायुयानों पर एकीकृत किया गया है और विकास परीक्षण प्रगति को अग्रवर्ती चरण में है। तीसरे वायुयान पर प्रणाली एकीकरण भी चल रहा है। भू-उपयोग प्रणाली (जीईएस) का एकीकृत वायु कमान तथा नियंत्रण स्टेशन (आईएसीसीएस) के साथ एकीकरण किया जा रहा है। भटिंडा स्थित भारतीय वायुसेना संक्रियात्मक बेस में हस्तांतरित की गई भूमि प्रणालियों को स्थापित किया गया है। प्रलेखन आदि के अलावा, संक्रिया तथा रख-रखाव कर्मीदल के लिए वायुसेना कार्मिकों के एक सेट का प्रशिक्षण पूरा हो चुका है। एईडब्ल्यू एवं सी ने 9 से 12 नवंबर, 2016 के दौरान ग्वालियर में आक्रमण अभ्यास में सहभागिता की। एईडब्ल्यू एवं सी को भारतीय वायुसेना में शीघ्र ही शामिल किए जाने की संभावना है।

वायुवाहित चेतावनी तथा नियंत्रण प्रणाली (भारत): इस कार्यक्रम में दो चरणों में छह प्रणालियों को विकसित

करने का विचार है। प्रमुख कार्य के रूप में वायुयान का प्रापण प्रगति पर है। अति महत्वपूर्ण प्रणालियों अर्थात् डोम आधारित ऐंटेना को विकसित करने का कार्य उसहास परियोजना में एक प्रमुख कार्य के रूप में चल रहा है।

मध्यम तुंगता लंबी सह्यता वाला यूएवी 'रुस्तम-II': तीनों सशस्त्र सेनाओं के लिए आसूचना, निगरानी और टोह कार्य करने के लिए 24 घंटे की सह्यता के साथ बहु-मिशन वाला मानवरहित एरियल वाहन (यूएवी) रुस्तम-II को विकसित किया जा रहा है। दिन एवं रात में मिशन पूरा करने हेतु विभिन्न भारलोड अर्थात् ईओ/आईआर, एसएआर, एलिंट/ कॉमिंट को वहन करने में सक्षम है। आज की तारीख तक सात एयरफ्रेमों को पूरा किया गया है। वर्ष के दौरान 8 अगस्त, 2016 से टैक्सी परीक्षण शुरू किए गए और कुल 75 टैक्सी रन संचालित किए गए हैं। डीआरडीओ ने वैमानिकी परीक्षण रेंज (एटीआर), चित्रदुर्ग से नवंबर, 2016 में रूस्तम-II की प्रथम डिजाइन अधिप्रमाणन उड़ान (डीवीएफ) को

कार्यान्वित किया। उड़ान ने उड़ान भरने, बैंक, लेवल उड़ान तथा अवतरण आदि जैसे उड़ान प्लेटफार्म को सिद्ध करने के प्रमुख उद्देश्यों को पूरा किया। विभिन्न डीआरडीओ प्रयोगशालाओं में स्वदेशी भार योग को विकसित किया जा रहा है।

भारी अवपात प्रणाली (एचडीएस): एएन-32 वायुयान से 3 टन भार तथा आईएल-76 वायुयान से 7 टन तथा 16 टन भार जैसी मार गिराने की क्षमता वाली भारी अवपात प्रणाली (एचडीएस) को पहले ही विकसित किया गया है। सेना ने 3टीएचडीएस के 159 सेटों के लिए ओएफबी के समक्ष मांगपत्र (इंडेंट) रखा है। कुल छह यूएटीटी को पी-16 एचडीएस के लिए पूरा किया गया है और प्रणाली ने मार्गदर्शन की सभी जरूरतों को पूरा किया है। प्रणाली के लिए प्रयोक्ता परीक्षण किए जा रहे हैं।

नियंत्रित हवाई वितरण प्रणाली: विशिष्ट मिलन बिन्दुओं पर पेलोडों की तेजी से तैनाती के लिए एयरड्रॉप प्रौद्योगिकी एक महत्वपूर्ण क्षमता है। 500 किग्रा ऑल अप वेट (एयूडब्ल्यू) के लिए डीआरडीओ ने कैड्स को विकसित किया है। वर्ष के दौरान यूनथांग सिक्किम में दो कैड्स प्रदर्शन परीक्षण सफलतापूर्वक किए गए।

मध्यम आकार की एयरोस्टेट निगरानी प्रणाली 'नक्षत्र': 'नक्षत्र' निगरानी, संचार प्रसारण, उड़ते वायुयानों तथा मिसाइलों की पूर्व चेतावनी और संसूचन हेतु एकीकृत मध्यम आकार की एयरोस्टेट निगरानी प्रणाली है। वर्ष के दौरान गुरदासपुर में प्रयोक्ता स्थल पर 1000 मी एएमएसएल तक तैनाती परीक्षण का सफलतापूर्वक संचालन किया गया। परियोजना के कार्यक्षेत्र /उद्देश्यों को पूरा किया गया है और अब यह बंद होने की प्रक्रिया में है।

लंबी दूरी की सतह से सतह पर मार करने वाली प्राक्षेपिक मिसाइल 'अग्नि-5': अग्नि-5 का 26 दिसंबर 2016 को सफलतापूर्वक उड़ान परीक्षण किया गया। यह अग्नि-5 मिसाइल का चौथा परीक्षण और रोड मोबाइल लांचर पर कैनिस्टर से दूसरा परीक्षण था। सभी चार मिशन सफल रहे हैं।

शामिल की गई मिसाइलों के प्रयोक्ता परीक्षण: वर्ष के दौरान निम्नलिखित परीक्षण किए गए: अग्नि-1 मिसाइल - मार्च 14 एवं नवंबर 22, 2016, पृथ्वी-II मिसाइल - फरवरी 16, मई 18 एवं नवंबर 21, 2016 और धनुष मिसाइल - मार्च 15 तथा नवंबर 26, 2016।

सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल 'आकाश': मध्यम दूरी (25 किमी) की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल 'आकाश' को विकसित और भारतीय वायु सेना में शामिल किया गया है। वर्ष के दौरान आकाश का सैन्य रूपांतर प्रयोक्ता अभ्यास किया गया। डीआरडीओ ने इस वर्ष आकाश की दो नई परियोजनाओं को भी शुरू किया है। आकाश की नई पीढ़ी (आकाश-एनजी) का ठोस प्रणोदन, विंग-बॉडी टेल विन्यास, इलेक्ट्रो-मैकेनिकल कंट्रोल सिस्टम, सक्रिय आरएफ सीकर तथा लेजर समीपता फ्यूज के साथ संकल्पना तैयार की गई है। सीसीयू के विन्यास, बहु-कार्य के रेडार (एमएफआर) तथा वीए/वीपी की वायु रक्षा के लिए लांचर सहित 50 किमी की रेंज तक 10 टार्गेटों को शामिल करते हुए यह प्रणाली खोज, ट्रैक तथा फायर करने में सक्षम होगी। मौजूदा मिसाइलों में आवश्यक रूपांतरण/रिट्रो फिटमेंट के जरिए आरएफ सीकर के साथ आकाश मेक-1 की समुन्नता को सिद्ध करने के लिए आकाश मेक-1 एस को टीडी मोड में प्रारंभ किया गया है।

लंबी दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल (एलआरएसएएम): 70 किमी. की रेंज वाली एलआरएसएएम डीआरडीओ, भारतीय नौसेना तथा इजराइल

एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज (आईएआई), इजराइल का संयुक्त विकास कार्यक्रम है। इन मिसाइलों का प्रयोग भारतीय नौसेना की तीन गाइडिड मिसाइल विध्वसंक को सज्जित करने के लिए किया जाएगा। बॉनशी जेट 80 को टार्गेट के रूप मे लेकर तीन अवरोध परिदृश्यों को साबित करने के लिए सितंबर, 2016 में आईटीआर में एलआरएसएएम होम-ऑन परीक्षण किए गए।

मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल (एमआरएसएएम): एमआरएसएएम शस्त्र प्रणाली का विकास भारतीय वायु सेना (भा.वा.से.) के लिए हमारे अपने क्षेत्रों और पैदल सेवा को हवाई हमलों से बचाने के लिए किया गया है। इस प्रणाली का डीआरडीओ, भा.वा.से. और आई.ए.आई, इजराईल द्वारा संयुक्त रूप से विकास किया गया है। वर्ष के दौरान लंबी दूरी की संसूचन और खोजी रेडार (एलबीएमएफएसटीएआर), मिसाइल लांच और होमिंग ऑन टार्गेट और रेडार ट्रैकिंग एवं एएसपी जनरेशन द्वारा लक्ष्य संसूचन और खोज के मूल्यांकन के लिए जून/जुलाई 2016 के दौरान तीन उड़ान परीक्षण सफलतापूर्वक आयोजित किए गए।

सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल 'ब्रह्मोस': ब्रह्मोस एक दो चरणीय सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है जिसमें पहले चरण के रूप में ठोस प्रणोदक वर्धक है और दूसरे चरण के रूप में तरल रैमजेट है। मिसाइल की उड़ान रेंज 290 कि. मी. तक की है और सम्पूर्ण उड़ान के दौरान सुपरसोनिक गति रहती है जिसके परिणामस्वरुप उड़ान समय कम होता है। यह लक्ष्य तक के अपने पथ में विभिन्न उड़ानों को अपनाते हुए 'फायर एंड फार्गेट सिद्धांत' पर कार्य करता है। यह मिसाइल 300 किलोग्राम तक भार वाले परंपरागत युद्धशीर्ष को ढ़ोती है। इस मिसाइल को 2005 में भारतीय नौसेना में शामिल किया गया। 2004 से 2007 के दौरान सफल लांच की श्रृंखला के बाद, भारतीय सेना में भूमि से हमले के रूपांतर को शामिल करने का कार्य 2008 में आरंभ हुआ।

हवाई रूपांतर ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल का एसयू-30 मेक-I के साथ एकीकरण के लिए सफलतापूर्वक विकास किया गया है। लांचर और मिसाइल सहित रूपांतरित एसयू-30 मेक-I का प्रथम कैप्टिव फ्लाइट परीक्षण जून 2016 में सफलतापूर्वक किया गया। वायुयान से मिसाइल पृथक्करण परीक्षण का प्रमुख उपलब्धि अगस्त 2016 में

प्राप्त की गई। चालू तकनीकी कार्य, ड्रॉप परीक्षण और संचालनात्मक लांच की समाप्ति पर ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल का हवाई रूपांतर भारतीय वायु सेना में शामिल किया जाएगा।

दृष्टिगत रेंज से परे हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइल 'अस्त्र': अति विश्वसनीय उच्च एकल शॉट मारक क्षमता वाली दृष्टिगत रेंज से परे हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइल 'अस्त्र' (60 कि.मी) का विकास डीआरडीओ द्वारा उच्च मैनुवरिंग सुपरसोनिक हवाई लक्ष्यों का पता लगाने और उन्हें नष्ट करने के लिए किया गया है। मिसाइल में अनेक बेजोड़ विशेषताएं जैसे सक्रिय रेडार टर्मिनल निरीक्षण, उत्कृष्ट इलेक्ट्रॉनिक काउंटर-काउंटर उपाय (ईसीसीएम) विशेषताएं, धुआं रहित प्रणोदन और प्रक्रिया उन्नत प्रभाविता समाहित हैं। वर्ष के दौरान, आयरन फिस्ट-2016 कार्यक्रम के भाग के रूप में अस्त्र मिसाइल लांच, पोखरण रेंज में आयोजित किया गया था। विभिन्न परिदृश्यों वाले बंशी लक्ष्यों के साथ प्रयोक्ता परीक्षण दिसंबर 2016 में सफलतापूर्वक आयोजित किए गए। 50 मिसाइलों की एलएसपी के लिए वायुसेना से अनापत्ति प्राप्त हो गई है।

तीसरी पीढ़ी की हेलीकॉप्टर से लांच की जाने वाली टैंक-रोधी निर्देशित मिसाइल 'हेलिना': हेलिना एक तीसरी पीढ़ी की हेलीकॉप्टर लांच टैंक-रोधी निर्देशित मिसाइल है जिसमें उन्नत हल्के हेलिकॉप्टर (एएलएच-डब्ल्यूएसआई) पर एकीकरण के लिए इमेजिंग इंफ्रा-रेड (आईआईआर) सहित 7 कि.मी. लॉक-ऑन-बिफोर-लांच (एलओबीएल) रेंज क्षमता है। हेलिना शस्त्र प्रणाली में चार लांचर, आठ मिसाइलें और एक अग्नि नियंत्रण प्रणाली शामिल हैं। वर्ष के दौरान एचएएल, बेंगलुरू और राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रों में कैप्टिव उड़ान परीक्षण (सीएफटी) आयोजित किए गए।

टैंक-रोधी मिसाइल 'प्रोस्पिना': 'नाग' एक तीसरी पीढ़ी की टैंक-रोधी मिसाइल (एटीएम) है जिसमें 'फायर एंड फार्गेट' और 'टॉप अटैक' क्षमताएं हैं और जिसका उपयोग दिन और रात में किया जा सकता है। इसे 'एनएएमआईसीए' नाम के विशेष तौर पर परिष्कृत इंफैंट्री कमान वाहन (आईसीवी) बीएमपी-2 पर तैनात किया गया है। वर्ष के दौरान गर्मी के वातावरण में दिन के सबसे गर्म समय में आईआईआर सीकर की रेंज क्षमताओं को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से 'नाग' के निर्देशित उड़ान परीक्षण किए गए।

तीव्र प्रतिक्रिया वाली सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल (क्यूआरएसएएम): क्यूआरएसएएम शस्त्र प्रणाली, वायु क्षेत्र की रक्षा के लिए दो वाहनों के संरुपण के साथ करीब 30 कि.मी. की रेंज पर बहु लक्ष्यों को साधते हुए, चलते हुए खोज, ट्रैक और थोड़े-थोड़े अंतराल पर हमला करने में सक्षम है। प्रणाली डिजाइन पूरा कर लिया गया है और अधिकांश उप-प्रणालियां जिसमें एक्स-बैंड क्वाड ट्रांसमिट रिसीव मॉड्यूल (क्यूटीआरएम), टू वे डाटा लिंक (टीडब्ल्यूडीएल) ऑनबोर्ड सेगमेंट इत्यादि शामिल हैं को प्राप्त किया जा रहा है। मिसाइल संरूपण को अंतिम रूप दिया गया है और 2017 के प्रारंभ में प्रणाली का उड़ान परीक्षण किया जाएगा।

नई पीढ़ी की विकिरण-रोधी मिसाइल (एनजीएआरएम): डीआरडीओ 100 कि.मी. की रेंज वाली एनजीएआरएम के डिजाइन और विकास में कार्यरत है। उपयुक्त परिवर्तन के बाद एकेयू-58 लांचर का एसयू-30 मेक-I वायुयान पर मिसाइल एकीकरण के लिए उपयोग किया जाएगा। वर्ष के दौरान, वायुसेना स्टेशन, पुणे में एसयू-30 मेक-I वायुयान के साथ कैप्टिव उड़ान परीक्षण (सीएफटी-1) सॉर्टीज आयोजित किए गए। मई 2016 के दौरान चयनित फ्रीक्वेंसी पर रेडोम के साथ प्रयोगशाला जांच परीक्षण पूरे किए गए।

तेज वायु क्षेत्र रोधी शस्त्र (एसएएडब्ल्यू): एसएएडब्ल्यू एक लंबी दूरी का, स्टैंड ऑफ, हवा से सतह पर मार करने वाला सटीक शस्त्र (125 किलो श्रेणी) है जो कि जगुआर और एसयू-30 मेक-I वायुयानों से लांच के लिए भू-लक्ष्यों को भेदने में सक्षम है। वर्ष के दौरान, एसएएडब्ल्यू से जगुआर सीएलपी में मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल और वैमानिकीय एकीकरण सफलतापूर्वक पूरा किया गया और एसएएडब्ल्यू ओबीसी और जगुआर एमसी के मध्य संचार स्थापित किया गया। 9 सॉर्टीज वाले कैप्टिव उड़ान परीक्षण भी बेंगलुरू में पूरे किए गए। जगुआर से एसएएडब्ल्यू के ड्रॉप परीक्षण प्रगति पर हैं।

केयू-बैंड सक्रिय रेडार सीकर (केयू-बैंड एआरएस): डीआरडीओ ने आयातित सीकर के मॉड्यूलों को बदलने

के लिए केयू-बैंड सीकर के स्वदेश में विकास के लिए एक परियोजना का जिम्मा लिया है। प्रथम स्वदेशी केयू-बैंड सक्रिय रेडार सीकर के कैप्टिव उड़ान परीक्षण वायुसेना ने सफलतापूर्वक आयोजित किए गए। एसयू-30 वायुयान पर शस्त्र प्रणाली संरूपण में अस्त्र मिसाइल के साथ सीकर को एकीकृत किया गया और एसयू-30 वायुयान लक्ष्य की सफलतापूर्वक खोज कर पाया।

ग्लाइड बम: डीआरडीओ ने पंख रहित और पंख सहित दोनों रूपांतर में 1000 किलो ग्लाइड बमों का स्वदेश में विकास किया है। 2016 के दौरान, दोनों बमों के कैरिज और ड्रॉप परीक्षण सफलतापूर्वक आयोजित किए गए।

खुली रेंज की आरसीएस एवं एंटिना मापन सुविधा (ओआरएएनजीई): ओआरएएनजीई में पूर्ण स्केल रेडार क्रॉस सेक्शन (आरसीएस) माप यूएचएफ से डब्ल्यू बैंड की फ्रीक्वेंसी में, आरसीएस में कमी और एंटिना माप सुविधा की क्षमता है। 2016 के दौरान इस सुविधा का उपयोग पीजी एडी लक्ष्य मिसाइल के लिए आरसीएस डाटा बेस का सृजन, विभिन्न स्थितियों में 500 मीटर से 20 मीटर तक की अवरोधक तक पहुंच की दूरी के लिए लक्ष्य मिसाइल का ग्लिन्ट तथा आरसीएस उच्चावसन अध्ययन, गरुथमा संरूपण के आरसीएस सिग्नेचर को कम करने के लिए आरसीएस न्यूनीकरण अध्ययन, आशांकित लक्ष्यों के विरूद्ध विभिन्न रेंज की लंबी दूरियों पर आरएफ सीकर का निष्पादन मूल्यांकन के लिए किया गया है।

रेल ट्रैक रॉकेट स्लेड (आरटीआरएस) राष्ट्रीय जांच सुविधा : संवर्धित पेंटा रेल ट्रैक आरटीआरएस डायनेमिक जांच सुविधा की लंबाई 4 किमी. है और यह विशाल विविधता वाले टेस्ट स्कोर को समायोजित करने के लिए 0.7 मी से 4.86मी तक रेल गॉज के 10 विभिन्न संयोजन प्रदान करता है। यह 2.0 मैक तक की गति तक 1.5 टन तक के भार को धकेल सकता है। ट्रैक में किसी भी समय पर 50 टन तक भार सहन करने की उत्कृष्ट क्षमता है और जांच वस्तु के परीक्षण के बाद के मूल्यांकन के लिए विभिन्न ब्रेकिंग मैकेनिज्म के प्रयोग से परीक्षण के बाद ट्रैक पर जांच वस्तु को रोका जा सकता है। एचएसटीडीवी की फ्लैप ओपनिंग के लिए हाल के परीक्षण, एसएएडब्ल्यू की पीसीबी पेनिट्रेटिंग प्रोजेक्टाइल के प्रभाव परीक्षण और एक (01) मैक गति पर सघन मिट्टी लक्ष्य पर इसके प्रभाव के लिए 1000 किलो श्रेणी के बमों की सफल लांचिंग आयोजित की गई।

उन्नत कर्षित आर्टिलरी गन प्रणाली (एटीएजीएस): डीआरडीओ ने भारतीय सेना की आर्टिलरी की आवश्यकता के लिए उच्च रेंज, सटीकता और निरंतरता वाली 155 एमएम X 52 केलिबर एटीएजीएस के डिजाइन और विकास का जिम्मा लिया है। एटीएजीएस उप-प्रणालियां जिनमें बैरल, मजल ब्रेक, ब्रीच मैकेनिज्म, डायल साइट, रिकॉइल प्रणाली, गन ढ़ांचे, ऑटोमोटिव प्रणाली, ऑटोमेशन और नियंत्रण प्रणाली, बैट्री कमान पोस्ट, निगरानी प्रणाली और ऑप्ट्रोनिक साइट विभिन्न आयुध फैक्ट्रियों और निजी उद्योगों के साथ लगभग पूरे होने को हैं। स्थिर फायरिंग स्टैंड पर एकीकृत एटीएजीएस एटीएजीएस आर्डनेंस और रिकॉइल प्रणाली की प्रथम

डायनामिक फायरिंग फरवरी 2016 में आयोजित की गई। आर्डनेंस और रिकॉइल प्रणाली (बैरल, ब्रीच, मैकेनिज्म, मजल ब्रेक) के जो सेटों को 568 एमपीए (465 एमपीए के सर्विस प्रेशर के लिए) के अधिकतम प्राप्य प्रेशर (दाब) तक दो विभिन्न अवसरों पर पीएक्सई बालासोर में कार्यान्वित और प्रूफ फायर किए गए जो कि विश्व में पहली बार प्राप्त किए गए हैं। आर्डनेंस और रिकॉइल प्रणाली की प्रूफ फायरिंग के लिए एआरडीई द्वारा अपने विकास भागीदार के साथ मिलकर फिक्स्ड फायरिंग स्टैंड (एफएफएस) की बहुत मजबूत सुविधा का डिजाइन और विकास किया गया है और पीएक्सई बालासोर में स्थापित और अधिकृत किया गया है। दो गन प्रणालियों के लिए ऑटोमेशन और नियंत्रण प्रमाली के साथ संपूर्ण गन ढ़ांचा और आटोमोटिव प्रणाली कार्यान्वित की गई है और पीएक्सई बालासोर में दिसंबर 2016 में डिजाइन परीक्षणों की ताकत के लिए फैक्ट्री स्वीकार्यता परीक्षण (एफएटी) प्रारंभ हुए।

युद्ध सामग्री का नया वर्ग (एनएफएम): मौजूदा युद्ध सामग्री में सुधार के लिए और उसकी निष्पादन को बढ़ाने के लिए डीआरडीओ द्वारा छह प्रकार की युद्ध सामग्रियों अर्थात् सॉफ्ट टार्गेट ब्लास्ट म्यूनिशन 'निपुण', एंटी-टैंक प्वाइंट अटैक म्यूनिशन 'विभव', एंटी-टैंक बार म्यूनिशन 'विशाल', डायरेक्शनल फ्रेगमेंटेशन म्यूनिशन 'उल्का' का डिजाइन और विकास किया गया है। वर्ष के दौरान 'निपुण', 'विभव' और 'विशाल' के प्रयोक्ता परीक्षण पूरे किए गए। 'पार्थ' म्यूनिशन का विकास चरण और यूएटीटी परीक्षण सफलतापूर्वक पूरे किए गए हैं और यह प्रयोक्ता परीक्षणों के लिए तैयार है। सॉफ्टवेयर की निष्पादनता की जांच के लिए मई 2016 में झांसी में 'प्रचंड' के परीक्षण आयोजित किए गए। 'प्रचंड' का भू-परीक्षण भी किया गया। अगस्त 2016 में 'उल्का' और एम-16 (मौजूदा) के लिए तुलनात्मक विखंडन परीक्षण पूरे किए गए और डिजाइन मानकों के लिए उल्का म्यूनिशन के 50 सेटों का मूल्यांकन किया गया।

120 एमएम अर्जुन टैंक के लिए भेदन-सह-विस्फोट (पीसीबी) और थर्मो बैरिक (टीबी) युद्धोपकरण: पीसीबी युद्धोपकरण को बंकरों, हल्के पक्के ढांचों, प्रशासनिक भवनों, भूमि किलेबंदी और मशीन गन चौकी को ध्वस्त करने के लिए डिजाइन किया गया है। टीबी युद्धोपकरण को हल्के वाहनों, पैदल सेना टुकड़ियों आदि को ध्वस्त करने के लिए डिजाइन किया गया है। अर्जुन टैंक के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए 120 एमएम एवं टीबी टैंक युद्धोपकरण की टेस्ट फायरिंग सेना की सक्रिय भागीदारी के साथ जनवरी 2016 में की गई। सेना की सक्रिय भागीदारी के साथ जनवरी 2016 के दौरान परीक्षण आयोजित किए गए। झटकों, विस्फोट दबाव और उन्नत इमेजिंग प्रणालियों को मापने के लिए इंस्ट्रूमेंटेशन युक्त डेरेलिक्ट टैंक पर उपर्युक्त युद्धोपकरण की प्रभाविता को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से पहली बार परीक्षण आयोजित किए गए। नया युद्धोपकण, मुख्य युद्धक टैंक (एमबीटी) 'अर्जुन' की मारक क्षमता में अत्यधिक इजाफा करेगा।

अर्जुन मुख्य युद्धक टैंक (एमबीटी) मेक-II : अर्जुन एमबीटी मेक-I में 84 सुधारों (73 टैंक पर लगी हुई) के साथ अर्जुन एमबीटी मेक-II का डिजाइन और विकास किया गया है। यह प्रणाली प्रयोक्ता परीक्षणों के अग्रिम चरण में है। टैंक पर सज्जित सामग्री में 73 सुधारों में से करीब टैंक पर सज्जित 67 सामग्रियों में सुधारों को सफल घोषित किया गया है। सफल सुधारों के लिए डीजीक्यूए द्वारा मूल्यांकन और रख-रखाव मूल्यांकन परीक्षणों (एमईटी) का आदेश दिया गया है। केवल मिसाइल को दागने का प्रदर्शन ही एकमात्र लंबित सुधार है यद्यपि इसका प्रयोक्ता को पहले प्रदर्शन किया गया है। इसके लिए डीआरडीओ ने परियोजना मोड में इष्टतमीकृत ऐड-ऑन लेजर टार्गेट डेसिगनेटर के विकास का जिम्मा लिया है।

इस वर्ष के दौरान प्रयोक्ता ने अर्जुन एमबीटी मेक-II प्रोटोटाइप 1 पर 'एकीकृत प्रयोक्ता पुष्टिकारक परीक्षण (आईयूसीटी)' आयोजित करने की आवश्यकता की सूचना दी है। पूर्वाभ्यास के रूप मे, डीआरडीओ ने मई एवं जून 2016 के दौरान महाजन फील्ड फायरिंग रेंज (एमएफएफआर) में सघन 'एकीकृत डीआरडीओ पुष्टिकारक परीक्षण' आयोजित किए। टैंक की सभी प्रणालियों का परीक्षणों के दौरान एक-एक करके और एकीकृत रूप में मूल्यांकन किया गया। मिसाइल दागने की क्षमता के साथ आईयूसीटी आयोजित किया जाएगा।

155 एमएम आर्टिलरी गन की बाई-मॉड्यूलर चार्ज प्रणाली: डीआरडीओ ने उच्च तुंगता क्षेत्र में प्रचालन के लिए 155 एमएम आर्टिलरी गन के लिए बीएमसीएस विकसित करने में अत्यधिक सक्रिय कदम उठाया है। वर्ष के दौरान, त्रि-आधार प्रणोदक का विकास किया गया, चार्ज मास मूल्यांकन और पुष्टिकारक परीक्षण आयोजित किए गए, तापमान गुणांक परीक्षण आयोजित किए गए और प्राक्षेपिक मानक स्थापित किए गए। प्राक्षेपिक मानक स्थापित करने के लिए 155 एमएम 45 कैलिबर गन में बीएमसीएस मॉड्यूल्स का भी मूल्यांकन किया गया।

स्वप्रणोदित माइन बरियर (एसपीएमबी): टैंक-रोधी भू माइनों (सुरंगों) को बिछाने/दबाने के लिए एसपीएमबी का विकास किया गया है। इस उपस्कर के प्रथम चरण के प्रयोक्ता परीक्षण किए गए हैं। इस उपस्कर ने परीक्षणों के दौरान सफलतापूर्वक कार्य किया है।

46 मीटर सैन्य लोड श्रेणी (एमएलसी-70) मॉड्यूलर ब्रिज: डीआरडीओ ने 6.5 मीटर के चरण में 14 मीटर से 46 मीटर तक पुल की लंबाई वाले मैकेनिकल तरीके से लांच एकल स्पान 46 मीटर एमएलसी-70 मॉड्यूलर ब्रिज का विकास किया है। संपूर्ण प्रणाली को कार्यान्वित किया गया है और पुल के ढ़ांचे, लांचिंग नोज और बैंक सीट बीम (बीएसबी) का अनुरूपित भार में सफल परीक्षण किया गया है। प्रणाली के दूसरे प्रोटोटाइप को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया गया है। तकनीकी परीक्षण पूरे किए गए हैं और इस वर्ष परियोजना को सफलतापूर्वक समाप्त किया गया है।

सम्मिश्रित सोनार डोम: पी 15 श्रेणी के पोतों के लिए सम्मिश्रित सोनार डोम सफलतापूर्वक विकसित और कार्यान्वित किया गया है। प्रथम डोम का ध्वनिक परीक्षण सफलतापूर्वक पूरा किया गया है। पोत के साथ डोम का एकीकरण किया जाना है। दूसरे डोम का कार्यान्वयन प्रगति पर है।

पहिया युक्त क्वचित प्लेटफार्म (डब्ल्यूएचएपी): डब्ल्यूएचएपी एक बहु उपयोगी क्वचित प्लेटफार्म है जिसका मॉड्यूलर डिजाइन है और जिसका 26 टन जीवीडब्ल्यू तक विभिन्न लड़ाकू और लड़ाकू समर्थन भूमिकाओं के लिए संरूपण है। वर्ष के दौरान, बीएमपी-II टरेट के साथ विधिवत् एकीकृत क्वचित प्रोटोटाइप-I को कार्यान्वित किया गया है और निम्नलिखित परीक्षण सफलतापूर्वक किए गए हैं: मुला बांध पर प्लवन के परीक्षण, केके रेंज पर फायरिंग परीक्षण और एमएफएफआर, राजस्थान में गतिशीलता परीक्षण।

भारतीय नौसेना को नौसेना प्रणालियां सौंपना: 2016 के दौरान रक्षा मंत्री द्वारा नौसेना प्रमुख को निम्नलिखित नौसैना/सोनार प्रणालियां सौंपी गई:

- सतह के नीचे और सतह के लक्ष्यों के संसूचन, स्थान निर्धारण, श्रेणीकरण और पता लगाने में सक्षम छोटे प्लेटफार्मों के लिए डिजाइन और विकसित की गई एक उन्नत सक्रिय-सह-निष्क्रिय एकीकृत सोनार 'अभय'।
- भारतीय नौसेना प्लेटफार्मों पर हम्सा सोनार प्रणाली के अद्यतनीकरण के लिए डिजाइन की गई 'हम्सा यूजी' प्रणाली।
- एक उन्नत स्वदेशी संकट (डिस्ट्रेस) सोनार प्रणाली 'एआईडीएसएस' जिसका उपयोग यह दर्शाने के लिए किया जाता है कि क्या कोई पनडुब्बी संकट में है और कैसे उसे तुरंत बचाया और ठीक किया जाए।
- क्षेत्र के निकट ध्वनिक लक्षण-वर्णन प्रणाली (एनएसीएस) सोनार प्रणालियों की स्वस्थाने

निष्पादनता का निर्धारण करती हैं जिनका उपयोग सोनार की फ्रीक्वेंसी आधारित 3डी संचरण और प्राप्ति विशेषताओं का पता लगाने में किया जाता है।

इन चार प्रणालियों को शामिल करके, भारत सरकार की मेक इन इंडिया पहल को सहायता प्रदान करने के अलावा भारतीय नौसेना की अंतर्जलीय निगरानी क्षमता को मजबूती मिलेगी।

भारी वजन के पोत से लांच किया गया टॉरपीडो 'वरूणास्त्र': 'वरूणास्त्र' एक पोत से लांच की जाने वाली पनडुब्बी-रोधी है जिसमें स्वायत्त निर्देशन एल्गोरिथमा, असंवेदनशील युद्ध सामग्री, युद्धशीर्ष और प्रैक्ट्रिस टॉरपीडो के लिए जीपीएस आधारित रिकवरी सहायता शामिल हैं। व्यापक प्रयोक्ता परीक्षणों के बाद, रक्षा मंत्री ने 'वरूणास्त्र' को जून 2016 में भारतीय नौसेना को सौंप दिया था।

उन्नत हल्के भार वाला कर्षित ऐरे सोनार (एएलटीएएस): एएलटीएएस पनडुब्बियों के संसूचन, स्थान निर्धारण और वर्गीकरण के लिए सक्षम संवेदन प्रणाली है जिसे विशेषकर समुद्री सतह से नीचे की परिस्थितियों में ऑपरेट किया जा सकता है। यह पनडुब्बी-रोधी युद्ध संग्राम संक्रिया में उपयोगी है और यह शांत पनडुब्बी क्षमता वाली उच्च गति टॉरपीडो के लांच के निर्धारण में उपयुक्त सेन्सर है। वर्ष के दौरान तकनीकी परीक्षण किए गए जहां सक्रिय और निष्क्रिय मोड में गोता लगाए पनडुब्बी के संसूचन और स्थिति निर्धारण स्थापित किया गया। 16 नॉट की उच्च गति टोईंग का भी सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया।

(हम्सा)-एनजी: यह तीसरी पीढ़ी का पोतवाहित, हल माउण्टेड सक्रिय सह निष्क्रिय सोनार प्रणाली है। इस प्रणाली के दो विभिन्न विन्यास (संरूपण) अर्थात् कील माउण्टेड विन्यास और बो माउण्टेड विन्यास क्षमताओं और विशेषताओं वाले विभिन्न सेटों का विकास किया गया है। वर्तमान में यह प्रणाली भारतीय नौसेना के चार विभिन्न वर्गों में दस से अधिक पोतों पर लगाई गई है। दिसम्बर 2016 में चरण-II समुद्री स्वीकृत परीक्षण किया गया और भा.नौ.पो. कमोर्ता पर इसे सफलतापूर्वक अनुमति दी गई।

यूएसएचयूएस (उशुस)-2: यह पनडुब्बी सोनार है जिसे चार ईकेएम पनडुब्बियों पर लगाया जाएगा। इसे पनडुब्बियों के ऊपर रखे गए मौजूदा रूसी सोनारों के स्थान पर लगाया जाएगा। यूएसएचयूएस-2 इंजीनियर्ड मॉडल का डिजाइन और विकास एनपीओएल में किया गया और इसका उत्पादन बेंगलुरू, बीईएल में किया गया।

एकीकृत तटीय निगरानी प्रणाली (आईसीएसएस): आईसीएसएस बंदरगाह मुहाने पर स्थित छोटी जलमग्न वस्तुओं के साथ-साथ नियंत्रित क्षेत्रों में अज्ञात संदेहास्पद सतही वस्तुओं को तत्काल खोजने, स्थानीकरण और निगरानी के लिए तटीय अनुवीक्षण समाधान प्रस्तुत करता है। संकल्पना के प्रमाण प्रदर्शन के लिए कोची में स्टेशन स्थापित किए गए। बालासोर के तट पर तीन स्टेशन स्थापित किए गए है और आईसीएसएस के लिए सेंसर्स प्रतिष्ठापित किए गए थे और इसे जुलाई 2016 में शुरू किया गया। अक्तूबर 2016 के दौरान बालासोर में एकीकृत आईसीएसएस संरूपण (विन्यास) में संकल्पना के प्रमाण प्रदर्शन परीक्षणों को सफलतापूर्वक पूरा किया गया।

सुवाह्य गोताखोर (डाइवर) संसूचन सोनार (पीडीडीएस): डीआरडीओ ने वर्ष 2016 में एक पीडीडीएस प्रणाली के डिजाइन और विकास के लिए एक नई प्रौद्योगिकी प्रदर्शन परियोजना की शुरूआत की है जो बंदरगाहों के आस-पास, छोटे लक्ष्यों जैसे गोताखोरों को ले जाने वाले वाहनों का पता लगाने में सक्षम है। वर्ष के दौरान, प्रयोगशाला प्रोटोटाइप का निर्माण किया गया और जनवरी 2016 में कुलामा, यूएआरएफ में इसका परीक्षण किया गया। भा.नौ.पो. सागर ध्वनी पर प्रतिष्ठापन और तैनाती प्रणाली का परीक्षण भी मार्च 2016 में पूरा किया गया। प्रथम प्रणाली के प्रयोगशाला के अंदर किए गए स्वीकृत परीक्षण के वर्ष 2017 के शुरू में पूरा हो जाने की आशा है और उसके बाद परवर्ती प्रणालियों और परीक्षणों के डिजाइन को वर्ष 2017 में अंतिम रूप दिया जाएगा।

उन्नत हल्के भार वाला टॉरपीडो (एएलडब्ल्यूटी): एएलडब्ल्यूटी-पोत, हेलिकॉप्टर तथा स्थिर विंग वायुयान से लांच की जाने वाली एक पनडुब्बी रोधी टॉरपीडो है। एएलडब्ल्यूटी में दोहरी गति क्षमता है जिसकी निम्न गति (25 नॉट) किलोमीटर तथा उच्च गति (50 नॉट) 12 किलोमीटर की सहृयता है। गोतखोरों और टॉरपीडों के स्थायित्व के लिए जल प्रविष्ट चरण के दौरान प्रेरण प्रणाली के सक्रियता के लिए अतिरिक्त थर्मल बैटरी को शामिल कर टॉरपीडो विन्यास अभ्यास के साथ तकनीकी परीक्षण किए गए और उसे समनुरूप से स्थापित किया गया है।

भारतीय पनडुब्बियों के लिए वायु स्वावलंबी प्रणोदन (एआईपी) प्रणाली के लिए भू आधारित प्रोटोटाइप (एलबीपी): इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य एआईपी के लिए 270 किलोवाट फॉस्फोरिक एसिड फ्यूल सेल आधारित एलबीपी को विकसित करना तथा पीक रॉ पावर 270 कि. वाट की समेकित पावर यूनिट के रूप में जो सिमुलेटिड हल सेक्शन में स्थित हैं और इसमें लगभग वैसे ही उपस्कर हैं जो सब मैराइन वर्जन के लिए जरूरी हैं, के एआईपी के एलबीपी को प्रदर्शित करना है। उप प्रणाली कार्यान्वयन का कार्य प्रगति पर है। वर्ष के दौरान, एलबीपी के प्री-फैब्रिकेशन फ्लॉर मॉडुल (पीपीएफएम) की सीमित क्षमता जांच सफलतापूर्वक पूरी कर ली गई है।

जैगुआर डेरिन-III अपग्रेड वायुयान (डी-जेएजी प्रणाली) के लिए आंतरिक रेडार चेतावनी जैमर (आरडब्ल्यूजे): रेडार चेतावनी और जैमिंग के लिए डी-जेएजी एक एकीकृत ईडब्ल्यू प्रणाली है। यह प्रणाली सम्मिलित रेडार चेतावनी अभिग्राही (आरडब्ल्यूआर) और इलैक्ट्रॉनिक प्रति उपायों (ईसीएम) का कार्य करता है। यह प्रणाली वायुवाहित, पोत वाहित और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रयोग में लाए गए भू-आधारित रेडार, अनुपथन (ट्रेकिंग) और मिसाइल निर्देशन का अवरोधन एवं पहचान करता है। वर्ष के दौरान, कोर ईडब्ल्यूएलपीआरएफ का इंजीनियरिंग यूनिट कार्यान्वयन और एटीपी पूरा किया गया है। दो कोर ईडब्ल्यू एचपीआरएफ इकाइयां कार्यान्वित की गई है; डीएंडडी वायुयान पर कूलिंग प्रणाली का उड़ान परीक्षण पूरा किया गया और पल्स ट्रांसमीटर तथा उच्च शक्ति आरएफ स्विच एकीकृत किया गया और इसका भारतीय वायुसेना का प्रदर्शन किया गया।

मिग-29 अपग्रेड वायुयान (डी-20 प्रणाली) के लिए आंतरिक ईडब्ल्यू प्रणाली: डी-29 चेतावनी और जैमिंग के लिए एक एकीकृत ईडब्ल्यू प्रणाली है जिसमें आरडब्ल्यूआर, ईसीएम और ईएसएम कार्य सम्मिलित हैं और यह बहुगुणक चेतावनी रेडारों की चयनित जैमिंग के लिए अत्याधुनिक सक्रिय व्यूह का चरणबद्ध उपयोग करता है। वर्ष के दौरान, बहु एमिटर परीक्षणों के लिए 29 उड़ाने पूरी की जा चुकी हैं। सीमित एमिटर परीक्षण नासिक में और बहु एमिटर परीक्षण ग्वालियर में किए गए। वर्तमान में प्रयोक्ताओं की प्रतिक्रियाओं पर विचार किया जा रहा है।

सॉफ्टवेयर डिफाइन्ड रेडियो (एसडीआर): डीआरडीओ, सीडीएसी और डब्ल्यूईएसईई के साथ संघटन दृष्टिकोण के तहत विकासात्मक भागीदार के रूप में और बीईएल को उत्पाद भागीदार के तौर पर रखते हुए नेटवर्क समर्थ, अंतर्संचालनीयता और मॉड्यूलर एसडीआर के विकास के लिए कार्य कर रहा है ताकि भारतीय नौसेना के लिए अपेक्षित गतिशील और स्थायी बलों, दोनों के लिए बेतार सुरक्षा संचार क्षमता उपलब्ध करा सके। सम्बधित 13 वेवफार्मो के साथ (जिसमें 4 लिगेसी वेवफार्म शामिल है) के साथ पांच कारकों जैसे:- एसडीआर-नौसेना समाघात, एसडीआर-सामरिक, एसडीआर मैनपैक, एसडीआर- वायुवाहित और एसडीआर - हैण्डहेल्ड को साकार किया जा रहा है। इस वर्ष के दौरान उपलब्धियों शामिल हैं : एसडीआर - एनसी इंजीनियरिंग का स्वतन्त्र एटीपी, एसडीआर - सामरिक का परीक्षण एवं एसडीआर

एसडीआर-नेवल कॉम

एसडीआर-टेक्निकल

एसडीआर-एयरबोर्न

एसडीआर-मेन-पैक

एसडीआर-हैंडहेल्ड

– एमपी के साथ सभी वेवफार्म जिसमें यूएचएफ और एल–बैण्ड मैनेट शामिल हैं, रेडियो प्रबन्धन और सुरक्षा विशेषताएं; चरण–I परीक्षण के लिए प्रणाली परीक्षण के बाद एचएफ वेवफार्मा और वी/यूएचएफ लिगेसी के साथ एसडीआर – वायुवाहित एलआरयू का निष्पादन परीक्षण किया गया।

एस–बैण्ड हब और ग्राउण्ड सेटकॉम ट्रर्मिनलः डीआरडीओ ने चार प्रकार के सैटेलाइट टर्मिनल हार्डवेयर अर्थात् मैनपैक सेटकॉम टर्मिनल (एमएसटी), सेटकॉम मैसेजिंग टर्मिनल (एसएमटी), हैण्डहेल्ड सेटकॉम टर्मिनल (एचएसीटी) तैयार किए हैं। ऑन द मूव टर्मिनल पर यद्यपि बीईएल को उत्पादन भागीदारी के रूप में रखा गया है। इस वर्ष की उपलब्धियों में शामिल हैं : सेना मुख्यालय को प्रत्येक को 15 एमएसटी और एमएसटी सौंपना; एमएसटी और एचएसटी का प्रयोक्ता के साथ किया गया परीक्षण मुम्बई, लेह और देहरादून में हुआ; जीएसएटी–6 के ऊपर एचएसटी का परीक्षण और जीएसएटी–6 के साथ स्थिरीकरण प्रणाली के सम्बंध में एसओटीएम का परीक्षण किया गया।

एमएसटी

एसएमटी

एचएसटी

भारतीय नौसेना के लिए महायुद्धपोतों, वायुयानों और हेलिकॉप्टरों के लिए ईडब्ल्यू प्रणालियां 'समुद्रिका': डीआरडीओ ने सात ईडब्ल्यू प्रणालियों के समूह के विकास का दायित्व अपने जिम्मे लिया है। पोत वाहित प्रणालियों में ईडब्ल्यू सूट 'शक्ति', कमिन्ट 'नयन' और ईएसएम 'तुशार' शामिल हैं। वायु वाहित प्रणालियों में कमिन्ट 'सर्वधारी' ईएसएम 'सारंग' तथा 'साराक्षी' और ईएसएम एवं कमिन्ट 'निकास' शामिल हैं। उपर्युक्त वर्णित प्रत्येक उत्पाद का डिजाइन पूरा हो गया है और हार्डवेयर का निर्माण किया जा रहा है। ईडब्ल्यू प्रणालियों के उत्पाद के लिए मैसर्स बीईएल मुख्य उत्पादन एजेन्सी होगी। वर्ष के दौरान, 'सर्वधारी' 'निकष' (कमिन्ट) और शक्ति प्रणालियां का प्रयोगशाला प्रदर्शन, संचालित किया गया। नयन प्रणाली के इंजीनियर्ड मॉडल को प्लेटफार्म पर अधिष्ठापित कर दिया गया है और बन्दगाह स्वीकार्यता परीक्षण (एचएटी) किया जा रहा है।

भारतीय नौसेना के लिए ईएसएम प्रणाली 'वरूण': 'वरूण' एक आधुनिक ईएसएम प्रणाली है जो दीर्घ आवृत्ति बैण्ड के ऊपर अवरोधक रेडारों की निम्न संभाविता वाली प्रणाली है जिसमें अवरोधन, संसूचन, वर्गीकरण और पल्सड की पहचान, सतत तरंग (सीडब्ल्यू), पल्स आवृत्ति (पीआरएफ) दक्षता, आवृत्ति दक्षता रेडार क्षमता वाली प्रणाली है। वर्ष के दौरान, 'वरूण' की प्रथम उत्पादन प्रणाली प्रयोक्ताओं को सुपुर्द कर दी गई और इसे प्लेटफार्म पर अधिष्ठापित कर दिया गया। अभी अधिष्ठापित प्रणाली का बन्दरगाह स्वीकार्यता परीक्षण (एचएटी) चल रहा है।

बॉर्डर निगरानी प्रणाली (बीओएसएस): डीआरडीओ, ई ओ भारयोग वाली बार्डर निगरानी प्रणाली के डिजाइन एवं विकास लगा है जिसमें ऊष्मीय एवं दिन कैमरा, एलआरएफ, जीपीएस एवं डीएमसी और घुसपैठ की स्वतः संसूना द्वारा व्यक्ति की पैट्रोलिंग को सुविधा जनक बनाने के लिए बीएफआरसी शामिल है। वर्ष के दौरान बीओएसएस की दो ईकाइंयों का निर्माण किया जा चुका है और इसे लद्दाख एवं लेह क्षेत्र में तैनात किया गया। इसके कार्यनिष्पादन का प्रदर्शन जीओसी और कोर्स कमाण्डर मुख्यालय में किया गया है।

कमांडर की थर्मल इमेजिंग साइट्सः वर्ष के दौरान, निम्न तापमान पर साइट की क्षमता के संचालन, इसकी सहनशीलता की जाँच, अपरिष्कृत एवं संसूचन, रात में इसके कार्य निष्पादन की पहचान एवं अभिज्ञा मूल्याकंन के लिए कमांडर की टीआई टी–90 टैंकों के लिए सह एलआरएफ साइट के शीत प्रयोक्ता का परीक्षण पीएफएफआर में जनवरी 2016 में किया गया। टी–90 टैंकों के लिए ईएमआई/ईएमसी, डीजीक्यूए और कमांडर की थर्मल इमेजर का एमईटी परीक्षण पूरा हो गया है। नए एलसीडी मॉनीटर के कार्यनिष्पादन का मूल्यांकन करने तथा 6 घंटे के सतत ऑपरेशन को डिस्प्ले करने

के लिए अतिरिक्त प्रयोक्ता परीक्षण, ईएमआई/ईएमसी, डीजीक्यूए तथा बीपीएम टैंकों के 3 विभेदकों के लिए नॉन-पनरैमिक कमांडर के टीआई साइट्स के एमईटी भी किए गए।

कम लागत वाला निगरानी उपस्कर (एलसीएसई): दो कम लागत वाले निगरानी उपस्कर (एलसीएसई) को चालु किया गया है और इन्हें उत्तरी कमान के तहत बॉर्डर क्षेत्रों में तैनात किया गया है। एलसीएसई सेना द्वारा काम में लाया जा रहा है और 06 एलसीएसई के लिए आरपीएफ उत्पादन एजेंसी(पीए) को दिया गया है।

निम्न स्तर वाला परिवहनीय रेडार (एलएलटीआर) 'अश्वनी': अश्वनी एक पूर्ण सक्रिय मध्यम रेंज वाला निगरानी रेडार है। यह प्रतिकूल ईडब्ल्यू संक्रियात्मक पर्यावरण के तहत हवाई लक्ष्यों को पता लगाने (30 मीटर से 15 कि.मी. ऊचाँई तक) और ऐयरस्पेस निगरानी में पता लगाने के लिए भू आधारित एस बैण्ड घूर्णन सक्रिय चरण ऐरे रेडार प्रणाली है। समस्त उप-प्रणालियों की अर्हता पूरी हो गई है। वर्ष के दौरान, तकनीकी परीक्षण शुरू किए गए हैं।

मध्यम शक्ति वाला रेडार (एमपीआर) 'आरूध्र': आरूध्र स्टेरिंग मोड सहित एक पूर्ण सक्रिय द्वारक वाला बहुकार्य मल्टीबीम घुर्णन वाला फेज्ड ऐरे रेडार है। यह रेडार 300 कि.मी. तक 2एम2 लक्ष्यों के लिए संसूचक रेंज वाला है। यह उच्च गति और उच्चतम मैनूवरिंग लक्ष्यों, निम्न आरसीएस के पता लगाने और संसूचक सहित एक मोड है। वर्ष के दौरान चरण-I तथा चरण-II के प्रयोक्ता परीक्षण पूरे किए गए जिसमें रेडार के कार्य-निष्पादन पैरामीटरों (कवरेज, विभेदन, अधिकतम संसूचन रेंज, मैनूवा टार्गेट ट्रेकिंग तथा निम्न आरसीएस टार्गेट ट्रैकिंग) को समर्पित सार्टिज द्वारा विधि मान्य किया गया।

सिंथेटिक एपर्चर रेडार (एसएआर) : ग्राउण्ड मूविंग टार्गेट इंडिकेटर (जीएमटीआई) क्षमता वाला एसएआर इमेजिंग, निगरानी तथा टोह के लिए यूएवी में एक महत्वपूर्ण वायुवाहित सेंसर है। कवचित टैंक, रक्षा दलों, ट्रकों इत्यादि जैसे हल्के गतिमान लक्ष्यों का पता लगाने में यह सक्षम है। वर्ष के दौरान, फ्लाईग टेस्ट बेड (एफटीबी) पर उड़ान परीक्षण किया गया, सभी एलगरिज्म विकसित तथा प्रमाणित किए गए। इस प्रणाली का 60 उड़ान घण्टों वाली 40 कार्यात्मक उड़ानों के साथ व्यापक तौर पर परीक्षण किया गया।

इलैक्ट्रॉनिक रूप से सक्रिय स्कैन्ड एरे रेडार (एईएसएआर) 'उत्तम' : 'उत्तम' परियोजना का उद्देश्य आरोह्य बनावट के साथ पूर्ण रूप से इंजीनीयर्ड, दक्ष तथा तैनात करने योग्य अत्याधुनिक इलैक्ट्रॉनिक रूप से सक्रिय स्कैन्ड एरे रेडार (एईएसएआर) का स्वदेश में विकास करना है जिसे वायुवाहित प्लेटफार्मों के लड़ाकू श्रेणी के विभिन्न प्रकारों के लिए रूपांतरित किया जा सकता है। वर्ष के दौरान, एएएयू प्रोटोटाइप का रूफटॉप पर परीक्षण किया गया, इंजीनीयर्ड रूपांतर का एकीकरण तथा परीक्षण चल रहा है।

निदेशित ऊर्जा लेजर प्रणाली के लिए प्रायोगिक प्रौद्योगिकी माड्यूल : डीआरडीओ यूएवी जैसे लक्ष्यों के लिए 10 किलो वाट संकल्पना प्रमाण निदेशित ऊर्जा प्रणाली के विकास तथा प्रीसीजन ट्रैकिंग/प्वांइटिंग और लेजर बीम कॉम्बिनेशन की महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों की स्थापना में लगा हुआ है। वर्ष के दौरान, ग्राउण्ड मूविंग तथा वायर रोप मूविंग लक्ष्यों के 1 किमी की रेंज में बीम प्वांइंटिंग और बीम कॉम्बिनेशन के लिए प्रोटोटाइप ट्रैकिंग गिंबल माउण्ड पर एकीकृत 2 किलोवाट ब्रास बोर्ड यूनिट का सफलतापूर्वक परीक्षण/प्रदर्शन किया गया। हवाई लक्ष्यों के कोर्स तथा फाइन ट्रैकिंग के लिए तथा 1 किमी की रेंज में उड़ते हुए कम मूल्य के क्वैड कॉप्टर के संरचना विघटन के लिए 2 किलोवॉट लेजर बीम सुपुर्दगी प्रणाली (एलबीडीएस) का भी परीक्षण प्रदर्शन किया।

डेटा तथा वॉयस अनुप्रयोग के लिए चिप पर अनुराग संचार प्रणाली (अनुसंदेश) : इस परियोजना का उद्देश्य उन्नत विशेषताओं वाली चिप पर संचार का विकास करना है जिससे रक्षा बलों की बेहतर संचार क्षमता होगी। इसी प्रणाली को एआरएम प्रोसेसर के साथ प्राप्त करने के लिए प्रयोक्ता की जरूरतों के हिसाब से विकसित किया जाएगा। वर्ष के दौरान, चिप पर एआरएम 11767 सीईवीए डीएपी आधारित प्रणाली को टेपआउट किया गया। पैकेज डिजाइन तथा लोड बोर्ड डिजाइन समानांतर रूप से साझेदार प्रयोगशालाओं की सहायता से किया जा रहा है।

सैटेलाइट संचार के लिए एस-बैंड डिजिटल मल्टीमीडिया प्रसारण (डीएमबी) टर्मिनल (अम्बर): : इस परियोजना का उद्देश्य भारतीय उपग्रह जीसैट-6 के अनुरूप मल्टीमीडिया प्रसारण सेवाओं के लिए वर्द्धित भूखंडो हेतु प्रौद्योगिकियों का विकास करना है। मई 2016 में, अम्बर मल्टीमीडिया प्रसारण टर्मिनल का देहरादून में जी सैट-6 के साथ परीक्षण किया गया।

इडब्ल्यू पीओडी के लिए सी-एक्स-केयू- बैंड माइक्रोवेब पॉवर मॉड्यूल (पीएमपी) : इस परियोजना में ईडब्ल्यू-पीओडी तथा उच्च क्षमता वाले सी-केयू बैंड 100 वॉट (मिनट) सीडब्ल्यू माइक्रो-टीडब्ल्यूटी के लिए फेज तथा गेन मैच्ड सी-केयू बैंड 100 वाट (सीडब्ल्यू) कॉम्पैक्ट एमपीएम का डिजाइन और विकास शामिल है। इस वर्ष के दौरान तीन माइक्रो-टीडब्ल्यूटी का विकास किया गया। एमपीएम प्रोटो-1 का एकीकरण और परीक्षण पूरा हो गया है तथा सीडब्ल्यू में एमपीएम प्रोटो-2 जारी है।

भारतीय समुद्रवर्ती स्थितिक जागरूकता प्रणाली (इम्सास): इम्सास परियोजना का उद्देश्य समुद्री किनारों पर तैनात कमाडरों, जहाजी बेड़ों तथा प्लेटफार्म स्तरों को व्यापक स्थितिक दृश्य प्रदान करना है। इस प्रणाली को विकसित करने के लिए मिशन मोड में परियोजना का कार्यान्वयन शुरू कर दिया गया है जिसे पैन नेवी में तैनात किया जाएगा। इस प्रणाली की पहली संरचना को सितंबर 2017 में तैनात किया जाएगा। आगामी तीन वर्षो में पूरी प्रणाली को तैनात कर दिया जाएगा।

एनबीसी वैयक्तिक बचाव उपस्करः उन्नत एनबीसी आईपीई में निजी उद्योगों के सहयोग से डीआरडीओ द्वारा विकसित एनबीसी सूट मार्क-V, एनबीसी मास्क मार्क-II, एकीकृत हूड मास्क मार्क-II, एनबीसी ओवर बूट मार्क-II, एनबीसी दस्तानें मार्क-II, हैवरसैक मार्क-II, व्यक्तिगत विसंदूषण किट मार्क-II एवं विसंदूषण सूट मार्क-II शामिल है। थल सेना ने पहले से ही 50,000 एनबीसी सूट मार्क-V का आपूर्ति आदेश दे दिया है। श्वसन मास्क मार्क-II ने सफलतापूर्वक प्रयोक्ता परीक्षण पार कर लिया है तथा 45,000 मास्कों के लिए आरएफपी को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

टेलीमेडिसीन प्रणालीः टेलीमेडिसीन प्रणाली को सफलतापूर्वक डीआरडीओ द्वारा दूरस्थ लैंड लॉक्ड क्षेत्रों के लिए विकसित किया है। इस प्रणाली को नौसेना प्लेटफार्मों पर लगाने के लिए भारतीय नौसेना ने स्वीकृति दी है तथा डीएसी ने कार्यान्वयन के लिए स्वीकृति दे दी है। थल सेना आईडीएस मुख्यालय (एमईडी) के संरक्षण में इसका परीक्षण करने वाली है तथा सफल परीक्षण के बाद इसको शामिल किया जाएगा।

औषध विकास : एनबीसी कार्यक्रम चरण-I के तहत चौदह एनबीसी बचाव औषधियां डीआरडीओ द्वारा विकसित की गई हैं। सीबीआरएन आकस्मिकता के लिए इन औषधियों को डीजीसीआई द्वारा अनापत्ति दी गई है। तदनंतर उनके समावेशन के लिए डीजी एएफएमएस की स्वीकृति ली गई है। मोनोसोमॉयलडायमरकैपट्सुसीनिक एसीड (एमआईएडीएमएसए) का डीआरडीओ द्वारा विकास किया गया है तथा पुरानी आर्सेनिक विषाक्तता के संभावित उपचार के रूप में परीक्षण चल रहा है। डीसीजीआई ने इस औषध का अनुमोदन 'अन्वेषणात्मक नई औषध' के रूप में प्रदान किया है।

रासायनिक अभिकारक संसूचकः एसीएडीए (स्वतः रासायनिक अभिकारक संसूचक तथा अलार्म) और सीएएम (रासायनिक अभिकारक मॉनीटर) के रूप में रासायनिक अभिकारक संसूचक को डीआरडीओ द्वारा मैसर्स एलएंडटी बेंगलूरू के साथ साझेदारी में विकसित

किया गया। ये यन्त्र आयन गतिशीलता स्पैक्ट्रोमेंट्री पर आधारित हैं और रासायनिक अभिकारकों जैसे स्नायु, ब्लिस्टर, खून तथा चोकिंग अभिकारकों का पता लगाने में सक्षम हैं। एसीएडीए और सीएएम के प्रापण का एओएन सेना द्वारा प्रारंभ किया गया है।

अग्निमंदक एंटी जी स्यूट : डीआरडीओ द्वारा विकसित किया गया एंटी जी स्यूट प्रकृति में ज्वाला मंदक है और ब्लैडर थर्मोप्लास्टिक पोली यूरीथेन का बना हुआ है जिस पर नाइलॉन फैब्रिक की परत चढ़ी हुई है जोकि रेडियो आवृति (आरएफ) वेल्डेबल है और यहां तक कि इसे शीघ्रता से बनाना आसान है। 153 मात्रा का उत्पादन आर्डर आईएएफ द्वारा दिया गया है।

50 व्यक्तियों के लिए सौर ऊर्जा युक्त ऑक्सीजन सम्पन्न शेल्टर : सोलर शेल्टर और ऑक्सीजन युक्त शेल्टर्स दोनों प्रौद्योगिकियों को मिलाकर डीआरडीओ में सौर ऊर्जा से युक्त ऑक्सीजन सम्पन्न शेल्टर्स विकसित किया गया है। शेल्टर्स को सौर ऊर्जा द्वारा गर्म किया जाएगा और शाम की अवधि के दौरान प्रयोग में होने वाली फेज परिवर्तित पद्धार्थ में अधिक ऊर्जा को भी जमा किया जाएगा। यह 50 व्यक्तियों के लिए है और लगभग 16,000 फीट की ऊँचाई पर जीगोंग (उत्तर सिक्किम) में लगाया गया है।

स्पेस हीटिंग डिवाइस (बुखारी) (शेड) : डीआरडीओ द्वारा एक नया शेड विकसित किया गया है जो रेडिएक्टिव तथा कान्वेक्टिव दोनों प्रकार की उष्मा देती है। अपनी ऊर्जा दक्ष डिजाइन के कारण अधिकांश ऊर्जा को निकाल लिया जाता है। यह केरोसीन उपभोग और उष्मा उत्पन्न करने के लिए सक्षम है। कमरे में जो कार्बन-डाई-ऑक्साइड बनता है वह लगभग शून्य होता है क्योंकि सभी गैसें बाहर समाप्त हो जाती हैं। यह पूरी तरह से सुरक्षित है क्योंकि वायु के बैक ड्राफ्ट के द्वारा विस्फोट होने की कोई संभावना नहीं है। बर्नर सामान्य रूप से बुझाता है और फिर से जलता नहीं है। भोजन को पकाने अथवा गर्म करने के लिए अकेले बर्नर का भी प्रयोग किया जा सकता है। सेना के अलावा, सीमा सुरक्षा बल ने भी बुखारी में अपनी रूचि दर्शायी है और 2000 बर्नरों के प्रापण के लिए टेंडर दिया गया है।

आपाती ईंधन के रूप में बायो-डीजल: विशाखापट्टनम में भारतीय नौसेना द्वारा आयोजित 4 से 8 फरवरी 2016 तक अंतर्राष्ट्रीय बेड़ा समीक्षा (आईएफआर) के दौरान, तेज अवरोधक उड़ान (एफआईसी) टी-307 और टी-311 जो कि प्रेसीडेंशियल कॉलम का हिस्सा था, डिबेर द्वारा विकसित किया गया बायो डीजल से उत्पन्न जत्रोफा के मिश्रण को बी 20 पर चलाया गया।

रक्षा अनुप्रयोग के लिए माइक्रोवेव चॉफ का स्वदेशीकरण: चॉफ सर्वाधिक बृहत रूप से प्रयोग में होने वाला तथा प्रभावशाली विस्तारयोग्य इलेक्ट्रोनिक प्रत्युपाय उपकरण है। वर्ष के दौरान, स्वदेश में विकसित किए गए चॉफ काट्रिज का सीमित अर्हता परीक्षण (एलक्यूटी) आरसीएमए (एए), पुणे के प्रतिनिधि की उपस्थिति में पूरा किया गया। उड़ान सुरक्षा अनापत्ति आरसीएमए (एए), पुणे द्वारा दी गई है।

बुलेट प्रूफ जैकट : डीआरडीओ एके 47 (एमएससी और एचएससी) तथा 7.62 एसएलआर, 9 एमएमएसएमसी गोला-बारूद के विरुद्ध सुरक्षा उपलब्ध कराने हेतु विभिन्न अत्याधुनिक प्राक्षेपिक सामग्रियों का इस्तेमाल करते हुए जीएसक्यूआर 1438 में वर्णित सभी तीन आकारों में बुलेट प्रूफ जैकेट (बीपीजे) के प्रोटोटाइप के विकास में लगा है। वर्ष के दौरान, बीपीजे के जीएसक्यूआर (नरम कवच अनुकूलन प्रोटोकोल और कड़ा कवच थर्मल एवं मैकेनिकल स्थायित्व टेस्ट) के अनुसार चरण-I और चरण-II परीक्षण यूएटीटी के तहत टीबीआरएल चंडीगढ़ में सफलतापूर्वक किया गया। 9 एमएमएसएमसी, एके-47 (एमएससी, बारागांव हार्डकोर स्टील-वीएचएससी) और 7.62 एसएलआर के लिए बड़े और छोटे आकार की कोमल तथा कठोर कवच पैनल का प्राक्षेपिक परीक्षण भी सफलतापूर्वक किया गया। सफलतापूर्वक परीक्षण से आर्मी जीएसक्यूआर के अनुसार बीपीजे के लिए इष्टतम विन्यास को अंतिम रूप दिया है।

गुप्त अनुप्रयोग के लिए सामग्री और प्रौद्योगिकी: भूमि आधारित और वायुवाहित प्लेटफार्म के संकेत प्रबंधन के लिए सामग्री और प्रौद्योगिकी के विकास हेतु परियोजना को इसी साल समाप्त किया गया। वर्ष के दौरान, बहु स्पेक्ट्रल छद्मावरण पेंट (एमएससीपी) और मोबाइल छद्मावरण प्रणाली (एमसीएस) के छद्मावरण क्षमता का विश्लेषण जोधपुर, बीकानेर तथा सूरतगढ़ की 16 सेना इकाइयों में इन टी 90, टी 72 तथा एमबीटी टैंकों को चलाया गया। जनवरी और सितंबर 2016 में नाग मिसाइल के गोलाबारी परीक्षण के लिए थर्मल लक्ष्य प्रणाली ईम्यूलेटिंग टी-72 टैंकों के संकेतों को सफलतापूर्वक चलाया गया।

नाभिकीय रक्षा के लिए प्रौद्योगिकियां: एनबीसी फेज-I प्रोग्राम में विकसित की गई नाभिकीय रक्षा प्रौद्योगिकियों को पनडुब्बी सुरक्षा प्रणाली (एसएसएस) सुविधा, भारतीय नौसेना में मूल्यांकित किया गया और इसे उपयोगी पाया गया। एनएसक्यूआर में इसे प्राप्त किया गया है और नाभिकीय युद्ध/आपदा परिदृश्य के दौरान रेडियो सक्रिय संदूषण के माप के लिए पोर्टल, फर्श, हैंड फुट और लॉड्री मॉनीटर के लिए इस परियोजना को प्रारंभ किया गया है। सशस्त्र सेना द्वारा स्वीकृत पर्सनल कैरियर बीएमपी 2/2के के आधुनिकीकृत एनबीसी सुरक्षा प्रणाली को ओएफ, मेदक में फिटमेंट के लिए इस परीक्षण को मूल्यांकित किया गया है। गामा विकिरण की हर पल मॉनीटरिंग के लिए एरिया मॉनीटर की नेटवर्किंग प्रौद्योगिकी का विकास किया गया है और राजस्थान (सीमा सुरक्षा बल पोस्ट) के सीमावर्ती क्षेत्रों और वाईजंग, गोवा, पोर्टब्लेयर इत्यादि के तटीय क्षेत्रों में लगाया गया है।

नौसेना सामग्रियां: भारतीय नौसेना की जरूरतों को पूरा करने के लिए, देश में मौजूद आधारभूत संरचना का प्रयोग करके नौसेना स्टील के स्वदेशी उत्पादन के लिए डीआरडीओ ने सफलतापूर्वक इस प्रौद्योगिकी को विकसित किया है। वर्ष के दौरान, सेल संयंत्रों में उत्पादित 20 एमएमडीएमआर 249ए प्लेट के प्रमाणन (अंतर्जलीय प्रयोग के लिए) को पूरा किया गया है। एबी 3 स्टील प्लेटस तथा कॉजिग के परीक्षण उत्पादन को भी शुरू किया गया है और प्रारम्भिक परीक्षणों में विश्वसनीय सफलता भी हासिल की गई है।

नॉन-स्पार्किंग औजार: विषाक्त और महंगे क्यू-बी मिश्र-धातु को अनुकल्प के रूप में डीएमआरएल ने नॉन-स्पार्किंग औजार के निर्माण के लिए सीयू-4.5 टीआई मिश्रधातु को विकसित किया है। प्रौद्योगिकी को पाहवा मेटल टेक प्राइवेट लिमिटेड में हस्तांतरित किया गया है और उनके द्वारा स्थापित संयंत्र अब चालू हो गया है।

8.13 कॉरपोरेट पहल

सेनाओं के बीच बातचीत: वर्ष के दौरान शामिल किए जाने के लिए डीआरडीओ द्वारा विकसित और डीएसी द्वारा अनुमोदित मुख्य प्रणालियां हल्के समाघात वायुयान (एलसीए) एमके 1ए, वरूणास्त्र टॉरपीडो, कमांडर्स, टी-90 के लिए टीआई साइट, नयन कमिंट के साथ ई डब्ल्यू प्रणाली शक्ति, निम्न स्तर वाली हल्की रेडार (एलएलएलआर) एमके-II हम्सा एनजी इत्यादि शामिल है जिसकी कुल लागत 69,445.89 करोड़ रुपये है। आज डीआरडीओ की विकसित प्रणाली (शामिल किया गया और शामिल किए जाने के लिए अनुमोदित) का उत्पादन मूल्य लगभग 2.56 लाख करोड़ रूपये है। स्वदेशी प्रणालियों/उत्पादों के विकास के लिए उपबंधों को भी डीपीपी - 2016 में शामिल किया गया है जोकि डीआरडीओ द्वारा विकास का जिम्मा लिए जाने पर प्रणालियों को सहज शामिल करने में सक्षम बनाएगा। डीआरडीओ ने भारतीय वायु सेना के साथ संयुक्त समीक्षा सेनाओं के जरिए भारतीय सेना के साथ नियमित बातचीत तिमाही बातचीत बैठक (क्यूआईएम) और भारतीय नौसेना के साथ सहक्रिया बैठक के लिए एक तन्त्र (मैकेनिज्म) स्थापित किया है।

उद्योगों से संपर्क: "प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के लिए मार्गदर्शन" के अनुसार डीआरडीओ प्रौद्योगिकियों को भारतीय उद्योगों/डीपीएसयू/ओएफबी स्थानांतरित किया गया। डीआरडीओ द्वारा इस वर्ष में 50 रिपोर्ट के अंतर्गत प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण उद्योगों को किया गया है। रक्षा मंत्रालय को इन उद्योगों द्वारा दिए गए अनापति प्रमाणपत्र से डीआरडीओ प्रणाली की निर्यात क्षमता स्पष्ट है। लगभग 17352 करोड़ रुपये की लागत वाले 310 उत्पादों के निर्यात के लिए रक्षा मंत्रालय द्वारा 142 अनापत्ति प्रमाण पत्र प्रदान किये गये हैं जिसमें से लगभग 10609 करोड़ रूपये के 88 उत्पाद डीआरडीओ द्वारा विकसित की गई प्रौद्योगिकी पर आधारित हैं।

अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में भागीदारी : दक्षिण अफ्रिका में सितम्बर 2016 के दौरान डीआरडीओ ने नौवें अफ्रिका एयरोस्पेस और रक्षा प्रदर्शनी (एएडी 2016) में भाग लिया है जहां 400 प्रदर्शकों के साथ 30 देशों ने हिस्सा लिया है। इनमें स्वदेशी एईडब्ल्यू एंड सी प्रणाली, एलसीए तेजस, आकाश मिसाइल प्रणाली, विभिन्न भूमि/नौ सेना आधारित रेडार प्रणाली, सोनार और टॉरपीडो इत्यादि शामिल थे। जनवरी 2016 में शखीर हवाई अड्डा, बहरीन में आयोजित बहरीन अंतर्राष्ट्रीय एयर शो में भारतीय रक्षा प्रौद्योगिकियों को भी प्रदर्शित किया गया था। भारत ने अपने अत्याधुनिक वायुवाहित प्लेटफार्म और इससे जुड़े सेंसर को डीआरडीओ द्वारा डिजाइन तथा विकसित की गई संचार प्रणाली को प्रदर्शित किया। "भविष्यवाद का उदय" डिफेक्सपो 2016 में डीआरडीओ का विषय था। डेफेक्सपो 2016 में डीआरडीओ की भागीदारी में उत्पादों के पहली बार सजीव प्रदर्शन के साथ प्रदर्शित किया गया जिसमें मॉडल और प्रदर्शनियों के स्थायी प्रदर्शन के अतिरिक्त हल्के लड़ाकू वायुयान (एलसीए) तेजस, मुख्य युद्ध टैंक 'अर्जुन' एमके-I एवं एमके-II, व्हील्ड आर्मर्ड प्लेटफार्म (डब्ल्यूएचएपी), 'आकाश' वायु रक्षा प्रणाली, रेडार इत्यादि शामिल थे। इस प्रदर्शन के माध्यम से सशस्त्र सेनाओं को अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी और उत्पादों को उपलब्ध कराने के लिए "मेक इन इण्डिया" के तहत डीआरडीओ की प्रतिबद्धता पर जोर दिया गया।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग : वर्ष 2016 में, डीआरडीओ ने यूएसए, यूके, रूस और इजरायल के साथ नियमित रूप से वार्षिक द्विपक्षी रक्षा अनुसंधान और विकास बैठकें संचालित की हैं। यूएसए (जेटीजी के अंतर्गत), रूस (आईआरआईजीसी के अंतर्गत) और इजरायल (आईआईएमसीके अंतर्गत) के साथ कई परियोजना समझौते पर डीआरडीओ द्वारा हस्ताक्षर किए गए हैं। "सैन्य और रक्षा से संबंधित प्रौद्योगिकी, अवसंरचना, प्रशिक्षण और सेवा के विकास" में सहयोग के लिए डीआरडीओ और कनाडा व्यापारिक सहयोग (सीसीसी) के बीच एमओयू पर अक्तूबर 2016 में हस्ताक्षर किए गए। बसन, दक्षिण कोरिया में एमटीसीआर पूर्ण सत्र में तकनीकी विशेषज्ञ बैठक के हिस्से के रूप में डीआरडीओ ने भाग लिया। डीआरडीओ ने जेनेवा में आयोजित विशेष परम्परागत शस्त्र सत्र में भी भाग लिया।

परियोजना प्रबंधन में पहल : डीआरडीओ में परियोजना प्रबंधन को दुरूस्त करने के उद्देश्य से, डीआरडीओ की परियोजना तैयार करने और प्रबंधन (पीपीएफएम) के लिए प्रक्रियाएं संशोधित की गई हैं और इसी वर्ष जारी की गई हैं। संशोधित दस्तावेज में कुछ बड़े परिवर्तन सामने आए हैं जिनमें से विशेषता पैमाने पर आधारित परियोजनाओं का चयन, पूर्व परियोजना वर्धित भू-कार्य, परियोजना लागत मार्ग-निर्देश, परियोजना मंजूरी, कार्यान्वयन, समापन और आगे बढ़ाने के संबंध में विस्तृत दिशा-निदेश हैं। सभी डीआरडीओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं के प्रयोग के लिए प्रापण नियमावली - 2016 जिसमें एक ही स्थान पर, नियम तथा दिशा निर्देश तथा वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रापण के लिए प्रक्रिया शामिल है, को रक्षा मंत्री द्वारा जारी किया गया है।

अकादमिक अन्योन्यक्रिया: डीआरडीओ, जादवपुर विश्वविद्यालय की पहल उन्नत प्रौद्योगिकी जगदीश चंद्र बोस केन्द्र (जेसीबीसीएटी) को जून 2016 में मंजूरी दी गई। जादवपुर विश्वविद्यालय, आईआईटी खड़गपुर, एनआईटी दुर्गापुर, आईआईईएसटी शिवपुर, आईएसआई कोलकाता, सीजीसीआरआई कोलकाता और आईआईआईटी हैदराबाद बहु-सांस्थानिक सहयोग अनुसंधान के विकास को और आगे बढ़ाएंगें। प्रणोदन प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए जून 2016 में आईआईटी मुम्बई में प्रणोदन प्रौद्योगिकी केन्द्र (सीओपीटी) को मंजूरी दी गई। आईआईटी मुम्बई और आईआईटी मद्रास के साथ यह एक द्विकेंद्रक (बाइ-नोडल) केन्द्र है। आईआईटी दिल्ली में संयुक्त उन्नत प्रौद्योगिकी केन्द्र (जेएटीसी) को अक्तूबर 2016 में मंजूरी दी गई। इस केन्द्र में उन्नत बैलिस्टिक, विशेष संरचना एवं सुरक्षा प्रौद्योगिकियों, उन्नत इलेक्ट्रो-मेगनेटिक डिवाइस और टीएचजेड प्रौद्योगिकियों, ब्रेन कंप्यूटर इंटरफेस और ब्रेन मशीन इंटेलिजेंस इत्यादि के क्षेत्र में अनुसंधान प्रारंम्भ किया जाएगा। मौजूदा वर्ष में, आईआईएससी में "एटोमिक स्केल में पद्धार्थो की संरचना और रसायन" के लिए केन्द्र भी खोला गया। बाहरी अनुसंधान (ईआर) क्रियाकलापों के हिस्से के रूप में 39 नई परियोजनाओं को मंजूरी दी गई थी जिसमें शामिल 8 परियोजनाओं को आरआईसी, चैन्नई में पूरा किया जाएगा।

बौद्धिक सम्पदा अधिकार (आईपीआर): लगभग 145 आईपीआर एप्लीकेशन (3 विदेशी देशों सहित) वस्तुओं/प्रक्रिया को फाइल करने के लिए प्रोसेस की गई है जिसमें युद्ध सामग्री, इलेक्ट्रोनिक्स, उपकरण, पद्धार्थ, बायोमेडिकल विज्ञान, भोजन प्रौद्योगिकी इत्यादि के विभिन्न क्षेत्र शामिल हैं। डीआरडीओ वैज्ञानिकों के आविष्कारों को वैधानिक सुरक्षा देने के लिए, 44 पेटेंट को (बाहरी देशों में 5 सहित) इस अवधि में स्वीकृति दी गई है। इसके अतिरिक्त, 4 कॉपीराइट और 7 डिजाइन भारत में पंजीकृत किए गए। डीआरडीओ के वैज्ञानिकों के मध्य आईपीआर जागरूकता को बढ़ाने के लिए, पांच आईपीआर जागरूकता कार्यक्रम इस अवधि में आयोजित किए गए।

अनुसंधान बोर्ड: शैक्षणिक जगत में मूल अनुसंधान की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए डीआरडीओ निधि के तहत चार अनुसंधान बोर्ड (वैमानिक, नौ सेना, युद्ध सामग्री और जैव विज्ञान) कार्यरत हैं। वर्ष के दौरान 54 परियोजनाओं को विभिन्न संस्थानों में मंजूरी दी गई।

8.14 **सरकारी पहलों का कार्यान्वयन:** "स्वच्छ भारत" के लिए वार्षिक और पंचवर्षीय कार्य योजना तैयार की गई है और योजना के अनुसार क्रिया-कलापों को शुरू किया गया है। सभी प्रयोगशालाओं में "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" मनाया गया। सरकार द्वार शुरू किए गए "मेक इन इंडिया" के मिशन को बढ़ावा देने के लिए, डीआरडीओ प्रयोगशालाओं द्वारा इस विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई है। एकीकृत तरीके से ''न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन, डिजिटल इंडिया और ई-शासन के लिए" सभी कारगर कदम उठाए गए हैं।

8.15 अधिकांश प्रौद्योगिकी क्षेत्र में प्रशंसनीय उपलब्धियों के साथ, आत्मनिर्भर राष्ट्र के अपने मिशन के हिस्से के रूप में भारतीय सशस्त्र सेना को प्रौद्योगिकियों/प्रणाली देने के लिए डीआरडीओ प्रतिबद्ध है।

9

अंतर सेवा संगठन

अध्याय 9

अंतर सेवा संगठन

9.1 निम्नलिखित अंतर-सेवा संगठन सीधे रक्षा मंत्रालय के अधीन काम करते हैं:-

(i) सेना इंजीनियर सेवा,
(ii) सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा
(iii) रक्षा सम्पदा महानिदेशालय
(iv) मुख्य प्रशासन अधिकारी का कार्यालय
(v) जनसम्पर्क निदेशालय
(vi) सेना खेल-कूद नियंत्रण बोर्ड
(vii) सशस्त्र सेना फिल्म और चित्र प्रभाग
(viii) राष्ट्रीय रक्षा कालेज
(ix) विदेशी भाषा विद्यालय
(x) इतिहास प्रभाग
(xi) रक्षा प्रबंधन कालेज
(xii) रक्षा सेना स्टाफ कालेज
(xiii) रक्षा मंत्रालय पुस्तकालय

सेना इंजीनियर सेवा (एमईएस)

9.2 सेना इंजीनियर सेवा (एमईएस) सामरिक और संक्रियात्मक स्तर पर तीनों सेनाओं को सहयोग प्रदान करता है। यह संगठन व्यावसायिक और तकनीकी रूप से सक्षम अधिकारियों और अधीनस्थ कर्मचारियों से परिपूर्ण है।

9.3 सेना इंजीनियर सेवा सेना मुख्यालय में इंजीनियर-इन-चीफ के समग्र नियंत्रण में कार्य करता है जो सभी प्रकार के कार्यों से संबंधित मुद्दों पर रक्षा मंत्रालय और तीनों सेनाओं के प्रमुखों का सलाहकार होता है। एमईएस के पास 12,000 करोड़ रुपए से अधिक का वार्षिक बजट संबंधी कार्यभार है। रक्षा बलों के आधुनिकीकरण के एक भाग के रूप में, काफी संख्या में आधारभूत संरचना परियोजनाओं को चलाए जाने की योजना बनाई गई है। सेना इंजीनियर सेवा मित्र विदेशी सरकारों के लिए विदेश में आधारभूत संरचना का सृजन करके सैन्य राजनयिक पहलों में भी सहयोग देता रहा है। सेना इंजीनियर सेवा संगठन जो प्रवीण कार्मिकों से युक्त है, कार्मिकों को पूरे देश में हर प्रकार के भू-भाग और विपरीत जलवायु स्थितियों में दूर-दराज अवस्थितियों में तैनात करता है और वे शांति के समय कार्य सेवा सहयोग प्रदान करते हैं और युद्ध के दौरान समर्पित सहयोग प्रदान करने हेतु भी सुसज्जित होते हैं।

9.4 **प्रगतिशील महत्वपूर्ण परियोजनाएं:**

(क) केन्द्रीय आयुध डिपो (सीओडी) आगरा और जबलपुर का आधुनिकीकरण:

(प) समग्र 'आधुनिकीकरण अभियान' के भाग के रूप में, सेना आयुध डिपो को आधुनिक आधारभूत संरचना एवं स्वचालन के साथ उन्नत भी बनाया जा रहा है। सीसीएस ने सीओडी, आगरा और जबलपुर की आधुनिकीकरण परियोजना के लिए 11 अप्रैल, 2007 को 751.89 करोड़ रुपए अनुमोदित किए थे। उन्नत कार्य मूल रूप से डीआरडीओ द्वारा निष्पादित किया जाना था, परंतु बाद में उसे 04 मार्च, 2008 को एमईएस को अंतरित कर दिया गया।

(ii) आधुनिकीकरण योजना में भंडारण कार्य के लिए पुराने भंडार गृह शेल्टरों को विशाल आकार के आधुनिक पूर्व-निर्मित भवन (पीईबी) संरचनाओं (सर्वाधिक आकार 198 मी. 54 मी.) में परिवर्तित करना सम्मिलित है। इन संरचनाओं में मैकेनाइज्ड हैंडलिंग उपकरणों और अति संकुलित मार्ग ट्रैक के साथ आधुनिक स्टेकिंग और भंडारों की पुन:प्राप्ति प्रणाली है। विभिन्न आधुनिक सुविधाओं जैसे कि हाई-राइज इन्वेंट्री स्टोरेज प्रणाली, भंडारण प्रबंधन सॉफ्टवेयर, अग्निशमन व्यवस्था तथा पहुंच नियंत्रण को उक्त योजना में सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त प्रशासनिक भवनों और ओटीएम आवास/एस्कॉर्ट लाइनों को भी निर्मित किया जा रहा है।

(iii) उक्त परियोजना का चरण-I पूरा हो गया है और क्रमश: सीओडी, आगरा तथा सीओडी, जबलपुर के लिए 73.33 करोड़ रुपए और 66. 52 करोड़ रुपए की लागत के चरण-II के दो निर्माण-कार्य प्रगति पर हैं। दिसंबर 2018 तक पीडीसी के साथ 1518.18 करोड़ रुपए की राशि के लिए संशोधित सीसीएस टिप्पणी पर अनुमोदनार्थ कार्रवाई की जा रही है।

(ख) **उच्च तुंगता वाले क्षेत्रों में सैन्य टुकड़ियों के आवास और जीवन स्तर संबंधी दशाओं में सुधार (एचएएल पायलट परियोजनाएं):**

(i) उच्च तुंगता वाले क्षेत्रों में सैन्य टुकड़ियों के आवास और जीवन-स्तर की दशाओं में सुधार करने के लिए अभिकल्पन तथा निर्माण तकनीक को चयनित करने के लिए चरण-I और चरण-II की प्रायोगिक परियोजनाएं 194.84 करोड़ रुपए के समग्र परिव्यय के साथ पूरी हो गई थीं।

(ii) कुल 63.65 करोड़ रुपए की लागत से यथा-अनुमोदित चरण-III का निर्माण-कार्य प्रगति पर है।

(iii) सृजित की जा रही परिसम्पत्तियों का परीक्षण मूल्यांकन प्रगति पर है और प्रमुख परियोजना लांच करने संबंधी निर्णय परीक्षण पश्चात् लिया जाएगा।

(ग) **पूर्वी कमान में आधारभूत संरचना विकास:** सुरक्षा संबंधी मंत्रिमंडल समिति ने पूर्वी क्षेत्र में आधारभूत संरचना के लिए अनुमोदन प्रदान किया था। योजनागत/क्रियान्वयन के कुल निर्माण-कार्य 97 हैं जिनके लिए भूमि उपलब्ध करवाई गई है।

(घ) **राष्ट्रीय युद्ध स्मारक एवं राष्ट्रीय युद्ध संग्रहालय:** लगभग 500 करोड़ रुपए की लागत से इंडिया गेट पर 'सी' हेक्सागन में राष्ट्रीय युद्ध स्मारक और प्रिंसेस पार्क, नई दिल्ली में राष्ट्रीय युद्ध संग्रहालय, दोनों के बीच भूमिगत सम्पर्क के साथ निर्माण संबंधी प्रस्ताव को मत्रिमंडल द्वारा 18 दिसंबर, 2015 को अनुमोदित किया गया था।

(ड.) **नवीकरणीय ऊर्जा:**

(i) एमईएस द्वारा सोलर फोटो वोल्टेक (एसपीवी) परियोजना: रक्षा मंत्रालय द्वारा वर्ष 2015-19 की अवधि के लिए सोलर फोटो वोल्टेक (एसपीवी) के कार्यान्वयन संबंधी कार्य-योजना को अंतिम रूप दे दिया गया है और उक्त को निम्नलिखित चरणों में कार्यान्वित किया जा रहा है:-

क्रम सं.	सेवा	परियोजनाओं की संख्या	क्षमता (मेगावाट)
(क)	चरण-I (2015-16)	27	41.50
(ख)	चरण-II (2016-17)	62	108.50
(ग)	चरण-III (2017-18)	घोषित किया जाना है (रूफ-टॉप पर बल)	

(पप) **क्रियान्वयन की विधि:** एमईएस एसपीवी निर्माण-कार्यों को टेंडर देने के टीएंडक्यू बोली प्रपत्र को स्वीकार करके इंजीनियरी, अधिप्राप्ति तथा निर्माण (ईपीसी) परियोजनाएं एमईएस के स्वामित्व में होगी और वे एमईएस के पर्यवेक्षणाधीन होगी।

प्रमुख पहलें/निर्णय/नीतियां :-

9.5 निम्नलिखित प्रमुख पहलें/निर्णय/नीतियां पहले की गई हैं/जारी की गई हैं जिनका संगठन की कार्य-प्रणाली और कार्य निष्पादन पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा:-

(क) मौजूदा कार्यभार को पूरा करने तथा नई चुनौतियों का सामना करने के लिए सत्रह नई यूनिटें स्थापित की गई हैं।

(ख) कार्य-प्रणाली में अस्पष्टताओं को दूर करके सरल एवं कारगर बनाने के लिए सर्वोत्तम परीक्षित और विद्यमान प्रक्रियाओं का अनुकरण करने हेतु कतिपय स्मारक संबंधी नीतियां जारी की गई हैं जिससे संगठन के समग्र कार्य-निष्पादन मानदंडों में वृद्धि होगी। इनमें निम्नलिखित सम्मिलित है:-

(i) नवीकरणीय ऊर्जा का प्रयोग (एकमात्र और रूफ टॉप परियोजनाओं, दोनों के रूप में) और ऊर्जा संरक्षण के लिए एलईडी लाइटें/38 सेना स्टेशनों, 20 वायु सेना स्टेशनों और 4 नौसेना स्टेशनों पर 71.5 मेगावाट की सोलर फोटो वोल्टेक परियोजनाओं की योजना वर्ष 2016-17 के लिए तैयार की गई है।

(ii) सरकारी दिशा-निर्देशों के अनुसार ई-अधिप्राप्ति और ई-निर्देश।

(iii) अनुमानित प्राक्कलनों और सदृश प्राक्कलनों को सरल और कारगर बनाने की तैयारी।

(iv) नई परियोजनाओं में 'हरित मानदंडों' को अपनाना।

(ग) संविदाकार द्वारा ई-निविदा में पात्रता के लिए अधिदेशात्मक उपबंध के रूप में ईपीएफ की कर्मचारी भविष्य निधि संख्या अथवा आवेदन को तैयार करने के लिए एक नीति जारी की गई है।

(घ) रक्षा मंत्रालय के साथ कुछ महत्वपूर्ण मामलों पर कार्रवाई की जा रही है जिनमें निम्नलिखित सम्मिलित है:-

(i) डीडब्ल्यूपी-2007 में संशोधन।

(ii) एमईएस में कार्यभार और गुणवत्ता को पूरा करने के लिए नई निर्माण प्रौद्योगिकी (अभिकल्पन निर्माण) को अपनाना।

(iii) कमी को पूरा करने के लिए कार्य के पर्यवेक्षणार्थ कनिष्ठ इंजीनियरों को बाहर से लेना।

(iv) आवास मानदंड-2009 में संशोधन।

(v) अनुरक्षण मानदंडों में संशोधन।

9.6 **पूरी हुई महत्वपूर्ण परियोजनाएं:**

(क) **सेना के पूरे हुए कार्य:**

(i) **पुरानी छावनी, इलाहाबाद में मलजल-शोधन संयंत्र:** उक्त कार्य 2.80 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और जुलाई 2015 में पूरा हो गया।

(ii) **महू में सीटीडब्ल्यू चरण-II के लिए आधारभूत संरचना:** उक्त कार्य 10.93 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और अगस्त 2015 में पूरा हो गया।

(iii) **भटिंडा में ओटीएम आवास:** उपर्युक्त कार्य 26.64 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और अगस्त 2015 में पूरा हो गया।

(iv) **पश्चिमी क्षेत्र में गोलाबारूद शेड:** उक्त कार्य 7.43 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और अगस्त 2015 में पूरा हो गया।

(v) राजस्थान में अधिकारी मैस एवं एकल आवास: उक्त कार्य 2.21 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और अगस्त 2015 में पूरा हो गया।

(vi) **अम्बाला में ओटीएम आवास:** उक्त कार्य 11.5 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और अगस्त 2015 में पूरा हो गया।

(vii) **आगरा में सैनिक संस्थान:** उक्त कार्य 2.53 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और सितंबर 2015 में पूरा हो गया।

(viii) **मथुरा में बच्चों के लिए स्कूल:** उपर्युक्त कार्य 12.68 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और दिसंबर 2015 में पूरा हो गया।

(ix) **मेरठ में ओटीएम आवास:** उक्त कार्य 16.13 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और यह जनवरी 2016 में पूरा हो गया है।

(x) **फैजाबाद में ओटीएम आवास:** उपर्युक्त कार्य 10.26 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और यह मार्च 2016 में पूरा हो गया है।

(xi) **गोपालपुर में ओटीएम आवास:** उक्त कार्य 1.43 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और यह फरवरी 2016 में पूरा हो गया है।

(xii) **अम्बाला में ओटीएम आवास:** उपर्युक्त कार्य 32.49 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और यह फरवरी 2016 में पूरा हो गया है।

(ख) **एमएपी के पूरे हो चुके कार्य:**

(i) पश्चिमी थिएटर में वायु सेना स्टेशन पर चरण-II: उक्त कार्य 32.96 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और यह फरवरी 2016 में पूरा हो गया है।

(ii) **वायु सेना स्टेशन पर 109 डीयू:** उपर्युक्त कार्य 18.30 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और यह मार्च 2016 में पूरा हो गया है।

(ग) **नौसेना/तटरक्षक के पूरे हो चुके कार्य:**

(i) **मंडपम में ओटीएम आवास:** उक्त कार्य 6.66 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और यह अप्रैल 2015 में पूरा हो गया है।

(ii) **विशाखापत्तनम् में बहु-मंजिला भवनों में वृद्धि/बदलाव:** उक्त कार्य 15.87 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और उसका चरण-I अगस्त 2015 में पूरा हो गया है।

(iii) **विजाग में हैंगर का प्रावधान और संबद्ध सेवाएं:** उक्त कार्य 67.88 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और वह अप्रैल 2016 में पूरा हो गया।

(iv) **अराक्कोनम में आधारभूत संरचना:** उपर्युक्त कार्य 45.88 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और यह प्रगति पर है।

(v) **दमन में अधिकारी मैस और आवास का प्रावधान:** उक्त कार्य 5.80 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था जो प्रगति पर है।

(घ) **वायु सेना के पूरे हो चुके कार्य:**

(i) **वायु सेना स्टेशन पर एकीकृत संभारिकी अनुभाग:** उक्त कार्य 7.34 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था जो जुलाई 2015 में पूरा हो गया।

(ii) **प्रशिक्षु सैट के लिए वायु सेना स्टेशन पर मैस के साथ आवास:** उपर्युक्त कार्य 4.66 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था जो जुलाई 2015 में पूरा हो गया।

(iii) **वायु सेना स्टेशन पर वैवाहिक आवास:** उक्त कार्य 5.50 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था जो अगस्त 2015 में पूरा हो गया।

(iv) **पश्चिमी क्षेत्र में हॉस्पिटल के लिए निर्माण सेवाएं:** उपर्युक्त कार्य 34.09 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था जो अगस्त 2015 में पूरा हो गया।

(v) **गुजरात में विमान क्षेत्र पर मौजूदा परिक्षेपण का विस्तार:** उक्त कार्य 10.97 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था जो अगस्त 2015 में पूरा हो गया।

(vi) **राजस्थान में वायु सेना स्टेशन पर एटीसी/एमईटी परिसर:** उक्त कार्य 7.85 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था जो सितंबर 2015 में पूरा हो गया।

(vii) **वायु सेना स्टेशन पर उप-भवन के साथ हैंगर:** उक्त कार्य 21.48 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था और यह सितंबर 2015 में पूरा हो गया।

(viii) **वायु सेना स्टेशन पर ओटीएम आवास:** उपर्युक्त कार्य 6.64 करोड़ रुपए की राशि के

साथ स्वीकृत किया गया था और यह अक्तूबर 2015 में पूरा हो गया।

(ix) **वायु सेना स्टेशन पर वैवाहिक आवास:** उपर्युक्त कार्य 39.87 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था जो नवंबर 2015 में पूरा हो गया।

(x) **वायु सेना स्टेशन पर वैवाहिक आवास:** उपर्युक्त कार्य 13.66 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था जो दिसंबर 2015 में पूरा हो गया।

(xi) **वायु सेना स्टेशन पर सभागार-सह-सिनेमा:** उक्त कार्य 6.72 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था जो दिसंबर 2015 में पूरा हो गया।

(xii) **वायु सेना स्टेशन के लिए ब्लास्ट पेन्स में आशोधन:** उक्त कार्य 24.85 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था जो दिसंबर 2015 में पूरा हो गया।

(xiii) **वायु सेना स्टेशन पर ओटीएम आवास:** उक्त कार्य 5.02 करोड़ रुपए की राशि के साथ स्वीकृत किया गया था जो जनवरी 2016 में पूरा हो गया।

सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा (एएफएमएस)

9.7 सशस्त्र सेना चिकित्सा का रक्षा कार्मिकों और उनके परिवारों को समर्पित और विश्वसनीय स्वास्थ्य देखभाल मुहैया कराने का विशिष्ट रिकार्ड है। चिकित्सा सेवाएं, युद्ध में तैनात किए जाने के समय अर्ध-सैनिक संगठनों के कार्मिकों और देश के अशांत और दूर-दराज क्षेत्रों में संक्रिया कर रहे अन्य केन्द्रीय पुलिस/आसूचना संगठनों और जीआरईएफ यूनिटों को भी दी जाती है। एएफएमएस देश के भीतर भूतपूर्व सैनिकों और उनके आश्रितों को चिकित्सा सेवा भी प्रदान करता है। प्राकृतिक विपदा, आपदा और संक्रियात्मक क्षेत्रों में यह सिविलियन नागरिकों को भी सेवा देती है।

9.8 सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवाओं (एएफएमएस) में सेना, नौसेना एवं वायु सेना की चिकित्सा सेवाएं तथा सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा महानिदेशालय सम्मिलित हैं। सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा में प्रत्येक चिकित्सा सेवा में लेफ्टिनेंट जनरल अथवा समकक्ष रैंक के भारतीय सेना, भारतीय नौसेना और भारतीय वायु सेना, प्रत्येक में महानिदेशक, चिकित्सा सेवाएं और महानिदेशालय, सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा शामिल हैं। महानिदेशक, सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा (डीजीएएफएमएस) जो सेवा के प्रमुख हैं, रक्षा मंत्रालय के चिकित्सा सलाहकार और चिकित्सा सेवा परामर्शदायी समिति के अध्यक्ष भी हैं। एएफएमएस में एमएससी, एमएमसी (एनटी), एडीसी और एमएनएस के अफसर शामिल हैं। एएमसी, एडीसी, एमएएस और एएमसी(एनटी) की प्राधिकृत नफरी क्रमश: 7073, 705, 4943 और 369 है।

9.9 **वर्ष के दौरान लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय/ क्रियाकलाप:**

(i) **एएफएमएस में कार्मिक संख्या में बढ़ोत्तरी:** सरकार ने मई 2009 में 3530 कार्मिकों के प्रत्येक तीन समान चरणों में 10,590 कार्मिकों तक एएफएमएस की कार्मिक शक्ति के संवर्धन को अनुमोदित किया था। चरण-I और चरण-II की कार्मिक शक्ति का संवर्धन पूरा हो गया है। एएफएमएस में कार्मिक शक्ति के अतिरिक्त अनुमोदन का चरण-III जिसमें 433 चिकित्सा अधिकारी, 683 एमएनएस अधिकारी, 2348 अधिकारी रैंक से नीचे के कार्मिक तथा 66 सिविलियन सम्मिलित थे, उसे फरवरी, 2016 में स्वीकृत कर दिया गया है और अतिरिक्त कार्मिक शक्ति की भर्ती चल रही है।

(II) एएफएमएस में कमीशन:

(क) **सिविल स्रोतों से अल्प सेवा कमीशन:** वर्ष 2016 में 196 महिलाओं सहित सिविल स्रोतों के 627 डॉक्टरों को अल्प सेवा कमीशन प्रदान किया गया था।

(ख) **सशस्त्र सेना मेडिकल कॉलेज (एएफएमसी) कैडेटों को कमीशन:** कमीशन वर्ष 2016 के दौरान एएफएमसी के 108 कैडेटों (89 पुरुष अभ्यर्थी और 19 महिला अभ्यर्थी) को निम्नानुसार कमीशन प्रदान किया गया:-

(क)	स्थायी कमीशन (पीसी)	-	49
(ख)	एसएससी	-	59

(ग) **अल्प सेवा कमीशन (एसएससी) के अफसरों को विभागीय स्थायी कमीशन (डीपीसी) प्रदान किया जाना:** 2016 में 14 अल्प सेवा कमीशन के अफसरों को (पुरुष 11 और महिला 3) को विभागीय स्थायी कमीशन प्रदान किया गया है।

(घ) **एएमसी (एनटी) को विभागीय स्थायी कमीशन प्रदान किया जाना:** वर्ष 2016 के दौरान एएमसी (एनटी) के 05 अल्प सेवा कमीशन के अफसरों को विभागीय स्थायी कमीशन (पीसी) प्रदान किया गया है।

(ड.) **अफसर रैंक के नीचे के कार्मिकों को एएमसी (एनटी) में अल्प सेवा कमीशन:** वर्ष 2016 की रिक्तियों के विरुद्ध एएमसी (एनटी) में पीबीओआर के 05 स्थायी कमीशन प्रदान किए गए थे।

(III) सशस्त्र सेना चिकित्सा कालेज, पुणे: यह कालेज रक्षा सेनाओं में सुनिश्चित कैरियर संभावनाओं के साथ अंडर-ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट चिकित्सा और परिचर्या, विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। एमबीबीएस के लिए प्रवेश एनईईटी-यूजी के द्वारा केन्द्रीकृत रूप से संचालित किया गया था और वर्ष 2016 के लिए एएफएमसी, पुणे में प्रवेश के लिए कुल 32996 उम्मीदवारों ने ऑन-लाइन आवेदन किया। उनकी योग्यता के आधार पर 198 उम्मीदवारों को साक्षात्कार के लिए बुलाया गया था। छंटाई किए गए उम्मीदवारों के लिए एएफएमसी में अंग्रेजी भाषा, तार्किकता और बुद्धिमत्ता (टीओईएलआर) के लिए एक कम्प्यूटर आधारित परीक्षा भी आयोजित की गई थी और अंतत: वर्ष 2016 के लिए 130 (105 लड़के और 25 लड़कियां) विद्यार्थियों को एमबीबीएस पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया गया था। इसके अतिरिक्त, मित्र देशों से प्रायोजित किए गए 5 उम्मीदवारों को भी प्रवेश दिया गया था।

(IV) एएफएमएस का आधुनिकीकरण:

(क) **एएफएमएस हॉस्पिटलों और चिकित्सा यूनिटों की चिकित्सा उपकरण प्रोफाइल का आधुनिकीकरण:** वार्षिक अधिग्रहण योजनाओं में प्राथमिकता-प्राप्त अधिप्राप्ति के जरिए सशस्त्र सेना हॉस्पिटलों के आधुनिकीकरण पर प्रमुख बल दिया गया है। वित्तीय वर्ष 2015-16 में 114.18 करोड़ रुपए मूल्य के विशिष्ट चिकित्सा उपस्कर अधिप्राप्त किए गए थे एवं चालू वित्तीय वर्ष अर्थात् 2016-17 में पूंजीगत बजट शीर्ष के अंतर्गत 152 करोड़ रुपए से अधिक का आपूर्ति ऑर्डर दिया गया है। इसे योद्धाओं, उनके आश्रितों और भूतपूर्व सैनिक भ्रातृसंघ को उपलब्ध करवाई जा रही नैदानिक, चिकित्सकीय तथा विशिष्ट सेवाओं की प्रमात्रा सुधार में परिवर्तित कर दिया गया है।

(ख) **सेना हॉस्पिटल आरएंडआर, दिल्ली में कार्डियो थोरासिक वेस्कुलर सर्जरी (सीटीवीएस) केन्द्र:** सेना हॉस्पिटल (आरएंडआर) दिल्ली के अति-विशिष्ट स्कंध के रूप में 200 बैड का सीटीवीएस केन्द्र कार्यरत है। वर्ष 2016 में कुल 3000 इंवेसिक कार्डिक प्रासीजर्स और 800 सीटीवीएस सर्जरी की गई हैं।

(ग) **वायु सेना कमान हॉस्पिटल, बंगलुरू (सीएचएएफबी):** सीएचएएफबी में नर्सिंग स्कूल का नर्सिंग महाविद्यालय के रूप में उन्नयन किया गया है और उसका उद्घाटन एओ सी-इन-सी, मुख्यालय टीसी भारतीय वायु सेना द्वारा 17 नवंबर, 2016 को किया गया था। बीएससी नर्सिंग पाठ्यक्रम, जो अक्तूबर 2016 में आरंभ हुआ था, उसमें 28 विद्यार्थियों को दाखिला दिया गया है। उक्त महाविद्यालय पूरी तरह से कार्यात्मक एवं प्रचालनात्मक है और वह राजीव गांधी स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलुरू से संबद्ध है एवं भारतीय नर्सिंग परिषद् द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार बीएससी(नर्सिंग) पाठ्यक्रम का अनुसरण कर रहा है।

(घ) **सशस्त्र सेना चिकित्सा भंडार डिपो (एएफएमएसडी) का स्वचालन और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन:**

(i) **भारत सरकार के 'मेक इन इंडिया' अभियान को प्रोत्साहन:** सरकार के 'मेक इन इंडिया' अभियान

को प्रोत्साहित करने के लिए भारतीय विनिर्माताओं से चिकित्सा उपस्कर अधिप्राप्त करने के ठोस उपाय किए गए हैं। 40.08 करोड़ रुपए मूल्य के आपूर्ति ऑर्डर विभिन्न भारतीय विनिर्माता कंपनियों को दिए गए हैं। हॉस्पिटलों एवं यूनिटों को गुणवत्ता से बना कोई समझौता किए 'मेक इन इंडिया' उत्पादों को प्रोत्साहित करने की सलाह दी गई है।

(ii) **ई-अधिप्राप्ति:** रक्षा सेनाओं को वित्तीय शक्तियों के प्रत्यायोजन (डीएफपीडीएस) के अनुसार ई-अधिप्राप्ति अनिवार्य बनाने से डीजीएएफएमएस के कार्यालय को सेना मुख्यालय कम्प्यूटर केन्द्र (एएचसीसी) पोर्टल पर पंजीकृत किया गया है। सभी अधिप्राप्तियां सीपीपी पोर्टल के जरिए की जा रही हैं और अभी तक 300 बोलियों से अधिक को डीजीएएफएमएस के कार्यालय द्वारा प्रकाशित किया गया है।

(iii) **आई-औषधि:** सशस्त्र सेना चिकित्सा भंडार डिपो के स्वचालन के लिए आई-औषधि, एक सॉफ्टवेयर अनुप्रयोग एकीकृत रक्षा स्टाफ मुख्यालय (चिकित्सा) के तत्वावधान में सफलतापूर्वक विकसित किया गया है। प्रशिक्षण का चरण-I जो एएफएमएसडी, दिल्ली छावनी और उसकी आश्रित चिकित्सा यूनिटों में 01-31 जनवरी, 2017 से प्रारंभ हुआ था, वह पूरा हो गया है।

(iv) **टेलीमेडिसिन**

(क) **टेलीमेडिसिन चरण-I:** सैन्य चौकी से रेजिमेंटल सहायता चौकी (आरएपी) तक रेडियो आधारित टेलीमेडिसिन का परीक्षण उत्तरी और पूर्वी सेक्टर में सफलतापूर्वक किया गया था।

(ख) **टेलीमेडिसिन चरण-II:** आरएपी को हॉस्पिटल से जोड़ने के लिए टेलीमेडिसिन की रक्षा पैव इंजीनियरिंग एवं इलेक्ट्रोमेडिकल प्रयोगशाला (डीईबीईएल) डीआरडीओ के साथ योजना बनाई गई हे। वर्तमान में सॉफ्टवेयर का भेजन परीक्षण सुरक्षा स्वीकृति के लिए वार्षिक आकस्मिकता अनुदान (एसीजी) पर किया जा रहा है और उसके पश्चात् 25 डिवीजन क्षेत्रों में परीक्षण किया जाएगा।

(ग) **इसरो टेलीमेडिसिन नोड्स:** इसरो ने 2001 में वार्षिक बलों के लिए 18 टेलीमेडिसिन नोड्स उपलब्ध करवाए थे। सभी गैर-कार्यात्मक नोड्स को 31 जनवरी, 2017 तक चालू कर दिया गया है।

(v) **संयुक्त स्मार्ट कार्ड:** एकीकृत रक्षा स्टाफ मुख्यालय (चिकित्सा) को सेना कार्मिकों, ईसीएचएस तथा उनके आश्रितों को स्वास्थ्य और कैंटीन सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए उनको शामिल करते हुए संयुक्त स्मार्ट कार्ड अधिप्राप्त करने हेतु अधिदेशित किया गया है जो सेवारत और ईसीएचएस कार्मिकों के आश्रित कार्ड प्रतिस्थापित करने के लिए था। कुछ बाधाओं के कारण ईसीएचएस और सीएसडी अवयवों के एकीकरण को स्थापित कर दिया जाएगा और सशस्त्र सेना कार्मिकों के लिए स्वास्थ्य स्मार्ट कार्ड को शीघ्र ही लांच किया जाएगा।

(vi) **चिकित्सा बोर्डों की ई-पुनरीक्षा:** चिकित्सा बोर्ड रोगग्रस्त/घायल वायु सैनिक की नियोजनशीलता को निर्धारित करते हैं और इसका संगठनात्मक तथा विशेष मानव संसाधन मामलों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। सूचना प्रौद्योगिकी के जरिए सुशासन के भाग के रूप में अधिकारियों के लिए चिकित्सा बोर्डों की ई-पुनरीक्षा प्रणाली को चरणबद्ध तरीके से कार्यान्वित किया जा रहा है। उक्त प्रणाली में चरणबद्ध तरीके से मौजूदा पेपर आधारित प्रणाली के स्थान पर चिकित्सा बोर्डों की इलेक्ट्रॉनिक कार्रवाई प्रस्तावित है।

(vii) **दिव्यांग बच्चों की चिकित्सा देखभाल:** बाल-चिकित्सा विभाग, कमान हॉस्पिटल (वायु सेना) बगलुरू में अक्तूबर, 2015 से बहु-आयामी केन्द्र कार्यरत है जो सशसत्र सेना हॉस्पिटलों में अपने तरीके का एकमात्र हॉस्पिटल है। केन्द्र में बहु-चिकित्सा चिकित्सक हैं और समग्र पर्यवेक्षण बालरोग विशेषज्ञ के नियंत्रणाधीन है। इसके आरंभ होने से अभी 156 दिव्यांग बच्चों ने इसका लाभ उठाया है।

(viii) डीजीएएफएमएस ने रक्षा भूतपूव्र सैनिक समुदाय और उनके आश्रितों सहित अपने आश्रित रोगीगण को उच्च गुणवत्ता, व्यापक स्वास्थ्य देखभाल उपलब्ध करवाई है। वार्षिक अधिग्रहण योजना (एएपी) के जरिए उच्च-प्रयोजनीय अत्याधुनिक चिकित्सा उपस्करों की अधिप्राप्ति की गई है।

(ix) विभिन्न सशस्त्र सेना हॉस्पिटलों में चिकित्सा

उपकरणों के नियमित प्रयोग और जीवन-रक्षक सेवाओं को अनिवार्य करने के लिए व्यापक अभियान से रोगीगण में संतुष्टि का स्तर बढ़ा है। भारत की वैश्विक महत्ता और सद्भावना में वृद्धि करके अनेक देशों को चिकित्सा और लोकोपकारी सहायता प्रदान की गई है।

(x) **संयुक्त औषधि सूची 2016:** वर्ष 2016 से पहले, सेवारत कार्मिकों के लिए सीडीएल (संयुक्त औषधि सूची) और ईसीएचएस लाभार्थियों के लिए ईडीएल (अनिवार्य औषधि सूची) दो पृथक औषधि सूचियां अनुरक्षित की जाती थी। यह अनुभूत किया गया कि सेवारत के लिए सीडीएल और ईसीएचएस के लिए ईडीएल ने अपेक्षित रोगीगण संतुष्टि अर्जित नहीं की है। अत: सक्षम प्राधिकारी द्वारा एएफएमएस अधिप्राप्तिकर्ता एजेंसियों, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) अनिवार्य चिकित्सा सूचियों (ईएमएल), राष्ट्रीय अनिवार्य औषधि सूचियों (एनएलईएम) और अन्य सरकारी संगठनों से प्राप्त सूचना को ध्यान में रखते हुए अधिकारी बोर्ड (बीओओ) की बैठक आयोजित की गई थी। अब अधिकारी बोर्ड द्वारा एक संयुक्त औषधि सूची (सीडीएल) तैयार की गई है जो डीजीएएफएमएस द्वारा विधिवत् रूप से अनुमोदित है।

(xi) सभी सशस्त्र सेनाओं के लिए चिकित्सा उपकरणों के प्रबंधन, अधिप्राप्ति और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन में उल्लेखनीय संपूर्ण सुधार, उत्तम योजना के जरिए संभव हुआ है और वित्तीय औचित्य, सत्यनिष्ठा तथा विवेक के सिद्धांतों का अनुपालन करते हुए क्रियान्वयन को सरल एवं कारगर बनाया गया है।

(V) मित्र देशें के लिए विदेशी सहायता प्रदान करना:

5.31 करोड़ रुपए की मूल्य की चिकित्सा सामग्री हज यात्रियों और मित्र देशों (ताजिकिस्तान एवं सेशल्स) के लिए उपलब्ध करवाई गई है।

(VI) हॉस्पिटलों का आधुनिकीकरण/उन्नयन:

(क) **आईएनएचएस कल्याणी का 604 बैड के कमान हॉस्पिटल के रूप में उन्नयन:** सरकार ने आईएनएचएस कल्याणी के उन्नयन के क्रियान्वयन का निरीक्षण करने के लिए परामर्शदाता की नियुक्ति हेतु "आगे कार्य करने की स्वीकृति" प्रदान की है। तदनुसार, मुख्य इंजीनियर (विजाग) ने व्यापक परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) की कंसल्टेंसी और तैयारी करने के लिए 14 मार्च, 2016 को मैसर्स आर्कमिडीज के साथ संविदा पर हस्ताक्षर किए हैं।

(ख) **आईएनएचएस संजीवनी का 439 बैड के अति-विशिष्ट हॉस्पिटल के रूप में उन्नयन:** सरकार ने आईएनएचएस संजीवनी की कंसल्टेंसी और डीपीआर की तैयारी के लिए "आगे की कार्रवाई हेतु स्वीकृति" के साथ अतिरिक्त कार्मिक संख्या, उपस्करों और परिवहन के साथ 439 बैड के अति-विशिष्ट हॉस्पिटल के रूप में उन्नयन के लिए 22 जुलाई, 2016 को सैद्धांतिक अनुमोदन प्रदान किया था।

(ग) **नौसेना हॉस्पिटल करांजा का 30 बैड के बहु-विशिष्ट हॉस्पिटल के रूप में उन्नयन:** सरकार ने नौसेना करांजा हॉस्पिटल को 30 बैड के बहु-विशिष्ट हॉस्पिटल के रूप में उन्नयन के लिए 25 जनवरी, 2016 को सैद्धांतिक अनुमोदन प्रदान किया है। सरकार के अनुमोदन के साथ कार्मिक संख्या में वृद्धि के रूप में 41 नए पद (9 अधिकारी, 4 एमएनएस और 28 नाविक) 6 सितंबर, 2016 को सृजित किए गए।

(घ) **उत्क्षेपण प्रक्रिया सिमुलेटर:** लड़ाकू विमान कर्मीदल के लिए उत्क्षेपण की सही प्रक्रिया प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए उत्क्षेपण प्रक्रिया सिमुलेटर (ईपीएस) आवश्यक है। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए मैसर्स ईटीसी, यूएसए से उत्क्षेपण प्रक्रिया सिमुलेटर (ईपीएस) को अधिष्ठापित किया गया है। ईपीएस, नियंत्रित परिवेश में उत्क्षेपण प्रारंभ करने में सही तकनीक और समय के व्यावहारिक प्रदर्शन को उपलब्ध करवाएगा। उत्क्षेपण प्रक्रिया सिमुलेटर पर प्रशिक्षण से लड़ाकू प्रशिक्षु विमान-कर्मीदल पर लंबा प्रभाव रहेगा और विमान के लहराने से उत्क्षेपण के दौरान संकट-काल में उपयोगी होगा।

(ङ) **सेना हॉस्पिटल (आरएंडआर) में ऑन्कोलाजी केन्द्र का निर्माण:** दिल्ली छावनी में 154 करोड़ रुपए की लागत से सेना हॉस्पिटल (आरएंडआर) में ऑन्कोलाजी केन्द्र के लिए रक्षा मंत्रालय में सक्षम वित्तीय प्राधिकारी (सीएफए) द्वारा प्रशासनिक अनुमोदन प्रदान किया गया

है। यह केन्द्र कैंसर रोगियों की बढ़ती हुई संख्या के लिए उच्च प्रयोजनीय अति विशिष्ट देखभाल मुहैया करवाएगा।

(VII) शोध संबंधी क्रियाकलाप

(प) **सतत् चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम (सीएमई) सम्मेलनः**

(क) बॉम्बे मेडिकल कालेज का 72वां वार्षिक सम्मेलनः बॉम्बे चिकित्सा महाविद्यालय का 72वां वार्षिक सम्मेलन आईएनएचएस अश्विनी सभागार, कोलाबा में 6-7 फरवरी, 2016 को आयोजित किया गया था। एम्मेलन का उद्घाटन सर्जन (नौसेना) द्वारा किया गया था जो उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे।

(ख) प्रतिष्ठित पश्चिमी नौसेना कमान व्याख्यान लेफ्टिनेंट जनरल(वायु सेना) द्वारा दिया गया था। जनरल अधिकारी ने औषधि प्रतिरोधी क्षयरोग ख्र पहुंच, निदान और इलाज पर व्याख्यान दिया। कुल 290 प्रतिनिधियों को पंजीकृत किया गया और उक्त सम्मेलन में भाग लिया था जिसमें 75 असैन्य प्रतिनिधि शामिल थे।

(ग) मेजर जनरल द्वारा "सर्जिकल प्रशिक्षण, नवाचार और योजनाओं" पर कैमेरान पिंटो ओरेशन दिया गया था।

(ii) **सीएमई का आयोजनः** राजहंस सभागार, गोवा में 15-16 अप्रैल, 2016 को आईएनएचएस जीवंती के स्वर्ण जयंती समारोह के भाग के रूप में पैरिफेरल हॉस्पिटलों में दिवस देखभाल प्रबंधन में आधुनिक चिकित्सा प्रक्रियाएं और विकास पर राष्ट्रीय सीएमई आयोजित की गई थी।

(iii) **समुद्रीय औषधि पर 32वां वार्षिक सम्मेलनः** समुद्रीय औषधि एवं संबद्ध विज्ञान पर xxxii वार्षिक सम्मेलन 11-12 नवंबर, 2016 को आईएनएचएस अश्विनी, मुम्बई में आयोजित किया गया था। सम्मेलन एक अद्वितीय वार्षिक समारोह है जो विचारों के आदान-प्रदान के लिए और समुद्र में जोखिमपूर्ण और खतरनाक परिवेश में जीवन की सुरक्षा का इष्टतम उपयोग करने, बचाव करने तथा बनाए रखने के लिए चिकित्सा विज्ञान में विकास पर चर्चा करने, समुद्रवर्ती स्वास्थ्य के संवर्धन में नियुक्त चिकित्सा पेशेवरों के लिए मंच तैयार करता है।

(VIII) **एएफएमएस हॉस्पिटलों में विदेशी नागरिकों का इलाजः** भारत सरकार द्वारा प्रदान की जा रही सद्भावना के उपाय के रूप में अफगानिस्तान, भूटान, नेपाल, बांग्लादेश और मालदीव जैसे देशों के सशस्त्र सेना कार्मिकों को एएफएमएस हॉस्पिटलों में चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाती हैं।

(IX) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

(i) **मालदीव के साथ रक्षा सहयोगः** 02 चिकित्सा अधिकारियों और 04 पैरामेडिक्स के साथ भारतीय एएफएमएस के दल ने माले में 25 बैड वाले सेनहिया एमएनडीएफ हॉस्पिटल की स्थापना और उसकी शुरुआत करने में सहायता के लिए 09 सितंबर, 2016 को मालदीव राष्ट्रीय रक्षा सेना (एमएनडीएफ) चिकित्सा सेवा में भाग लिया था। मालदीव में तैनात किए गए मौजूदा चिकित्सा दल की अवधि 31 मार्च, 2017 तक विधिमान्य की गई है।

(ii) **ओमान के साथ रक्षा सहयोगः** सरकार ने ओमान के लिए 03 चिकित्सा अधिकारियों की प्रतिनियुक्ति को अनुमोदित किया है।

(iii) **सऊदी अरब के लिए प्रतिनियुक्तिः** हज यात्रा के लिए भारत और दक्षिण एशिया से हज यात्रियों को चिकित्सा सहायता प्रदान करने के लिए 14 चिकित्सा अधिकारियों के दल को सऊदी अरब में तैनात किया गया था।

(iv) **ताजिकिस्तान में चिकित्सा दल की तैनातीः** राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की सिफारिश के आधार पर और सेनाध्यक्ष के निर्देशानुसार, क्वाघोन टेप्पा, ताजिकिस्तान में 50 बैड का स्थायी हॉस्पिटल स्थापित किया गया है। भारत-ताजिकिस्तान मैत्री हॉस्पिटल में तैनात किए गए चिकित्सा दल में 9x अधिकारी (4x चिकित्सा अधिकारी, 1x सर्जन, 1x निश्चेतक, 1x चिकित्सा विशेषज्ञ, 1x स्त्रीरोग विशेषज्ञ एवं 1x दंत चिकित्सा अधिकारी), 4x नर्सिंग अधिकारी (नर्सिंग सेवा के सदस्य), 3x जूनियर कमीशंड अधिकारी और 57x अन्य रैंक शामिल

हैं। दूसरे क्रमानुक्रम चिकित्सा दल को 12 अगस्त, 2016 को अधिष्ठापित कर दिया गया है।

(v) **सैन्य दवा पर आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक (थाइलैंड):**

(क) सैन्य दवा पर आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक के साथ फील्ड प्रशिक्षण अभ्यास 01 सितंबर से 11 सितंबर, 2016 तक चोनबूरी, थाइलैंड में किया गया। उपर्युक्त अभ्यास में 3X अफसरों और 9X अन्य रैंकों को मिलाकर बने 60 पैराफील्ड अस्पतालों की चिकित्सा टीम ने हिस्सा लिया।

(ख) सैन्य दवा (2017-20) पर विशेषज्ञ कार्यकारी समूह (ईडब्ल्यूजी) के तीसरे चक्र की अध्यक्षता म्यांमार और भारत द्वारा की जानी है। इस चक्र का उद्देश्य विशेष रूप से मानवीय सहायता और आपदा राहत (एचएडीआर) मिशनों में सिविल विशेष संक्रिया/युद्ध के अलावा सैन्य संक्रियाओं (एमओओटीडब्ल्यू) के लिए दक्षिण-पूर्व एशियन राष्ट्र संघ (एशियन) रक्षा मंत्रियों की बैठक के साथ (एडीएमएम-प्लस) देशों के मध्य चिकित्सा प्रचालन में निरंतर बेहतर सहयोग स्थापित करना है क्योंकि यह क्षेत्र लगातार गैर-परम्परागत सुरक्षा चुनौतियों का सामना करता है।

(X) चिकित्सा/दंत चिकित्सा पाठ्यक्रमों में विदेशी छात्रों को प्रशिक्षण: एएफएमएस द्वारा मित्र पड़ोसी देशों द्वारा प्रयोजित किए गए उम्मीदवारों को, इन देशों से प्राप्त अनुरोध के आधार पर अपने प्रशिक्षण संस्थानों/अस्पतालों में 20 एमडी/एमएस पाठ्यक्रमों, 02 दंत चिकित्सा पाठ्यक्रमों (एमडीएस) और 84 पैरा-चिकित्सा पाठ्यक्रमों में चिकित्सा/दंत चिकित्सा/ पैरा-मेडिकल पाठ्यक्रमों में विदेशी छात्रों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया था।

(XI) **आपदा राहत और यूएन मिशन:** वर्ष 2016-17 में विभिन्न आपदाओं तथा यूएन मिशनों और अन्य विदेशी मिशनों के लिए 29.86 करोड़ रुपए की लागत वाले चिकित्सा भण्डारण प्रदान किए गए थे।

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

9.10 रक्षा सम्पदा महानिदेशालय, नई दिल्ली, 62 छावनियों में रक्षा भूमि और नागरिक प्रशासन के प्रबंधन से संबंधित सलाहकार और कार्यपालक का कार्य करता है। यह महानिदेशालय, वर्तमान में जम्मू, चंडीगढ़, कोलकाता, लखनऊ, पुणे और जयपुर स्थित छह प्रधान निदेशालयों के माध्यम से कार्य करता है। ये प्रधान निदेशालय बारी-बारी से कई फील्ड कार्यालयों, जैसे कि रक्षा सम्पदा कार्यालयों, सहायक रक्षा सम्पदा कार्यालयों और छावनी बोर्डों जैसे कार्यालयों को देश के चारों ओर फैले छावनी बोर्डों और रक्षा भूमियों के दैनंदिन प्रबंधन का कार्य सौंपता है।

9.11 रक्षा मंत्रालय के स्वामित्व में देश भर में लगभग 17.54 लाख एकड़ रक्षा भूमि है जिसका प्रबंधन तीनों सेनाओं और अन्य संगठनों जैसे कि आयुध निर्माणी बोर्ड, डीआरडीओ, डीजीक्यूए, सीजीडीए आदि द्वारा किया जाता है। सेना के नियंत्रण और प्रबंधन में सर्वाधिक अर्थात 14.147 लाख एकड़ भूमि है और इसके बाद वायु सेना और नौसेना के पास क्रमशः 1.40 लाख एकड़ और 0.44 लाख एकड़ भूमि है। अधिसूचित छावनियों के अंदर लगभग 1.57 लाख एकड़ रक्षा भूमि है और शेष लगभग 16.00 लाख एकड़ भूमि छावनियों से बाहर है।

9.12 महानिदेशालय ने सभी रक्षा भूमि के कम्प्यूटरीकरण का कार्य पूरा कर लिया है। सभी रक्षा भूमि का सर्वेक्षण कार्य और सीमांकन तथा रक्षा भूमि पर नियंत्रण और प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए रिकार्डों के डिजीटाइजेशन का कार्य चल रहा है।

9.13 रक्षा संपदा विभाग सशस्त्र सेनाओं के लिए रिहायशी आवासों और भूमि को किराए पर लेने / अर्जित करने का कार्य भी करता है। जम्मू व कश्मीर में अचल सम्पत्ति का अर्जन जे एंड के आरएआईजी अधिनियम, 1968 के अधीन किया जाता है।

9.14 रक्षा सम्पदा महानिदेशालय, रक्षा मंत्रालय की ओर से छावनियों में नागरिक प्रशासन के नियंत्रण,

मॉनीटरी और निरीक्षण के लिए भी उत्तरदायी है। भारत में 62 छावनियां हैं। ये छावनियां राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सहित 19 राज्यों में स्थित हैं। छावनी बोर्ड 'बॉडी कार्पोरेट' होते हैं जो केन्द्रीय सरकार के समग्र नियंत्रण में और छावनी अधिनियम, 2006 के प्रावधानों के तहत कार्य करते हैं। छावनी बोर्डों के आधे सदस्य निर्वाचित होते हैं। स्टेशन कमांडर छावनी बोर्ड का अध्यक्ष होता है। इन निकायों के कार्यकरण का पर्यवेक्षण और नियंत्रण मध्यवर्ती स्तर पर जनरल आफिसर्स कमांडिंग इन चीफ और प्रधान निदेशक, रक्षा सम्पदा द्वारा और उच्चतम स्तर पर रक्षा सम्पदा महानिदेशालय के माध्यम से केन्द्रीय सरकार द्वारा किया जाता है।

9.15 छावनी बोर्डों के स्रोत सीमित हैं क्योंकि छावनी बोर्डों की बड़ी सम्पत्ति सरकार की होती है जिन पर टैक्स नहीं लगाया जा सकता। तथापि, बोर्ड को केन्द्रीय सरकार की सम्पत्तियों से जुड़े सेवा शुल्क के भुगतान की प्राप्ति होती है। छावनियों में उद्योग, व्यापार और व्यापार आदि की कमी के कारण केन्द्र सरकार द्वारा छावनी बोर्डों को कुछ सीमा तक सहायता अनुदान प्रदान किया जाता है।

9.16 शिक्षा प्रदान करने के लिए छावनी बोर्ड उच्चतर माध्यमिक विद्यालय और इण्टर मीडिएट/जूनियर महाविद्यालय चला रहे हैं। छावनी बोर्डों द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों और कालेजों की कुल संख्या 202 है। इसके अतिरिक्त, दिव्यांग बच्चों के लिए 36 केन्द्र और 49 व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र हैं। छावनी बोर्ड छावनियों और पड़ोसी क्षेत्रों के सामान्य लोगों को विभिन्न सेवाएं प्रदान करने के लिए 88 अस्पतालों का भी अनुरक्षण करता है।

9.17 छावनी बोर्डों ने वातावरण की सुरक्षा के लिए वृक्षारोपण, पोलीथिन बैगों पर बैन लगाना तथा नगरपालिका सॉलिड कूड़ा प्रबंधन, आदि जैसे उपाय किए हैं। सभी छावनियों में 'समाधान' नामक लोक शिकायत निवारण प्रणाली और 'सुविधा' नामक कर्मचारी सूचना प्रणाली का भी कार्यान्वयन किया गया है।

9.18 रक्षा सम्पदा सेवा दो प्रकार के महत्वपूर्ण भूमि रजिस्टरों का रख-रखाव करती है। एक रजिस्टर छावनी के भीतर भूमि के लिए है और दूसरा रजिस्टर छावनी के बाहर की भूमि के लिए है। पहले रजिस्टर को सामान्य भूमि रजिस्टर (जीएलआर) कहा जाता है और दूसरे रजिस्टर को सेना भूमि रजिस्टर (एमएलआर) कहा जाता है। दोनों रिकार्डों में सर्वेक्षण संख्यावार ब्यौरे, भूमि का स्वामित्व, इसका क्षेत्र, कब्जेदार का नाम, किसी भी प्रकार का हस्तांतरण/बिक्री विवरण तथा अन्य सार-ब्यौरे समाहित होते हैं। प्रत्येक डीईओ क्षेत्र में दोनों रजिस्टरों का रख-रखाव किया जाता है। छावनी बोर्डों के प्रबंधन के अंतर्गत आने वाली भूमि के लिए प्रत्येक छावनी बोर्ड कार्यालय में जीएलआर का रख-रखाव किया जाता है। रक्षा भूमि सॉफ्टवेयर में सभी रक्षा सम्पदा कार्यालयों और छावनी बोर्डों के संबंध में इन दोनों रजिस्टरों में इलैक्ट्रॉनिक रूप में सूचना एकत्र करने का प्रबंध किया गया था। रक्षा भूमि की मुख्य विशेषता यह है कि विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त भूमि डॉटा को एक स्थान पर समेकित किया जा सकता है।

9.19 रक्षा मंत्रालय ने दिनांक 18 अप्रैल, 2011 के अपने आदेश के तहत भूमि के महत्व को राष्ट्रीय संसाधन के रूप में देखते हुए रक्षा भूमि लेखापरीक्षा करने का निर्णय लिया। डीजीडीई को भूमि लेखापरीक्षा करने का कार्य सौंपा गया है। तीन वर्षों की अवधि (2011-12 से 2013-14) के लिए और दूसरे चक्र (2014-15) के प्रथम वर्ष के लिए भूमि लेख परीक्षा रिपोर्ट को प्रकाशित किया गया है और आवश्यक अनुवर्ती कार्रवाई के लिए परिचालित किया गया है। रक्षा भूमि लेखा परीक्षा एक सतत् प्रक्रिया है। वर्ष 2015-16 के लिए भूमि लेखा परीक्षा समापन के करीब है।

9.20 रक्षा भूमि प्रबंधन से भूमि रिकार्डों का उचित रख-रखाव आवश्यक रूप से किया जाता है। भूमि रिकार्डों का अनुरक्षण, इसका संरक्षण और सुरक्षा मानक देश के सभी 99 फील्ड कार्यालयों अर्थात् 37 रक्षा संपदा कार्यालयों और 62 छावनी बोर्डों, आदि में पुराने दस्तावेजों की भरमार, पर्याप्त भण्डारण-स्थान की कमी,

अग्नि सुरक्षा उपायों की कमी और पुराने दस्तावेजों से संबंधित समस्याओं के कारण ग्रस्त है। सभी डीईओ कार्यालयों में रिकार्ड रूमों का सुधार (नवीनीकरण) जैसे कुछ क्रियाकलाप, सभी डीईओ कार्यालयों से आधारभूत संरचना सुधार और एयू और आरसी की स्थापना पूरी हो गई है और रिकार्डों का सूचक बनाने, स्कैन करने और माइक्रो फिल्म बनाने को दो चरणों में विभाजित किया गया था। चरण-I का कार्य, डीईओ और छावनी बोर्डों में पूरा हो गया है। चरण-II का कार्य प्रगतिशील है। पायलट परियोजना में डिजिटाइज्ड किए गए दस्तावेजों की माइक्रो फिल्म बनाना, डीईओ, सिकन्दराबाद द्वारा किया गया है। यह निर्णय लिया गया है कि वे केन्द्रीकृत तरीके से अन्य डीईओ के उन डिजिटाइज्ड रिकार्डों की माइक्रो फिल्म बनाएं जिसके लिए एक तकनीकी मूल्यांकन समिति डीजीडीई स्तर पर गठित की गई है।

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी का कार्यालय

9.21 मुख्य प्रशासनिक अधिकारी का कार्यालय रक्षा मंत्रालय के अधीन सेना मुख्यालयों और अंतर-सेवा संगठनों के मुख्यालय (आईएसओ) कार्यालयों को सिविलियन जनशक्ति और अवसंरचनात्मक सहयोग मुहैया कराता है। मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (सीएओ) संयुक्त सचिव (प्रशिक्षण) और निदेशक(सुरक्षा) का कार्य भी करते हैं।

9.22 **मुख्य प्रशासनिक अधिकारी का कार्यालय निदेशक (ईएंडए) और निदेशक (एचआर) के अंतर्गत निम्नलिखित दस प्रभागों के द्वारा अपना कार्य करता है:**

(क) **जनशक्ति योजना और भर्ती प्रभाग:** यह प्रभाग सशस्त्र बल मुख्यालय संवर्ग/कॉडर बाह्य पदों के विभिन्न प्रवर्गों पर भर्ती, अनुकम्पा के आधार पर नियोजन, विभिन्न ग्रेडों के भर्ती नियमों को तैयार करना/में संशोधन करना, संवेदनशील संगठनों में कार्यरत कर्मचारियों के चरित्र और पूर्ववृत्त की दोबारा जांच, एएफएचक्यू सिविलियन कैडरों की कैडर समीक्षा/पुनर्गठन और वेतन आयोगों से संबंधित कार्यों, आदि के लिए उत्तरदायी है।

(ख) **कार्मिक एवं विधिक प्रभाग:** कार्मिक प्रभाग तीनों सेना मुख्यालयों और 27 अंतर-सेवा संगठनों में तैनात सिविलियन कार्मिकों की लगभग 200 ग्रेडों में तैनाती सहित कैडर प्रबंधन के लिए उत्तरदायी है। यह प्रभाग सीएओ कार्यालय के अदालती मामलों को भी देखता है।

(ग) **विभागीय अनुशासन, समन्वय और कल्याण विभाग:** यह प्रभाग एएफएचक्यू सिविलियन संवर्ग कर्मचारियों के अनुशासनिक मामलों को देखता है। इसके अतिरिक्त यह प्रभाग मुख्य प्रशासनिक अधिकारी के कार्यालय के भीतर और सुरक्षा कार्यालय के लिए समन्वय, राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से संबंधित मामले, ऑफिस काउंसिल, महिला प्रकोष्ठ, खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यकलाप, विभागीय कैंटीन, एएमए की नियुक्ति, रक्षा सिविलियन चिकित्सा सहायता निधि (डीसीएमएएफ) आदि जैसे कल्याणकारी कार्यकलापों का भी संचालन करता है। यह प्रभाग रक्षा मंत्रालय पुस्तकालय के प्रशासन के साथ पठन सामग्री की खरीद के लिए एनडीएफ के अनुदानों का भी निपटान करता है।

(घ) **रक्षा मुख्यालय प्रशिक्षण संस्थान (डीएचटीआई):** रक्षा मुख्यालय प्रशिक्षण संस्थान संयुक्त सचिव (ई/सीएओ) के कार्यालय के तत्वावधान के अंतर्गत कार्य कर रहा है। डीएचटीआई का उद्देश्य सेना मुख्यालयों और अंतर-सेवा संगठनों में तैनात सिविलियन कार्मिकों को प्रशिक्षण प्रदान करना है। डीएचटीआई रक्षा मंत्रालय के अनुभाग अधिकारियों को भी प्रशिक्षण प्रदान करने का प्रबंधन करता है।

(ङ) तीनों सेनाओं और आईएसओ के अफसरों के लिए अधिप्राप्ति, आरटीआई: मंत्रिमण्डलीय नोट, संसदीय प्रक्रियाओं से जुड़े विशेष पाठ्यक्रमों का भी आयोजन किया जा रहा है। वर्ष 2016-17 के दौरान अपर सचिव ने डीएचटीआई के परिसरों में आयोजित किए जाने वाले 137 पाठ्यक्रमों को अनुमोदन प्रदान किया है। इस वर्ष

सिविलियन कार्मिक प्रबंधन पर 22 पाठ्यक्रम विभिन्न फील्ड स्थापनाओं में आयोजित किए जाने का प्रस्ताव है।

(च) **प्रशासन प्रभागः** यह प्रभाग सीएओ/ए-2 के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत कार्मिकों को छोड़कर रक्षा मंत्रालय (सेना)/आईएसओ में कार्यरत सिविलियन कर्मचारियों के वेतन और भत्तों, छुट्टी सेवा पुस्तिकाओं आदि (चिकित्सा, पेंशन और बजट मामलों को छोड़कर) से संबंधित सभी मामलों का निपटान करता है।

(छ) **चिकित्सा पेंशन और बजट प्रभागः** यह प्रभाग सीएओ/ए-2 के प्रशासनिक नियंत्रण के अंतर्गत सिविलियन राजपित्रत/गैर-राजपत्रित कर्मचारियों के वेतन और भत्ते तथा प्रशासनिक कार्य सहित रक्षा मंत्रालय (सेना)के आईएचक्यू और आईएसओ में कार्यरत सभी सिविलियन कर्मचारियों के चिकित्सा, पेंशन और बजट से संबंधित सभी मामलों का निपटान करता है। यह प्रभाग ई-शासन के कार्यान्वयन, इलैक्ट्रॉनिक डॉटा प्रोसेसिंग और सीएओ के कार्यालय की लैन एवं वेबसाट के रख-रखाव से संबंधित मामलों का भी निपटान करता है।

(ज) **वित्त और सामग्री प्रभागः** यह प्रभाग अंतर-सेवा संगठनों को सामग्री संबंधी सहयोग प्रदान करता है जिसमें कार्यालय उपकरणों, भंडारों, फर्नीचर, लेखा सामग्रियों और सूचना प्रौद्योगिकी उपस्करों की अधिप्राप्ति और प्रोवीजनिंग शामिल है।

(झ) **संकार्य प्रभागः** यह प्रभाग रक्षा मंत्रालय के सभी संघटकों के संबंध में कमी के कारण आवास को किराए पर लेने के साथ कार्यालय आवास के आवंटन और अनुरक्षण से संबंधित "संकार्य" मामलों का निपटान करता है। 'ई' ब्लॉक में लगाया गया एक 11केवीए का विद्युत उप-स्टेशन, डीएचक्यू जोन में विद्युत आपूर्ति के संवर्द्धन-कार्य के चालू किए जाने की संभावना है।

(ञ) **क्वार्टर प्रभागः** यह प्रभाग एएफएचक्यू/ आईएसओ में तैनात सेना के अफसरों को एमओडी पूल विवाहित आवास के प्रबंधन और आवंटन, किराए पर लिए गए आवास के बिलों की प्रतिपूर्ति और एनएसी-एचआरए को प्रदान करने से संबंधित सभी मामलों का निपटान करता है।

(ट) **विशेष परियोजना प्रभागः** यह प्रभाग संयुक्त सचिव(ई/सीएओ) को सौंपी गई विशेष परियोजनाओं से संबंधित सभी मामलों का निपटान करता है जिसमें प्रयोक्ता को सप्रत्ययीकरण, कार्रवाई और सौंपना जैसे कार्य शामिल हैं। विशेष परियोजनाओं में साउथ ब्लॉक और सेना भवन में निगरानी और पहुंच नियंत्रण प्रबंधन प्रणाली (एसएसीएमएस) और दिल्ली में नौसेना भवन और राष्ट्रीय युद्ध स्मारक और राष्ट्रीय युद्ध संग्रहालय का निर्माण शामिल हैं। उप मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (विशेष परियोजना) सम्पदा अधिकारी के रूप में कार्य करते हैं।

9.23 सुरक्षा कार्यालय

(क) सुरक्षा कार्यालय, मुख्यालय सुरक्षा क्षेत्र के अंतर्गत 22 भवनों में वास्तविक सुरक्षा प्रदान करने, निगरानी और प्रवेश पर नियंत्रण करने तथा सुरक्षा भंग न होने देने और आग न लगने देने और एसएलआईसी का डीएसी, टीपी, सीएचटी और वाहन स्टिकर को जारी करने के लिए जिम्मेदार है। इसमें निम्नलिखित प्रमुख जिम्मेदारियों शामिल हैं:-

(i) रक्षा सुरक्षा सैनिक रक्षा मुख्यालय में बिल्डिंगों की सुरक्षा और रक्षा मुख्यालय सुरक्षा जोन में प्रवेश को नियंत्रित करते हैं।

(ii) सुरक्षा कार्यालय नीति प्रशासनिक पहलुओं की सुरक्षा करना, जब और जहां आवश्यक हो, जिनमें पास विभाग द्वारा पहचान दस्तावेज जारी करना, विदेशी पर्यटकों को सुरक्षा प्रमाण-पत्र जारी करना, अग्नि-शमन प्रबंधन और विभिन्न सुरक्षा संबंधी दिशा-निर्देश/परामर्श जारी करना शामिल है।

(iii) एक स्वागत नेटवर्क भारतीय और विदेशी आगंतुकों के प्रवेश और निकास को और जब जहां आवश्यक हो, आगंतुकों को आगंतुक पास जारी करके तथा आगंतुकों को सिविलियन एस्कार्ट प्रदान करके नियमित करता है। आज

की तारीख को 21 स्वागत कार्यालय डीएचक्यू सुरक्षा क्षेत्र के अंतर्गत 19 भवनों/ब्लॉकों (22 में से) में कार्य कर रहे हैं। सभी स्वागत-कार्यालय संयुक्त निदेशक(स्वागत) के समग्र सर्वेक्षण के अंतर्गत कार्य करते हैं।

(ख) सुरक्षा कार्यालय साउथ ब्लॉक और सेना भवन में क्रमशः बायोमेट्रिक और आरएफआईडी प्रणाली द्वारा कार्मिकों और वाहनों के प्रवेश/निकास के निगरानी और आगमन नियंत्रण प्रबंधन प्रणाली (एसएसीएमएस) के कार्यान्वयन की प्रक्रिया में है।

जनसम्पर्क निदेशालय

9.24 जनसम्पर्क निदेशालय रक्षा मंत्रालय, सशस्त्र सेनाओं तथा रक्षा मंत्रालय के अधीन अंतर-सेवा संगठनों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की महत्वपूर्ण घटनाओं, कार्यक्रमों, उपलब्धियों तथा मुख्य नीतिगत निर्णयों के बारे में मीडिया तथा जनता में सूचना प्रसारित करने के लिए एकमात्र प्राधिकृत एजेंसी है। इस निदेशालय का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है तथा इसके देश-भर में 25 क्षेत्रीय कार्यालय हैं जो मीडिया सहायता एवं सेवाएं प्रदान करते हैं ताकि प्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित हो सके। यह नियमित रूप से साक्षात्कार, प्रेस कान्फ्रेंस और प्रेस दौरे आयोजित करके नेतृत्व और रक्षा मंत्रालय तथा सशस्त्र सेनाओं के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विचार-विनिमय को भी सुकर बनाता है।

9.25 यह निदेशालय सशस्त्र सेनाओं के लिए 13 भाषाओं में पाक्षिक पत्रिका 'सैनिक समाचार' प्रकाशित करता है। इस निदेशलय का प्रसारण अनुभाग सैनिकों के लिए 40 मिनट का कार्यक्रम तैयार करता है जिसका प्रसारण सशस्त्र सेनाओं के कार्मिकों के लिए आकाशवाणी से प्रतिदिन किया जाता है। इसका फोटो अनुभाग रक्षा संबंधी महत्वपूर्ण घटनाओं की फोटो कवरेज उपलब्ध कराता है। डीपीआर के फोटो अनुभाग के फोटो अभिलेखागार के डिजीटाइजेशन का प्रयास किया जा रहा है।

9.26 गत वर्ष की भांति इस निदेशालय ने मीडिया के लोगों के लिए उनकी रक्षा विषयों के बारे में जानकारी बढ़ाने के लिए 18 अगस्त, 2016 से 17 सितंबर, 2016 तक रक्षा संवाददाता पाठ्यक्रम का आयोजन किया। संपूर्ण देश से 36 पत्रकारों, जिनमें 11 महिलाएं थीं, ने एक महीने तक चलने वाले इस पाठ्यक्रम में भाग लिया जो सेना, नौसेना और वायु सेना की विभिन्न स्थापनाओं में संचालित किया गया था।

9.27 वर्ष के दौरान, डीपीआर ने जम्मू और कश्मीर में नियंत्रण रेखा से युद्ध-विराम उल्लंघनों की विभिन्न घटनाओं पर कवरेज प्रदान किया जिसमें सीमा पार से आतंकवादियों की अनेक घुसपैठों में हुई अत्यधिक वृद्धि को दिखाया गया। सीमा पार से उरी, पठानकोट और नगरोटा जैसे स्थानों पर हुए कुछ खूंखार आतंकवादी हमलों के चलते भारतीय सेना ने 29 सितंबर, 2016 को नियंत्रण रेखा के पास आतंकवादी समूह के विभिन्न लांच पैडों पर सर्जिकल हमले किए जिसके परिणामस्वरूप अनेक आतंकवादी मारे गए। सेनाध्यक्ष जनरल दलबीर सिंह ने "मेक प्रोजेक्ट" पर सेना सेमिनार के दौरान 31 अगस्त, 2016 को सेना अभिकल्पन ब्यूरो (एडीबी) की स्थापना का औपचारिक रूप से उल्लेख किया जहां जनरल ने सेना की वेबसाइट पर ''मेक इन इंडिया'' पोर्टल का भी प्रारंभ किया।

9.28 डीपीआर में भारत और विदेश, दोनों में अन्य मित्र देशों की सशस्त्र सेनाओं के साथ तीनों सेनाओं द्वारा विभिन्न संयुक्त सैन्य अभ्यास भी शामिल थे। अन्य महत्वपूर्ण थीम, जिन्हें कवर किया गया था, में सशस्त्र सेना के पेंशनभोगियों के लिए बहु-प्रतीक्षित एक रैंक एक पेंशन (ओआरओपी) का सरकार का कार्यान्वयन शामिल है। पूंजीगत अधिप्राप्तियों के लिए नई रक्षा अधि प्राप्ति प्रक्रिया (डीपीपी) 2016, जिसे 01 अप्रैल, 2016 से लागू किया गया है, के प्रख्यापन का आवश्यक प्रचार-प्रसार किया गया था। डीपीपी-2016 ''खरीदो भारतीय'' आईडीडीएम (भारतीय अभिकल्पित, विकसित और विनिर्मित) और "खरीदो (भारतीय)" श्रेणियों को प्राथमिकता प्रदान करके ''मेक इन इंडिया'' विषय प्राप्त करने पर केन्द्रित है। यह स्वदेशी वस्तुओं का संवर्द्धन

करने और उन्हें तर्कसंगत बनाने पर भी केन्द्रित है। रक्षा मंत्री श्री मनोहर पर्रीकर द्वारा 30 जून, 2016 को राष्ट्र के एक रक्षा संचार नेटवर्क (डीसीएन) को समर्पित करने हेतु उपयुक्त कवरेज भी प्रदान किया गया है।

9.29 रक्षा मंत्री द्वारा दिनांक 21 नवंबर, 2016 को नौसेना डॉकयार्ड, मुम्बई में आईएनएस चेन्नै, एक पी 15ए गाइडेड मिसाइल डिस्ट्रायर को शामिल करने का प्रचार डीपीआर ने किया। इसने आईएनएस काडमत्त प्रोजेक्ट 28 (पी-28) वर्ग का दूसरा पोत पनडुब्बी-रोधी वारफेयर कोर्विट तथा उच्च उद्यम योग्य फास्ट अटैक क्राफ्ट आईएनएस तारमुगली को शामिल करने का प्रचार किया गया। भारतीय नौसेना वायु स्क्वाड्रन (आईएनएएस 300) के सी-हैरियर्स को हटाने और आईएनएस विक्रमादित्य में मिग-29 के फाइटर विमानों को लगाने पर भी बल दिया गया। श्रीलंका सरकार द्वारा किए गए सहायता अनुरोध के प्रत्युत्तर में प्रधानमंत्री ने उद्घोषण की कि भारत साइक्लोन ''रोनू'' द्वारा घटित श्रीलंका के विभिन्न भागों में आई बाढ़ों और भू-स्खलनों से प्रभावित लोगों की आपात स्थिति के आधार पर सहायता प्रदान करेगा। दो भारतीय नौसेना युद्धपोत, आईएनएस सतलज और आईएनएस सुमैना को लगभग 40 टन राहत सामग्री के साथ प्रभावित लोगों को सहायता प्रदान करने के लिए 20 मई, 2016 को तैनात किया गया था। एक चेतक हेलीकॉप्टर को भी हवाई सहायता के लिए तैनात किया गया था।

9.30 दिनांक 23 सितंबर, 2016 को 36 राफेल लड़ाकू विमानों के अधिग्रहण के लिए फ्रांस के साथ अंतर्राष्ट्रीय सरकारी समझौता (आईजीए) पर हस्ताक्षर करना और दिनांक 01 जुलाई, 2016 को भारतीय वायु सेना की सं. 45 स्क्वाड्रन में एलसीए तेजस को अधिष्ठापित करना महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय घटनाएं थीं जिन्हें व्यापक प्रचार-प्रसार प्रदान किया गया। भारतीय वायु सेना की संक्रियात्मक तैयारी के हिस्से के रूप में मिराज-2000 और सुखोई-30 विमान द्वारा 21 नवंबर, 2016 को लखनऊ-आगरा एक्सप्रेस-मार्ग के एक हिस्से पर सफल "टच एंड गो" ऑपरेशन को भी प्रचार प्रदान किया गया। दिनांक 18 जून, 2016 को सेना की युद्धक स्ट्रीम में भारतीय वायु सेना की पहली तीन महिला लड़ाकू पॉयलटों को ऐतिहासिक रूप से शामिल करने से भारत को महिला लड़ाकू पायलट रखने वाले चुनिन्दा राष्ट्रों के समूह में स्थान मिला। दिनांक 12 अगस्त, 2016 को उनके सफलतापूर्वक शामिल होने से भारतीय वायु सेना के मार्शल अर्जन सिंह की बधाई प्राप्त हुई और इसकी मीडिया द्वारा विस्तृत रूप से रिपोर्ट दी गई।

9.31 भारतीय वायुसेना के विमानों से ने 14 जुलाई, 2016 को युद्धरत दक्षिणी सूडान की राजधानी जूबा से असहाय भारतीय लोगों को सफलतापूर्वक सुरक्षित स्थान तक पहुंचाया, जहां दो सी-17 ग्लोबमास्टर विमान "ऑपरेशन संकटमोचन" में तैनात किए गए थे। इस एचएडीआर ऑपरेशन का प्रचार विभिन्न मीडिया प्लेटफार्मों में किया गया।

9.32 यह निदेशालय गणतंत्र दिवस समारोह से जुड़ी सभी मीडिया सुविधाओं का भी प्रबंध करता है एवं राजपथ पर परेड का आंखों देखा हाल प्रसारित करता है। निदेशालय द्वारा लाल किले पर स्वतंत्रता दिवस समारोहों, स्वतंत्रता दिवस की संध्या पर सशस्त्र सेनाओं को रक्षा मंत्री के वार्षिक प्रथागत संदेशों, संयुक्त कमांडरों के सम्मेलन, प्रधान मंत्री के एनसीसी रैली और राष्ट्रपति भवन में रक्षा प्रतिष्ठानों जैसी अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं को भी विधिवत् प्रचार-प्रसार प्रदान किया जाता है।

सेना खेलकूद नियंत्रण बोर्ड

9.33 सेना खेलकूद नियंत्रण बोर्ड (एसएससीबी) तीनों सेनाओं में विभिन्न खेलकूद गतिविधियों का आयोजन एवं समन्वय करता है। एसएससीबी के तत्वावधान में 19 खेलों में चार टीमों (आर्मी रेड, आर्मी ग्रीन, इंडियन नेवी और इंडियन एयरफोर्स) की अंतर-सैन्य चौंपियनशिप आयोजित की जाती है और राष्ट्रीय चौंपियनशिप/खेलों में भाग लेने के लिए सेनाओं की टीम के चयन हेतु 12 खेलों के लिए ट्रायल आयोजित किए जाते हैं।

9.34 वर्ष 2016 के दौरान, एसएससीबी ने वरिष्ठ पुरुषों की टीम का क्षेत्ररक्षण किया जिन्होंने विभिन्न अतर्राष्ट्रीय

चैम्पियनशिपों में भारत का प्रतिनिधित्व किया जिसमें अंतर्राष्ट्रीय सैन्य खेलकूद परिषद् (सीआईएसएम), दक्षिण एशिया चैम्पियनशिप, कॉमनवेल्थ कुश्ती चैम्पियनशिप और वुशू वर्ल्ड कप शामिल हैं जहां पर सेनाओं ने 11 स्वर्ण, 15 रजत और 4 कांस्य पदक और 3 टीम स्वर्ण पदक जीते।

9.35 रियो ओलम्पिक, 2016 में लगभग 11 सेना कार्मिकों ने हिस्सा लिया।

सशस्त्र सेना फिल्म और फोटो प्रभाग

9.36 सशस्त्र सेना फिल्म और फोटो प्रभाग (एएफएफपीडी) रक्षा मंत्रालय का एक अंतर-सेवा संगठन है। इसे तीनों सेनाओं के लिए प्रशिक्षण, वृत्त चित्रों और संवर्धनात्मक फिल्में तैयार करने तथा रिकार्ड प्रयोजनों के लिए रक्षा मंत्रालय के समारोहों और अन्य महत्वपूर्ण स्पर्धाओं के फोटो और वीडियो कररेज का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। एएफएफपीडी के केन्द्रीय रक्षा फिल्म पुस्तकालय में द्वितीय विश्वयुद्ध की दुर्लभ फिल्मों और फोटो, वर्तमान तथा अतीत की रक्षा प्रशिक्षण फिल्मों का विशाल संग्रह है।

9.37 वर्तमान में, एएफएफपीडी ने एआरटीआरएसी के सहयोग से सेना के लिए 10 प्रशिक्षण फिल्में पूरी करके इन्हें रिलीज कर दिया है। 11 प्रशिक्षण फिल्में निर्माण के विभिन्न स्तरों पर हैं, 2 फिल्में शूटिंग स्तर पर हैं, 3 फिल्में निर्माण के रफ-कट स्तर पर हैं तथा 6 पूरी होने के स्तर पर हैं। इनके अतिरिक्त, सेना के साहसिक क्रियाकलापों पर एक प्रमोशनल फिल्म शूटिंग स्तर पर है। साथ ही, वेब-आधारित प्लेटफार्मों पर प्रचार के प्रयोजनार्थ सेना के लिए लघु फिल्में पूरी हो गई हैं। एएफएफपीडी द्वारा उत्पादित फिल्में 30 से 60 मिनट की अवधि की हैं और वे हिंदी और अंग्रेजी में हैं।

9.38 इस प्रभाग द्वारा गणतंत्र दिवस, समापन समारोह, स्वतंत्रता दिवस, ध्वजारोहण समारोह, प्रतिष्ठापन समारोह, सेना दिवस परेड, इत्यादि जैसे विभिन्न अन्य समारोहों का वीडियो ओर स्टिल फोटोग्राफिक कवरेज किया गया है। रक्षा मंत्री श्रेष्ठता पुरस्कार के कवरेज, कमांडर्स सम्मेलन, सेना मुख्यालयों की विभिन्न शाखाओं द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा, पीसीडीए के कवरेज, डीजीक्यूए जैसे अंतर-सेवा संगठन, ओएफ सेल, डीजीएक्यूए, मानकीकरण निदेशालय, योजना और समन्वय, सीएओ का कार्यालय, डीजीक्यूए डे और एएफएचक्यू दिवस भी मनाए गए।

9.39 फोटोग्राफी को अब निगेटिव से डिजिटल रूप में परिवर्तित किया गया है और वर्तमान में सभी फोटो को डिजिटल रूप में प्रदर्शित किया जा रहा है और सीडी/डीवीडी के रूप में जारी किया जाता है तथा आवश्यकतानुसार हार्ड कॉपी (फोटो प्रिंट) के रूप में भी जारी किया जाता है। इस अवधि के दौरान 9873 फोटो प्रदर्शित किए गए हैं और 124 फोटो सीडी, 26 फोटो डीवीडी और 1716 फोटोग्राफिक प्रिंटों को आज तक तैयार करके जारी किया गया है।

9.40 इस प्रभाग की केन्द्रीय रक्षा फिल्म लाइब्रेरी (सीडीएफएल) विभिन्न यूनिटों/विरचनाओं/ प्रशिक्षण स्थापनाओं/कमानों की विशिष्ट प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रशिक्षण फिल्मों के वितरण के लिए उत्तरदायी है। यह लाइब्रेरी 35 एमएम साइजों में 587 शीर्षक (पाजिटिव), 543 (मास्टर निगेटिव), 16 एमएम साइजों में 1165 शीर्षक, वीएचएस फार्मेट में 225 शीर्षक, यू-मैटिक फार्मेट में 272 शीर्षक, 166 बेटाकैम फार्मेट, वीसीडी फार्मेट में 34 शीर्षक और डीवीडी और एचडी फार्मेट में 89 शीर्षक, 253 एएफवीसी, विश्वयुद्ध-II के 26901 फोटोग्राफ तथा विश्वयुद्ध-II के 26901 निगेटिव रखती है। वर्ष के दौरान 1993 डीवीडी को विभिन्न सेना/नौसेना/वायुसेना की यूनिटों/विरचनाओं को उधार के रूप में प्रेषित/जारी किया गया है।

9.41 सशस्त्र सेना फिल्म और फोटो प्रभाग के पास द्वितीय विश्वयुद्ध की दुर्लभ फिल्में और फोटो हैं जिसे ब्रिटिश से प्राप्त किया गया है और यह अत्यंत ऐतिहासिक महत्व की सामग्री है जिसे इस प्रभाग की केन्द्रीय रक्षा फिल्म लाइब्रेरी में अनुरक्षित और संरक्षित रूप में रखा गया है। ये फोटो और फिल्में भारतीय सेनाओं को द्वितीय विश्वयुद्ध की विभिन्न रंगशालाओं, इसकी परेडों,

समारोहों, व्यक्तियों और प्रशिक्षण गतिविधियों, इत्यादि के दौरान कार्रवाई करते हुए प्रदर्शित करती है। अनेक अन्य ऐतिहासिक फिल्मों के साथ बैटल ऑफ चाइना, डेजर्ट विक्ट्री, जेपनीज सरेंडर, नाजीज स्ट्राइक्स, बर्मा कैम्पेन, चर्चिल दि मैन, लंदन विक्ट्री परेड, इत्यादि जैसी कुछ महत्वपूर्ण फिल्मों को भी संरक्षित करता है। विश्वयुद्ध-II फिल्मों की कुछ प्रतियां भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार (एनएफएआई) पुणे में संरक्षित हैं।

9.42 इस प्रभाग की मोबाइल सिनेमा यूनिट (एमसीयू) सैनिकों के लिए वृत्तचित्र फिल्मों को भी अधिप्राप्त करती है / वितरित करता है। वर्ष के दौरान एमसीयू ने उधार के आधार पर विभिन्न रक्षा स्थापनाओं को 82 विषयों पर फिल्में जारी की हैं।

राष्ट्रीय रक्षा कालेज

9.43 राष्ट्रीय रक्षा कालेज रक्षा मंत्रालय की एक प्रमुख प्रशिक्षण संस्था है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा एवं युद्ध-नीति शिक्षा का एक उत्कृष्ट केन्द्र है। इस कालेज में प्रशिक्षण के लिए भारतीय और विदेशी सशस्त्र बलों के ब्रिगेडियर/ समकक्ष पदधारित तथा प्रशासनिक सेवा के निदेशक और उससे उच्च अफसर नामित किए जाते हैं। नामित अधिकारियों को ग्यारह माह के प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान मुख्य केन्द्र बिंदु राष्ट्रीय सुरक्षा होता है जिसमें सभी घरेलू क्षेयत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों के सभी आयाम शामिल होते हैं जिससे भावी नीति निर्धारकों को राष्ट्रीय रणनीति की योजना बनाने के लिए आवश्यक बहुविध आर्थिक, राजनीतिक, सैन्य वैज्ञानिक और संगठनात्मक पहलुओं की व्यापक समझ प्राप्त करने के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि मिल सके। पाठ्यक्रम के अंतर्गत अध्ययन के कैप्सूल, लेक्चर/पैनल विचार-विमर्श, युद्ध-नीतिक अभ्यास गेम, युद्ध-क्षेत्र भ्रमण, अनुसंधान कार्यकलाप/थीसिस लिखना एवं सेमिनार सम्मिलित हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस पाठ्यक्रम के लिए छह अध्ययन कैप्सूल आयोजित किए जाते हैं।

9.44 एनडीसी के 56वें पाठ्यक्रम में कुल 100 अधिकारी समाविष्ट थे जिनमें सेना (40), नौसेना (6), वायुसेना (12), सिविल सेवा (16), मित्र देशों से (26) समाविष्ट थे। पाठ्यक्रम 25 नवंबर, 2016 को समाप्त हुआ।

विदेशी भाषा विद्यालय

9.45 विदेशी भाषा विद्यालय हमारे देश का एक ऐसा अनुपम संस्थान है जैसा और कहीं नहीं है; जहां पर एक ही छत के नीचे बहुत-सी विदेशी भाषाएं पढ़ाई जाती हों। यह भारत में वर्ष 1948 से विदेशी भाषाएं पढ़ाने का एक अग्रणी संस्थान है। इस समय यह भारतीय सशस्त्र सेनाओं की तीनों सेनाओं के कार्मिकों को 18 विदेशी भाषाओं का प्रशिक्षण देने में संलग्न है। यह भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों और विभागों, जैसे कि विदेश मंत्रालय, कैबिनेट सचिवालय, केन्द्रीय पुलिस संगठन अर्थात् बीएसएफ, सीआरपीएफ, आईटीबीपी, आदि की आवश्यकता की पूर्ति करता है। इसके अलावा सिविलियन विद्यार्थियों को भी प्रवीणता प्रमाण-पत्र उन्नत डिप्लोमा और दुभाषिता पाठ्यक्रमों में निर्धारित सरकारी नियमों के अनुसार प्रवेश दिया जाता है।

9.46 एसएफएल में अरबी, बहासा इंडोनेशिया, बर्मी, चीनी, फ्रेंच, जर्मन, फारसी, रूसी, स्पेनी, तिब्बती और सिंहली विदेशी भाषाएं नियमित आधार पर तथा जापानी और थाई, आदि अल्पकालिक पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाई जाती हैं।

9.47 एसएफएल द्वारा प्रवीणता पाठ्यक्रम, उन्नत डिप्लोमा पाठ्यक्रम, दुभाषिया पाठ्यक्रम और अल्पकालिक पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं।

9.48 दुभाषिया पाठद्वयक्रम एक पूर्णकालिक पाठ्यक्रम है। इसके लिए सशस्त्र सेनाओं, रक्षा मंत्रालय, कैबिनेट सचिवालय, अर्धसैनिक और अन्य सरकारी विभागों द्वारा विद्यार्थी प्रायोजित किए जाते हैं। यह पाठ्यक्रम अपने विद्यार्थियों को दुभाषिए और अनुवाद के उच्च दक्षता कार्य में निपुणता प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त उनको अत्यंत धाराप्रवाह के साथ लक्षित भाषा को लिखने और बालने में प्रशिक्षित किया जाता है। यह एक अत्यंत विशिष्ट पाठ्यक्रम है जिसके समान भारत में अन्यत्र

कोई पाठ्यक्रम नहीं है। विदेशी भाषा विद्यालय में सिंहली भाषा, इंडोनेशिया, बर्मी, पश्तो, पाक उर्दू, थाई और तिब्बती जैसे सामरिक महत्व की भाषाएं राजनीतिक/सैन्य दृष्टिकोण से पढ़ाई जाती हैं।

9.49 अल्पकालिक पाठ्यक्रम, विशेषकर नामोद्दिष्ट सैन्य अताशे और संयुक्त राष्ट्रसंघ मिशनों पर भेजे जा रहे अफसरों के लिए अथवा प्रयोक्ता संगठन की विशिष्ट जरूरत के अनुसार, आवश्यकतानुसार आयोजित किए जाते हैं।

9.50 एसएफएल, अन्य रक्षा संस्थानों, नामत: राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, पुणे और सेना शिक्षा कोर प्रशिक्षण केन्द्र एवं कालेज, पचमढ़ी का नियंत्रक संगठन है जहां विदेशी भाषाएं पढ़ाई जाती हैं। यह परीक्षाओं का आयोजन करता है और सफल उम्मीदवारों को डिप्लोमा भी जारी करता है। भारतीय विदेश सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिए इस संस्थान द्वारा आयोजित उन्नत डिप्लोमा परीक्षा को उत्तीर्ण करना अनिवार्य है। विदेशी भाषा स्कूल पूरे देश में विभिन्न सेना यूनिटों में क्षेत्रीय भाषाओं अर्थात् नेपाली में परीक्षा आयोजित करता है। तीनों सेनाओं, विशेष रूप से सीखी गई भाषा को आत्मसात् करने और उसे बनाए रखने का मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न विदेशी भाषाओं में भाषा विशेष प्रवीणता परीक्षाएं आयोजित करता है।

9.51 वर्ष 2016-17 के दौरान एसएफएल ने विभिन्न देशों के लिए नामोद्दिष्ट डीए/एमए से संबंधित विदेशी भाषाओं अर्थात् अरबी, चीनी और रूसी में प्रशिक्षण दिया।

इतिहास प्रभाग

9.52 पहले ऐतिहासिक अनुभाग के रूप में जाने जाने वाले इतिहास प्रभाग की स्थापना 26 अक्तूबर, 1953 को स्वतंत्रता के समय से आज तक भारतीय सशस्त्र बलों द्व ारा चलाए गए सैन्य ऑपरेशनों के इतिहास को संकलित करने हेतु की गई थी। आज तक इसने जम्मू तथा कश्मीर में ऑपरेशनों का इतिहास 1947-48, ऑपरेशन पोला, ऑपरेशन विजय (गोवा), भारत के सैन्य परिधान, वीरता की कहानियां, 1965 का भारत-पाक युद्ध: एक इतिहास, 1971 का भारत-पाकिस्तान युद्ध: एक इतिहास और पराक्रम, पीवीसी एवं एसी विजेताओं का आख्यान, आदि सहित 18 खंड संकलित व प्रकाशित किए हैं। इस प्रभाग ने द्वितीय विश्वयुद्ध 1939-45 में भारतीय सशस्त्र सेना के आधिकारिक इतिहास को बारह खंडों में पुनर्मुद्रित भी किया है। संयुक्त राष्ट्रसंघ शांति स्थापना मिशनों में भारतीय सशस्त्र सेनाओं द्वारा चलाए गए ऑपरेशनों के इतिहास को भी प्रकाशित किया गया है। इनमें कांगो में संयुक्त राष्ट्रसंघ ऑपरेशनों में भारतीय सशस्त्र सेनाओं का इतिहास, कोरिया में सीएफआई का इतिहास 1953-54, ऑपरेशन शांति (भारतीय सैनिक मिस्र में) और वृहत् जिम्मेदारी (इंडो-चाइना में, शांति के लिए लड़ाई) शमिल है। कुछ पुस्तकें हिंदी और अंग्रेजी दोनों में प्रकाशित की गई हैं।

9.53 वर्तमान में यह प्रभाग दो शीर्षकों अर्थात् विश्वयुद्ध-I में भारतीय सशस्त्र बलों की भूमिका और ''कारगिल युद्ध का इतिहास'' पर कार्य कर रहा है। यह प्रभाग विश्वयुद्ध-II से संबंधित रिकार्डों के डिजलीकरण में व्यस्त है।

9.54 इतिहास प्रभाग, रक्षा मंत्रालय और भारतीय सशस्त्र सेनाओं के अनुसंधान, अभिलेख और संदर्भ कार्यालय के रूप में भी कार्य करता है। इसे रक्षा मंत्रालय, तीनों सेना मुख्यालयों, सैन्य मामलों से संबंधित विविध अभिलेख और संक्रियात्मक अभिलेख नियमित आधार पर संरक्षण तथा इस्तेमाल के लिए प्राप्त होते हैं। यह प्रभाग फैलोशिप स्कीम भी संचालित करता है जिसके तहत सेना इतिहास में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक तीन वर्षों में फैलोशिप प्रदान की जाती है। इस स्कीम के तहत अब तक सत्रह अनुसंधान अध्येताओं को लाभान्वित किया गया है।

9.55 इस प्रभाग का हेराल्डिक प्रकोष्ठ तीनों सेना मुख्यालयों और तटरक्षक तथा रक्षा मंत्रालय को समारोह संबंधी सभी मामलों, जैसे नई स्थापनाओं के नामकरण

और अधिग्रहण, बैजों और कलगियों का डिजाइन बनाने और स्मृति चिन्हों के निर्माण में सहायता प्रदान करता है। यह प्रकोष्ठ भारतीय वायु सेना के इतिहासों की समीक्षा भी करता है जिन्हें राष्ट्रपति द्वारा रंगों और मानकों के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

9.56 विभागीय पुस्तकालय में कुछ दुर्लभ पुस्तकें, आवधिक पत्रिकाएं और सैन्य महत्व के विदेशी प्रकाशनों सहित पांच हजार से अधिक पुस्तकें हैं। पिछले एक वर्ष में पुस्तकालय में 600 और पुस्तकें आई हैं। पुस्तकालय में पुस्तकों की उपलब्धता की जानकारी के लिए पुस्तक सूची को डिजिलीकृत किया जा रहा है।

रक्षा प्रबंधन कालेज (सीडीएम)

9.57 सीडीएम त्रि-सेना प्रशिक्षण स्थापना है जो तीनों सेनाओं के वरिष्ठ अधिकारियों, अर्ध-सैनिक बलों, रक्षा मंत्रालय के अधिकारियों और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागियों को संकल्पनात्मक, निर्देशात्मक और कार्यात्मक स्तरों पर ज्ञान केन्द्रित वातावरण में उन समकालीन प्रबंधन विचारों, अवधारणाओं तथा व्यवहारों, जिनसे प्रभावी निर्णय लेना तथा दक्ष संसाधन प्रबंधन होता है, में कौशल प्रदान करता है। उच्च रक्षा प्रबंधन पाठ्यक्रम (एचडीएमसी) वह फ्लैगशिप पाठ्यक्रम है जिसे 44 सप्ताहों की अवधि के लिए चलाया जाता है। एचडीएमसी के अतिरिक्त, सीडीएम सार्क देशों के लिए अनेक प्रबंधन विकास कार्यक्रम (एमडीपी), रक्षा प्रबंधन पाठ्यक्रम तथा त्रि-सेनाओं के भागीदारों और मित्र देशों के भागीदारों के लिए वरिष्ठ रक्षा प्रबंधन पाठ्यक्रम (एसडीएमसी) संचालित करता है। यह कालेज अत्याधुनिक सूचना और संचार प्रौद्योगिकी द्वारा समर्थित नेटवर्क वातावरण के माध्यम से प्रशिक्षण प्रदान करता है। सीडीएम वर्ष-भर में 500 से अधिक अधिकारियों को प्रशिक्षित करता है। इसके अतिरिक्त, सीडीएम, वार कालेजों, एमआईएलआईटी, एनडीए, डीएसएससी तथा लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी जैसी विभिन्न प्रशिक्षण स्थापनाओं में बाह्य कैप्सूल संचालित करता है। सीडीएम विस्तृत ज्ञान प्रदान करने का भंडार है और यह प्रबंधन अनुसंधान करता है तथा सशसत्र सेनाओं को परामर्शदायी सेवा प्रदान करता है।

रक्षा सेवा स्टाफ कालेज

9.58 रक्षा सेवा स्टाफ कालेज (डीएसएससी), तमिलनाडु में नीलगिरि के परिसर में स्थित, विश्व का एकमात्र प्रीमियर त्रि-सेना संयुक्त प्रशिक्षण संस्थान है, जो भरतीय सशस्त्र सेनाओं, सिविल सेनाओं/अर्ध-सैनिक बलों और मित्र देशों के चयनित अफसरों को प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। यह स्टाफ कालेज, विशिष्ट व्यावसायिकता स्तर तथा 'ड्यूटी, ऑनर ऑफ वेलर' के सद्गुण को दृढ़ता से परिपुष्ट करके सशस्त्र सेनाओं के उन्नत स्तर पर श्रेष्ठ स्टाफ अधिकारियों और तारकीय नेतृत्वकारियों का सृजन करते हुए मध्यम स्तर के सैन्य अधिकारियों हेतु अवलम्ब के रूप में सेवारत परिपुष्ट वातावरण देता है।

9.59 डीएसएससी को श्रेष्ठ विश्व-स्तरीय स्टाफ और कमान प्रशिक्षण देने वाले एक फ्लैगशिप संयुक्त प्रशिक्षण संस्थान के रूप में प्रदान की गई सराहनीय सेवा के मान्यतास्वरूप राष्ट्रपति द्वारा सितंबर 2016 में राष्ट्रपति पुरसकार से सम्मानित किया गया।

9.60 यह स्टाफ कालेज, वर्तमान में आधारभूत विकास सहित असमानान्तर विस्तार की नवचेतना का अनुभव प्राप्त कर रहा है जो इस शानदार संस्थान के बहु-फलकीय दैदीप्यमान को सुयोजित करती है। यह कालेज स्वयं 500 छात्र अफसरों को प्रशिक्षण उत्तरोत्तर स्फूर्ति दे रहा है। वर्तमान स्टाफ पाठ्यक्रम की संख्या बढ़ाकर 466 की गई है जिसमें सिविल सेवाओं, अर्ध-सैनिक बलों से तीन अफसर, तटरक्षक

से 2 अफसर और 31 विभिन्न देशों से 40 अंतर्राष्ट्रीय अफसर शामिल हैं।

रक्षा मंत्रालय पुस्तकालय

9.61 रक्षा मंत्रालय पुस्तकालय दिल्ली स्थित रक्षा मंत्रालय, तीनों सेना मुख्यालयों, अंतर-सेवा संगठनों और अन्य संबद्ध रक्षा स्थापनाओं में योजना एवं नीति निर्धारण से संबंधित विषयों पर साहित्य उपलब्ध करवाता है। सामान्य पाठकों की आवश्यकताओं की पूर्ति के अलावा, इसे रक्षा तथा संबद्ध विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त है। वर्ष के दौरान इस पुस्तकालय ने 1019 पुस्तकें खरीदीं और 154 पत्रिकाएं/आवधिक पत्रिकाएं तथा 32 समाचार पत्र मंगवाए।

10

भर्ती एवं प्रशिक्षण

अध्याय 10

भर्ती एवं प्रशिक्षण

10.1 सशस्त्र सेनाएं सेवा, बलिदान, देशभक्ति और हमारे देश की मिली-जुली संस्कृति का प्रतीक हैं। सशस्त्र सेनाओं में भर्ती स्वैच्छिक है और भारत का प्रत्येक नागरिक चाहे वह किसी भी जाति, वर्ग, धर्म और संप्रदाय का हो, सशस्त्र सेनाओं में भर्ती के योग्य है बशर्ते कि वह निर्धारित शारीरिक, चिकित्सा और शैक्षिक मानदंडों पर खरा उतरता हो।

10.2 **सशस्त्र सेनाओं में संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से कमीशनप्राप्त अफसरों की भर्ती:** सशस्त्र बलों में कमीशनप्राप्त अफसरों की भर्ती मुख्यत: संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से की जाती है जो इसके लिए निम्नलिखित दो अखिल भारतीय प्रतियोगिता परीक्षाएं आयोजित करता है:

(क) **राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन डी ए) और नौसेना अकादमी (एनए):** संघ लोक सेवा आयोग राष्ट्रीय रक्षा अकादमी और नौसेना अकादमी में प्रवेश के लिए वर्ष में दो बार प्रवेश परीक्षा का आयोजन करता है। उम्मीदवार 10+2 परीक्षा पास करने पर या 12वीं कक्षा में पढ़ते हुए प्रतियोगिता में बैठने के पात्र हैं। संघ लोक सेवा आयोग की लिखित परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात सफल उम्मीदवारों को सैन्य चयन बोर्ड (एस एस बी) द्वारा आयोजित पांच दिवसीय साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है। चिकित्सीय रूप से स्वस्थ पाए जाने एवं एन डी ए की मैरिट सूची में आने वाले सफल उम्मीदवार आवेदन के समय दिए गए विकल्प के अनुसार राष्ट्रीय रक्षा अकादमी अथवा नौसेना अकादमी में प्रवेश पाते हैं। प्रशिक्षण पाठयक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने पर उन्हें कमीशन-पूर्व प्रशिक्षण के लिए संबंधित सेना अकादमियों में भेजा जाता है।

(ख) **संयुक्त रक्षा सेवा परीक्षा (सी डी एस ई) :** संयुक्त रक्षा सेवा परीक्षा का आयोजन संघ लोक सेवा आयोग द्वारा वर्ष में दो बार किया जाता है। विश्वविद्यालयों के स्नातक अथवा स्नातक के अंतिम वर्ष में पढ़ने वाले छात्र इस परीक्षा में बैठने के पात्र हैं। लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले उम्मीदवारों को एस एस बी साक्षात्कार एवं चिकित्सा जांच के लिए उपस्थित होना होता है। मेरिट लिस्ट में आने वाले उम्मीदवारों को स्थायी कमीशन के लिए भारतीय सैन्य अकादमी/वायुसेना अकादमी /नौसेना अकादमी में 18 महीने का बुनियादी सैन्य प्रशिक्षण एवं अल्पकालिक सेवा कमीशन अफसर (एस एस सी ओ) बनने के लिए अफसर प्रशिक्षण अकादमी (ओ टी ए) में 11 महीने का सैन्य प्रशिक्षण लेना होता है। एस एस सी ओ 10 वर्ष की अवधि तक सेवा कर सकता है जिसे 14 वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है। हालांकि वे 10 वर्ष की सेवा पूरी होने पर स्थायी कमीशन के लिए अथवा पांच वर्ष की सेवा पूरी होने पर सेवा छोड़ने का विकल्प ले सकते हैं, जिस पर एकीकृत मुख्यालय, रक्षा मंत्रालय (सेना) द्वारा अलग-अलग मामले के आधार पर विचार किया जाता है।

भारतीय सेना

10.3 संघ लोक सेवा आयोग के जरिए प्रवेश के अलावा नीचे बताए तरीकों से भी सेना में कमीशन प्राप्त अफसरों की भर्ती की जाती है:-

(क) **10+2तकनीकी प्रवेश योजना (टी ई एस):** जिन उम्मीदवारों ने भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित में कुल मिलाकर न्यूनतम 70%अंकों के साथ सी बी एस

ई/आई सी एस ई/राज्य बोर्ड की 10+2परीक्षा उत्तीर्ण की है, वे 10+2 (टी ई एस) के तहत कमीशन पाने के लिए आवेदन कर सकते हैं। एस एस बी में सफल रहने तथा चिकित्सा बोर्ड द्वारा स्वस्थ घोषित किए जाने पर वे प्रशिक्षण अकादमी, गया में एक वर्ष का बुनियादी सैन्य प्रशिक्षण लेते हैं और तत्पश्चात स्थायी कमीशन प्राप्त करने से पूर्व संबंधित शाखाओं में तीन वर्ष का इंजीनियरी डिग्री पाठ्यक्रम पूरा करते हैं। कमीशन प्रदान किए जाने के बाद उन्हें उस सेनांग/सेवा का एक वर्ष का प्रशिक्षण दिया जाता है जिसमें उन्हें कमीशन दिया गया है।

(ख) **विश्वविद्यालय प्रवेश योजना (यू ई एस):** अधिसूचित इंजीनियरी शाखाओं के अंतिम वर्ष से पूर्व के विद्यार्थी विश्वविद्यालय प्रवेश योजना के तहत सेना के तकनीकी सेनांगों में कमीशनप्राप्त अफसर के रूप में स्थायी कमीशन के लिए आवेदन कर सकते हैं। पात्र अभ्यर्थियों को सेना मुख्यालय द्वारा तैनात स्क्रीनिंग टीमों द्वारा कैम्पस साक्षात्कार के जरिए चुना जाता है। इन अभ्यर्थियों को एस एस बी और मेडिकल बोर्ड के सामने उपस्थित होना होता है। सफल अभ्यर्थियों को भारतीय सैन्य अकादमी (आई एम ए), देहरादून में एक वर्षीय कमीशन-पूर्व प्रशिक्षण लेना होता है। इस प्रवेश के माध्यम से कमीशन मिलने पर कैडेट एक वर्ष की पूर्व-दिनांकित वरिष्ठता के भी हकदार होते हैं।

(ग) **तकनीकी स्नातक पाठ्यक्रम (टी जी सी):** सेना शिक्षा कोर के लिए इंजीनियरी की अधिसूचित शाखा के इंजीनियरी ग्रेजुएट, न्यूनतम द्वितीय श्रेणी अंक योग वाले पोस्ट ग्रेजुएट एवं कृषि/सैन्य फार्म के लिए डेयरी में एमएससी धारक उम्मीदवार इस प्रवेश के माध्यम से स्थायी कमीशन के लिए आवेदन कर सकते हैं। एस एस बी और चिकित्सा बोर्ड के पश्चात अंतिम रूप से चुने गए उम्मीदवारों को कमीशन प्रदान किए जाने से पूर्व भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून में एक वर्ष का कमीशन-पूर्व प्रशिक्षण लेना अपेक्षित है। इस प्रवेश के माध्यम से कमीशन मिलने पर कैडेट एक वर्ष की पूर्व-दिनांकित वरिष्ठता के हकदार होते है।

(घ) **अल्प सेवा कमीशन (तकनीकी) प्रवेश:** अल्प सेवा कमीशन (तकनीकी) प्रवेश योजना, पात्र तकनीकी स्नातकों/स्नातकोत्तरों को तकनीकी सेनांगों में भर्ती कराती है। एस एस बी और चिकित्सा बोर्ड के बाद अंतिम रूप से चुने गए अभ्यर्थियों को ओ टी ए, चेन्नई में 49 सप्ताह का कमीशन-पूर्व प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण पूरा होने पर उन्हें अल्प सेवा कमीशन प्राप्त अफसर के रूप में प्रवेश दिया जाता है। इस प्रवेश के माध्यम से आए अभ्यर्थी भी कमीशन प्राप्त होने पर एक वर्ष की पूर्व-दिनांकित वरिष्ठता के हकदार हैं।

(च) **एन सी सी (विशेष प्रवेश योजना):** न्यूनतम 'बी' ग्रेड का एन सी सी 'सी' प्रमाण-पत्र और स्नातक परीक्षा में 50% अंक पाने वाले विश्वविद्यालय स्नातक इस योजना के माध्यम से अल्प सेवा कमीशन के लिए आवेदन कर सकते हैं। तृतीय वर्ष में पढ़ने वाले छात्र भी इस प्रवेश के लिए आवेदन कर सकते हैं बशर्ते उन्होंने पहले दो वर्षों में न्यूनतम 50% समग्र अंक प्राप्त किए हों। ऐसे उम्मीदवारों को साक्षात्कार में चयन होने की स्थिति में 50% समग्र अंक प्राप्त करने होंगे अन्यथा उनकी उम्मीदवारी रद्द कर दी जाएगी। ओ टी ए में प्रवेश लेने के समय उम्मीदवारों के पास स्नातक डिग्री होनी चाहिए अथवा तृतीय वर्ष में पढ़ रहे छात्रों को ओ टी ए में प्रशिक्षण आरंभ होने की तारीख से 12 सप्ताह के भीतर डिग्री प्रस्तुत करनी होगी। इन कैडेटों को एस एस बी द्वारा अयोजित साक्षात्कार के पश्चात मेडिकल बोर्ड द्वारा जांच के लिए बुलाया जाता है। योग्यता संबंधी अपेक्षाएं पूरी करने वाले अभ्यर्थियों को राज्य स्तर पर एन सी सी ग्रुप मुख्यालयों के माध्यम से आवेदन करना होता है। संबंधित ग्रुप मुख्यालयों द्वारा स्क्रीनिंग के बाद एन सी सी महानिदेशालय योग्य कैडेटों के आवेदन पत्र रक्षा मंत्रालय (सेना) के एकीकृत मुख्यालय स्थित भर्ती निदेशालय को भेजता है।

(छ) **जज एडवोकेट जनरल प्रवेश:** एल एल बी में न्यूनतम 55% कुल अंकों सहित विधि स्नातक और 21 से 27 वर्ष तक की आयु वाले व्यक्ति जज एडवोकेट जनरल शाखा के लिए आवेदन कर सकते हैं। पात्र उम्मीदवारों को सीधे ही सेवा चयन बोर्ड द्वारा साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है और तत्पश्चात् उनकी चिकित्सा जांच की जाती है। यह एक अल्पकालिक सेवा कमीशन प्रवेश है जिसमें योग्य उम्मीदवार बाद में स्थायी कमीशन का चुनाव कर सकते हैं।

(ज) **अल्पकालिक सेवा कमीशन (महिला) (एस एस सी डब्ल्यू):** पात्र महिला उम्मीदवारों को सेना में अल्प सेवा कमीशन अफसर के रूप में भर्ती किया जाता है। वैद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियर कोर, इंजीनियर्स कोर, सिग्नल कोर, सेना शिक्षा कोर, सैन्य आसूचना कोर, जज एडवोकेट जनरल शाखा,सेना आपूर्ति कोर, सेना आयुध कोरऔर सेना वायु रक्षा में कमीशन प्रदान किया जाता है। महिलाओं को तीन स्ट्रीमों अर्थात गैर-तकनीकी स्नातक, तकनीकी और स्नातकोत्तर/विशेषज्ञ में दस वर्ष की अवधि के लिए अल्प सेवा कमीशन की पेशकश की जाती है, जिसे पूर्णत: स्वैच्छिक आधार पर और चार वर्षों के लिए बढ़ाया जा सकता है। हाल ही में भारत सरकार ने महिला अफसरों को 10 वर्ष की सेवा पूरी करने पर सेना शिक्षा कोर एवं जज एडवोकेट जनरल शाखा में स्थायी कमीशन का विकल्प प्रदान किया है। अफसर प्रशिक्षण अकादमी, चेन्नई में दिए जाने वाले प्रशिक्षण की अवधि 49 सप्ताह है। अल्पकालिक सेवा कमीशन महिला (तकनीकी) प्रविष्टि के लिए अधि सूचित शाखाओं में बी ई/बी टेक के उत्तीर्ण अथवा अंतिम वर्ष/सेमेस्टर के छात्र आवेदन करने के पात्र हैं। इसके पश्चात सीधे एस एस बी साक्षात्कार एवं चिकित्सा जांच होती है। हालांकि गैर-तकनीकी स्नातक शाखाओं के लिए आवेदकों को संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से आवेदन करना अपेक्षित है और लिखित परीक्षा के बाद एस एस बी साक्षात्कार के लिए आना होता है जैसा कि अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त पुरूष अफसरों के मामले में किया जा रहा है। गैर-तकनीकी शाखा की 20% आबंटित सीटें एन सी सी 'सी' प्रमाणपत्र धारित उन महिला उम्मीदवारों के लिए आरक्षित हैं जिन्होंने स्नातक परीक्षा में न्यूनतम 'बी' ग्रेड एवं 50% अंक योग प्राप्त किया हो। आवेदन एन सी सी निदेशालय, एकीकृत मुख्यालय रक्षा मंत्रालय (सेना) के माध्यम से भेजे जाएंगे जैसा कि पुरूष अफसरों के मामलों में किया जा रहा है। जज एडवोकेट जनरल शाखा के लिए न्यूनतम 55% अंक प्राप्त करने वाले विधि स्नातकों से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं जिन्हें सीधे एस एस बी साक्षात्कार के लिए भेजा जाता है। सेवा कार्मिकों की जो विधवाएं पात्रता संबंधी निर्धारित मानदंडों को पूरा करती हैं, वे आयु में 4 वर्ष की छूट के लिए पात्र हैं और उनके लिए प्रत्येक पाठ्यक्रम में 5% (तकनीकी और गैर-तकनीकी, प्रत्येक शाखा में 2.5%) सीटों का आरक्षण प्रदान किया गया है। अल्पकालिक सेवा कमीशन महिला (तकनीकी), एन सी सी प्रविष्टि एवं जज एडवोकेट जनरल शाखाओं के लिए लिखित परीक्षाओं से छूट है और इनके लिए सीधे अतिरिक्त भर्ती महानिदेशालय, रक्षा मंत्रालय के एकीकृत मुख्यालय (सेना) को आवेदन करना होगा। अधिसूचना एस एस सी डब्ल्यू (तकनीकी) के साथ वर्ष में दो बार प्रकाशित की जाती है।

(झ) **सैन्य प्रवेश:** जूनियर कमीशनप्राप्त अफसर एवं अन्य रैंकों (जे सी ओ एवं ओ आर) की अफसर संवर्ग में भर्ती सेना चयन बोर्ड के माध्यम से निम्नलिखित तरीके से की जाती है:-

(i) **सेना कैडेट कॉलेज (ए सी सी) प्रवेश:** 10+2 परीक्षा पास किए हुए 20-27 वर्ष के आयु वर्ग में न्यूनतम दो वर्ष की सेवा पूरी कर चुके पात्र अन्य रैंक (ओ आर) नियमित कमीशन के लिए आवेदन कर सकते हैं। रक्षा मंत्रालय के एकीकृत मुख्यालय (सेना) द्वारा आयोजित लिखित परीक्षा पास करने के बाद अभ्यर्थियों की एस एस बी और चिकित्सा बोर्ड द्वारा स्क्रीनिंग होती है। सफल उम्मीदवारों को सेना कैडेट कॉलेज विंग, देहरादून में तीन वर्ष का प्रशिक्षण दिया जाता है जिसकी समाप्ति पर उन्हें स्नातक डिग्री मिलती है। इसके बाद आई एम ए, देहरादून में एक वर्ष का कमीशन-पूर्व प्रशिक्षण दिया जाता है।

(ii) **विशेष कमीशन प्राप्त अफसर प्रवेश (एस सी ओ) योजना:** इस प्रवेश योजना के तहत सीनियर स्कूल प्रमाणपत्र प्राप्त (कक्षा 10+2पैटर्न) 28-35 वर्ष आयु समूह के जे सी ओ/एन सी ओ/अन्य रैंक एस एस बी और चिकित्सा बोर्ड की स्क्रीनिंग के बाद कमीशन के लिए पात्र हैं। उन्हें ओ टी ए, गया में एक वर्ष का कमीशन

पूर्व प्रशिक्षण लेना होता है। मूल पदोन्नति एवं कार्यकारी पदोन्नति के नियम नियमित अफसरों की भांति ही हैं। इन अफसरों को यूनिटों में सब यूनिट कमांडर/क्वार्टर मास्टर और विभिन्न अतिरिक्त रेजिमेंटल रोजगार नियुक्तियों में मेजर रैंक तक के पदों पर नियुक्त किया जाता है। ये अफसर लगभग 20–25 वर्ष की सेवा पूरी करने के बाद 57 वर्ष की उम्र में सेवानिवृत्त होते हैं। इस योजना से न केवल जे सी ओ/एन सी ओ/ अन्य रैंक की कैरियर संभावनाओं में सुधार होता है बल्कि सेना में अफसरों की कमी को पूरा करने में भी काफी हद तक सहायता मिलती है।

(iii) **स्थायी कमीशन (विशेष सूची) (पी सी एस एल):** इस प्रवेश के अंतर्गत 42 वर्ष तक की आयु एवं न्यूनतम 10 वर्ष की सेवा पूरी करने वाले सीनियर स्कूल प्रमाणपत्र (10+2 पद्धति) पास जे सी ओ/एन सी ओ/अन्य रैंक के कार्मिक एस एस बी एवं चिकित्सा बोर्ड द्वारा स्क्रीनिंग के बाद कमीशन के पात्र होते हैं। आई एम ए में चार सप्ताह का अनुकूलन प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा करने पर उन्हें स्थायी कमीशन (विशेष सूची) प्रदान किया जाता है।

10.4 अधिकारियों के प्रवेश हेतु आवेदन की प्रक्रिया का स्वचालन: भर्ती निदेशालय की 14 जून 2015 को एक नई वेबसाइट www.joinindianarmy.nic.in शुरू की गई है। यह वेबसाइट ऑनलाइन आवेदन तथा उम्मीदवारों, भर्ती निदेशालय तथा चयन केंद्रों के बीच सूचना व डाटा प्रक्रिया को सरल रूप में सुविधा मुहैया कराती है। सं लो से आयोग और सेवा संबंधी भर्तियों को छोड़कर अन्य सभी भर्तियां ऑनलाइन हो चुकी हैं जिसके माध्यम से भर्ती निदेशालय को आवेदक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। वेबसाइट के माध्यम से आवेदक अपने आवेदन की स्थिति से स्वत: ही अवगत हो जाते हैं तथा इस तरह उनके पास अपने एस एस बी की तिथियों के चयन का विकल्प भी होता है।

10.5 **भर्ती:** वर्ष 2016के दौरान अफसर के रूप में कमीशन पूर्व प्रशिक्षण के लिए अभ्यर्थियों की भर्ती का ब्यौरा नीचे सारणी में दिया गया है:

क्रम सं.	एकादमी	एंट्री	प्रवेश
1.	एन डी ए	सेना	388
		नौसेना	92
		वायुसेना	62
		कुल	**542**
2.	आई एम ए	आई एम ए (डी ई)	237
		ए सी सी	114
		एस सी ओ	63
		पी सी (एस एल)	22
		ए ई सी	14
		कुल	**450**
3.	ओ टी ए	एस एस सी (एन टी)	123
		एस एस सी डब्ल्यू (एन टी)	26
		एस एस सी डब्ल्यू (टी)	17
		एन सी सी	73
		एन सी सी (डब्ल्यू)	09
		जी ए जी	19
		जी ए जी (डब्ल्यू)	11
		कुल	**278**
4.	तकनीकी प्रविष्टियां	यू ई एस	43
		एस एस सी (टी)	272
		10+2 टी ई एस	179
		टी जी सी	94
		कुल	**588**
		कुल योग	**1858**

10.6 **चयन केंद्र उत्तर की स्थापना (एस सी एन):** 01 जुलाई 2015 से एस सी एन की स्थापना कपूरथला में हुई है जो एक अंतरिम क्षेत्र है। वर्ष 2019 तक इसे एक मूल स्थाई क्षेत्र मिलने पर रूपनगर में स्थानांतरित कर दिया जाएगा। एस सी एन की स्थापना में दो नए एस एस बी हैं और इससे स्टेज–2 परीक्षण के माध्यम से लगभग 3800–4000 अतिरिक्त उम्मीदवारों को मदद मिलेगी। इससे वर्तमान चयन दर बढ़ाने में योगदान मिलेगा तथा साथ ही संतोषजनक स्तर का माहौल बनाने में मदद मिलेगी।

10.7 **जूनियर कमीशन्ड अफसरों तथा अन्य रैंकों (जे सी ओ एवं ओ आर) की भर्ती:** सेना में भर्ती 48 रेजीमैंटल केंद्रों के अतिरिक्त आंचलिक भर्ती कार्यालयों, दो गोरखा भर्ती डिपों, एक स्वतंत्र भर्ती कार्यालय, 59 सेना भर्ती कार्यालयों द्वारा की जाती है तथा वे ये भर्तियां अपने क्षेत्राधिकार के अपने क्षेत्रों में रैलियों के माध्यम से भर्ती करते हैं। सोल्जर जनरल ड्यूटी, सोल्जर ट्रेड्समैन, सोल्जर टैक्नीकल, सोल्जर क्लर्क/स्टोर कीपर ट्रेड एवं सोल्जर नर्सिंग सहायक श्रेणियों के लिए जे सी ओ/ओ आर की भर्ती ऑनलाइन एप्लीकेशन सिस्टम द्वारा की जाती है। हांलाकि, रिलिजियस टीचर जे सी ओ (आर टी जे सी ओ), हवलदार एजुकेशन, हवलदार ऑटो कारटोग्राफर तथा जे सी ओ कैटरिंग जैसी श्रेणियों के लिए आवेदन प्रणाली ही प्रयोग में लाई जा रही है। जे सी ओ/ओ आर के लिए मौजूदा भर्ती में इच्छुक उम्मीदवारों की रैली साइट पर 1.6 किमी. की दौड़ के बाद छंटनी शामिल है और उसके बाद दस्तावेज की जांच, शारीरिक स्वस्थता जांच, शारीरिक नाप व चिकित्सा जांच की जाती है। इसके बाद सभी जांचों के बाद पात्र पाए जाने वाले उम्मीदवारों की लिखित परीक्षा ली जाती है। अंत में चयनित उम्मीदवारों को संबंधित प्रशिक्षण केंद्रों पर प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है। यह सुनिश्चित करने का प्रयास रहता है कि एक भर्ती वर्ष में एक बार भर्ती रैलियों द्वारा देश के प्रत्येक जिले तक पहुंचा जा सके।

10.8 **संशोधित भर्ती रैली प्रणाली:** भारतीय सेना देश में सबसे बड़ी नियोक्ताओं में से एक है जो सेना में प्रतिवर्ष करीब 60,000 युवाओं की भर्ती करती है। पहले, भर्ती 'ओपन रैली सिस्टम' के माध्यम से की जाती थी जिसमें उम्मीदवार रैली में आवेदन किए बिना भर्ती के लिए आते थे। अब 'परिशोधित भर्ती प्रणाली' प्रस्तुत की गई है जिसमें उम्मीदावर को भर्ती निदेशालय की वेबसाइट www.joinindianarmy.nic.in पर ऑनलाइन आवेदन करना होता है ताकि एक नियंत्रित भर्ती प्रक्रिया द्वारा भर्ती के लिए बुलाए जाने वाले आवेदकों की भीड़ को कम किया जा सके। उम्मीदवारों की भारी भीड़ के कारण उत्पन्न होने वाली प्रशासनिक व अनुशासन संबंधी समस्याओं का खंडन किया गया है। अब तक, 'संशोधित भर्ती प्रणाली' के साथ 147 रैलियों का आयोजन किया जा चुका है तथा भर्ती निदेशालय की वेबसाइट www.joinindianarmy.nic.in के माध्यम से लगभग 42.5 लाख उम्मीदवारों ने ऑनलाइन आवेदन किया है। संशोधित रैली प्रणाली को निम्नलिखित चरणों में कार्यान्वित किया जा रहा है :

(क) **चरण-I: खुली रैली प्रणाली के स्थान पर कॉलअप प्रणाली का प्रतिस्थापन:** भारतीय सेना में जे सी ओ/अन्य रैंकों में भर्ती के लिए ऑनलाइन पंजीकरण को 18 जुलाई 2015 से लागू किया गया था जिसे बड़ी सफलता मिली और इसने पूरी भर्ती प्रक्रिया में क्रान्ति ला दी। इस पहल ने भर्ती प्रक्रिया को आसान बना दिया है और इसने 'डिजिटल इंडिया' प्रोग्राम को आगे बढ़ाया है जिसके माध्यम से दूरस्थ क्षेत्रों/ग्रामीण क्षेत्रों के उम्मीदवार इस लोकप्रिय कैरियर विकल्प के लिए आवेदन करने हेतु इंटरनेट का प्रयोग कर रहे हैं।

(ख) **चरण-II: शारीरिक तथा चिकित्सा जांच से पूर्व ऑनलाइन परीक्षा के लिए अग्रगामी परियोजना:** हाल ही में ऑनलाइन परीक्षा के लिए रक्षा मंत्रालय ने अग्रगामी परियोजना को अनुमोदित कर दिया है जबकि भर्ती निदेशालय इस परियोजना को लागू करने की दिशा में कार्यरत है। इस परियोजना के लागू हो जाने के बाद इस दिशा में एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। शुरु में, इस अग्रगामी परियोजना को निम्नलिखित तीन जोनों में लागू किया जा रहा है:

(i) मुख्यालय भर्ती जोन, अंबाला

(ii) मुख्यालय भर्ती जोन, चेन्नई

(iii) मुख्यालय भर्ती जोन, जयपुर

10.9 **भर्ती रैलिया:** भर्ती वर्ष 2016-17 के दौरान 100 रैलियों की योजना बनाई गई। कुल 71,804 उम्मीदवारों की भर्ती की गई।

भारतीय नौसेना (भानौ)

10.10 भारतीय नौसेना ऐसे कार्मिकों की भर्ती करती है जिन्हें पोतों, पनडुब्बियों, वायुयानों तथा तटीय स्थापनाओं में अनुकूल स्तर तक कारगर बनाने के लिए तैनात किया

जाता है। नौसेना में भर्ती अखिल भारतीय आधार पर की जाती है। शामिल किए गए वर्दीधारी कार्मिकों की संख्या लिखित परीक्षा, एस एस बी साक्षात्कार, चिकित्सा जांच में योग्य पाये जाने वाले पात्र उम्मीदवारों (पुरुष एवं महिला) की संख्या उनकी योग्यता क्रम की सूची पर निर्भर करती है। भर्ती के दौरान अथवा उसके बाद किसी भी समय किसी लिंग, धर्म, जाति, नस्ल आदि के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता।

10.11 **भर्ती का तरीका:** भारतीय नौसेना की भर्ती प्रणाली सुव्यवस्थित, पारदर्शी, द्रुत और उम्मीदवारों के अनुकूल प्रक्रिया है। भारतीय नौसेना में भर्ती दो तरीकों से की जाती है, अर्थात संघ लोक सेवा आयोग भर्ती और संघ लोक सेवा आयोग के अलावा भर्ती :

(क) **संघ लोक सेवा आयोग भर्ती:** संघ लोक सेवा आयोग राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन डी ए) और भारतीय नौसेना अकादमी (आई एन ए) में स्थायी कमीशन (पी सी) अफसरों के रुप में भर्ती के लिए वर्ष में दो बार एक परीक्षा का आयोजन करता है। 10+2 (पी सी एम) परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके अथवा 12वीं कक्षा में पढ़ रहे उम्मीदवार इस परीक्षा में बैठने के पात्र होते हैं। लिखित परीक्षा के बाद संघ लोक सेवा आयोग उम्मीदवारों की छंटाई करता है। इसके उपरांत उम्मीदवारों को बेंगलूर, भोपाल, कोयम्बटूर और विशाखापटनम में स्थित सेवा चयन बोर्डों के पास भेजा जाता है। अर्हताप्राप्त उम्मीदवारों के परिणाम संघ लोक सेवा आयोग को अंतिम मेरिट-सूची तैयार करने हेतु भेजे जाते हैं। मेडिकल रूप से फिट अर्हक उम्मीदवारों को मेरिट-सूची के आधार पर एन डी ए/आई एन ए में नियुक्ति के लिए सूचित किया जाता है। एन डी ए/आई एन ए में प्रशिक्षण पूरा होने पर नौसेना कैडेटों को नौसेना समुद्री प्रशिक्षण के लिए कोच्चि में प्रशिक्षण पोतों पर भेजा जाता है। स्नातक विशेष भर्ती योजना के लिए संघ लोक सेवा आयोग वर्ष में दो बार संयुक्त रक्षा सेवा परीक्षा (सी डी एस ई) का आयोजन करता है। बी टेक डिग्री स्नातक अथवा बी टेक अंतिम वर्ष के उम्मीदवार भी इस परीक्षा में बैठने के पात्र होते हैं। सफल उम्मीदवारों को नौसेना अनुकूलन पाठ्यक्रम (एन ओ सी) के लिए भारतीय नौसेना अकादमी में शामिल किया जाता है।

(ख) **संघ लोक सेवा आयोग के अलावा भर्ती:** गैर-यू पी एस सी प्रवेश के माध्यम से की जाने वाली भर्तियां स्थायी कमीशन (पी सी) और अल्पकालिक सेवा कमीशन (एस एस सी) दोनों के लिए होती हैं। इस प्रकार की भर्तियों के लिए रक्षा मंत्रालय के एकीकृत मुख्यालय (नौसेना) में आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं तथा उनकी छंटाई की जाती हैं। तत्पश्चात छांटे गए उम्मीदवारों को सेवा चयन बोर्ड के साक्षात्कार के लिए भेजा जाता है। उसके बाद रिक्तियों की उपलब्धता के अनुसार अर्हताप्राप्त उम्मीदवारों की एक मेरिट सूची बनाई जाती है। सेवा चयन बोर्डों के साक्षात्कार के माध्यम से गैर-यू पी एस सी भर्ती की जाती है।

(ग) **10+2 (कैडेट प्रवेश योजना):** यह योजना भारतीय नौसेना की कार्यपालक, इंजीनियरी और वैद्युत शाखाओं में स्थायी कमीशन के लिए है। इस योजना के तहत 10+2 (पी सी एम) सफल उम्मीदवार सेना चयन बोर्ड के माध्यम से चुने जाने के पश्चात बी टेक पाठयक्रम के लिए भारतीय नौसेना अकादमी में भेजे जाते हैं। इस पाठयक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने पर उन्हें भारतीय नौसेना में कार्यपालक, वैद्युत और इंजीनियरी शाखाओं में स्थायी कमीशन प्रदान किया जाता है।

(घ) **विश्वविद्यालय प्रवेश योजना (यू ई एस):** यू ई एस अल्पकालिक सेवा कमीशन के रूप में अगस्त, 2005 में पुन:आरंभ की गई है। सातवें और आठवें सेमेस्टर के इंजीनियरी छात्र नौसेना की एग्जीक्यूटिव एवं तकनीकी शाखाओं में प्रवेश पाने के पात्र हैं। 2014 से इस योजना में स्थाई कमीशन कार्यकारी अधिकारियों की भी भर्ती की जाती है। एकीकृत मुख्यालय, रक्षा मंत्रालय (नौसेना) और कमान मुख्यालयों से नौसेना चयन दल उम्मीदवारों को छांटने के लिए पूरे देश में ए आई सी टी ई द्वारा अनुमोदित इंजीनियरी कॉलेजों का दौरा करते हैं। उम्मीदवारों को सैन्य चयन बोर्ड में साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है। इसके पश्चात सफल उम्मीदवारों की डाक्टरी जांच की जाती है। अंतिम चयन, सैन्य चयन बोर्ड साक्षात्कार में अखिल भारतीय मेरिट के आधार पर प्राप्त अंकों तथा उपलब्ध रिक्तियों के आधार पर होता है।

10.12 **महिला अधिकारी:** नौसेना की एग्जीक्यूटिव शाखा (पर्यवेक्षक, ए टी सी, विधि एवं संभारिकी), शिक्षा शाखा एवं इंजीनियरी शाखा के नौसेना वास्तुकला संवर्ग में अल्पकालिक सेवा कमीशन (एस एस सी) अधिकारी के रूप में महिलाओं का प्रवेश हो रहा है। समुद्री सर्वेक्षण (एम आर) स्ट्रीम में पायलट के पद पर तथा नौसेना आयुध निरीक्षणालय संवर्ग में महिला अल्पकालिक सेवा कमीशन अधिकारियों के प्रवेश को मार्च 2016 में रक्षा मंत्रालय द्वारा अनुमोदन प्रदान किया गया है। 2017 के मध्य से इस भर्ती के आरंभ होने की योजना है।

10.13 **एस एस सीअधिकारियों को स्थायी कमीशन:** 2008 सेरक्षा मंत्रालय ने एग्जीक्यूटिव शाखा (विधि संवर्ग), शिक्षा शाखा एवं इंजीनियरी शाखा (नौसेना वास्तुकला) के अल्पकालिक सेवा कमीशन अधिकारियों, पुरुषों तथा महिलाओं दोनों को स्थायी कमीशन प्रदान करना आरंभ किया है। अल्पकालिक सेवा कमीशन प्रवेश को पुन: सक्रिय करने के लिए निम्न अतिरिक्त तरीके शुरु किए गए हैं :

(क) **एस एस सी अधिकारियों की आरंभिक विनियोजन अवधि में संशोधन:** नौसेना में बेहतर प्रबंधन के लिए तथा एस एस सी अधिकारियों की सुलभता में वृद्धि को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, दिसंबर 2015 से आरंभ होने वाली एस एस सी बैचों के लिए उनकी शाखा/विशेषज्ञता के अनुरूप एस एस सी अधिकारियों की 10 वर्ष की विनियोजन अवधि को संशोधित करते हुए 10/12/14 वर्ष कर दिया गया है। इस नीति के अनुसार नौसेना में पहले से कमीशन प्राप्त अधिकारी स्वेच्छानुसार संशोधित विनियोजन दिशा निर्देशों द्वारा विनियमित किए जा सकते हैं।

(ख) **एस एस सी अधिकारियों को पीसी प्रदान करना:** भारत सरकार की 26 सितंबर 2008 की नीति को कार्यान्वित करते हुए शिक्षा शाखा, विधि तथा नौसेना निर्माता संवर्ग में एस एस सी अधिकारियों को प्रत्याशित पीसी प्रदान करने के लिए सितंबर 2008 तथा दिसंबर 2009 के मध्य भर्ती हुए एस एस सी अधिकारियों के प्रथम बैच पर 2015 में विचार किया गया तथा अप्रैल 2016 में कुल 14 अधिकारियों (सात महिलाओं सहित) को अप्रैल 2016 में पीसी किया गया है।

(ग) **भारतीय नौसेना एस एस सी अधिकारियों की भारतीय तटरक्षक बल (आई सी जी) में पुनर्नियुक्ति:** एस एस सी अधिकारियों को एक वैकल्पिक कैरियर विकल्प उपलब्ध कराने के उद्देश्य से भारतीय तटरक्षक बल से परामर्श करके दिसंबर 2015 में एक नीति जारी की गई जिसके तहत 12 वर्ष की सेवा पूरी करने पर नौसेना एस एस सी अधिकारियों की पुनर्नियुक्ति भा त ब में हो सकेगी। परिणामस्वरूप, मई 2016 में भारतीय नौसेना के आठ एस एस सी अधिकारियों की पुनर्नियुक्ति भा त ब में की गई है।

10.14 **एन सी सी के माध्यम से भर्ती:** न्यूनतम श्बीश्ग्रेडिंग सहित इंजीनियरींग डिग्री परीक्षा में 50% अंक वाले एन सी सी 'सी' प्रमाण-पत्र धारक विश्वविद्यालय स्नातकों को नौसेना में नियमित कमीशन प्राप्त अफसरों के रूप में भर्ती किया जाता है। इन स्नातकों को संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित संयुक्त रक्षा सेवा परीक्षा में बैठने से छूट दी गई है और उनका चयन केवल एस एस बी साक्षात्कार के माध्यम से ही किया जाता है। वे सी डी एस ई कैडेटों के साथ ही नौसेना अभिमुखीकरण पाठयक्रम (एन ओ सी) के लिए नौसेना अकादमी में प्रवेश लेते हैं।

10.15 विशेष नौसेना वास्तु-शिल्प प्रवेश योजना:सरकार ने हाल ही में 'विशेष नौसेना वास्तुकार प्रवेश योजना' (एस एन ई ए एस) के तहत भारतीय नौसेना में अल्प सेवा कमीशन अफसरों के रूप में नौसेना वास्तुकार अफसरों को भर्ती किए जाने के लिए अनुमोदन प्रदान किया है। नौसेना को शक्ति प्राप्त दल आई आई टी खड़गपुर, आई आई टी चेन्नई, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कोचिन (सी यू एस ए टी) और आंध्र विश्वविद्यालय, जिनमें बी टेक (नौसेना वास्तुशिल्प) पाठ्यक्रम का संचालन किया जाता है, के कैम्पस साक्षात्कारों के माध्यम से उम्मीदवारों का चयन करने हेतु दौरा करता है। चुने हुए उम्मीदवारों की निकटतम मिलिटरी अस्पताल में मेडिकल जांच की जाती है और उपयुक्त पाए जाने पर प्रशिक्षण के लिए उनका चयन किया जाता है।

नौसैनिकों की भर्ती

10.16 **भर्ती का तरीका:** नौसेना में भर्ती उपलब्ध रिक्तियों की संख्या के अनुसार 'भर्ती योग्य पात्र पुरूष आबादी की राज्यवार मेरिट पर अखिल भारतीय आधार पर' की जाती है। राज्य विशेष से भर्ती हुए कार्मिकों की संख्या उन पात्र उम्मीदवारों की संख्या पर निर्भर होती है जो लिखित परीक्षा, शारीरिक फिटनेस टेस्ट और डॉक्टरी जांच तथा मेरिट में उनकी अपनी-अपनी स्थिति के अनुरूप होती है। जाति/पंथ अथवा धर्म के आधार पर रिक्तियों का कोई कोटा नहीं होता है। पात्र वालंटियरों से आवेदन-पत्र मंगवाने हेतु सभी प्रमुख राष्ट्रीय और प्रादेशिक समाचार-पत्रों और रोजगार समाचार में विज्ञापन प्रकाशित किये जाते हैं। बहुत से स्कूलों/कॉलेजों और जिला सैनिक बोर्डों में भी प्रचार सामग्री भेजी जाती है। स्थानीय प्रशासन ग्रामीण/पिछड़े क्षेत्रों में स्थानीय मीडिया के माध्यम से प्रचार अभियान चलाता है। नौसेना में नाविकों की भर्ती लिखित परीक्षा, शारीरिक स्वस्थता जांच और चिकित्सा जांच प्रक्रिया के बाद की जाती है।

10.17 भर्ती के प्रकार: शैक्षिक योग्यताओं के साथनाविकों की भर्ती के लिए विभिन्न प्रविष्टियां इस प्रकार हैं:-

(क) आर्टिफिसर अप्रेंटिस (ए ए)-10+2 (पीसीएम)

(ख) सीनियर सैकेन्डरी रंगरूट (एसएसआर) - 10+2 (साइंस)

(ग) मैट्रिक भर्ती रंगरूट (एमआर)-रसोइया, स्टीवार्ड एवं संगीतकार की भर्ती के लिए-मैट्रिकुलेशन

(घ) गैर- मैट्रिक रंगरूट (एन एम आर), हाईजिनिस्ट नाविकों की भर्ती के लिए-कक्षा VI

(च) सीधी भर्ती (उत्कृष्ट खिलाड़ी)

10.18 **एन सी सी प्रमाणपत्र धारक:** एस एस आर में प्रवेश हेतु नौसेना ने एन सी सी (नेवल विंग) 'सी' प्रमाणपत्र धारकों के लिए 25 रिक्तयां प्रति बैच उधिष्ट की हैं। अन्य ऐसे नाविक भर्ती की विभिन्न लिखित परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने वाले एस एस सी प्रमाण पत्र धारकों को निम्नानुसार अतिरिक्त अंक प्रदान किए जाते है:

एन सी सी प्रमाण पत्र के प्रकार	प्रदत्त अतिरिक्त अंक
ए	2
बी	4
सी	6

भर्ती के लिए प्रचार

10.19 भारतीय नौसेना में अधिकारियों (महिला अधिकारियों सहित) तथा नाविकों के रूप में उपलब्ध अवसरों के प्रति राष्ट्र के नौजवानों को अधिक जागरूक बनाने के लिए अनेक उपाय किए गए हैं। बेहतर प्रतिभाओं को आकर्षित करने के लिए प्रचार के निम्न साधनों को अपनाया गया है:

(क) **प्रेस विज्ञापन:** विज्ञापन तथा दृश्य प्रचार निदेशालय (डी ए वी पी) के माध्यम से रोजगार समाचार (हिंदी/अंग्रेजी) तथा विभिन्न भाषाओं के समाचार पत्रों में विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं के विज्ञापन प्रकाशित किए जाते हैं।

(ख) **जर्नल/पत्रिकाओं में विज्ञापन:** सामान्यत: इन्हें शैक्षणिक संस्थाओं के जर्नल/पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाता है।

(ग) **होर्डिंग:** देश के नौजवानों को नौसेना में भर्ती के लिए आकर्षित करने के लिए डी ए वी पी द्वारा अनुमोदित जगहों पर होर्डिंग लगाने की योजना है।

(घ) **मुद्रित प्रचार:** डी ए वी पी तथा निजी पेशेवर एजेंसियों द्वारा तैयार किए गए सूचना फोल्डर, पर्चे, विवरणिका, डाटा कार्डों, पोस्टर तथा ब्लो-अप बड़े पैमाने पर वितरित किए जाते हैं।

(च) **प्रदर्शनी तथा मेला:** भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला, नई दिल्ली के रक्षा पैविलियन में सशस्त्र बलों में भर्ती से जुड़ी सूचना आगुंतकों तक पहुंचाने के लिए एक स्टॉल लगाई जाती है। कैरियर अभिमुख या विद्यार्थियों के लिए आयोजित किए जाने वाले अन्य ऐसे मेलों में भी इन सूचनाओं को उपलब्ध कराया जाता है।

(छ) **प्रचार सामग्री का वितरण:** प्रत्येक वर्ष देश के लगभग 8000 स्कूलों में नौसेना तथा नौसेना में होने वाली भर्तियों से संबंधित सूचना प्रदान करने वाली मुद्रित प्रचार सामग्री का वितरण किया जाता है।

भारतीय नौसेना अकादमी (आई ए ए), एझिमाला

10.20 एझिमाला, केरल में स्थित भारतीय नौसेना अकादमी (आई एन ए) 2452 एकड़ की तटीय भूमि पर फैला हुआ है तथा इसमें आधारभूत संरचनाओं, शैक्षिक लक्ष्यों तथा बाह्य क्रियाकलापों के लिए उत्कृष्ट सुविधाएं उपलब्ध हैं जिनमें अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं, कार्यशालाएं, स्विमिंग पूल, खेल के मैदान शामिल हैं। अकादमी में आधुनिक आवासीय सुविधाएं हैं, उत्कृष्ट मेस तथा पांच अच्छे स्कवाड्रन हैं और इन सभी के पास व्यापक सुविधाएं है। 721.88 करोड़ की लागत से निर्मित अकादमी में लगभग 750 कैडेटस रह सकते हैं तथा प्रशिक्षित हो सकते हैं। दूसरे चरण में आई एन ए की क्षमता को 1200 कैडेटस तक बढ़ाया जा रहा है जिसके 2020 तक पूर्ण होने की संभावना है।

10.21 प्रथम बी टेक पाठयक्रम आई एन ए में 22 जून 2009 को आरंभ हुआ था। 21वीं सदी की तकनीकी चुनौतियों को पूरा करने के लिए नौसेना के विकास में यह एक उल्लेखनीय कदम था। एकेडमी में कैडेटों को तकनीकी प्रशिक्षण के साथ ही नौसेना इतिहास तथा मानविकी विषय का भी ज्ञान दिया जाता है। 'एल' अधिकारियों के लिए एप्लाइड इलैक्ट्रॉनिक्स एंड कॉमिनिकेशन इंजीनियरिंग (ई सी ई) में तथा 'ई' और 'एन ए' अधिकारियों के लिए मैकेनिकल इंजीनियरिंग (एम ई) में बी टेक प्रशिक्षण दिया जाता है। बी टेक पाठयक्रम के पूर्ण होने पर जे एन यू द्वारा बी टेक (ए ई सी) तथा बी टेक (एम ई) डिग्रियां प्रदान की जाती हैं। प्रथम तीन सेमेस्टरों के सामान्य पाठ्यक्रम के पूर्ण होने पर, शेष समय के लिए कैडेटस को विभिन्न शाखाओं में पृथक कर दिया जाता है। पूर्व एन डी ए नौसेना कैडेटों का तकनीकी ज्ञान बढ़ाने और उन्हें आई एन ए कैडटों के साथ एकीकृत करने के लिए एन डी ए में नौसेना कैडेटों के लिए बी टेक पाठ्यक्रम की शुरुआत जुलाई 2016 से हुई है। एन डी ए में बी टेक पाठ्यक्रम (ए ई सी) के छः सत्रों को पूरा करने के पश्चात नौसेना कैडेट भारतीय नौसेना एकेडमी में प्रवेश करेंगे। एन डी ए के पूर्व कैडेटों के लिए बी टेक के अंतिम दो सत्र भारतीय नौसेना एकेडमी में संचालित किए जाएंगे।

10.22 आई एन ए सी ध्वज पोत पाठयक्रम के अतिरिक्त, आई एन ए नौसेना अभिविन्यास पाठयक्रम (एन ओ सी), नौसेना अभिविन्यास पाठयक्रम (विस्तृत) औरअल्पकालिक नौसेना अभिविन्यास पाठयक्रम (एस एन ओ सी), भारतीय नौसेना तथा भारतीय तटरक्षक बल (महिला अधिकारियों सहित) के लिए पाठयक्रम आयोजित करता है। दिसंबर, 2015 के आरंभ से विदेशी मित्र देशों के अधिकारी कैडेटों को भी आई एन ए में प्रशिक्षित किया जा रहा है।

आई एन एस चिल्का में नाविकों का प्रशिक्षण

10.23 आई एन एस चिल्का, भारतीय नौसेना का प्रमुख नाविक प्रशिक्षण संस्थान है जिसे लगभग 1700 प्रशिक्षाणार्थियों को प्रारंभिक प्रशिक्षण देने के लिए स्थापित किया गया था। औसतन, चिल्का प्रतिवर्ष अन्य सेवाओं जैसे सी आई एस एफ/बी एस एफ तथा भारतीय तटरक्षक के 800 कार्मिकों को प्रशिक्षित करता है। वर्तमान में प्रति वर्ष 5000 से अधिक प्रशिक्षुओं को इस संस्थान में प्रशिक्षित किया जाता है जिसके लिए विशाल संभारिकी सहायता और जनशक्ति संसाधनों की जरूरत होती है। यह ओड़िशा राज्य को मानवीय सहायता एवं आपदा राहत (एच ए डी आर) ऑपरेशन तथा असैनिक अशांति के दौरान पूर्ण सैन्य सहायता प्रदान करती है जिसके लिए राज्य सरकार स्थापना से मदद भी मांगती है। ओड़िशा राज्य में स्थित एन सी सी यूनिटों तथा ई सी एच एस पोलीक्लीनकों को प्रशासनिक तथा संभारिकी सहायता देने और एन सी सी कैडटों को प्रशिक्षित करने के लिए भी आई एन एस चिल्का द्वारा अपनी जनशक्ति और सामग्री संसाधन मुहैया की जाती हैं।

विदेशी प्रशिक्षण

10.24 **विदेशी नौसेना कार्मिकों का प्रशिक्षण:** भारतीय नौसेना चार दशकों से भी अधिक समय से विदेशी कार्मिकों को प्रशिक्षण मुहैया करा रही है। इस अवधि के दौरान इसने 41 विदेशी मित्र देशों से 12000 से भी अधिक विदेशी कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया है। नौसेना उच्च गुणवता प्रशिक्षण मुहैया कराने के लिए प्रशिक्षण का सतत् मूल्यांकन करते हुए समय की जरूरत

के अनुसार प्रशिक्षण पैटर्न विकसित करती है ताकि विदेशी मित्रदेशों के साथ मजबूत और टिकाउ संबंध बनाए जा सकें।

10.25 **भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आई टी ई सी) योजना:** भारत सरकार, विदेश मंत्रालय भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आई टी ई सी) योजना-I एवं II के अंतर्गत अनेक देशों से नौसेना कार्मिकों के लिए सहायता प्रदान करता है। इस योजना के तहत हवाई टिकट, ट्यूशन, खाने और रहने की व्यवस्था पर होने वाले खर्च को भारत सरकार द्वारा पूरी तरह उठाया जाता है (आई टी ई सी-II योजना को छोड़कर जिसमें हवाई टिकट की लागत का वहन मूल देश द्वारा किया जाता है)। आगे, पाठ्यक्रम की पूरी अवधि के दौरान प्रशिक्षुओं को निर्वाह खर्च के लिए गुजारा भत्ते के रूप में वित्तीय मदद भी की जाती है। ऐसे मामले जहां आई टी ई सी की राशि उपलब्ध नहीं होती, प्रशिक्षण स्व-वित्तीय योजना (एस एफ एस) के अंतर्गत प्राप्त किया जाता है जिसमें प्रशिक्षण की पूरी लागत प्रशिक्षार्थियों की सरकार द्वारा वहन की जाती है।

10.26 प्रशिक्षण के कार्यक्रम की योजना वार्षिक आधार पर 01 जुलाई से अगले वर्ष 30 जून तक तैयार की जाती है तथा संगठनात्मक प्रक्रिया को समकालिक करने के लिए इसे वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के रूप में लागू किया जाता है। बहुत से मामलों में, अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को भा नौ प्रशिक्षणार्थियों के साथ प्रशिक्षण दिया जाता है। पाठ्यक्रम की रचना इस प्रकार की जाती है जिससे प्रशिक्षण की आधारिक संरचना व संसाधनों का सफल व सार्थक उपयोग हो सके। पिछले कुछ वर्षों में देखने में आया है कि प्रशिक्षण सहयोग के द्वारा नौसेना मित्रों की क्षमता विकसित करने के लिए हमारी प्रतिबद्धता में लगातार इजाफा हुआ है। इस प्रकार 'प्रशिक्षण कूटनीति', भारत के विदेश सहयोग की पहल के रूप में आधारशिला बन चुकी है। इस लक्ष्य के अनुसरण में शैक्षिक वर्ष 2016-17 में विभिन्न विदेशी मित्र देशों को 960 रिक्तियां आवंटित की गई हैं।

10.27 **भारतीय नौसेना मोबाइल प्रशिक्षण टीमों की प्रतिनियुक्ति (आई एन एम टी टी):** अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण के बढ़ते हुए भार को कम करने के लिए विशेष रूप से संगठित मोबाइल प्रशिक्षण टीमों (एम टी टी) द्वारा कस्टमाइज्ड प्रशिक्षण पाठ्यक्रम मुहैया कराए जाते हैं। भा नौ ने इस प्रयोजन के लिए एम टी टीमों को ओमान, म्यांमार, केन्या, वियतनाम, मॉरिशस, बंग्लादेश के लिए प्रतिनियुक्त किया है और कुछ अन्य देशों से प्राप्त अनुरोध पर विचार किया जा रहा है। इस प्रयास से न केवल हमारी अपनी प्रशिक्षण संरचना पर पड़ने वाला बोझ कम हो पाएगा बल्कि पूरा आई ओ आर अपने प्रशिक्षण की छाप छोड़ने में कारगर सिद्ध होगा।

अर्द्ध सैनिक बल एवं एन सी सी का प्रशिक्षण

10.28 भारतीय नौसेना केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सी आई एस एफ) कार्मिकों की नौसैनिक अभिविन्यास प्रशिक्षण में बहुत ही सक्रियता से शामिल रही है। प्रत्येक वर्ष, 60 के बैच में लगभग 240 सी आई एस एफ कार्मिकों को आई एन एस चिल्का में पत्तनों व तट के निकट संस्थापनों की सुरक्षा के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त, भारतीय नौसेना द्वारा गुजरात में सीमा सुरक्षा बल (बी एस एफ) कार्मिकों के लिए समुद्री अभिविन्यास कैप्स्यूल तथा समुद्री टास्कफोर्स (एम टी एफ) के 60 कार्मिकों के लिए 35 सप्ताह का विस्तृत प्रशिक्षण कैप्स्यूल का आयोजन भी किया जाता है।

10.29 नौसेना एन सी सी के लिए प्रशिक्षण एक प्राथमिकता रही है और प्रत्येक वर्ष नियमित समुद्री संलग्नता तथा प्रशिक्षण शिविर लगाए जाते हैं ताकि एन सी सी कैडेटों को समुद्र में जीवन संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी मिल सके।प्रत्येक प्रशिक्षण शिविर की अवधि 12 दिनों की होती है जिसमें एक दिन युद्धपोतों पर नौचालन किया जाता है। इन शिविरों में लगभग 240 से 360 एन सी सी कैडेट भाग लेते हैं। इसके अतिरिक्त एन सी सी कैडेटों के व्यवसायिक प्रशिक्षण के अंतिम चरण में प्रत्येक वर्ष एक 'नौसैनिक' शिविर का आयोजन किया जाता है जिसमें लगभग 590 कैडेट भाग लेते हैं।

भारतीय वायुसेना (आई ए एफ)

अपफसरों की भर्ती

10.30 **वायुसेना सामान्य प्रवेश परीक्षा (ए एफ सी ए टी):** यह परीक्षा भारतीय वायुसेना द्वारा सभी शाखाओं के लिए अधिकारियों के चयन हेतु वर्ष में दो बार आयोजित की जाती है। 28 अगस्त, 2016 को आयोजित

की गई परीक्षा में 1,91,976 उम्मीदवारों ने आवेदन किया था जिसमें से 95,271 उम्मीदवार शामिल हुए थे। ए एफ सी ए टी के अब तक इतिहास में उम्मीदवारों की ये दोनों संख्याएं सबसे ज्यादा हैं।

10.31 **ए एफ सी ए टी के लिए पात्रता मानक:** अगस्त, 2016 से भा वा से में चयन हेतु यांत्रिकी तथा शैक्षिणिक शाखाओं के लिए शैक्षिक अर्हता के पात्रता मानक में कुछेक बदलाव किए गए हैं।

10.32 **कंप्यूटरीकृत पायलट चयन प्रणाली (सी पी एस एस) लागू करना:** सशस्त्र सेनाओं में उड़ान के लिए उम्मीदवारों की अभिक्षमता परीक्षण हेतु पिछले कुछ दशकों से पायलट एपटीटयूड और बैटरी टेस्ट (पी ए बी टी) आयोजित की जा रही है। अक्तूबर, 2016 से पी ए बी टी को सी पी एस एस से प्रतिस्थापित कर दिया गया है जोकि एक पूर्णत: कंप्यूटर आधारित मूल्यांकन प्रणाली है। सी पी एस एस रक्षा मनोववैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर) तथा वैमानिकी विकास स्थापना द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया गया है तथा इसे गहन परीक्षण एवं मूल्यांकन के बाद लागू किया गया है।

वायुसैनिकों की भर्ती

10.33 वर्तमान में, 14 वायुसैनिक चयन केंद्र भौगौलिक स्तर पर फैले हुए हैं तथा वे उम्मीदवार, जो वायुसैनिक के रूप में भा. वा. से. में शामिल होना चाहते हैं, को उचित पहुंच उपलब्ध कराते हैं। भारतीय वायुसेना के वायुसैनिक संवर्ग में अनुसूचित चयन परीक्षाओं के माध्यम से अखिल भारतीय मेरिट आधार पर भर्ती की जाती है जो सामान्यत: वर्ष में एक बार आयोजित होती है। जाति, पंथ, धर्म, क्षेत्र या समुदाय के बिना किसी भेदभाव के देश के सभी पात्र नागरिक इस परीक्षा में बैठ सकते हैं। अनुसूचित परीक्षा के अतिरिक्त दूरदराज स्थित क्षेत्रों/कम आवेदन वाले क्षेत्रों/सीमावर्ती क्षेत्रों/विद्रोहग्रस्त एवं पहाड़ी तथा देश के द्विपीय क्षेत्रों के युवांओं को राष्ट्र की मुख्य धारा में शामिल करने के लिए वायुसैनिक के रूप में भारतीय वायुसेना में नियुक्ति का अवसर प्रदान करने के लिए भर्ती रैलियां आयोजित की जाती हैं।सफल उम्मीदवारों की अखिल भारतीय चयन सूची (ए आई एस एल) वर्ष में दो बार अर्थात् प्रति वर्ष 30 अप्रैल और 31 अक्तूबर को प्रकाशित की जाती है।प्रतिकूल व्यवहार वाले मामलों का निपटान करने के लिए हाल ही में अडैप्टेबिलिटी टेस्ट (ए टी) की शुरुआत की गई है।अप्रैल/मई 2016 में अनुसूचित परीक्षा के लिए कुल 3,43,099 उम्मीदवारों ने अपने आवेदन का ऑनलाइन पंजीकरण कराया है। आगे, फरवरी/मार्च 2017 में अनुसूचित परीक्षा के लिए ऑनलाइन पंजीकरण 15 सितंबर 2016 से 29 सितंबर 2016 तक खुला हुआ था।

प्रशिक्षण

10.34 **वायुसेना अकादमी (ए एफ ए), डूंडीगल:** वायुसेना अकादमी की आधारशिला 11 अक्तूबर, 1967 को भारत के राष्ट्रपति डॉ जाकिर हुसैन द्वारा रखी गई थी। वायुसेना फ्लाइंग कॉलेज को जोधपुर से हैदराबाद स्थानांतरित किया गया तथा 16 जनवरी, 1971 को इसका औपचारिक रूप से उद्घाटन किया गया। वायुसेना अकादमी पायलटों और ग्राउंड ड्यूटी अधिकारियों के प्रशिक्षण का कार्य करती है। 1971 से अकादमी भा वा से और भारतीय सेना, नौसेना तथा भारतीय तटरक्षक की बढ़ती प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करती रही है। बड़ी संख्या में विदेशी मित्र देशों के अधिकारियों और कैडटों को भी अकादमी में प्रशिक्षण दिया जाता है।

10.35 **ई-प्रशिक्षण:** भारत सरकार के 'डिजिटल' भारत पहल का अनुसरण करते हुए, भारतीय वायुसेना प्रारंभिक वायु युद्धाओं के लिए वर्तमान प्रशिक्षण तरीकों में अभूतपूर्व परिवर्तन लाने के लिए अग्रणी रही है। इसके लिए 400 प्रारंभिक प्रशिक्षुओं के लिए वायुसेना स्टेशन जलहाली, बेंगलुरू में स्थित इलैक्ट्रिकल एवं इंस्ट्रूमेनटेशन प्रशिक्षण संस्थान (ई एंड आई टी आई) में एक ई-प्रशिक्षण परियोजना शुरू की जा रही है। इस पायलट परियोजना की सफलता के आधार पर इसी मॉडल को भारतीय वायुसेना के अन्य सभी प्रशिक्षण संस्थानों में भी लागू किया जाएगा।

10.36 **भारतीय वायुसेना में राष्ट्रीय कौशल अर्हता रूपरेखा (एन एस क्यू एफ) प्रमाणित उम्मीदवारों का प्रवेश:** एन एस डी सी के साथ भागीदारी में भा वा से एन एस क्यू एफ प्रमाणित उम्मीदवारों को

भारतीय वायुसेना की आवश्यक चयन प्रक्रियाओं से गुजरने के बाद वायुसैनिक के रूप में निर्धारित कार्य भूमिकों (ट्रेडों) के लिए नियमित सेवा में प्रवेश करने की योजना बना रही है। प्रारंभिक चरण में, ऑटो फिट तथा ऑटो टेक ट्रेंडों को पायलट परियोजना के रूप में चिन्हित किया गया है।

10.37 **विदेशी प्रशिक्षण:** भा वा से विदेश मंत्रालय के भारतीय तकनीकी और आर्थिक समन्वय (आई टी ई सी) योजना के अंतर्गत विदेशी मित्र देशों (एफ एफ सी) के प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण प्रदान करती है। भा वा से के अधिकारियों को भी विभिन्न एफ एफ सी में पाठ्यक्रमों में शामिल होने के लिए नामित किया जा रहा है। भा वा से यू एस ए, बांग्लादेश, यू के, जापान, आस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, थाइलैंड, मलेशिया, स्पेन और विभिन्न अन्य देशों द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण प्राप्त करती है।

भारतीय तटरक्षक (आई सी जी)

10.38 **अफसरों की भर्ती:** तटरक्षक संगठन में अफसरों की भर्ती वर्ष में दो बार की जाती है। तटरक्षक में सहायक कमांडेंटों की रिक्तियों का विज्ञापन रोजगार समाचार तथा प्रमुख राष्ट्रीय समाचार पत्रों में दिसंबर/जनवरी एवं जून/जुलाई के महीने में प्रकाशित किया जाता है। भर्ती के लिए आयु सीमा में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए पांच वर्ष तथा अन्य पिछड़े वर्ग के लिए 3 वर्ष की छूट दी जाती है। तटरक्षक चयन बोर्ड अफसरों को निम्नलिखित शाखाओं में भर्ती किया जाता है :-

(क) **सामान्य ड्यूटी:** 10+2+3 शिक्षा पद्धति के अंतर्गत बारहवीं कक्षा के स्तर तक गणित एवं भौतिकी पढ़े हुए 21 से25वर्ष की आयु वाले सभी पुरुष/महिला स्नातक अभ्यर्थी, सामान्य ड्यूटी शाखा में अफसर के लिए आवेदन करने के पात्र हैं।

(ख) **सामान्य ड्यूटी (पायलट/नौचालन):** स्नातक के दौरान गणित एवं भौतिकी विषयों में बैचलर डिग्री रखने वाले 21-25 वर्ष की आयु के पुरुष/महिला अभ्यर्थी, सामान्य ड्यूटी (पायलट/नौचालन) शाखा में अफसर के लिए आवेदन करने के पात्र हैं।

(ग) **सामान्य ड्यूटी (वाणिज्यिक पायलट लाइसेंस अल्प सेवा प्रविष्टि):** 10+2+3 शिक्षा पद्धति के अंतर्गत बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण महिला/पुरुष जो आवेदन प्रस्तुत करने की तारीख को नागरिक उड्डयन महानिदेशक द्वारा अनुमोदित वाणिज्यिक पायलट लाइसेंस (सी पी एल) रखते हैं और जिनकी आयु 19-25 वर्ष के बीच है, वे सी पी एल अल्पकालिक सेवा प्रविष्टि के तहत अफसर के लिए आवेदन करने के पात्र हैं।

(घ) **महिलाओं के लिए सामान्य ड्यूटी (अल्पकालिक सेवा नियुक्ति योजना):** शिक्षा की 10+2+3 शिक्षा पद्धति में 12वीं कक्षा तक गणित और भौतिकी सहित स्नातक उपाधि वाली महिला उम्मीदवार, जो 21-25 आयु वर्ग के बीच हों, सामान्य ड्यूटी शाखा में अफसर के लिए आवेदन करने की पात्र हैं।

(च) **तकनीकी शाखा:** 21-25 आयु वर्ग के इंजीनियरिंग डिग्रीधारी (नौसेना वास्तुशिल्प/यांत्रिकी/ इलेक्ट्रिकल/ ऑटोमोटिव/ मैक्नोट्रेनिक्स/ औद्योगिक व उत्पादन/ धातु-विज्ञान/ डिजाइन/ वैमानिक/ वायु आकाश/विद्युत/ इलैक्ट्रोनिक/ दूरसंचार/ संगीत-शास्त्र/ संगीत-शास्त्र और नियंत्रण/ इलैक्ट्रोनिक संचार/ विद्युत इंजिनियरिंग/ विद्युत इलैक्ट्रोनिक्स) अथवा समकक्ष योग्यता वाले पुरूष तकनीकी शाखा में अफसर के लिए आवेदन करने के पात्र हैं।

(छ) **विधि शाखा:** 21-30 आयु वर्ग के विधि डिग्रीधारी पुरूष/महिला विधि शाखा में अफसर के लिए आवेदन करने के पात्र हैं। हालांकि तटरक्षक कार्मिकों अथवा उनके समकक्ष पद पर कार्यरत सेना अथवा नौसेना अथवा वायुसेना के कार्मिकों तथा अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के लिए पांच वर्ष तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के आवेदकों के लिए तीन वर्ष आयु छूट का प्रावधान है।

10.39 **अधिकारी के रूप में अधीनस्थ अधिकारियों की भर्ती:** चयन प्रक्रिया के अनुरूप 48 वर्ष की आयु

तक के असाधारण अधीनस्थ अधिकारियों का चयन जनरल ड्यूटी तथा तकनीकी शाखा में असिस्टेंट कमांडेट के पद पर हुआ है।

10.40 **अफसर रैंक से नीचे के कार्मिकों (पी बी ओ आर) की भर्ती:** पी बी ओ आर की तटरक्षक में भर्ती वर्ष में दो बार की जाती हैं। दिसंबर/जनवरी एवं जून/जुलाई माह में तटरक्षक में पी बी ओ आर की रिक्तियों का विज्ञापन रोजगार समाचार और प्रमुख समाचार-पत्रों में प्रकाशित किया जाता है। पी बी ओ आर निम्नलिखित शाखाओं में भर्ती किए जाते हैं:-

(क) **यांत्रिक:** मैट्रिक पास करने के बाद यांत्रिकी/ इलेक्ट्रिकल/ इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में तीन वर्षीय डिप्लोमाधारी 18-22 वर्ष की आयु के पुरूष उम्मीदवार यांत्रिक के लिए आवेदन करने के पात्र हैं।

(ख) **नाविक (सामान्य ड्यूटी):** गणित एवं भौतिकी विषयों सहित इंटरमीडिएट / 10+2 पास 18-22 वर्ष की आयु के पुरुष उम्मीदवार नाविक (सामान्य ड्यूटी) के लिए आवेदन करने के पात्र हैं।

(ग) **नाविक (घरेलू शाखा):** 18-22 वर्ष की आयु के मैट्रिक पास पुरुष उम्मीदवार नाविक (घरेलू शाखा) के लिए आवेदन करने के पात्र हैं।

(घ) भारत सरकार के निदेशों के अनुसार, सभी ग्रुप 'बी' तथा 'सी' पदों के लिए साक्षात्कारों को समाप्त कर दिया गया है। इन पदों की उपयुक्तता के लिए केवल कौशल परीक्षा आयोजित की जा रही हैं।

अन्य संगठन

सैनिक स्कूल

10.41 सैनिक स्कूल केंद्र एवं राज्य सरकारों के संयुक्त उद्यम के रूप में स्थापित किए गए थे। ये सैनिक स्कूल सोसायटी के समग्र नियंत्रण में चलते हैं। इस समय देश के विभिन्न भागों में कुल 25 सैनिक स्कूल हैं। अनेक राज्यों से नए सैनिक स्कूल खोलने की मांग बढ़ रही है। आंध्र प्रदेश, हरियाणा, बिहार तथा कर्नाटक राज्य में दो सैनिक स्कूल हैं। उत्तरप्रदेश के मैनपुरी, अमेठी तथा झांसी में तीन नए सैनिक स्कूल, राजस्थान के झुंझनु तथा अलवर में दो नए सैनिक स्कूल तथा उत्तराखंड (रुद्रप्रयाग) तथा मिजोरम (चिंगचिप) में एक-एक सैनिक स्कूल स्थापित करने के उद्देश्य से समझौता ज्ञापन (एम ओ ए) पर हस्ताक्षर किया गया है। महाराष्ट्र (चंद्रपुर) तथा ओड़िशा (संबलपुर) में दूसरे सैनिक स्कूल के लिए भी समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया है। मिजोरम में 01 अप्रैल 2017 से सैनिक स्कूल का आरंभ किए जाने के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं।

10.42 सैनिक स्कूलों का उद्देश्य बेहतर पब्लिक स्कूल शिक्षा को आम आदमी तक पहुंचाना, बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास और सशस्त्र सेनाओं के अफसर संवर्ग में मौजूद क्षेत्रीय असंतुलन को समाप्त करना है। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रवेश के लिए शैक्षिक, शारीरिक एवं मानसिक रूप से तैयार किए जाने के प्रमुख उद्देश्य के अनुरूप इन स्कूलों से राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में शामिल होने वाले कैडेटों की संख्या में वृद्धि का रुझान दिखाई दिया है। 136वें एन डी कोर्स में जिसकी शुरूआत जुलाई 2016 में हुई, सभी सैन्य स्कूलों के कुल 102 कैडेटों ने राष्ट्रीय रक्षा अकादमी और नौसेना अकादमी में प्रवेश लिया।

10.43 सैनिक स्कूल लड़कों को छठी एवं नौवीं कक्षाओं में प्रवेश देते हैं। प्रवेश वर्ष की 01 जुलाई को कक्षा छठी के लिए उनकी उम्र 10-11 वर्ष एवं कक्षा नौवीं के लिए 13-14 वर्ष होनी चाहिए। प्रवेश प्रत्येक वर्ष जनवरी मास में आयोजित अखिल भारतीय स्तर की प्रवेश परीक्षा में मेरिट के आधार पर दिया जाता है।

10.44 सैनिक स्कूल सोसाइटी ने उत्कृष्ट शैक्षिक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अनेक उपाय किए हैं जिनके परिणामस्वरूप बोर्ड और एन डी ए के परिणामों में उच्चतर वृद्धि हुई है। राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय ने सैनिक स्कूलों के कार्यान्वयन पर विस्तृत अध्ययन किया है ताकि सैनिक स्कूलों के निष्पादन में और वृद्धि की जा सके। देश के उत्तर पूर्व में स्थित छोटे राज्यों में भी सैनिक स्कूल खोलने के प्रयास किए जा रहे हैं।

राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल (आर एम एस)

10.45 देश में पांच मिलिट्री स्कूल कर्नाटक में बेलगाम व बंगलौर, हिमाचल प्रदेश में चौल एवं राजस्थान में अजमेर और धौलपुर में स्थित है। धौलपुर में स्थापित राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल इनमें से नवीनतम है जिसकी स्थापना 16 जुलाई 1962 को हुई थी। ये स्कूल सी बी एस ई से संबद्ध है। ये स्कूल लड़कों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके रक्षा सेनाओं में भर्ती होने के लिए तैयार करते हैं।

10.46 राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल एक साझी प्रवेश परीक्षा के माध्यम से लड़कों को प्रवेश देते हैं। उम्मीदवारों की चार विषयों अर्थात अंग्रेजी, गणित, बुद्धिमता एवं सामान्य ज्ञान की परीक्षा ली जाती है। आर एम एस में 67% सीटें जूनियर कमीशन प्राप्त अफसरों/अन्य रैंक के बच्चों के लिए एवं 20% सीटें कमीशनप्राप्त अफसरों तथा शेष 13% सिविलियनों के बच्चों के लिए आरक्षित होती हैं।

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन डी ए)

10.47 राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन डी ए) तीनों सेवाओं की एक प्रमुख संस्था है जहां सभी तीन सेवाओं के कैडेटों को उनसे संबंधित कमीशन-पूर्व प्रशिक्षण अकादमियों में प्रवेश से पूर्व प्रशिक्षण दिया जाता है। भारतीय सशस्त्र सेनाओं में अधिकारियों की कमी तथा इस कमी को दूर करने के लिए परिणामी तत्काल आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए एन डी ए में एक अतिरिक्त स्क्वाड्रन अर्थात् 16वें स्क्वाड्रन की स्थापना को मंजूरी मिलने के साथ ही एन डी ए की प्रवेश क्षमता को हाल ही में 1800 कैडेट से बढ़ाकर 1920 कैडेट कर दिया गया है। 16वीं स्क्वाड्रन के लिए भवन का निर्माण कार्य 2015 में शुरू किया गया था और उम्मीद है कि यह मई, 2017 में पूरा हो जाएगा। इसके अतिरिक्त, कैडटों की भर्ती क्षमता को 2400 कैडेट तक बढ़ाने के लिए एन डी ए में एक अतिरिक्त बटालियन (5वीं बटालियन) 4 स्क्वाड्रन के साथ खड़ा करने का कार्य प्रगति पर है। कल के सैन्य नेतृत्व को तकनीकी प्रवेशों से सुसज्जित करने के लिए ताकि भावी तकनीकी प्रवेशों का सामना किया जा सके, एन डी ए ने नौसेना और वायुसेना कैडटों के लिए बी. टेक पाठ्यक्रम शुरू किया है। सेना कैडटों के लिए बी. टेक पाठ्यक्रम लागू करने की योजना अपने चरण में है।

राष्ट्रीय इंडियन मिलिट्री कॉलेज (आर आई एम सी)

10.48 राष्ट्रीय इंडियन मिलिट्री कॉलेज (आर आई एम सी) की स्थापना चयनित लडकों को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन डी ए) एवं नौसेना अकादमी (आई एन ए) में प्रवेश के लिए तैयार करने के उद्देश्य से 1922 में की गई थी। वर्ष में दो बार (जनवरी एवं जुलाई) बिना आरक्षण अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षा के आधार पर प्रत्येक सत्र में 25 कैडेटों को प्रवेश दिया जाता है।

10.49 आर आई एम सी के लिए लड़को का चयन राज्य सरकारों के माध्यम से आयोजित एक लिखित-सह-मौखिक परीक्षा के द्वारा किया जाता है। संबंधित राज्यों के लिए सीटें जनसंख्या के आधार पर आरक्षित की जाती हैं। कॉलेज, लड़कों को कक्षा VIII में प्रवेश देता है।

भारतीय सैन्य अकादमी (आई एम ए), देहरादून

10.50 वर्ष 1932 में स्थापित भारतीय सैन्य अकादमी, (देहरादून) का उद्देश्य सेना में अफसरों के रूप में शामिल होने वाले व्यक्तियों के बौद्धिक, नैतिक एवं शारीरिक गुणों का पूर्णतः विकास करना है। भारतीय सैन्य अकादमी में प्रविष्टि के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं:

(क) एन डी ए से स्नातक होने पर।

(ख) सेना कैडेट कॉलेज से, जो आई एम ए का ही एक विंग है, स्नातक होने पर।

(ग) सीधी भर्ती स्नातक कैडेट, जो संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा उत्तीर्ण करके सैन्य चयन बोर्ड द्वारा चुने जाते हैं।

(घ) तकनीकी स्नातक पाठ्यक्रम (टी जी सी) के लिए

(च) इंजीनियरिंग कॉलेजों के अंतिम/अंतिम से पूर्व वर्ष

के छात्रों के लिए विश्वविद्यालय प्रविष्टि योजना (यू ई एस) के अंतर्गत

(छ) 10+2 तकनीकी प्रविष्टि योजना (टी ई एस) के माध्यम से।

10.51 आई एम ए मित्र देशों के जैंटलमैन कैडेटों को भी प्रशिक्षण प्रदान करता है।

अफसर प्रशिक्षण अकादमी (ओ टी ए), चेन्नई

10.52 वर्ष 1963 में स्थापित अफसर प्रशिक्षण स्कूल (ओ टी एस) के 25 वर्ष पूरे होने पर 01 जनवरी 1988 को इसे अफसर प्रशिक्षण अकादमी (ओ टी ए) नाम दिया गया। वर्ष 1965 से पहले इसका मुख्य कार्य इमरजेंसी कमीशन प्रदान करने के लिए जैंटलमैन कैडेटों को प्रशिक्षित करना था। 1965 के बाद अकादमी ने अल्प सेवा कमीशन के लिए कैडेटों को प्रशिक्षित करना आरंभ किया है।

10.53 21 सितम्बर 1992 से सेना में महिला अफसरों के प्रवेश के पश्चात ओ टी ए से हर वर्ष लगभग 100 महिला अफसर सेना सर्विस कोर, सेना शिक्षा कोर, जज एडवोकेट जनरल विभाग, इंजीनियर्स कोर, सिग्नल तथा इलैक्ट्रिकल एवं मैकेनिकल कोर में कमीशन प्राप्त करती हैं।

10.54 ओ टी ए निम्नलिखित के लिए कमीशन पूर्व प्रशिक्षण प्रदान करती है:

(क) स्नातकों के लिए अल्प सेवा कमीशन (गैर तकनीकी)

(ख) स्नातकों के लिए अल्प सेवा कमीशन (तकनीकी)

(ग) स्नातक/स्नातकोत्तर महिला कैडेटों के लिए अल्प सेवा कमीशन (महिला)

अफसर प्रशिक्षण अकादमी (ओ टी ए), गया

10.55 3 दिसम्बर 2009 को सुरक्षा संबंधी मंत्रिमंडल समिति (सी सी एस) ने गया, बिहार में दूसरी अफसर प्रशिक्षण अकादमी (ओ टी ए) स्थापित किए जाने के प्रस्ताव को अनुमोदित किया। 18 जुलाई 2011से इस अकादमी में प्रशिक्षण प्रारंभ हो गया है। ओ टी ए, गया में वर्तमान प्राधिकृत वार्षिक भर्ती 380 जेंटलमैन कैडेटों की है जोएस सी ओ (विशेष कमिशंड अधिकारी) और तकनीकी प्रवेश योजना 10+2 है। क्रमिक रूप से इसकी क्षमता बढ़ाकर 750 जेंटलमैन कैडेटों की कर दी जाएगी।

सेना युद्ध कॉलेज, महू

10.56 15 जनवरी 2003 को सेना युद्ध कॉलेज के नाम से पुर्ननामित किया गया, पूर्ववर्ती समाघात कॉलेज इंफेन्ट्री स्कूल में से सृजित किया गया था और 01 अप्रैल 1971 को इसे स्वतंत्र संस्थान के रूप में स्थापित किया गया था। एक अग्रणी संस्थान के रूप में अफसरों को सामरिक प्रशिक्षण प्रदान करने के साथ-साथ सेना युद्ध कॉलेज सामरिकी एवं संभारिकी के क्षेत्रों में नई संकल्पनाओं एवं सिद्धांतों के मूल्यांकन का महत्वपूर्ण कार्य करता है।

जूनियर लीडर्स विंग (जे एल डब्ल्यू), बेलगांव

10.57 बेलगांव में जूनियर लीडर्स विंग सब यूनिट लेवल टेक्टिकल और विशेष मिशन तकनीकों में जूनियर अफसरों, जे सी ओ एवं एन सी ओ को प्रशिक्षण देता है ताकि वे भीषण तनाव और दबाव में विभिन्न क्षेत्रों में सौंपे गए संक्रियात्मक मिशनों तथा युद्ध एवं शांतिकाल में अपनी उप-यूनिटों की कमान और प्रशासन प्रभावी रूप से संभाल सकें। यह सेना, अर्ध सैनिक बलों, केन्द्रीय पुलिस संगठनों और विदेशी मित्र देशों के अफसरों और एन सी ओ को कमांडो प्रकार की संक्रियाओं में प्रशिक्षण देती है ताकि उन्हें सभी प्रकार के क्षेत्रों और संक्रियात्मक परिवेश में या तो विशेष मिशन समूहों का हिस्सा बनाया जा सके अथवा स्वतंत्र मिशनों का नेता बनाया जा सके।

जूनियर लीडर्स अकादमी (जे एल ए), बरेली

10.58 प्रशिक्षण के लिए और अधिक सुविधाओं की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जे एल ए, रामगढ़ और जे एल ए, बरेली का समामेलन कर दिया गया है।

यह संस्था प्रतिवर्ष 4212 अभ्यर्थियों को प्रशिक्षण प्रदान कर रही है।

उच्च तुंगता युद्धपद्धति स्कूल (एच ए डब्ल्यू एस), गुलमर्ग

10.59 इस विद्यालय का उद्देश्य उच्च तुंगता (एच ए) की पर्वतीय युद्ध पद्धति से जुड़े सभी पहलुओं में चुने गए कार्मिकों को प्रशिक्षित करना तथा ऐसी भौगोलिक परिस्थितियों में युद्ध तकनीक विकसित करना है। एच ए डब्ल्यू एस अफसरों, जे सी ओ तथा एन सी ओ के लिए पाठ्यक्रमों की दो श्रृंखलाएं-पर्वतीय युद्धपद्धति (एम डब्ल्यू) तथा शीतकालीन युद्धपद्धति (डब्ल्यू डब्ल्यू), क्रमशः सोनमर्ग तथा गुलमर्ग में चलाता है। प्रशिक्षण की अवधि सामान्यतः जनवरी से अप्रैल तक (डब्ल्यू डब्ल्यू सीरीज) तथा मई से अक्तूबर तक (एम डब्ल्यू सीरीज) होती है। इस स्कूल से प्रशिक्षित कार्मिकों ने माउंट एवरेस्ट, माउंट कंचनजंगा तथा सं रा अमरीका की माउंट मैकिनले जैसी विश्व की कुछ प्रमुख चोटियों पर चढ़ने में सफलता पाई है।

प्रतिविद्रोहिता तथा जंगल युद्धपद्धति स्कूल (सी आई जे डब्ल्यू), वीरांगटे

10.60 सी आई जे डब्ल्यू अधिकारियों तथा जे सी ओ/एन सी ओ के लिए प्रतिविद्रोहिता तकनीकों तथा असमिया, बोडो, नागामीज, मणिपुरी/तंगखुल भाषाओं के पाठ्यक्रम आयोजित करता है तथा विद्रोहपूर्ण क्षेत्रों में भेजने से पहले सभी यूनिटों के लिए तैनाती पूर्व प्रशिक्षण (पी आई टी) भी आयोजित करता है।

प्रतिविद्रोहिता तैनाती-पूर्व प्रशिक्षण युद्ध स्कूल

10.61 सी आई जे डब्ल्यू स्कूल की सीमित क्षमता तथा विशिष्ट संक्रियात्मक परिस्थितियों व यूनिटों के संचलन में आने वाली प्रशासनिक समस्याओं के कारण यह आवश्यक समझा गया कि यूनिटों को उनके संक्रिया क्षेत्रों के निकट ही प्रशिक्षण दिया जाए। सेना के संसाधनों में से ही उत्तरी कमान की ओर जाने वाली यूनिटों के लिए खेरू, सरोल एवं भालरा में तथा असम तथा मेघालय की ओर संचलन करने वाली यूनिटों के लिए ठाकुरबाड़ी में और कोर युद्ध स्कूल स्थापित किए गए हैं। प्रतिविद्रोहिता प्रशिक्षण के साथ-साथ ये स्कूल विशेषकर उत्तरी कमान में यूनिटों को नियंत्रण रेखा तथा उच्च तुंगता के संबंध में उनकी भूमिका के लिए प्रशिक्षण दे रहे हैं।

इन्फैन्ट्री स्कूल, महू

10.62 इन्फैन्ट्री स्कूल भारतीय सेना का सबसे बड़ा और सबसे पुराना सैन्य प्रशिक्षण संस्थान है। इन्फैन्ट्री स्कूल में यंग आफिसर्स पाठ्यक्रम, प्लैटून वेपन पाठ्यक्रम, मोर्टार पाठ्यक्रम, एंटी टैंक एण्ड गाइडेड मिसाइल पाठ्यक्रम, मीडियम मशीन गन एवं आटोमैटिक ग्रेनेड लॉन्चर (जे/एन) पाठ्यक्रम, सेक्शन कमांडर्स पाठ्यक्रम, ऑटोमैटिक डेटा प्रोसेसिंग पाठ्यक्रम, स्नाइपर पाठ्यक्रम तथा सपोर्ट वेपन पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। यह संस्थान केवल इंफेंट्री के ही नहीं बल्कि अर्ध सैनिक बलों एवं सिविल पुलिस संगठनों के साथ-साथ अन्य सेनांगों एवं सेनाओं के अफसरों, जे सी ओ एवं अन्य रैंकों को भी प्रशिक्षण प्रदान करता है।

सामग्री प्रबंधन कॉलेज (सी एम एम), जबलपुर

10.63 यह कॉलेज अक्तूबर 1925 में किरकी में स्थापित भारतीय सेना आयुध कोर (आई ए ओ सी) अनुदेश स्कूल की परम्परा को आगे बढ़ा रहा है। बाद में फरवरी, 1939 में इस स्कूल को दोबारा आई ए ओ सी प्रशिक्षण केंद्र नाम दिया गया और इसे जबलपुर में इसके मौजूदा स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया। जनवरी 1950, में आई ए ओ सी स्कूल का नाम सेना आयुध कोर (ए ओ सी) स्कूल कर दिया गया। ए ओ सी स्कूल का नाम फिर से बदलकर सामग्री प्रबंधन कॉलेज (सी एम एम) रख दिया गया और 1987 में इसे जबलपुर विश्वविद्यालय (रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय) से संबद्ध कर दिया गया। 1990 में सी एम एम स्वायत्तशासी हो गया। यह कॉलेज विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में श्सरकारी कॉलेजश के रूप में भी पंजीकृत है। इसे अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (ए आई सी टी ई) का अनुमोदन भी प्राप्त है।

10.64 विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम के तहत गठित एक स्वायत्तशासी निकाय नेशनल असेसमेन्ट एंड एक्रिडिटेशन काउंसिल (एन ए ए सी) ने कॉलेज

को पांच सितारा (उच्चतम) मान्यता प्रदान की है। कॉलेज, भारतीय सेना में आयुध सपोर्ट प्रबंधन संबंधी कार्यों में लगे ए ओ सी के सभी रैंकों और सिविलियनों को आवश्यक संस्थागत प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह सभी सेनांगों तथा सेवाओं के चयनित अफसरों, जे सी ओ तथा अन्य रैंकों को भी यूनिट प्रशासन और सामग्री प्रबंधन संबंधी नियंत्रण का प्रशिक्षण प्रदान करता है।

तोपखाना स्कूल, देवलाली

10.65 तोपखाना स्कूल, देवलाली विज्ञान की विविध उपशाखाओं और तोपखाना युद्धपद्धति प्रणाली सिखाने वाला शैक्षणिक केन्द्र है जो हवाई प्रेक्षण चौकी ड्यूटी के लिए पायलटों को प्रशिक्षण देने के साथ-साथ अफसरों, जे सी ओ तथा एन सी ओ को तोपखाना हथियारों और प्रणाली का तकनीकी प्रशिक्षण भी प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त भारतीय तथा विदेशी तोपखाना उपस्कर सिद्धांतों की समीक्षा, अध्ययन और परीक्षण भी किया जाता है।

10.66 स्कूल ने भारतीय सेना के कई अफसरों, जे सी ओ तथा एन सी ओ के साथ-साथ मित्र देशों के कई अफसरों और कार्मिकों को भी वर्ष के दौरान प्रशिक्षण प्रदान किया है।

सेना हवाई रक्षा कॉलेज, गोपालपुर

10.67 सेना हवाई रक्षा कॉलेज (ए ए डी सी) पहले अक्टूबर 1989 तक तोपखाना स्कूल देवलाली की एक विंग के रूप में कार्य करता था, जब इसे तोपखाने की मुख्य शाखा से हवाई रक्षा तोपखाना के अलग होने से पूर्व गोपालपुर लाया गया। यह कॉलेज वायुरक्षा तोपखाना के कार्मिकों, अन्य सेनांगों और मित्र देशों के सशस्त्र बलों के कार्मिकों को वायु रक्षा संबंधी विषयों में प्रशिक्षण प्रदान करता है।

10.68 ए ए डी सी अनेक पाठ्यक्रम चलाता है। इनमें से कुछ हैं-लांग गनरी स्टाफ कोर्स (अफसर), युवा अफसर कोर्स, इलेक्ट्रॉनिक युद्धपद्धति कोर्स, वरिष्ठ कमान हवाई रक्षा कोर्स, लांग गनरी स्टाफ कोर्स, जूनियर कमीशंड अफसर/नॉन कमीशंड अफसर, तकनीकी अनुदेशक फायर नियंत्रण कोर्स, वायुयान पहचान कोर्स, यूनिट अनुदेशक और चालक दल आधारित प्रशिक्षण और ऑटोमेटेड डाटा प्रोसेसिंग कोर्स।

सेना सेवा कोर (ए एस सी) केन्द्र एवं कॉलेज, बंगलौर

10.69 बंगलौर में सेना सेवा कोर केन्द्र एवं कॉलेज की स्थापना के लिए 01 मई 1999 को सेना सेवा कोर केन्द्र (दक्षिण) और सेना यांत्रिक परिवहन स्कूल को बंगलौर में ए एस सी केन्द्र के साथ मिला दिया गया। यह विविध विषयों जैसे संभारिकी प्रबंधन, परिवहन प्रबंधन, केटरिंग, ऑटोमेटेड डाटा प्रोसेसिंग इत्यादि में अफसरों, जूनियर कमीशंड अफसरों, अन्य रैंकों और अन्य सेनांगों और सेवाओं, सेना सेवा कोर के रंगरूटों को मूलभूत और उन्नत प्रशिक्षण देने वाला एक प्रमुख प्रशिक्षण संस्थान है।

10.70 1992 से ए एस सी कॉलेज संभारिकी एवं संसाधन प्रबंधन में डिप्लोमा/डिग्री प्रदान करने के लिए रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली से संबद्ध किया गया है।

सेना शिक्षा कोर प्रशिक्षण कॉलेज एवं केन्द्र, पंचमढ़ी

10.71 ए ई सी प्रशिक्षण कॉलेज एवं केन्द्र, पंचमढ़ी सशस्त्र सेनाओं में शैक्षणिक प्रशिक्षण देनेवाला एक उत्कृष्ट रक्षा संस्थान है। यह बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल से संबद्ध एक स्वायत्तशासी कॉलेज भी है जिसे अपने कोर्सों और डिग्रियों की रूपरेखा तैयार करने, उनको संचालित करने, परीक्षा लेने और डिग्री प्रदान करने की शैक्षणिक और प्रशासनिक शक्तियां प्राप्त हैं।

10.72 मानचित्र शिल्प विभाग ए ई सी अफसरों और भारतीय सेना के सभी सेनांगों और सेवाओं के अफसर रैंक से नीचे के कार्मिकों (पी बी ओ आर), अर्ध सैनिक बलों और मित्र देशों के कार्मिकों के लिए 10 सप्ताह का मैप रीडिंग अनुदेशक कोर्स चलाता है।

10.73 12-सप्ताह लंबा यूनिट शिक्षा अनुदेशक (यू ई आई) पाठ्यक्रम भारतीय सेना के सभी सेनांगों और सेवाओं के अन्य रैंकों को अपनी यूनिटों में सक्षम शिक्षा अनुदेशक बनने के लिए प्रशिक्षित करता है।

10.74 विदेशी भाषा विंग (एफ एल डब्ल्यू) ,जो ए ई सी प्रशिक्षण कॉलेज व केन्द्र के तीन प्रभागों में से एक है, न केवल सशस्त्र सेनाओं में अपितु राष्ट्रीय शौक्षणिक परिवेश में भी विदेशी भाषा प्रशिक्षण का एक अग्रणी संस्थान है। इसकी दो डिजिटाइज्ड भाषा प्रयोगशालाएं हैं जो 20-20 छात्रों को प्रशिक्षण देती हैं।

मिलिट्री संगीत विंग, पंचमढ़ी

10.75 मिलिट्री संगीत विंग (एम एम डब्ल्यू) की स्थापना ए ई सी ट्रेनिंग कॉलेज एंड सेंटर, पंचमढ़ी के एक भाग के रूप में अक्टूबर 1950 में तत्कालीन कमांडर-इन-चीफ (बाद में फील्ड मार्शल) जनरल के एम करियप्पा, ओ बी ई के संरक्षण में की गई थी। इसके पास 200 से भी अधिक सैन्य संगीत रचनाओं का समृद्ध खजाना है। इसने भर्ती हुए बैंडमैनों, पाइपरों या ड्रमरों को प्रशिक्षण देने के लिए भिन्न-भिन्न श्रेणियों के पाठ्यक्रमों के माध्यम से, भारत में मिलिट्री संगीत का उच्च स्तर बनाए रखने में विशिष्टता हासिल की है।

रिमाउंट और पशुचिकित्सा कोर केन्द्र तथा स्कूल, मेरठ

10.76 मेरठ स्थित रिमाउंट और पशुचिकित्सा कोर (आर वी सी) केन्द्र तथा स्कूल का उद्देश्य सभी सेनांगों और सेवाओं के अफसरों और अफसरों से नीचे के रैंक के सभी कार्मिकों को पशु प्रबंधन तथा पशुचिकित्सा से जुड़े विभिन्न पहलुओं के विषय में प्रशिक्षण देना है। संस्थान में अफसरों के लिए ग्यारह कोर्स तथा पी बी ओ आर के लिए छह कोर्स चलाए जाते हैं। प्रशिक्षित किए गए कुल अभ्यार्थियों की संख्या 250 है।

सेना खेलकूद संस्थान (ए एस आई), पुणे

10.77 भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय खेलकूद प्रतिस्पर्धाओं में पदक विजेता तैयार करने के उद्देश्य से देश में विभिन्न स्थानों पर चुने हुए विषयों में सेना खेलकूद केन्द्रों के साथ-साथ पुणे में एक सेना खेलकूद संस्थान की स्थापना की गई है। आधुनिक आधारभूत सुविधाओं एवं उपस्करों के साथ-साथ भोजन, रहन-सहन, विदेशी दौरों एवं विदेशी प्रशिक्षकों के अधीन प्रशिक्षण के लिए पर्याप्त निधि की व्यवस्था की गई है।

शारीरिक प्रशिक्षण सेना स्कूल (ए एस पी टी), पुणे

10.78 शारीरिक प्रशिक्षण सेना स्कूल (ए एस पी टी) पहला ऐसा संस्थान है जो यूनिटों और सब यूनिटों में शारीरिक प्रशिक्षण देने के संबंध में सेना कार्मिकों को सुव्यवस्थित तथा व्यापक प्रशिक्षण दे रहा है। यह सेना में खेल-कूद का स्तर सुधारने और शारीरिक प्रशिक्षण में मनोरंजन को शामिल करके उसे पूर्ण बनाने की दृष्टि से खेल-कूद का बुनियादी प्रशिक्षण भी देता है। इन पाठ्यक्रमों में सैन्य और अर्धसैनिक बलों के और अफसर, जे सी ओ और अन्य रैंक तथा मित्र देशों के सेना कार्मिक भाग लेते हैं। ए एस पी टी ने राष्ट्रीय खेलकूद संस्थान के सहयोग से पी बी ओ आर के लिए बॉक्सिंग, वॉलीबॉल, बॉस्केटबाल, तैराकी और जीवनरक्षा, जूडो और योग पाठ्यक्रमों में छह सम्बद्ध खेलकूद पाठ्यक्रम आरंभ किए हैं।

समाघात सेना विमानन प्रशिक्षण स्कूल (सी ए ए टी एस) नासिक रोड

10.79 समाघात सेना विमानन प्रशिक्षण स्कूल (सी ए ए टी एस) की स्थापना मई, 2003 में नासिक रोड में की गई थी। इसका उद्देश्य विमान चालकों को विमानन कौशल तथा विभिन्न युद्ध संक्रियाओं में विमानन यूनिटों के रख-रखाव में प्रशिक्षित करना, विमानन अनुदेशकों को मानक प्रचालन प्रक्रियाओं (एस ओ पी) के विकास में प्रशिक्षित करना तथा जमीनी बलों के सहयोग से विमानन सामरिकी सिद्धांत के विकास में सेना प्रशिक्षण कमान की मदद करना है। स्कूल में चलाए जाने वाले पाठ्यक्रम हैं - प्री-बेसिक पायलट पाठ्यक्रम, बेसिक सेना विमानन पाठ्यक्रम, प्री-क्वालिफाइड उड़ान अनुदेशक पाठ्यक्रम, विमानन अनुदेशक हेलिकॉप्टर पाठ्यक्रम, हेलिकॉप्टर कंवर्शन ऑन-टाइप, उड़ान कमांडर्स पाठ्यक्रम तथा नव उपस्कर पाठ्यक्रम।

मिलिट्री इंजीनियरी कॉलेज (सी एम ई), पुणे

10.80 पुणे स्थित मिलिट्री इंजीनियरी कॉलेज (सी एम ई) एक प्रमुख तकनीकी संस्थान है जहां इंजीनियरी कोर, अन्य सेनांगों और सेवाओं, नौसेना, वायुसेना, अर्धसैनिक

बलों व पुलिस कार्मिकों और सिविलियनों को प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके अलावा मित्र देशों के कार्मिकों को भी प्रशिक्षण दिया जाता है। यह कॉलेज बी-टेक और एम-टेक डिग्रइयां देने के लिए जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। सी एम ई द्वारा चलाए जाने वाले स्नातक और स्नातकोत्तर कोर्सों को अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (ए आई सी टी ई) की मान्यता भी प्राप्त है।

सैन्य इलैक्ट्रॉनिक्स तथा मैकेनिकल इंजीनियरी कॉलेज (एम सी ई एम ई), सिकंदराबाद

10.81 एम सी ई एम ई का कार्य सिविलियनों सहित, ई एम ई के सभी रैंकों को इंजीनियरी, शस्त्रप्रणालियों तथा उपस्कर के विभिन्न विषयों में और खास तौर से उनके रख-रखाव, मरम्मत और जांच के संबंध में, तकनीकी शिक्षा देना तथा वरिष्ठ, मध्यम और पर्यवेक्षक स्तरों पर प्रबंध और सामरिक प्रशिक्षण देना है। एम सी ई एम ई में सभी रैंकों के 1760 कार्मिकों (सभी रैंक) को प्रशिक्षण दिया जा सकता है। यहां अफसरों के लिए 13 कोर्स और पी बी ओ आर के लिए 61 कोर्स चलाए जाते हैं।

10.82 कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षण (सी बी टी) पैकेज और डिजिटल चार्ट भी विकसित किए गए हैं जिनमें श्एम सी ई एम ईश में पढ़ाए जाने वाले उपस्कर के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रोनिक भाग की कार्यप्रणाली, मरम्मत, रखरखाव, सर्विसिंग पहलुओं और सही प्रयोग की विस्तृत तकनीकी जानकारी मौजूद है।

मिलिट्री पुलिस कोर केन्द्र और स्कूल, बंगलौर

10.83 स्कूल का उद्देश्य अफसरों और पी बी ओ आर को कानून, जांच-पड़ताल, यातायात नियंत्रण आदि से जुड़ी मिलिट्री और पुलिस डयूटियों के बारे में प्रशिक्षित करना है। वर्तमान में अफसरों के लिए चार और पी बी ओ आर के लिए चौदह कोर्स चलाए जा रहे हैं। प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्रों की कुल संख्या 910 है।

सेना विमानवाहित प्रशिक्षण स्कूल, आगरा

10.84 सेना विमानवाहित प्रशिक्षण स्कूल (एएटीएस) पहले सेना हवाई यातायात सहायता स्कूल (एएटीएस एस) कहलाता था। सभी विमानवाहित प्रशिक्षण को एक ही एजेन्सी के अंतर्गत लाने के उद्देश्य से सेना वायु परिवहन सहायता स्कूल का नाम बदलकर 15 जनवरी 1992 से सेना विमानवाहित प्रशिक्षण स्कूल कर दिया गया।

दूरसंचार इंजीनियरिंग मिलिट्री कॉलेज (एम सी टी ई), महू

10.85 एमसीटीई, मऊ सिग्नल अधिकारियों को समाधात संचार, इलेक्ट्रॉनिक युद्धपद्धति, संचार इंजीनियरी, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, रेजीमेंटल सिग्नल संचार एवं गूढ़ भाषा के संबंध में प्रशिक्षित करता है। पांच प्रशिक्षण संकायों एवं विंगों के अलावा, कॉलेज के पास एक प्रशासनिक विभाग है जो स्टाफ एवं विद्यार्थियों को प्रशासनिक एवं संभारिकी सहायता प्रदान करता है तथा एक अवधारणात्मक अध्ययन प्रकोष्ठ है जो संचार सिद्धांतों का प्रतिपादन तथा प्रशिक्षण सामग्री तैयार करने का काम कराता है। कॉलेज में एक आधुनिक और पुस्तकों से भरापूरा पुस्तकालय तथा एक खुद का प्रिंटिंग प्रेस भी है। प्रशिक्षणार्थियों को एक औपचारिक परिवेश में अध्ययन एवं प्रशिक्षण का मौका दिया जाता है ताकि वे वर्तमान एवं भावी कार्यों के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान एवं क्षमताओं से परिपूर्ण हो सकें।

सैन्य आसूचना प्रशिक्षण स्कूल और डिपो (एम आई एन टी एस डी), पुणे

10.86 सैन्य आसूचना प्रशिक्षण स्कूल और डिपो (एम आई एन टी एस डी) भारतीय सेना, वायुसेना और अधसैनिक बलों के सभी रैंकों को आसूचना प्राप्ति, जवाबी आसूचना और सुरक्षा पहलुओं पर प्रशिक्षण देने के लिए उत्तरदायी एक प्रमुख संस्था है। स्कूल मित्र देशों की

सेनाओं के कार्मिकों को भी प्रशिक्षण प्रदान करता है। राजस्व आसूचना विभाग के सिविलियन अफसरों को भी इस संस्था में प्रशिक्षण दिया जाता है। यह स्कूल एक बार में सभी सेनांगों के 90 अफसरों, 130 जूनियर कमीशन प्राप्त/गैर कमीशन प्राप्त अफसरों को प्रशिक्षण प्रदान कर सकता है। स्कूल प्रतिवर्ष लगभग 350 अफसरों और 1100 जूनियर कमीशंड अफसरों/गैर कमीशन अफसरों को प्रशिक्षण देता है।

इलैक्ट्रॉनिकी और यांत्रिक इंजीनियरी स्कूल (ई एम ई), बड़ोदरा

10.87 ई एम ई स्कूल अधिकारियों के लिए स्नातकोत्तर स्तर के पाठयक्रम तथा पी बी ओ आर के लिए डिप्लोमा एवं प्रमाण-पत्र स्तर के पाठयक्रम चलाता है। मित्र देशों के अनेक अफसर और पी बी ओ आर ई एम ई स्कूल में संचालित विभिन्न पाठयक्रमों में भाग ले रहे हैं।

सैन्य विधि संस्थान, कामठी

10.88 सैन्य विधि संस्थान की स्थापना शिमला में की गई थी। 1989 में संस्थान को कामठी स्थानांतरित कर दिया गया। स्कूल की चार्टर ऑफ डयूटीज सेना के सभी सेनांगों और सेवाओं के अफसरों को व्यापक विधिक शिक्षा प्रदान करना है। यह स्कूल सैन्य और संबद्ध विधि के क्षेत्र में व्यापक अनुसंधान, विकास और प्रचार का कार्य भी करता है।

कवचित कोर केन्द्र एवं स्कूल, अहमदनगर

10.89 1948 में प्रशिक्षण विंग, रिक्रूट प्रशिक्षण केन्द्र और कवचित कोर डिपो और रिकार्ड को अहमदनगर स्थानांतरित कर दिया गया, जहां पहले से ही लड़ाकू वाहन स्कूल कार्यरत था और इन सभी को मिलाकर कवचित कोर केन्द्र एवं स्कूल और कवचित कोर रिकार्ड बना दिया गया। इसमें छह विंग हैं - कवचित युद्धपद्धति स्कूल, तकनीकी प्रशिक्षण स्कूल, बेसिक ट्रेनिंग रेजिमेंट, ड्राईविंग एवं मेंटिनेंस रेजिमेंट, ऑटोमोटिव रेजिमेंट आयुध एवं इलैक्ट्रॉनिकी रेजिमेंट हैं जो इन विषयों में विशेषीकृत प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

विदेशी प्रशिक्षण

10.90 अप्रैल 1, 2016 से दिसंबर 31, 2016 की अवधि के दौरान, आई डी एस मुख्यालय, जो विदेशी मित्र देशों (एफ एफ सी) के विदेशी अधिकारियों को भारत आने और भारतीय अधिकारियों के विदश में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करने में सहायता प्रदान करता है, ने 59 अधिकारियों को 22 विदेशी मित्र देशों में तथा 56 देशों के 97 अधिकारियों को भारत के त्रि-सेवा संस्थानों डी एस एस सी, सी डी एम, एन डी ए और एम आई एल आई टी में भेजने का प्रबंध किया।

10.91 म्यंमार ने पहली बार दो कैडटों को एन डी ए में भेजा तथा आगे भी यह प्रक्रिया चलती रहेगी। एन डी ए में जून, 2017 पाठ्यक्रम में सउदी अरब को पांच रिक्तियां प्रदान की गई हैं और यह प्रक्रिया भी आगे चलती रहेगी।

11

भूतपूर्व सैनिकों का पुनर्वास एवं कल्याण

अध्याय 11

भूतपूर्व सैनिकों का पुनर्वास और कल्याण

11.1 पुनर्वास महानिदेशालय पूर्व सैनिकों के लिए सेवानिवृत्ति पूर्व एंव सेवानिवृत्ति के बाद के प्रशिक्षण पुन: रोजगार एंव स्वरोजगार इत्यादि के लिए विभिन्न प्रकार की नीतियां योजनाएं कार्यक्रम कार्यान्वित करता हैं। पूर्वसैनिक कल्याण विभाग देश मे पूर्वसैनिकों के पुनर्वास एवं कल्याण के लिए विभिन्न नीतियां और कार्यक्रम बनाता है। विभाग के दो प्रभाग–पुनर्वास और पेंशन है और इसके तीन संबद्ध कार्यालय हैं जिनके नाम केन्द्रीय सैनिक बोर्ड सचिवालय, पुनर्वास महानिदेशालय डी जी आर और केन्द्रीय संगठन, भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ योजना सी ओ,ई सी एच एस है। केन्द्रीय सैनिक बोर्ड पूर्व सैनिकों एंव अश्रितों के कल्याण एवं कल्याण निधियों के प्रवंधन के लिए भी उत्तरदायी होता है उपरोक्त कार्यो के कार्यान्वयन मे 32 राज्य सैनिक बोर्ड (आर एस बी) और 392 जिला सैनिक बोर्ड (जैड एस बी) केन्द्रीय सैनिक बोर्ड की सहायता करते है। यें सैनिक बोर्ड संबंधित राज्य सरकार / संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन कार्य के लिए सेवानिवृत्ति पूर्व एवं सेवानिवृत्ति के बाद के प्रशिक्षण, पुन: रोजगार एंव स्वरोजगार इत्यादि के लिए विभिन्न प्रकार की नितियां /योजनाएं/कार्यक्रम कार्यान्वित करता है। इस काम में पाँच कमानों मे स्थित पाँच पुनर्वास क्षेत्र निदेशालय (डी आर जेड) पुनर्वास महानिदेशालय की मदद करते है। केन्द्रीय संगठन, ई सी एच एस पूर्व सैनिकों और उनके आश्रितों के स्वास्थ एंव चिकित्सा संबंधी जरूरतों का ध्यान रखता है।

कल्याण

11.2 **कल्याण केन्द्रीय सैनिक बोर्ड सचिवालय:** केन्द्रीय सैनिक बोर्ड सचिवालय भारत सरकार का एक शीर्ष निकाय है जो युद्ध विधवाओं / अशक्त और सेवानिवृत्त सेना कार्मिकों एंव उसके अश्रितों के पुनर्वास एंव कल्याण के लिए उतरदायी है। पूर्व सैनिकों की कल्याण योजानाएं राज्यों की राजधानियों मे स्थित राज्य सैनिक बोर्ड (आर एस बी) और जिला स्तर पर स्थित जिला सैनिक बोर्ड (जैड एस बी) के माध्यम से कार्यान्वित की जाती हैं। इन राज्य सैनिक बोर्ड / जिला सैनिक स्थापनाओं का खर्च केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा विशेष दर्जा प्राप्त यथा अरूणाचल प्रदेश, असम, जम्मू एवं कश्मीर, मेघालय, मिजोरम, मणिपुर, नागालैण्ड, सिक्किम, त्रिपुरा, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तराखण्ड में 60:40 के अनुपात में और अन्य राज्यों / संघ राज्य क्षेत्रों में यह 60:40 के अनुपात में वहन किया जाता हैं आर एस बी / जेड एस बी की स्थापना / रखरखाव के लिए राज्यो / संध राज्य क्षेत्रों को उपलब्ध कराए गए केन्द्रीय सैनिक बोर्ड को आबंटित रक्षा सेवा आकलन (डी एस ई) बजट से की जाती है। 31 दिसम्बर 2016 तक केन्द्रीय भाग के रूप में 24.11 करोड़ रूपए संवितरित किए गए हैं।

11.3 पूर्वसैनिकों को अपने पेंशन संबंधी मामलों को निपटाने के लिए एवं अन्य मामलों जैसे सी एस डी कैंटीन, अस्पताल इत्यादि कार्यो के लिए राज्यों की राजधानी / जिला मुख्यालयों के उनके छोटे दौरों के दौरान उपयुक्त एंव सस्ती दर पर आवास मुहैया करवाने हेतु। केन्द्रीय सैनिक बोर्ड सचिवालय सैनिक विश्राम गृहों के निर्माण लागत का 50% हिस्से का भुगतान डी एस ई बजट से करता हैं सैनिक विश्राम गृहों का रखरखाव राज्य सारकारों / संघ राज्य – क्षेत्र प्रशासनों द्वारा अपने संसाधनों / फंड से किया जाना अपेक्षित है। केन्द्रीय सैनिक बोर्ड सचिवालय द्वारा सैनिक विश्राम गृहों का निर्माण करवाया गया है।

सशस्त्र सेना झंडा दिवस

11.4 सशस्त्र सेना कार्मिकों द्वारा देश के लिए दिए गए बलिदानों को याद करने के प्रयोजन से पूरे देश मे 7 दिसम्बर को सशस्त्र सेना झंडा दिवस मनाया जाता हैं।

इस दिवस पर प्रतीक झंडे पिन द्वारा लगाए जाते है तथा युद्व विधवाओं / अशक्तों, पूर्व सैनिकों एंव उनके आश्रितो के कल्याण एंव पुनर्वास के लिए आम जनता से सर्वोच्च अंशदान एकत्रित किया जाता है।

07 दिसंबर2016 को भारत के राष्ट्रपति को प्रतीक झंडा लगाते हुए एंव उनसे अनुदान प्राप्त करते केन्द्रीय सैनिक बोर्ड के अधिकारी

सशस्त्र सेना झंडा दिवस निधि

11.5 डी एस ई बजट के अतिरिक्त सशस्त्र सेना झंडा दिवस निधि (एफ एफ डी एफ) पूर्व सैनिकों और उनके आश्रितों और युद्व विघवाओं के कल्याण एंव पुनर्वास के लिए वित्त पोषण हेतु प्रमुख स्रोत हैं। सशस्त्र सेना झंडा दिवस निधि मूल कोष (एफ एफ डी एफ) से अर्जित ब्याज मे से 7.5% ब्याज को मूल निधि मे पुन: जोड़ दिया जाता है। तथा शेष राशि का इस्तेमाल पूर्व सैनिकों / आश्रितों के कल्याण एंव पुनर्वास से संबंघित विभिन्न योजनाओं के वित्त पोषण के लिए किया जाता है 31 दिसंबर 2016 तक 58.84 लाख रूपए एकत्रित किए गए। 31 दिसंबर 2016 को सशस्त्र सेना झंडा दिवस की मूल निघि कि राशि 288.23 करोड़ रूपए है। इस निधि का प्रबंघन रक्षा मंत्री की अध्यक्षता वाली प्रबंधन समिति एंव सचिव पूर्व सैनिक कल्याण विभाग, रक्षा मंत्रालय कि अध्यक्षता वाली कार्यकारिणी के सरंक्षण में केन्द्रीय सैनिक बोर्ड सचिवालय द्वारा किया जाता है।

रक्षामंत्री विवेकाधीन निधि (आर एम डी एफ) योजनाएं

11.6 रक्षामंत्री विवेकाधीन निधि (आरएमडीएफ) के अन्तर्गत पूर्वसैनिकों और उनके आश्रितों को उनकी अति आवश्यक व्यक्तिगत जरूरतों जैसे कि निर्धनता अनुदान, बच्चो कि शिक्षा एंव विवाह अनुदान, चिकित्सा अनुदान इत्यादि के लिए वित्तिय सहायता मुहैया करवाई जाती है। 31 दिसंबर 2016 तक रक्षा मंत्री विवेकाधीन निधि के अन्तर्गत 19.12 करोड़ रूपए की वित्तिय सहायता प्रदान की गई है।

प्रधानमंत्री छात्रवृत्ति योजना

11.7 पूर्वसैनिकों और पूर्व भारतीय तटरक्षकों के आश्रित बच्चो / विधवाओं को उच्च तकनीकी तथा व्यवसायिक शिक्षा मे सहयोग के लिए 2006 में यह योजना शुरू की थी। इस इस योजना के अन्तर्गत पूर्वसैनिकों के बच्चो / विधवाओं को प्रत्येक वर्ष 5500 छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं। इन छात्रवृत्तियां लडकों एवं लड़कियो मे समान रूप से बांटा जाता है। इस योजना का वित्त पोषण राष्ट्रीय रक्षा निधि से किया जाता है। लड़को के लिए छात्रवृत्ति राशि 2000/- रूपए प्रतिमाह तथा लड़कियो के लिए 2250/-रूपए प्रतिमाह हैं। और यह वार्षिक तौर पर देय है। 31 दिसम्बर 2016 तक 8103 लाभर्थियों को 20.82 करोड़ रूपए छात्रवृत्ति के तौर पर वितरित किए गए हैं।

अन्य कल्याणकारी योजनाएं

11.8 **गंभीर रोगों के लिए वित्तिय मदद:** गैर-पेंशन भोगी जवानों और अफसरों एवं उनके आश्रितों को प्रतिवर्ष कुल खर्च का क्रमश: 90% और 75% तक या अधिकतम 1.25 लाख रूपए [हदय रोग, जोड़ प्रतिस्थापन इत्यादि के लिए] तथा 0.75 लाख रूपए प्रतिवर्ष [कैंसर एंव डायलासिस के लिए] की वित्तिय सहायता मुहैया कराई जाती है। यह योजना नेपाल मे रह रहे भारतीय पूर्वसैनिकों के लिए भी लागू है जब तक कि नेपाल में ई सी एच एस कार्य करना शुरू नही कर देती / इस योजना के अन्तर्गत 31 दिसम्बर 2016 तक 17.69 लाख रूपए वितरित किए गए हैं।

11.9 **मॉडिफाइड स्कूटर की खरीद हेतु वित्तिय सहायता:** सेना से सेवानिवृत होने के बाद अशक्त हुए पूर्वसैनिको को [50% या इससे अधिक अशक्तता] को मॉडिफाइड स्कूटर खरीदने के लिए सशस्त्र सेना झंडा दिवस बजट से 57,500/- रूपए की वित्तीय सहायता प्रदान की जाती हैं। 31 दिसम्बर 2016 तक 1,15,000/- रूपए की वित्तीय सहायता प्रदान की जा चुकी हैं।

11.10 **युद्व स्मारक हॉस्टल [डब्ल्यू एम एच] को अनुदान:** युद्ध विधवाओं / युद्ध अशक्त कार्मिकों के

बच्चों को प्रति बच्चा 1350/- रूपए प्रतिमाह डब्ल्यू एम एच अनुदान प्रदान किया जाता है। दिसम्बर 2016 तक 36.23 लाख रूपए की राशि वितरित कि गयी है।

11.11 **पैराप्लेजिक पुनर्वास केन्द्रों [पी आर सी] को अनुदान:** पैराप्लेजिक और टेट्राप्लेजिक पूर्व सैनिकों के स्वास्थ्य लाभ के लिए चलाई जा रही स्वायत संस्थाओं के तौर पर किरकी एंव मोहाली स्थित पैराप्लेजिक पुनर्वास केन्द्रों [पी आर सी] को देखरेख / रखरखाव के लिए प्रतिव्यक्ति 30,000/- रूपए वार्षिक के अतिरिक्त 20 लाख रूपए और 10 लाख का वार्षिक अनुदान प्रदान किया जाता है।

11.12 **सेंट डंस्टन आफ्टर केयर ऑर्गेनाइजेशन को अनुदान:** देहरादून स्थित सेंट डंस्टन ऑर्गेनाइजेशन दृष्टिहीन सैनिको, नौसैनिकों एवं वायुसैनिकों को उपयारात देखभाल के साथ-साथ उनके दृष्टि खोने के दुख को कम करने के लिए मनोवैज्ञानिक सहायता उपलब्ध करवाती हैं। इससे साथ ही दृष्टिहीन पूर्वसैनिकों को समाज मे पून:स्थापित होने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण भी उपलब्ध कराती है। इस सगंठन को प्रत्येक वित्त वर्ष में 14 लाख रूपए का अनुदान आवंटित किया जाता है।

11.13 **मेडिकल और डेंटल कॉलेजों मे आरक्षण:** सैनिकों के बच्चों के लिए स्थास्थ एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा भारत सरकार के जामित के रूप में केन्द्रीय सैनिक बोर्ड सचिवालय को एम बी बी एस / बी डी एस की कुछ सीटें आवंटित की जाती हैं। 2016-17 के दौरान पूर्व सैनिकों के 20 बच्चों को प्रवेश दिया गया।

प्रमुख बातें

11.14 केन्द्रीय सैनिक बोर्ड की वार्षिक बैठक 21 जुलाई 2016 को आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता रक्षा मंत्री ने की। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य पूर्व सैनिकों एवं उनके आश्रितों के कल्याण एंव पुनर्वास मे तेजी लाने पर जोर देना था इसके साथ ही बैठक में पूर्वसैनिकों के कल्याण से संबंधित विषयों पर भी चर्चा की गई।

21 जुलाई, 2016 को आयोजित केन्द्रीय सैनिक बोर्ड की XXX वार्षिक बैठक

11.15 **21 जुलाई 2016 को आयोजित केन्द्रीय सैनिक बोर्ड की 30वीं वार्षिक बैठक:** स्वच्छता पखवाड़ा [1 से 15 दिसम्बर 2016] के दौरान 14 दिसम्बर 2016 को मानेकशा सेंटर, नई दिल्ली में स्वच्छ भारत अभिमान के अंतर्गत कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेषज्ञों ने भारत की स्वच्छता से संबंधी किए गए प्रयासों के इतिहास को विस्तार से बताया। साथ ही स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत 2019 तक स्वच्छ भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए कई प्रणालियों का भी सुझाव दिया। वक्ताओं ने यह भी बताया कि किस तरह हम अवशिष्ट पदार्थो के उत्पादन में कमी कर सकते हैं और उसका अधिकतम निपटान कर सकते हैं।

स्वच्छ भारत पर कार्यशाला

पुनर्वास

11.16 पुनर्वास महानिदेशालय [डीजीआर] का प्रमुख कार्य पूर्व सैनिकों का पुनर्वास, पुन: स्थापना और कल्याण करना है। प्रत्येक वर्ष लगभग 60,000 सैन्य कार्मिक सेनाओं से सेवानिवृत्त या सेवामुक्त होते हैं। इन मे से अधिकांश 35 से 45 आयु सीमा के बीच सेवानिवृत्त होते हैं। और उन्हें अपनी पारिवारिक जिम्मेवारियाँ निभाने के लिए द्वितीय रोजगार की जरूरत पड़ती है। ये कार्मिक अत्यंत अनुशासित, सुप्रशिक्षित, कर्तव्यनिष्ठ और प्रतिभावान हैं। जिनका राष्ट्र निर्माण में उपयोग किया जाता है। पुनर्वास संबंधी लक्ष्य निम्न प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है:

- उनको नए व्यवसाय / नौकरी हेतु तैयार करने के लिए जरूरी प्रशिक्षण देकर उनके कौशल मे वृद्वि करना और द्वितीय रोजगार प्राप्त करने में उनकी सहायता करना है।
- सरकारी / अर्द्वसरकारी / सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमो में रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने के लिए सतत प्रयास करना।
- कॉरपोरेट सेक्टर से पूर्व सैनिकों को पुन:रोजगार प्राप्त करने मे सहायता करने के लिए सक्रिय कार्रवाई करना।
- स्वरोजगार योजनाओं के माध्यम से रोजगार उपलब्ध करना।
- उद्यमी योजनाओं में सहायता करना।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

11.17 सेवानिवृत्त होने वाले सशस्त्र सेना के कार्मिको को उनके दूसरे करियर के लिए एक सहज वातावरण उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी पुनर्वास महानिदेशालय को सौपी गई है। यह उद्देश्य कॉरपोरेट जगत मे उत्कृष्ट प्रर्दशन करने के लिए पाठयक्रमों के द्वारा निखार कर पूरा किया जाता है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए डीजीआर द्वारा विभिन्न संस्थानो एंव पाठयक्रमों का चयन किया जाता है। रक्षा मंत्रालय एंव कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय ने जुलाई 2015, को एक समझौता ज्ञापन [एम ओ यू] पर हस्ताक्षर किए है। ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि डीजीआर द्वारा प्रायोजित किए जाने वाले सभी कौशल प्रशिक्षण पाठयक्रम राष्ट्रीय कौशल अर्हता फ्रेमवर्क [एन एस क्यु एफ] के अनुरूप हो। वर्ष 2016-17 के लिए पूर्व निर्धारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में से केवल उन्ही पाठ्यक्रमों को जून 2016 के बाद जारी रखा जाएगा। जिन पाठ्यक्रमो को राष्ट्रीय कौशल विकास निगम [एन एस डी सी] नियमावली के अनुरूप सरकारी निकायों द्वारा प्रमाणित किया गया था। जून 2017 के बाद डी जी आर द्वारा कराए जाने वाले पाठ्यक्रम कम से कम एम एस क्यु एफ के लेवल-5 के होगे। जहाँ कार्मिक के लिए किसी विशेष क्षेत्र बदलने की आवश्यकता हो, वहाँ पर लेवल-4 हो सकता है। एम एस डी ई ने भी मापदंड एवं लागत के विषय मे कौशल प्रशिक्षण से संबंधित सामान्य मानक जारी किए है। रक्षा मंत्रालय ने वाधवानी फांउडेशन के कौशल विकास नेटर्वक ट्रस्ट [एस एन डी टी] के साथ समझौता ज्ञापन [एम ओ यू] पर हस्ताक्षर किए हैं ताकि रक्षा कार्मिकों के लिए कौशल प्रशिक्षण में लक्ष्यों को प्राप्त करने में रक्षा मंत्रालय की सहायता की जा सके। शुरूआत से पाठ्यक्रम की लागत का मानकीकरण सुनिश्चित करने के अतिरिक्त पुनर्वास महानिदेशालय द्वारा चलाए जा रहे प्रशिक्षण पाठयक्रमों के मानको को ऊपर उठाने में मदद मिली हैं।

11.18 **अफसरों के लिए प्रशिक्षण:** वर्ष 2016-17 के लिए प्रस्तावित सभी अफसर प्रशिक्षण कार्यक्रमों को संशोधित कर दिया गया है। केवल उन्ही पाठ्यक्रमों को जारी रखा गया जिनका संचालन सरकार / सरकार के स्वायत संस्थानो द्वारा किया गया तथा चुनिंदा कौशल प्रशिक्षण पाठ्यक्रमो को छोड़कर मैनेजमेंट मे अफसर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम अतपकालिक पाठयक्रम 3-6 माह होंगे। अफसर प्रशिक्षण पाठयक्रम की फीस का 60% फीस का भुगतान सरकार द्वारा तथा 40% का भुगतान सम्बद्व अफसर द्वारा किया जाता है।

11.19 **जेसीओ /अन्य रैंक एंव समकक्ष का प्रशिक्षण:** डीजीआर जेसीओ/अन्य रैंक एवं समकक्ष रैंक के लिए अधिकतम एक वर्ष की अवधि तक के डिप्लोमा / सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम संचालित करता है। ये पाठ्यक्रम मान्यता प्राप्त संस्थानों द्वारा संचालित किए जाते है तथा 100% कोर्स फीस का भुगतान सरकार द्वारा किया जाता हैं। मार्च 2016 तक जेर्साओ / अन्य रैंक / समकक्ष के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन रेजिमेंटल सेंटर [कार्मिक की सेवानिवृत्ति या पेंशन डिल के दौरान 4 सप्ताह अवधि का] पर तथा सम्पूर्ण भारत के प्रशिक्षण संस्थान दोनो द्वारा किया जा रहा था। अप्रैल 2016 के पश्चात रेजिमेंटल सेंटरो मे प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन बंद कर दिया गया तथा आगे की प्रक्रिया की समीक्षा की गई। सेना एन एस डी सी प्रोटोकॉल के अनुरूप विभिन्न रेजिमेंटल सेटर में रिकॉगनिशन ऑफ प्रायर लर्निंग आर पी एल पाठ्यक्रम के संचालन का प्रयास कर रही है डी जी आर सम्पूर्ण भारत के प्रशिक्षण संस्थानो में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन कर रहा है। जून 2016 के बाद केवल उन्ही पाठ्यक्रमों को संचालित करने की अनुमति दी जाएगी जिन पाठ्यक्रमों का संचालन सरकारी संस्थानो द्वारा किया गया था या जिन को सरकारी निकायों / विश्वविद्यालयों या एन एस डी सी द्वारा न्यूनतम एन एस क्यु एफ लेवल-4 के साथ प्रमाणित

किया गया हो। जेसीओ / अन्य रैंक के लिए कौशल प्रशिक्षण के बढ़े हुए स्तर एंव मानकीकरण के कारण उनके लिए बेहतर रोजगार / पुनर्वास के अक्सर उत्पत्र होने की उम्मीद बढ़ी है।

11.20 जनवरी 2016 से दिसम्बर, 2016 तक दिए गए प्रशिक्षण का विवरण निम्नानुसार है :-

(क) संस्थानों मे अफसर - 642

(ख) संस्थानों में जेसीओ/अन्य रैंक -4,849

(ग) रेजिमेंटल सेंटर मे जेसीओ/अन्य रैंक - 6,416

(घ) 2016 वर्ष के लिए कुल - 11907

रोजगार के अवसर

11.21 **पूर्वसैनिकों के लिए केन्द्रीय सरकार मे रोजगार के अवसर:** पूर्वसैनिकों के सिविल जीवन मे पुनर्वास के लिए केन्द्र सरकार सरकारी नौकरियों मे पूर्वसैनिकों के लिए निम्नानुसार आरक्षण उवलब्ध करवाती है :-

क) सभी अर्द्धसैनिक बलों मे सहायक कमांडेंट के पद के लिए 10% आरक्षण।

ख) केन्द्र सरकार के विभागों मे सीधी भर्ती द्वारा भरे जाने वाले ग्रुप सी के पदों के लिए 10% और ग्रुप डी के पदों के लिए 20% आरक्षण।

ग) केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों मे ग्रुप सी के पदों के लिए 14.5% आरक्षण तथा ग्रुप डी के पदों। के लिए 24.5% आरक्षण। [इसमे अशक्त सैनिकों और सैन्य कार्रवाई में मारे गए कार्मिकों के आश्रितों के लिए 4.5% आरक्षण शामिल है।]

घ) सार्वजनिक क्षेत्र के बैकों मे ग्रुप सी के पदो के लिए 14.5% तथा ग्रुप डी के पदों के लिए 24.5%आरक्षण [इसमें अशक्त पूर्वसैनिको और सैन्य कार्रवाई मे मारे गए कामिकों के आश्रितो के लिए 4.5% आरक्षण शमिल है।

ड.) रक्षा सुरक्षा कोर मे 100% आरक्षण। उपर्युक्त आरक्षण नीती के कार्यान्वयन को मॉनीटर करने एवं आरक्षण संबंधी आँकडे एकत्र करने के लिए पुनर्वास महानिदेशालय नोडल ऐजेंसी की तरह कार्य करती है।

11.22 **रोजगार के लिए पंजीकरण:** पुनर्वास महानिदेशालय की मुख्य जिम्मेदारी रक्षा अफसरो को सेवानिवृत्ति के बाद पर्याप्त रोजगार अक्सर उपलब्ध करा कर उनके पुनर्वास मे सहायता करना है। सर्वप्रथम पूर्व सैनिकों का डीजी आर में पंजीकरण [नियम एवं शर्ते पुरी करने पर] किया जाता है। इसके बाद पूर्वसैनिको को पुनर्वास महानिदेशालय की विभिन्न योजनाओं जैसें सामान्य रोजगार [सरकारी / सार्वजानिक क्षेत्र उपक्रम कॉरपोरेट मे रोजगार] सुरक्षा एजेंसी, सीएनजी, योजना कोको योजना, पेट्रोल पम्प प्रबंधन और कोयला परिवहन कम्पनी इत्यादि विभिन्न योजनाओं के लिए पैनलबद्ध किया जाता है। स्वरोजगार योजनाओं को छोड़कर पुनर्वास महानिदेशालय और राज्य सैनिक बोर्ड के माध्यम से स्थायी एंव संविदात्मक नौकरियों के लिए प्रायोजित किए गए कार्मिकों के आँकड़े निम्नलिखित है।

क) पुनर्वास महानिदेशलय के माध्यम से - 5,027 [15 दिसम्बर 2016 तक]

ख) राज्य सैनिक बोर्ड / जिला सैनिक बोर्ड के माध्यम से - 177,43 [30 जुन 2016 तक]

11.23 **सुरक्षा एजेंसी योजना:** पुनर्वास महानिदेशालय विभिन्न केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपकमो [पीएसयु] को सुरक्षा गार्ड उपलब्ध करवाने के लिए पूर्वसैनिको द्वारा चलाई यह योजना पूर्वसैनिक को स्वरोजगार के अच्छे अवसर उपलब्ध करवाती है। अनेक सरकारी कार्यालय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम बैंक कॉरपोरेट कार्यालय और शैक्षणिक संस्थान इत्यादि डीजीआर द्वारा पैनलबद्ध सुरक्षा एजेंसियो को सुरक्षा सेवाएं प्राप्त करा रहे है।

11.24 2016 के दौरान इस योजना के अंतर्गत 16 दिसम्बर 2016 तक रोजगार प्राप्त करने वाले पूर्वसैनिको की कुल संख्या 20,625 है तथा इस दौरान कुल 316 सुरक्षा एजेंसियों को पैनलबद्व किया गया।

स्वरोजगार योजनाएं

11.25 **कोयला लदान एवं परिवहन योजना:** यह योजना कोल इण्डिया लिमिटेड [सी आई एल] और पुनर्वास महानिदेशालय के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के आधार पर चलाई जाती है। इस योजना के अंतर्गत पूर्वसैनिक तीन पूर्वसैनिक को मिलाकर एक पूर्वसैनिक

कम्पनी बनाते है। और कम्पनी अधिनियम 1956 के अन्तर्गत कम्पनी का पंजीकरण करवाते हैं। यह कम्पनी कोयला लदान और परिवहन से संबंधित कार्य करती है। यह सेवा कोल इण्डिया लिमिटेड की सभी सहायक कम्पनियों को उपलब्ध करवायी जाती है। वर्ष 2016मे कुल 13 पूर्वसैनिक कम्पनियों को प्रायोजित किया गया। जिससे 65 पूर्वसैनिक अफसर, 203 पूर्वसैनिकों एवं पूर्वसैनिक की विघवाओं/अशक्त पूर्वसैनिक लाभान्वित हुए।

11.26 **मदर डेयरी दूध बूथ तथा सफल सब्जी की दुकानें:** मदर डेयरी प्राइवेट लिमिटेड पूर्वसैनिक [जेसीओ/अन्य रैंक] को बनी बनाई और पूर्णतया सुराक्षित दूध बूथ दुकानें उपलब्ध करवाती है। और एन सी आर में पूर्वसैनिकों और उनके आश्रित पुत्रों को फल और सब्जी दुकानें उपलब्ध करवाती है। वर्तमान में, 798 दूध बूथ पूर्वसैनिको द्वारा चलाए जा रहे है। वर्ष 2016 में 296 मदर डेयरी दूध बूथ और सफल बूथ पात्र पूर्वसैनिकों को आबंटित किए गए।

11.27 मदर डेयरी एंव पुनर्वास महानिदेशालय के बीच निकट सम्बन्ध एंव सहयोगिता के कारण मदर डेयरी ने पूर्वसैनिकों की भूमिका को प्रभावी ढंग से दर्शाने के लिए 26 जनवरी एवं 15 अगस्त 2016 को हीरो नेवस्ट डोर अभियान नामक मल्टीमिडिया विज्ञापन अभियान चलाया। इस अभियान द्वारा आम जनता को यह बताया गया कि एन सी आर के सभी दूध बूध पूर्वसैनिकों द्वारा चलाए जा रहे है। सेवानिवृत पूर्व प्रगाढ़ करने के लिए मदर डेयरी ने सशस्त्र सेना झंडा दिवस फंड मे 10 लाख रूपए का योगदान दिया। मदर डेयरी के प्रबंध निदेशक ने पूर्व सैनिक कल्याण विभाग के सचिव को 10 लाख रूपए का चेक सौंपा।

मदर डेयरी के एमडी, डीईएसडब्ल्यू के सचिव को चैक सौंपते हुए

11.28 **मदर डेयरी के प्रबंध निदेशक सचिव पूर्वसैनिक कल्याण विभाग को चेक सौंपते हुए:** दिल्ली एन सी आर [गुडगांव को छोड़कर] मे सी एन जी स्टेशनों का प्रबंधन तथा पुणे एवं उसके आसपास के क्षेत्रों मे एम एन जी एल स्टेशनो का प्रबंधन – यह योजना विशेष रूप से पूर्वसैनिकों के लिए है जिसमे पाँच वर्ष की अवधि के लिए कम्पनी स्वामित्व और कम्पनी प्रचालन सी एन जी स्टेशनें का प्रबंधन करने के लिए डीजीआर द्वारा इच्छुक पूर्व सैनिक को आई जी एल / एम एन जी एल के लिए स्पोसर किया जाता है इस वर्ष दिल्ली मे लिए 09 पूर्व सैनिक तथा पुणे मे एम एन जी एल स्टेशनों के प्रंबधन के लिए 3 पूर्व सैनिक का चयन किया गया।

11.29 **आर्मी सरप्लस श्रेणी वी वाहनों का आबंटन:** इस योजना के अंतर्गत आधुनिकतम वाहनो का आबंटन किया जा रहा है। पूर्वसैनिक के 37 आवेदनों का पंजीकरण किया गया तथा उपलब्धता के आधार पर वाहनों की आबंटन प्रक्रिया चल रही है।

11.30 **तेल उत्पाद एजेंसी [ओपीए] योजना:** इस योजना के अंतर्गत पूर्वसैनिक को पुनर्वास महानिदेशालय द्वारा कंपनी स्वामित्व कंपनी प्रचालन योजना के लिए आई ओ सी एल और बीपी एस सी के रिटेल आउटलेट के प्रबंधन के लिए सेवा प्रदाता [सर्विस प्रोवाइडर]के तौर पर प्रायोजित किया जाता है। इस दौरान 14वर्ष सैनिक को एल पी जो डिस्ट्रीब्यूटरशीप के लिए प्रायोजित किया गया।

11.31 **कॉरपोरेट शुरूआत:** कॉरपोरेट सेक्टर मे पूर्वसैनिक के लिए ज्यादा से ज्यादा रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से पुनर्वास महानिदेशालय द्वारा सी आई आई के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। तदनुसार इस वर्ष बेगलूरू पुणे गया। इन मेलों मे बडी संख्या में रोजगार संबंधी आवेदन प्राप्त किए गए तथा इन मेलो के दौरान ही उन पर आगे की कार्यवाई पूरी की गई। इसके अतिरिक्त पूर्वसैनिकों की समताओं के बारे में प्रचार करने के लिए और रोजगार के अवसर उत्पन्न करने के लिए देश के कुछ अग्रणी कॉरपोरेट घरानों के साथ बैठकें आयोजित कि गई। सुक्ष्म उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए उबर कंपनी के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

11.32 **प्रचार एंव जागरूकता अभियानः** पूर्वसैनिकों को पुनर्वास से संबंधित विभिन्न गतिविधियों एंव योजनाओं की जानकारी सहज रूप से उपलब्ध करवाने के लिए विभिन्न प्रकार के विज्ञापन बहुत से समाचर पत्रों मे प्रकाशित किए गए। इसके अतिरिक्त सैनिक पुनर्वास पत्रिका के दो अंक [जनवरी 2016 और सितंबर 2016] प्रकाशित किए गए जिनमे पूर्वसैनिको की सफलता की कहानियां और पुनर्वास महानिदेशालय द्वारा पूर्वसैनिको के कल्याण से संबंधित चलाई गई गतिविधियां शमिल थी। पूर्वसैनिकों के प्रशिक्षण, स्वरोजगार एंव रोजगार के लिए पॉलिसी एंव कार्यक्रम युक्त विभिन्न गतिविधियों के विवरण से युक्त सूचना विवरणिका का भी प्रकाशन किया गया। इसके अतिरिक्त पुनार्वास महानिदेशालय के प्रतिनिधियों ने पूर्वसैनिक के कल्याण एंव पुनर्वास गतिविधियों से संबंधित ऑल इण्डिया रेडियो लाइव फोन इन कार्यक्रम मे भाग लिया जिसमे पूर्वसैनिको द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब दिए गए।

स्वास्थ्य देखभालः

11.33 पूर्वसैनिक अंशदायी स्वास्थय योजना [ईसी एच एस] की शुरूआत। 01 अप्रैल 2003 से की गई थी। इस योजना का अक्टूबर 2010 मे विस्तार किया गया था। ई सी एच एस का उद्देश्य पूर्वसैनिकों और उनके आश्रितों को पूरे देश मे फैले ईसी एच एस पॉलीक्लीनिको / सरकारी अस्पतालों के माध्यम से बेहतरीन चिकित्सा सेवाएं उपलब्धा करवाना है। इस योजना को केन्द्रीय सरकार स्वास्थ योजना सी जी एच एस की तर्ज पर बनाया गया है। और इसका वित्त पोषण भारत सरकार द्वारा किया जाता है। पैनलबद्व अस्पतालों के माध्यम से सेनानियों और उनके आश्रितों को जितना संभव हो सके नकदी रहित उपचार सुनिश्चित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

11.34 इस योजना के लिए नीतियों का निर्धारण भारत सरकार द्वारा किया जाता है। इस योजना का प्रशासनिक नियंत्रण पूर्वसैनिक कल्याण विभाग द्वारा किया गया है। इस योजना का संचालन सशस्त्र बलों के मौजूदा संसाघनो द्वारा किया जाता है ताकि प्रशासनिक व्यय कम किया जा सके।

11.35 ईसीएचएस पॉलीक्लीनिक बहि:रोगी चिकित्सा उपलब्ध करवाने के लिए बनाए गए है। जिनमे परामर्श आवश्यक जाँच और दवाईयों की व्यवस्या होती है। विशिष्ट परामर्श जाँच अतरंग चिकित्सा अस्पताल सरकारी अस्पतालों मे उपलब्ध अतिरिक्त क्षमता के द्वारा और ई सी एच एस से पैनलबद्व सरकारी चिकित्सा केन्द्रों के माध्यम से की जाती है।

ईसीएचएस नेटवर्क

11.36 केन्द्रीय संगठन शीर्ष स्तर पर ई सी एच एस का केन्द्रीय संगठन दिल्ली मे स्थित है जो एकीकृत मुख्यालाय रक्षा मंत्रालय मे एडजुटेंट जनरल मे माध्यम से स्टाफ प्रमुख समिति के अधीन कार्य करता है केन्द्रीय संगठन का अध्यक्ष सेवारत मेजर जनरल होता है।

11.37 **क्षेत्रीय केन्द्रः** सम्पूर्ण देश मे कुल मिलाकर 28 क्षेत्रीय केन्द्र है। यें क्षेत्रीय केन्द्र ई सी एच एस के केन्द्रीय संगठन और सेना कमान मुख्यालयो के अधीन कार्य करते है ये क्षेत्रीय केन्द्र इनके अधीन किए गए ई सी एच एस पॉलीक्लीनकों की कार्यप्रणाली पर नजर रखते है और सरकारी अस्पतालों को ई सी एच एस के साथ पैनलबद्व करने मे भी आवश्यक कार्रवाई करते है।

11.38 **पॉलीक्लीनिकः** भारत सरकार ने नेपाल स्थित 06 पॉलीक्लीनिक सहित कुल 426 ईसीएचएस पॉलीक्लीनिक को मंजूरी दी है। दिसम्बर 2016 तक मंजूर किए गए 426 ई सी एच एस पॉलीक्लीनिक मे से 421 पॉलीक्लीनिक कार्य कर रहे है। इन पॉलीक्लीनिको मे प्रशिक्षित विशेषज्ञो को पारिश्रमिक पर नियुक्त किया जाता है। और इनमे से कुछ पद पूर्व सैनिको के लिए आरक्षित रखे जाते है। स्टेशन मुख्यालय स्टाफ की मियुक्ति और पॉलीक्लीनिको की निबीय कार्यप्रणाली सुनिश्चित करने के लिए और ई सी एच एस पॉलीक्लीनिक की इमारतों के निर्माण और समय पर भूमि अधिग्रहण के लिए भी जिम्मेदार होता है।

वर्तमान स्थिति

11.39 **ईसीएचएस सदस्यताः** इस योजना के अन्तर्गत कुल लाभार्थियों की संख्या लगभग 50 लाख है।

11.40 **पॉलीक्लीनिक एवं सिविल पैनलबद्व सुविधाएँ:** पिछले एक वर्ष के दौरान कुल 286 अतिरिक्त चिकित्सा सुविधाओं को ई सी एच एस के साथ पैनलबद्व किया गया है। इस समय ई सी एस एस लाभार्थियों को नकदी रहित उपचार उपलब्ध करवाने के लिए 2247 सरकारी अस्पतालों को ई सी एच एस के साथ पैनलबद्व किया गया है। हालांकि आपात स्थिति में सदस्यों को भुगतान पर गैर पैनलबद्व अस्पतालो मे चिकित्सा उपचार करवाने की अनुमति है। उनके चिकित्सा उपचार बिलों कि प्रतिपूर्ति सी जी एच एस द्वारा अनुमोदित दरो पर की जाती है।

11.41 **बजट:** ई सी एच एस मे प्रशासनिक खर्च बहुत कम है। क्योकि इस योजना के अन्तर्गत सेना के मौजूदा संसाधनो का इस्तेमाल किया गया है। और पालीक्लीनिकों मे दी जाने वाली चिकित्सीय सहायता 100 संविदायक कार्मिकों द्वारा दी जाती है। ई सी एच एस की बाट आबंटन मे समय के साथ वृद्धि की गई। वित्तीय वर्ष 2016-17 के लिए बजट आबंटन की राज़ि 2363.54 करोड़ रूपए है।

11.42 **ईसीएचएस सेमिनार:** एडजुटेंट शाखा एकीकृत मुख्यालय रक्षा मंत्रलय के तत्वाधान मे सेना के द्विवार्षिक कार्यक्रम ईसीएचएस सेमीनार और रेजिमेटल केन्द्र निदेशक कान्फ्रेस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन इस योजना मे उत्पन्न हो रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए शेयरधारको के विभिन्न प्रयासों को सुव्यवस्थित करने के उद्देश्य से दिनांक 10 एंव 11 फरवरी 2016 को मानेकशॉ केन्द्र नई दिल्ली मे किया गया।

पिछले एक वर्ष की अन्य उपलब्धियाँ

11.43 पिछले एक वर्ष की अन्य उपलब्धियाँ का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :-

(क) लाभार्थियों के प्रतिपूर्ति दावों की ऑन-लाइन प्रक्रिया को बदल कर ऑन लाइन प्रणाली कर दिया गया है। इससे ने केवल पारदर्शिता बढेगी बल्कि प्रक्रिया मे लगने वाले समय की भी बचत होगी जिससे समय पर भुगतान किया जा सकेगा।

(ख) **ऑनलाइन ऑर्डट मॉडयूल** ई सी एच एस क्षेत्रेय केन्द्र हैदराबाद मे सी डी ए द्वारा बिलों की ऑनलाइन पोस्ट ऑर्डर के लिए पायलट परियोजना शुरू की गई और रक्षा लेखा महानियंत्रक द्वारा दिनांक 11 अप्रैल 2016 से इस योजना को सम्पूर्ण भारत मे लागू करने के लिए निर्देश जारी कर दिए गए है।

(ग) **ई सी एच एस स्टाफ के वेतन मे संशोधन ई सी एच एस के संविदात्मक स्टाफ:** का वेतन मई 2014 से दो बार बढ़ाया जा चुका है। निश्चित न्यूनतम वेतन 13455 रूपए प्रतिमाह तथा अधिकतम वेतन 80,000 रूपए प्रतिमाह है।

(घ) **सरकारी अस्पतालों में इलाज की प्रतिपूर्ति:** सरकारी अस्पताल में कराए गए इलाज की प्रतिपूर्ति सी जी एच एस दर की बजाय वास्तविक दर पर करने के लिए मंजूरी प्राप्त कर ली गई है।

(ड.) **एंडोलाइट और ऑटोबॉक प्रास्थिसिस सेटरों को पैनलबद्व करना:** ई सी एच एस लाभार्थियो को डिस्काउंट दरों पर कृत्रिम अंगो की मरम्मत करवाने एंव लगवाने के लिए कदो प्रास्थिसीस यथा एडोलाइट और आटोबॉक सेटरों तथा अनके पूरे देश में फैले उपकेन्द्रों को ई सी एच एस के साथ पैनलबद्व करने के आदेश 03 नवंबर 2016 को जारी कर दिए गए है।

(च) **ओ आई सी पॉलीक्लीनिको के लिए डिजीटल हस्ताक्षर:** सर्टिफिकेट की अनुमति ई सी एच एस के लिए डिजीटाल हस्ताक्षर सर्टिफिकेट की अनुमति प्राप्त कर ली गई है।

11.44 **ई सी एच एस टोल फ्री हेल्पलाइन:** सदस्यता उपचार और रोजगार से संबंधित प्रश्नो के समाधान के लिए सभी ई सी एच एस सदस्यों को ई सी एच एस टोल फ्री हेल्पलाइन 1800-114-115 उपलब्ध करवाई गई है। यह सेवा सोमवार से शुक्रवार तक सभी कार्य दिवसों में 0900 से 1700 बजें तक उपलब्ध है।

11.45 **ई सी एच एस वेबसाइट:** पैनलबद्व सुविधाओ की सूची सदस्यता फार्म और नवीनतम नीतियों इत्यादि जैसी सभी प्रकार की जानकारी www.cchs.gov.in पर उपलब्ध है।

पेंशन सुधार

11.46 **फिटमेंट तालिका के आधार पर कैजुअल्टी अवार्ड करना:** भारत सरकार ने रक्षा मंत्रालय के दिनांक 18-05-2016 के पत्र संख्या 16/01/2014 पेंशन पॉलिसी के तहत यथासंशोधित विशेष सेना अनुदेश 1/एस/2008 वि से अनु 2/एस/2008 और वि से अनु 4/एस/2008 एवं नौसेना और वायुसेना के लिए जारी किए गए समकक्ष अनुदेशों के साथ संलग्न फिटमेट तालिका के अन्तर्गत दर्शाए गए संशोधित वेतन बैड मे रैक के लिए न्युनतम फिडमेट तालिका के आधार पर दिनांक 01-01-2006 से पहले की सभी अशक्तता पेशन धारको परिवार पेंशन धारको केजुअल्टी पेंशन संबंधी अवार्ड की दरों को संशोधित कर दिया है।

11.47 **फिटमेट तालिका के आधार पर वर्ष 2006 से पहले की साधारण परिवार पेशन की दरो में वृद्धि:** वर्ष 2006 से पहले के सशस्त्र सैन्य बलों के विषय में साधारण परिवार पेंशन में वृद्धि दर में संशोधन से संबंधित सरकारी पत्र संख्या 1[14]/2012-ड़ी [पेंशन पॉलिसी] दिनॉक 14 जून 2016 जारी कर दिया गया है। यह निर्णय लिया गया है। कि वर्ष 2016 से पहले की सभी साधारण पेंशन की न्युनतम गारंटित बढी हुई दरें संशोधित वेतन बैंड, जैसा कि फिटमेंट तालिका के अन्तर्गत दर्शाया गया है। मे रैक के लिए न्युनतम फिटमेंट तालिका के आधार पर 01 जनवरी 2006 से संशोधित की जा सकती है। 2006 से पहले के रक्षाबल परिवार पेंशन धारको के मामले मे 01 जनवरी 2006से लागू होने वाली साधारण परिवार पेंशन की संशोधित समेकित दरें संशोधित वेतन बैंड में रैंक के लिए न्यूनतम फिटमेंट तालिका के 50% से कम नही होगी। ऐसे मामलों मे जहाँ छठे केन्द्रीय वेतन आयोग के आदेशो के नियमानुसार सेवानिवृत्त कार्मिक यदि पूर्ण संशोधित वेतन के लिए प्राधिकृत नही है। तो उस मामले मे साधरण परिवार पेंशन की संशोधित दरे प्राधिकृत पेंशन के बराबर होनी चाहिए। साधारण परिवार पेंशन की संशोधित दरो की धनराशि किसी भी परिस्थिति में रैक के लिए न्युनतम फिटमेंट तालिका के 30% से या एच ए जी या इससे उपर के मामलो मे न्यूनतम फिटमेंट तालिका के 30% से काम नही होगी।

11.48 **दो प्रकार की अशक्तता के मामलों मे अशक्तता के निर्धारण करने का विधि:** भारत सरकार ने रक्षा मंत्रालय के दिनांक 08 अगस्त 2016 के पत्र संख्या 16[02]/2015/रक्षा [पेंशन/पॉलिसी] के तहत निम्न प्रकार से दो विभिन्न प्रकार की अशक्तताओ अर्थात सामान्य अशक्तता और युद्व कैजुअल्टी से संबंधित अशक्तता की गणना करने की विधि के लिए आदेश जारी किए है।

(क) **सेवामुक्त संबंधित मामले:** जिन मामलो मे सशस्त्र सैन्य कार्मिक को निर्धारित सेवावधि पूरी होने के बाद सर्विस से सेवा मुक्त किया गया हो, वहाँ पर अधिक अशक्तता अर्थात युद्व के दौरान अशक्त युद्व कार्मिको के मामलों को समेकित मूल्यांकन से अलग किया जाएगा और मूल्यांकन की प्रतिशतता को छोडकर पूर्ण पेंशन का पूर्ण भुगतान किया जाएगा। शेष अशक्तता के मामलो की गणना सामान्य अशक्तता [डी ई] के तौर पर की जाएगी।

(ख) **इनवेलिड संबंधी मामले:** सैन्य सेवा के कारण चिकित्सीय आधार पर इनवेलिड घोषित किए गए सशस्त्र सैन्य कार्मिकों के मामलों मे समेकित मूल्यांकन और युद्व अशक्तता की प्रतिशतता को भारत सरकार रक्षा मंत्रालय के दिनांक 01 जनवरी 2001 के पंत्र संख्या 1[2]/97/ डी [पेंशन-सी] के पैरा 7.2 के अनुसार पूर्ण अशक्तता प्रतिशतता मान लिया जाएगा। इसके अतिरिक्त युद्व अशक्तता की पूर्वांकित प्रतिशतता को समेकित मूल्यांकन के पूर्णांकित प्रतिशतता मे से कम किया जाएगा। शेष अशक्तता की गणना सामान्य अशक्तता [डी ई] के रूप में कि जाएगी।

11.49 **अशक्तता के अस्वीकृत दावों के विरूद्व द्वितीय अपील की प्रक्रिया:** सरकार ने रक्षा मंत्रालय के दिनांक 09 अगस्त 2016 के पत्र संख्या 16[2]/2008/ डी [पेंशन/पॉलिसी] के तरह अशक्तता पेंशन/अशक्तता निर्धारण के अस्वीकृत मामलों मे यदि इन मामलों मे द्वितीय अपीलीय समीति में सर्वसम्मति ना बनी हों, द्वितीय अपील करने के लिए आदेश दिए गए है। यह निर्णय लिया गया है। कि द्वितीय अपीत के जिन मामलों में पेंशन पर बर्ना द्वितीय अपीलीय समिती के सदस्यों मे सर्वसम्मति न बनी हो, उन मामलों को जाँच-पड़ताल के लिए पेंशन के लिए पेंशन पर बनी द्वितीय अपीलीय समिती के चेयरमैन के पास तथा रक्षा राज्य मंत्री का

अंतिम निर्णय प्राप्त करने के लिए पूर्व सैनिक कल्याण विभाग को भेजा जाएगा।

11.50 **वर्ष 2006 से पहले सेवानिवृत्त हुए कार्मिको के लिए दिनांक 01-01-2006 से संशोधित पेंशन के लिए 33 वर्ष की अनिवार्य सेवा शर्त निरस्त करना:** भारत सरकार रक्षा मंत्रालय के दिनांक 30 सितंबर 2016 के पत्र संख्या 1[1]/2016/रक्षा [पेंशन/पॉलिसी] के अन्तर्गत वर्ष 2016 से पहले के पेंशन धरको [जेसीओ/अन्य रैंक] एंव कमीशन प्राप्त अफसर के संबंध मे पेंशन परिशोधन हेंतु आदेश जारी किए है। परिशोधित पेंशन के लिए 33 वर्ष की अनिवार्य सेवा शर्त निरस्त करना। यह निर्णय लिया गया है। कि 2006 से पहले सेवानिवृत्त हुए सशस्त्र सेना के पेंशन धारको की संशोधित समेकित पेंशन और परिवार पेंशन दिनांक 01 जनवरी 2006 से सैन्य सेवा वेतन और X ग्रुप वेतन सहित यदि कोई हों संशोधित पूर्व वेतनमान के अनुरूप [जिस वेतनमान मे] पेंशनधारक सेवानिवृत्त/सेवामुक्त/इनवेलिट आउट हुए हो। ग्रेड वेतन सहित वेतन बैड़ मे न्यूनतम वेतन के क्रमश: 50% और 30% से कम नही होगी। इस पेंशन मे यथानुपातिक कटौती नही की जाएगी चाहे उन्होने सेवानिवृत्ति के समय 33 वर्ष की अनिवार्य सेवा पूरी नही की हो।

11.51 **2016 से पूर्व सेवानिवृत रक्षा कार्मिको के लिए 7वें केन्द्रीय वेतन आयोग की सिफारिशें लागू करना:** सरकार ने रक्षा मंत्रालय के दिनांक 29 अक्टूबर 2016 के पत्र संख्या 17[01]/2016-डी [पेशन/पॉलिसी] के अन्तर्गत 2016 से पहले सेवानिवृत्त दुए रक्षा बल कार्मिको के लिए 7वें केन्द्रीय वेतन आयोग की सिफारिशें लागू करने के आदेश जारी किए है। अपंगता निर्धारण करने की प्रक्रिया से संबंधित मामलों को विसंगति समिति को भेज दिया गया है। 2016 से पहले के सेवानिवृत्त रक्षा कार्मिक पेंशन धारकों को 31 दिसम्बर 2015 तक मिलने वाली अपंगता राशि सरकार द्वारा विसंगति समिति की सिफारिशें पर निर्णय लिए जाने तक जारी रहेगी।

11.52 **बन रैंक वन पेंशन पर एक सदस्यीय न्यायिक समिति की रिपोर्ट:** वन रैंक वन पेंशन पर बनी एक सदस्यीय न्यायिक समिति ने अपनी रिपोर्ट दिनांक 26 अक्टूबर 2016 को सौंप दी है।

केंद्रीय सैनिक बोर्ड की 30वीं बैठक
30th MEETING OF KENDRIYA SAINIK BOARD
विज्ञान भवन, नई दिल्ली
21 जुलाई 2016
Vigyan Bhawan, New Delhi
21 July 2016
Department of Ex-Servicemen Welfare
Ministry of Defence

12

सशस्त्र सेनाओं तथा सिविल प्राधिकारियों के बीच सहयोग

अध्याय 12

सशस्त्र सेनाओं तथा सिविल प्राधिकारियों के बीच सहयोग

12.1 देश की सीमाओं की सुरक्षा की मुख्य जिम्मेदारी के अलावा सशस्त्र सेनाएं सिविल प्राधिकारियों को कानून एवं व्यवस्था तथा/अथवा आवश्यक सेवाएं बनाए रखने में और प्राकृतिक आपदाओं के समय बचाव एवं राहत ऑपरेशनों में सहायता पहुंचाती हैं। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान सशस्त्र सेनाओं द्वारा उपलब्ध कराई गई सहायता का विवरण उत्तरवर्ती पैराग्राफों में दिया गया है।

भारतीय सेना

कानून एवं व्यवस्था का रखरखाव

12.2 **हरियाणा :** जाट आन्दोलन के दौरान हरियाणा में कानून और व्यवस्था की स्थिति बिगड़ने को देखते हुए सिविल प्रशासन की मांग के परिणामस्वरूप हरियाणा के 11 जिलों में कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए 56 सेना कॉलमों को लगाया गया था। इन कॉलमों को 19 फरवरी, 2016 से लगाया गया था और 29 फरवरी 2016 को इन्हें हटाया गया था।

12.3 **तिनसुकिया (असम) :** 11 अप्रैल, 2016 को तिनसुकिया जिले के उपायुक्त से तिनसुकिया जिले के निकट पेंगरी में उग्र भीड़ को नियंत्रित करने का अनुरोध प्राप्त हुआ था। सिविल प्राधिकरण की सहायता के लिए तीन सेना कॉलम लगाए गए थे और स्थिति पर काबू किया गया था। इन कॉलमों को 14 अप्रैल 2016 हटाया गया था।

12.4 **राजौरी (जम्मू और कश्मीर) :** 14 सितम्बर, 2016 को सिविल प्रशासन से एक अनुरोध प्राप्त हुआ था। राजौरी में पुराना बस स्टैंड, गुज्जर मन्डी चौक तथा पंजा चौक में तीन सेना कॉलम लगाए गए थे। 21 सितम्बर, 2016 को इन कॉलमों को हटाया गया था।

बाढ़ राहत ऑपरेशन

12.5 **सतना (मध्य प्रदेश) :** तमस नदी में बाढ़ आ जाने के कारण बाढ़ राहत ऑपरेशनों के लिए 07 जुलाई, 2016 को एक इंजीनियर कार्यबल तथा एक सेना कॉलम लगाया गया था। 30 नागरिकों को बचाया गया था।

12.6 **जोरहाट (असम) :** बोंगेगांव (मलोखाट) के जनरल एरिया में भागडोई नाले (जोरहाट के 12 किलोमीटर उत्तर में) में दरार आ जाने के कारण बाढ़ जैसी स्थिति में सहायता मुहैया कराने के लिए एक सेना कॉलम को बाढ़ राहत ऑपरेशन के लिए 8-11 जुलाई, 2016 के दौरान लगाया गया था। इस ऑपरेशन में लगभग 200 नागरिक बचाए गए थे।

12.7 **बारन (राजस्थान) :** 11 जुलाई, 2016 को बाढ़ राहत ऑपरेशनों के लिए दो कॉलम लगाए गए थे जिनमें 15 नागरिक बचाए गए थे।

12.8 **कटिहार (बिहार) :** 27 जुलाई, 2016 को बलरामपुर, कडवा तथा बरसोई गांवों के लिए प्रत्येक गांव में दो सेना कॉलम बाढ़ राहत ऑपरेशन के लिए लगाए गए थे। 300 असहाय व्यक्तियों को इस ऑपरेशन में बचाया गया था।

12.9 **न्यू बोंगेगांव (असम) :** 26 जुलाई, 2016 को न्यू बोंगेगांव में बाढ़ राहत ऑपरेशनों में एक सेना कॉलम लगाया गया था, जिनमें 50 असहाय व्यक्तियों को बचाया गया था।

12.10 **चिरांग (असम) :** 26 जुलाई, 2016 को बाढ़ राहत ऑपरेशन के लिए एक सेना कॉलम लगाया गया था, जिसमें 190 असहाय व्यक्तियों को बचाया गया था।

12.11 **पाली (राजस्थान) :** भारी वर्षा के कारण खराब स्थिति में बचाव ऑपरेशनों के लिए 9 अगस्त, 2016 को जोधपुर से एक सेना कॉलम तथा एक इंजीनियर कार्यबल लगाए गए थे। इनमें 34 नागरिकों को बचाया गया था।

अन्य प्रकार की सहायता

12.12 **कोल्लम (केरल) :** 10 अप्रैल, 2016 को कोल्लम (केरल) के पुत्तिंगल मन्दिर में आग लगने की घटना के कारण बचाव तथा राहत ऑपरेशनों के लिए दो मेडिकल टीमों, जिनमें से प्रत्येक में एक एम्बुलेंस, दो डॉक्टर, दो नर्सिंग सहायक तथा चार एम्बुलेंस सहायक थे, को लगाया गया था।

12.13 **पुखरायन, कानपुर :** रेल संख्या 19321 इंदौर-पटना एक्सप्रेस 20 नवम्बर, 2016 को उत्तर प्रदेश के कानपुर देहात में पुखरायन के निकट पटरी से उतर गई थी। इस रेल के 14 डिब्बे पटरी से उतर गए थे जिनमें से तीन डिब्बे बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए थे। सिविल प्रशासन के अनुरोध पर बचाव तथा राहत ऑपरेशन के लिए दो आर्मी कॉलम, तीन मेडिकल टीमों के साथ-साथ विशेषज्ञों और सात एम्बुलेंसों, एक प्रशासनिक कॉलम तथा नौ रिकवरी कॉलमों को लगाया गया था। पांच व्यक्तियों को जीवित बचाया गया था तथा लगभग 45 शव बरामद किए गए थे। लगभग 50 व्यक्तियों को चिकित्सा सहायता मुहैया कराई गई थी और लगभग 500 व्यक्तियों को भोजन वितरित किया गया था।

12.14 **करछम (हिमाचल प्रदेश) :** भू-स्खलन के कारण हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले के करछम के निकट उरनी गांव में एक 1000x100 मीटर के आकार की कृत्रिम झील बन गई थी। पानी का स्तर करछम गैरीसन की ओर जाने वाले सेतु को छू रहा था। सिविल प्रशासन तथा पीडब्ल्युडी कार्मिकों ने पानी के बहने के लिए अधिक स्थान बनाने के प्रयास में भू-स्खलन क्षेत्र में ड्रेजिंग/ब्लास्टिंग की थी। तथापि, ये प्रयास सफल नहीं रहे थे। किन्नौर के उपायुक्त ने इस समस्या के समाधान के लिए 21 जून, 2016 को सेना की सहायता का अनुरोध किया। परामर्शी भूमिका के लिए एक इंजीनियर टीम को लगाया गया था।

भारतीय नौसेना (आईएन)

12.15 **केरल के पुत्तिंगल मन्दिर में आग लगने की घटना :** 10 अप्रैल, 2016 को केरल के पुत्तिंगल मन्दिर में आग लगने की घटना के दौरान सेना द्वारा तैनात की गई मेडिकल टीमों के साथ-साथ ही भारतीय नौसेना ने भी आग लगने वाले स्थान पर तत्काल एक नौ सदस्यीय मेडिकल टीम के साथ दो उन्नत हल्के हेलिकॉप्टर तैनात किए जिनके साथ आपूर्तियां और उपकरण थे। भा.नौ.पो. सुनयना, काबरा तथा कलपेनी भी मेडिकल टीमों तथा 400 किलोग्राम मेडिकल आपूर्तियों के साथ उसी दिन कोल्लम पहुंच गए थे। इस घटना के दौरान संकटग्रस्त लोगों को निकालने तथा चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराने के लिए विशेष रूप से दो एएलएच ने उड़ानें भरीं।

आग लगने की घटना के दौरान कोल्लम में तैनात भारतीय नौसेना का एएलएच

12.16 **विशाखापट्टनम में आग लगने की घटना :** 26 अप्रैल, 2016 को विशाखापट्टनम के दुव्वाडा सेज में आग लगने की बड़ी घटना की सूचना मिली, जिसके परिणामस्वरूप 12 बायो-डीजल टैंक जल गए थे। भारतीय नौसेना ने इस स्थान पर तत्काल नौ नेवल फायर टैंडर, एम्बलेंसों के साथ दो मेडिकल टीम और नेवल क्विक रिएक्शन टीमों (क्यूआरटी) को तैनात किया। इसके अलावा, भारतीय नौसेना के डोर्नियर विमानों ने आग प्रभावित क्षेत्र की हवाई रेकी की तथा आग को बुझाने में सहायता के लिए चेतक हेलिकॉप्टर ने शुष्क रासायनिक पाउडर अग्निशामक गोले गिराए।

12.17 **लक्षद्वीप तथा मिनीकॉय द्वीपों से एमईडीईवीएसी:** 24 जून 2016 को किल्टन तथा अगात्ती द्वीपों से गम्भीर स्थिति के रोगियों को चिकित्सीय इलाज के लिए कोच्चि ले जाने के वास्ते एल एंड एम द्वीपों पर डोर्नियर तथा एएलएच लगाए गए थे।

एल एंड एम द्वीपों से एमईडीईवीएसी

12.18 **हृदय प्रत्यारोपण के लिए सहायता:** 18 जुलाई, 2016 को एरनाकुलम के जिला प्रशासन की ओर से एक संरक्षित हृदय को ले जाने का अनुरोध प्राप्त हुआ था। तदनुसार, 19 जुलाई, 2016 को भा.नौ.पो. गरुड़ से डॉक्टरों के एक दल तथा चिकित्सा उपकरणों से युक्त एक डोर्नियर विमान ने तिरुवनंतपुरम के लिए उड़ान भरी। इसके बाद डॉक्टरों को संरक्षित हृदय के साथ कोच्चि से उसी दिन विमान द्वारा वापस ले जाया गया। नौसेना द्वारा मुहैया कराई गई सहायता हृदय प्रत्यारोपण के ऑपरेशन के लिए निर्णायक साबित हुई।

डोर्नियर द्वारा संरक्षित हृदय को कोच्चि ले जाया जाना

12.19 **रायगढ़, महाराष्ट्र में लापता कार्मिकों के लिए गोताखोरी सहायता :** महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के महाड़ में 3 अगस्त, 2016 को भारी वर्षा के कारण सावित्री नदी पर एक पुल गिर गया और कुछ वाहन उसमें

सवित्री नदी में नौसेना गोताखोर खोजी कार्य करते हुए

नदी से राज्य सरकार की बस की बरामदगी

गिर गए, जिससे जान की हानि हुई। भारतीय नौसेना ने 3-14 अगस्त, 2016 के दौरान खोजी ऑपरेशनों के लिए तीन जैमिनी नौका तथा दो सी-किंग हेलिकॉप्टरों के साथ 22 कार्मिकों के एक विशेषज्ञ गोताखोरी दल को तैनात किया। भारतीय नौसेना के गोताखोरी दल ने नदी में डूबी राज्य सरकार की दो बसों, एक एसयूवी तथा 14 शवों को बरामद करने में मदद की।

12.20 **एचएडीआर अभ्यास - सहायता :** गुजरात के भुज में सितम्बर 2016 में वार्षिक संयुक्त आपदा राहत अभ्यास 'सहायता-2016' का आयोजन किया गया था। इस अभ्यास में पश्चिमी क्षेत्र में सिम्यूलेटिड बड़े भूकंप के बाद भारतीय नौसेना पोत दिल्ली तथा सुभद्रा द्वारा समन्वित बचाव तथा खोजी ऑपरेशन किए गए। इस पोतों को हताहत निकासी उड़ानों तथा चिकित्सा सामग्री तथा सहायता मुहैया कराने के लिए तैनात किया गया था।

मानवीय सहायता तथा आपदा राहत अभ्यास - सहायता

12.21 **वार्षिक संयुक्त एचएडीआर अभ्यास :** सीसीसी-2015 में प्रधान मंत्री ने निदेश दिया था कि सेनाओं द्वारा केन्द्रीय पुलिस संगठनों तथा नगर निगम तक के सिविल प्रशासन की ओर से हितधारकों को शामिल करते हुए 'वार्षिक संयुक्त एचएडीआर अभ्यास' किए जाएं। तदनुसार, विशाखापट्टनम में 30 अगस्त, 2016 से 1 सितम्बर, 2016 तक एक 'सुपर साइक्लोन' आकस्मिकता पर अभ्यास प्रकंपन का आयोजन किया गया था। इस अभ्यास से राज्य तथा जिला प्रशासन, सशस्त्र सेनाओं, अर्ध-सैनिक बलों तथा नगर निगम स्तर तक की अन्य एजेन्सियों को आपदा प्रबंधन योजनाओं की वैधता के लिए एक मंच उपलब्ध हुआ। समुद्री युद्धपद्धति केन्द्र (विशाखापट्टनम) में सभी भागीदारों को शामिल करते हुए एक टेबल टोप अभ्यास का आयोजन किया गया था।

संयुक्त एचएडीआर अभ्यास प्रकंपन का उद्घाटन समारोह

12.22 **जल सुरक्षा - 2016 अभ्यास :** पोर्ट ब्लेयर में 7-8 सितम्बर, 2016 से जल सुरक्षा 01/16 अभ्यास का आयोजन किया गया था। मानवीय सहायता तथा आपदा

अभ्यास जल सुरक्षा के दौरान भारतीय नौसेना पोतों पर सामग्री लादा जाना

राहत (एचएडीआर) ऑपरेशनों अर्थात खोज तथा बचाव ऑपरेशन, पोत का अस्पताल-पोत में परिवर्तन, क्षति आकलन और मरम्मत तैयारी, कार्मिक/परिवारों को अन्य स्थान पर ले जाने, सिविल प्रशासन की सहायता के लिए एचएडीआर ब्रिक्स की लदाई संबंधी सभी कार्यकलाप तथा अभ्यास किए गए किए गए थे। इस अभ्यास के दौरान संभारिकी श्रृंखला की प्रभाविकता की जांच के लिए पोतों पर संकटकालीन आपूर्तियां तथा राशन ब्रिक्स चढ़ाए गए थे।

तटरक्षक

12.23 **दमन गंगा नदी में असहाय कार्मिकों का बचाव :** 2 जुलाई, 2016 को सिलवासा की सीमा पर दमन गंगा नदी में फंसे हुए 10 कार्मिकों को तटरक्षक हेलिकॉप्टर एक्स-दमन से ले जाया गया और बचाया गया। ये कार्मिक नदी में डूबे हुए शव की खोज कर रहे थे कि तभी बांध से पानी छोड़ देने के कारण पानी का स्तर अचानक बढ़ गया।

तटरक्षक हेलिकॉप्टर द्वारा असहाय कार्मिकों को निकाला जाना

12.24 **वलसाड़ (गुजरात) में असहाय कार्मिकों का बचाव :** 2 अगस्त, 2016 को गुजरात के वलसाड़ में औरंगा नदी के जल स्तर में अचानक हुई वृद्धि के कारण वलसाड़ के निकट बड़ी संख्या में लोग छतों पर असहाय खड़े थे। दो तटरक्षक हेलिकॉप्टरों एक्स-दमन को इस कार्य में लगाया गया जिन्होंने 28 असहाय कार्मिकों को एक सुरक्षिक स्थान पर ले जाकर बचाया।

तटरक्षक हेलिकॉप्टर द्वारा वलसाड़ के निकट छत पर फंसे कार्मिकों की निकासी

12.25 **जवाहर डॉक, चेन्नई बन्दरगाह के भीतर जलयानों को सहायता :** 12 दिसम्बर, 2016 को चेन्नई में अति प्रचंड चक्रवाती तूफान 'वरदाह' के द्वारा भू-स्खलन के परिणामस्वरूप चेन्नई बन्दरगाह में चक्रवाती वायु स्थितियां उत्पन्न हो गईं। विपरीत मौसमी परिस्थितियों तथा तेज हवाओं के कारण जवाहर डॉक के भीतर खड़े पोतों के बर्थिंग हावसर्स अलग हो गए। स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए बर्थिंग टीम एक्स-भारतीय तटरक्षक पोत (आईसीजीएस) वरद को तत्काल चेन्नई पोत ट्रस्ट टग पर सहायता के लिए भेजा गया और जवाहर डॉक चेन्नई पर 5 विपत्तिग्रस्त जलयानों को आईसीजी टीम की सहायता से एक तरफ सुरक्षित रूप से खड़ा किया गया/सुरक्षित किया गया।

जवाहर डॉक, चेन्नई में विपदाग्रस्त जलयानों को बर्थिंग सहायता देते हुए भारतीय तटरक्षक

वायुसेना

12.26 **जम्मू और कश्मीर विरोध-प्रदर्शन :** जम्मू और कश्मीर में कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए भारतीय वायुसेना को देश के विभिन्न भागों से सीएपीएफ (सीआरपीएफ, एसएसबी तथा आरएएफ) को विमानों द्वारा श्रीनगर लाने का कार्य दिया गया था। 9 जुलाई, 2016 से 9 अगस्त, 2016 तक कुल 7184 सैनिकों तथा 299.3 टन भार विमानों द्वारा ले जाया गया।

सिविल शक्ति को सहायता

12.27 **बिहार बाढ़ राहत :** अगस्त 2016 में बिहार में बाढ़ें आ गई थीं। राहत ऑपरेशन के भाग के रूप में भारतीय वायुसेना ने अरक्कोनम, भुवनेश्वर तथा भटिंडा से बिहार एनडीआरएफ टीमों को विमानों द्वारा भेजा गया। 20-23 अगस्त, 2016 में कुल मिलाकर 539 एनडीआरएफ कार्मिकों तथा 27.3 टन भार को विमानों द्वारा भेजा गया।

12.28 **भारतीय वायुसेना द्वारा उत्तराखंड में अग्निशमन कार्य :** उत्तराखंड के 13 जिलों में से 11

भारतीय वायुसेना का हेलिकॉप्टर राहत ऑपरेशनों में

जिले मार्च 2016 से जंगल की आग से प्रभावित थे। नैनीताल, मुक्तेश्वर, भीमताल, पौड़ी, गुप्तकाशी, टेहरी तथा श्रीनगर के आस-पास के क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र थे। सरकार ने विभिन्न आपदा राहत टीमों को तैनात किया तथा अग्नि-नियंत्रण प्रयासों में सहायता के लिए 30 अप्रैल 2016 को भारतीय वायुसेना को बुलाया गया। एमआई-17 वी-5 हेलिकॉप्टरों को तैनात करके भारतीय वायुसेना ने आकाश से अग्नि-नियंत्रण करके न केवल आग को बुझाने में मदद की बल्कि ऐसी आपदा से कीमती राष्ट्रीय परिसंपत्तियों को समाप्त होने से भी बचा लिया गया। आग के रास्ते में आने वाले रेलवे स्टेशनों, बस स्टैंडों, गांवों, फैक्ट्रियों को लक्ष्य बनाकर आग से बचा लिया गया। इन ऑपरेशनों के दौरान भारतीय वायुसेना के हेलिकॉप्टरों ने चुनौतीपूर्ण स्थितियों में 95 उड़ाने भरीं और कीमती जान, माल तथा देश के प्राकृतिक संसाधनों को बचा लिया। एक सप्ताह के भीतर आग पर नियंत्रण कर लिया गया।

INDIAN AIR FORCE
Z3018

13

राष्ट्रीय कैडेट कोर

अध्याय 13

राष्ट्रीय कैडेट कोर

13.1 राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन सी सी) की स्थापना रा.कै.कोर अधिनियम, 1948 के अन्तर्गत हुई थी। यह अपनी स्थापना के 68 वर्ष पूरे कर चुका है। एनसीसी देश के युवाओं में प्रतिबद्धता का भाव, समर्पण आत्मानुशासन और नैतिक मूल्यों के साथ-साथ सर्वांगीण विकास के लिए अवसर प्रदान कराने का प्रयास करता है ताकि वे देश के जिम्मेदार नागरिक बन सकें। राष्ट्रीय कैडेट कोर का आदर्श वाक्य है 'एकता और अनुशासन'।

13.2 वर्ष 2010 में सरकार ने कैडेटों की संख्या में 2 लाख की वृद्धि कर 13 लाख से बढ़ाकर 15 लाख करने की स्वीकृति दी। यह योजना पांच चरणों में से प्रत्येक चरण में 40,000 कैडेट बढ़ाए जाने की है। इसके विस्तार के दो चरण पहले ही पूरे हो चुके हैं और 27 अक्तूबर, 2015 को तीसरे चरण में नई एन सी सी स्थापनाओं की संस्वीकृत नफरी 13,80,000 (दूसरे चरण की नई स्थापनाओं तक) कैडेट हो गई है। वर्तमान में एनसीसी पूरे देश में फैला हुआ है जिसमें 688 जिलों में से 683 जिले और 16,288 संस्थान शामिल हैं।

13.3 30 सितम्बर, 2016 तक मौजूदा नामांकित कैडेट नफरी का स्कन्ध-वार विवरण इस प्रकार है:-

सेवा	छात्र कैडेट	छात्रा कैडेट	कुल
सेना	8,05,363	3,40,258	11,45,621
नौसेना	56,967	10,233	67,200
वायुसेना	54,920	13,557	68,477
कुल	**9,17,250**	**3,64,048**	**12,81,298**

13.4 **तीसरे चरण में संस्वीकृत अतिरिक्त एन सी सी कैडेट नफरी की नई स्थापनाएं खड़ी करना:** 27 अक्तूबर, 2015 को तीसरे चरण में 01 ग्रुप मुख्यालय, 07 सेना यूनिटें तथा 07 नौसेना यूनिटें खड़ी करने की संस्वीकृति दे दी गई है। ये स्थापनाएं अभी प्रक्रियाधीन हैं। इन यूनिटों की स्थापना के बाद इनकी संख्या बढ़कर 814 हो जाएगी और इन यूनिटों के स्थापित होने पर कैडेटों की संख्या बढ़कर 14,20,000 हो जाएगी। इनका विवरण इस प्रकार है:-

एन सी सी यूनिट/ स्थापनाएं	तीसरा चरण
ग्रुप मुख्यालय	जामनगर (गुजरात)
आर्मी यूनिटें (छात्रा)	झांसी (यू पी)
आर्मी यूनिट	क्योंझर (ओडिशा)
	राजनंदन गांव (छत्तीसगढ़)
	नामची (सिक्किम)
	नादुमकंदम (केरल)
	पालनपुर (गुजरात)
आर एंड वी स्क्वाड्रन	आर एंड वी रेजिमेंट नवानिया (राजस्थान)
नौसेना यूनिटें	पोरबंदर (गुजरात)
	भुज (गुजरात)
	गांधीधाम (गुजरात)
	वेरावल (गुजरात)
	नवसारी (गुजरात)
	थाणे (महाराष्ट्र)

13.5 **एन सी सी छात्रा कैडेट बटालियन की स्थापना:** तीसरे चरण में एक छात्रा कैडेट बटालियन की झांसी (उ.प्र.) में स्थापना करने की संस्वीकृति मिल चुकी है। छात्रा कैडेट इस मिश्रित बटालियन में शामिल होने के लिए उत्साहित किया जा रहा है, जिसका लक्ष्य है छात्रा कैडेटों का वर्तमान प्रतिशत 28.41% से बढ़ाकर 30% करना। इस प्रकार सशस्त्र सेनाओं में और अधिक छात्रा कैडेट शामिल होने के लिए प्रेरित होंगी तथा एन सी सी प्रशिक्षण से अधिक से अधिक छात्रा कैडेट लाभान्वित हो सकेंगी।

एनसीसी कैडेटों का प्रशिक्षण

13.6 **सामान्य:** एनसीसी देश के युवाओं को तैयार कर सशक्त बनाने वाला एक प्रमुख प्रशिक्षण संस्थान है। बढ़ती हुई ऊर्जावान एनसीसी के पूर्व छात्रों की संख्या इसके अर्थपूर्ण अस्तित्व का प्रमाण है। बदलते समय के साथ प्रशिक्षण दर्शन की समीक्षा कर 01 अप्रैल, 2013 से नया प्रशिक्षण पाठ्यक्रम लागू किया गया है।

13.7 राष्ट्रीय कैडेट कोर में कैडेटों का प्रशिक्षण के महत्वपूर्ण पहलू इस प्रकार हैं :

(क) संस्थागत प्रशिक्षण
(ख) शिविर प्रशिक्षण
(ग) साहसिक प्रशिक्षण
(घ) समाज सेवा तथा सामुदायिक विकास कार्य
(ड.) युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम

13.8 **संस्थागत प्रशिक्षण:** इस प्रशिक्षण का उद्देश्य युवाओं को सैन्य जीवन शैली से परिचित कराना और उनमें अनुशासन, व्यक्तित्व विकास तथा व्यवस्थित जीवन मूल्यों का संचार करना है। सभी नामांकित कैडेटों को अपने-अपने स्कूलों/कालेजों में एन सी सी के प्रत्येक स्कंध के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम में यह प्रशिक्षण दिया जाता है।

13.9 **शिविर प्रशिक्षण:** शिविर प्रशिक्षण एन सी सी के पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण अंग है। ये शिविर कैडेटों में सहचर्य, टीम भावना, परिश्रम की महत्ता और आत्म-विश्वास का विकास करने में सहायक होते हैं और सबसे महत्वपूर्ण है- ष्एकता एवं अनुशासनष् की भावना का विकास करना। एन सी सी ने अपने कैडेटों के व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम के रूप में मानवीय मूल्यों पर कक्षाएं भी आरंभ की हैं। एन सी सी द्वारा संचालित विभिन्न प्रकार के शिविर इस प्रकार हैं :-

(क) **वार्षिक प्रशिक्षण शिविर (एटीसी):** वार्षिक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन राज्य निदेशालयों द्वारा यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि जूनियर डिविजन/विंग (जेडी/जे डब्ल्यू) कैडैट और सीनियर डिविजन/विंग के (एसडी/एसडब्ल्यू) कैडेट, जिनकी संख्या लगभग 7.5 लाख है, कम से कम वर्ष में ऐसे एक शिविर में अवश्य भाग लें। हर वर्ष ऐसे लगभग 1400 शिविर लगाए जाते हैं।

(ख) **राष्ट्रीय एकता शिविर (एन आई सी):** हर वर्ष कुल 37 राष्ट्रीय एकता शिविर (एनआईसी) आयोजित किए जाते हैं। सभी राज्यों तथा संघ शासित प्रदेशों से कुल 24,200 कैडेट इन राष्ट्रीय एकता शिविरों में भाग लेते हैं। चालू प्रशिक्षण वर्ष के दौरान अब तक देश के विभिन्न भागों में 36 राष्ट्रीय एकता शिविर आयोजित किए गए हैं। इसके अलावा निम्नलिखित स्थानों पर विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर आयोजित किए गए हैं-

(i) **विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर, (एस एन आई सी) श्रीनगर:** 25 मई से 05 जून, 2016 तक श्रीनगर में एक विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर का आयोजन किया गया। इस विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर में देश के सभी भागों से कुल 170 कैडेटों ने भाग लिया। महानिदेशक, रा.कै.कोर सहित वरिष्ठ सैन्य और सिविल अधिकारियों ने शिविर का दौरा किया।

(ii) **विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर पेडापुरम एस एन आई सी (काकीनाड़ा):** 10 से 21 अक्तूबर, 2016 के दौरान पेडापुरम में एक विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर का आयोजन किया गया। इसमें सभी राज्यों और संघ शासित प्रदेशों से 300 छात्र और छात्रा कैडेटों ने भाग लिया।

(iii) **विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर बड़ाबाग एस एन आई सी (जैसलमेर):** 15 अक्तूबर से 26 अक्तूबर, 2016 तक बड़ाबाग, जैसलमेर में एक विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर का आयोजन किया गया। पूरे भारत से 300 कैडेटों ने इस शिविर में भाग लिया।

(iv) **विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर उत्तर-पूर्वी क्षेत्र एस एन आई सी (एनईआर):** 04 जनवरी से 15 जनवरी, 2017 के दौरान दीमापुर (नागालैंड) में राष्ट्रीय स्तर पर एक विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर का आयोजन किया गया जिसमें पूरे भारत से 600 कैडेटों ने भाग लिया।

(v) **एसएनआई सी (पोर्ट ब्लेयर):**पोर्ट ब्लेयर में 09 फरवरी से 20 फरवरी, 2017 तक एस एन आई सी का आयोजन हुआ है जिसमें 180 कैडेटों ने भाग लिया।

(ग) **वायुसैनिक शिविर (वी आई सी):** हर वर्ष वायुसेना वरिष्ठ प्रभाग तथा वरिष्ठ स्कंध के कैडेटों के लिए 12 दिन की अवधि के लिए एक अखिल भारतीय वायुसैनिक शिविर (ए आई वी एस सी) का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष 15 से 26 अक्तूबर, 2016 तक इस शिविर का आयोजन राष्ट्रीय कैडेट कोर राजस्थान के तत्वाधान में बरकतुल्ला स्टेडियम, जोधपुर में किया गया। जिसमें (जम्मू-कश्मीर को छोड़कर) 16 राज्य निदेशालयों में वायु स्कंध स्क्वाड्रन के कुल 420 वरिष्ठ प्रभाग एवं 180 छात्राएं वरिष्ठ स्कंध कैडेटों ने भाग लिया।

(घ) **नौ सैनिक शिविर (एन एस सी):** यह शिविर भी नौसेना स्कंध के वरिष्ठ प्रभाग एवं वरिष्ठ स्कंध कैडेटों के लिए वर्ष में एक बार 12 दिन की अवधि के लिए आयोजित किया जाता है। इस वर्ष 06-17 अक्तूबर, 2016 तक कारवार में यह शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में सभी 17 राज्य निदेशालयों से आए कुल 590 कैडेटों (386 वरिष्ठ प्रभाग एवं 204 वरिष्ठ स्कंध) ने भाग लिया।

(च) **थल सैनिक शिविर (टीएससी):** परेड ग्राउंड, दिल्ली छावनी में हर र्व वरिष्ठ प्रभाग तथा वरिष्ठ स्कंध कैडेटों के लिए एक थल सैनिक शिविर (टी एस सी) का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष 19 सितम्बर से 30 सितंबर, 2016 तक इस शिविर का आयोजन किया गया। कुल 1360 कैडेटों ने इस शिविर में भाग लिया।

(छ) **नेतृत्व शिविर:** हर वर्ष अखिल भारतीय स्तर पर ये शिविर आयोजित किए जाते हैं। 06 उन्नत नेतृत्व शिविरों (एएलसी) का हर वर्ष आयोजन किया जाता है। इन शिविरों में 1800 कैडेटों ने भाग लिया।

(ज) **पर्वतारोहरण (रॉक क्लाइंबिंग) प्रशिक्षण शिविर:** कैडेटों को पर्वतारोहरण की प्राथमिक जानकारी देने और उनमें साहस की भावना का संचार करने के लिए प्रत्येक प्रशिक्षण वर्ष में 08 पर्वतारोहरण शिविर आयोजित किए जाते हैं। 1080 कैडेटों ने इन शिविरों में भाग लिया। इनमें से 04 शिविर ग्वालियर, मध्य प्रदेश में आयोजित किए गए थे और दूसरे 04 शिविर श्रीनगर (उत्तराखण्ड) में आयोजित किए गए थे।

(झ) **गणतन्त्र दिवस शिविर 2017:** दिल्ली में 01 जनवरी से 31 जनवरी, 2017 तक गणतंत्र दिवस शिविर-2017 का आयोजन किया गया। इस शिविर में देश भर से आए 2068 कैडेटों सहित उन 10 मित्र देशों के 111 कैडेटों ने भी भाग लिया जिनके साथ एनसीसी का युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम चल रहा है।

13.10 **गणतन्त्र दिवस परेड:** एनसीसी के दो मार्चिंग दस्तों तथा तीन बैंडों ने 26 जनवरी, 2017 को राजपथ पर गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया।

13.11 **अटैचमेंट प्रशिक्षण:** एन सी सी कैडेट सशस्त्र सेना यूनिटों से जुड़कर सैनिक जीवन का बहुत मूल्यवान प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करते हैं। इस वर्ष निम्नलिखित अटैचमेंट प्रशिक्षण आयोजित किए गए :-

(क) इस वर्ष 20,000 कैडेटों व 440 अधिकारियों ने नियमित सेना यूनिटों के साथ अटैचमेंट प्रशिक्षण में भाग लिया। महिला अधिकारी व 560 वरिष्ठ स्कंध के कैडेट इसमें शामिल हुए।

(ख) इस वर्ष 120 वरिष्ठ प्रभाग (एस डी) कैडेटों को भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून में दो सप्ताह के अटैचमेंट प्रशिक्षण के लिए अटैच किया गया।

(ग) 1000 वरिष्ठ स्कंध कैडेटों को विभिन्न सेना चिकित्सालयों में अटैच किया गया।

(घ) **वायु सेना अकादमी:** 16 राज्य रा.कै.को. निदेशालयों (जम्मू और कश्मीर को छोड़कर) से कुल 100 एन सी सी कैडेटों (76 वरिष्ठ प्रभाग तथा 24 वरिष्ठ स्कंध) ने जून और दिसम्बर, 2016 में 13 दिनों के लिए वायुसेना स्टेशन, डुंडीगल में अटैचमेंट प्रशिक्षण प्राप्त किया।

(च) **विभिन्न वायुसेना स्टेशन:** विभिन्न वायुसेना स्टेशन हर वर्ष वायुसेना स्कंध के 20 एसोसिएट एन सी सी अफसरों (ए एन ओ) तथा 200 कैडेटों (वरिष्ठ प्रभाग) को 14 दिन की अवधि के लिए विभिन्न वायुसेना स्टेशनों पर अटैच किए गए थे।

13.12 **माइक्रोलाइट उड़ान:** एयर विंग (वरिष्ठ प्रभाग/ वरिष्ठ स्कंध) के एनसीसी कैडेटों को हवाई अनुभव प्रदान करने के उद्देश्य से एनसीसी में माइक्रोलाइट उड़ान का आयोजन किया जाता है। इस समय देश के सभी राज्यों में 50 एनसीसी एयर स्क्वाड्रनों में माइक्रोलाइट उड़ान सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। अभी 110 नए माइक्रोलाइट एयरक्राफ्ट शामिल करने की प्रक्रिया जारी हैं। नए माइक्रोलाइटों को अक्तूबर, 2016 से शामिल करना शुरू किया गया है।

13.13 **एयर विंग ए एन आ के लिए कमीशन से पूर्व तथा पुनश्चर्या पाठ्यक्रम:** हर वर्ष एयर विंग के एसोशिएट एनसीसी अफसरों के लिए 8 सप्ताह की अवधि के 03 कमीशन पूर्व पाठ्यक्रम तथा 04-04 सप्ताह की अवधि के 03 पुनश्चर्या पाठ्यक्रम वायुसेना स्टेशन ताम्ब्रम में आयोजित किए जाते हैं।

13.14 **नौसेना पोत अटैचमेंट:** नौसेना स्कंध के 294 कैडेटों को मुम्बई में भारतीय नौसेना के जहाजों पर 12 दिन का समुद्री प्रशिक्षण दिया गया। इस दौरान इन कैडेटों को विभिन्न नौसेना विषयों का गहन प्रशिक्षण दिया गया और इन्हें समुद्र में नौ सेना अभ्यास अभ्यास देखने का भी अवसर मिला।

13.15 **विदेश समुद्री यात्रा:** 10 कैडेट और 01 पर्यवेक्षक अधिकारी ने नौ सेना पोतों पर सवार होकर 01 अक्तूबर से 21 नवंबर, 2016 तक पोर्ट ऑफ फुकेट (थाईलैंड), यांगोन (म्यांमार) और चित्तगांग (बांग्लादेश) की यात्रा की।

13.16 **नौसेना अकादमी अटैचमेंट प्रशिक्षण:** भारतीय नौसेना अकादमी, एजीमाला में 14 से 25 जनवरी, 2017 तक 170 वरिष्ठ स्कंध कैडि के लिए वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

13.17 **नौसेना स्कंध के लिए तकनीकी एन सी सी शिविर:** चौन्नई के इंजीनियरिंग कॉलेज के 75 वरिष्ठ प्रभाग और 25 वरिष्ठ स्कंध कैडेटों ने 12 अगस्त से 16 अगस्त 2016 तक वार्षिक तकनीकी प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया। कैडेटों को नौसेना इंजीनियरी स्थापनाओं आई एन एस वालसुरा, शिवाजी और डॉकयार्ड, मुंबई पर शिक्षण दौर के लिए ले जाया गया।

साहसिक प्रशिक्षण:

13.18 **चिल्का में अखिल भारतीय नौका दौड़ (सेलिंग रिगेटा):** सभी 17 एन सी सी निदेशालयों से 51 वरिष्ठ प्रभाग तथा 50 वरिष्ठ स्कंध कैडेटों ने 04-11 नवम्बर, 2016 तक आई एन एस चिल्का में आयोजित भारतीय एनसीसी नौका दौड़ प्रतियोगिता में भाग लिया।

13.19 **नौकायन अभियान:** नौकायन अभियान नौसेना प्रशिक्षण का एक रोचक अंग होता है। प्रत्येक एन सीसी निदेशालय 12 दिन के लिए न्यूनतम एक नौकायन आयोजित करता है जिसमें कुल 400 से 500 किलोमीटर दूरी तय की जाती है। इस अभियान मे प्रत्येक निदेशालय के 40 से 60 कैडेट भाग लेते हैं। इस नौकायन अभियान में कैडेटों को बोट पुलिंग और नौकायन का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। इसमें वे मौसम में परिवर्तन होने के कारण उत्पन्न खतरों का सामना करते हैं और उससे पार पाते हैं। वर्ष 2016-17 के दौरान विभिन्न एन सी सी निदेशालय ने ऐसे 12 अभियान आयोजित किए।

13.20 **स्कूबा डाइविंग:** भारतीय नौसेना डाइविंग दल के सहयोग से दिल्ली, कोच्ची, वैजाग, मुंबई, गोवा/ कारवार, चेन्नई/ पोर्ट ब्लेयर और कोलकाता में स्कूबा डाइविंग शिविर का आयोजन किया गया था जिसमें 100 एनसीसी कैडेटों ने भाग लिया।

13.21 **विंड सर्फिंग/क्याकिंग:** नौसेनाविंग के कैडेटों को विंड सर्फिंग और क्याकिंग का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

13.22 **पर्वतारोहण अभियान:** प्रति वर्ष राष्ट्रीय कैडेट कोर महानिदेशालय छात्रा और छात्र कैडेटों के लिए दो अभियान संचालित करता है। इस वर्ष सेना की 01 महिला अधिकारी एवं 01 छात्रा कैडेट अनुदेशक के साथ 09 छात्रा कैडेटों ने मई 2016 में माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की।

13.23 **ट्रैकिंग अभियान:** एनसीसी निदेशालयों द्वारा

वर्ष 2016 के दौरान कुल 28 ट्रेकिंग अभियान किए गए जिनमें 14000 कैडेटों ने भाग लिया।

13.24 **पैरा बेसिक पाठ्यक्रम:** वर्ष 2016 में पैरा ट्रेनिंग स्कूल, आगरा में आयोजित पैरा बेसिक कोर्स के लिए 40 छात्र और 40 छात्रा को नामित किया गया था।

13.25 **साइकिल एवं मोटर साइकिल रैली:** शांति, भाईचारा एवं राष्ट्रीय एकता का संदेश फैलाने तथा ग्रामीण लोगों को स्वास्थ्य, सामुदायिक विकास और सामाजिक बुराइयों को दूर करने की शिक्षा देने के लिए विभिन्न एन सी सी राज्य निदेशालयों द्वारा कई साइकिल एवं मोटर साइकिल रैलियां आयोजित की गई।

13.26 **मरुस्थल ऊंट यात्रा (डेजर्ट कैमल सफारी):** डैजर्ट कैमल सफारी प्रतिवर्ष राजस्थान निदेशालय द्व ारा जैसलमेर के रेगिस्तान मे आयोजित किया जाता है। वर्ष 2016 में 20 भारतीय एनसीसी कैडेटों के साथ 22 विदेशी कैडेटों (कजाकिस्तान 12 एवं सिंगापुर 10) ने डेजर्ट कैमल सफारी में भाग लिया।

13.27 **समुद्र के ऊपर उड़ान:** वर्ष 2016 में कैडेटों को नौसेना पोत पर भेजा गया था और 710 कैडेटों द्वारा भारतीय नौसेना के साथ 7 समुद्री (सी शार्टी) भरी गई।

युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम (वाई ई पी)

13.28 युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत विदेश दौरे: वर्ष 2016-17 में युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गज किए गए विदेश दौरे का विवरण इस प्रकार है:-

क्रम सं	देश	अधिकारी	कैडेट
(क)	सिंगापुर	4	20
(ख)	रूस	2	25
(ग)	श्रीलंका	5	18
(घ)	भूटान	2	10
(च)	बांग्लादेश	2	20
(छ)	वियतनाम	2	13
(ज)	मालदीव	1	4
(झ)	कजाकिस्तान	3	24
(ट)	नेपाल	2	12
	कुल	**23**	**146**

13.29 **युवा आदान प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत भारत में विदेशी (प्रतिनिधि मंडलों) द्वारा किए जाने वाले दौरे:** युवा आदान प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत भारत में विदेशी प्रतिनिधि मंडलों द्वारा निम्नलिखित दौरे किए गए:-

क्रम स0	देश	अधिकारी	कैडेट
(क)	सिंगापुर और कजाकिस्तान एन सी सी कैडेटों द्वारा डेजर्ट सफारी के लिए	4	22
(ख)	श्री लंका (शिवाजी ट्रेल ट्रैक)	2	8
(ग)	भूटान, कजाकिस्तान, बंगलादेश, सिंगापुर, नेपाल, श्रीलंका, वियतनाम, रूस, किर्गिस्तान और मालदीव से 10 विदेशी प्रतिनिधिमंडलों ने गणतंत्र दिवस शिविर (आरडीसी) 2017 मे भाग लिया	17	111
(घ)	भूटान, कजाकिस्तान, बंगलादेश, सिंगापुर, नेपाल, श्रीलंका, वियतनाम और रूस के विभागाध्यक्ष	7	-
	कुल	**30**	**141**

सामाजिक सेवा एवं सामुदायिक विकास

13.30 **सामान्य:** कैडेटों में समुदाय के लिए नि:स्वार्थ सेवा, परिश्रम की गरिमा, स्वयं सहायता का महत्व, पर्यावरण की रक्षा की आवश्यकता और समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान में सहायता करने की भावना पैदा करने के उद्देश्य से एनसीसी द्वारा समाज सेवा तथा

सामुदायिक विकास के कार्य किए जाते हैं। ये कार्य स्वच्छ भारत अभियान, प्रौढ़ शिक्षा, वृक्षारोपण, रक्तदान, वृद्धाश्रमों व अनाथालयों का दौरा करने, मलिन बस्तियों, ग्रामीण उत्थान एवं विभिन्न सामाजिक योजनाओं के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों के माध्यम से किए जाते हैं। एनसीसी कैडेटों ने जिन बड़ी गतिविधियाँ में भाग लिया उनका विवरण आगामी अनुच्छेदों में दिया गया है।

13.31 **वृक्षारोपण:** एनसीसी कैडेट पौधे लगाते हैं तथा बाद में संबंधित विभाग/कॉलेजों/स्कूलों और गांवों के साथ मिल कर उनकी देखभाल करते हैं। इस वर्ष पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण अभियान के अंतर्गत एनसीसी कैडेटों ने देश भर में 97,742 लाख पौधे लगाए।

13.32 **रक्तदान:** जब कभी सरकारी अस्पतालों/रेड क्रॉस को आवश्यकता होती है, एन सी सी कैडेट स्वेच्छा से रक्तदान करते रहे हैं। इस वर्ष वर्ष एनसीसी के 2,06,999 कैडेटों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया।

13.33 **वृद्धाश्रम:** 100 कैडेटों ने वृद्धाश्रमों को अपनी सेवाएं प्रदान की।

13.34 **एड्स जागरुकता कार्यक्रम:** एनसीसी कैडेट एड्स/एचआईवी के प्रति जागरुकता कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और वे देश भर में एड्स जागरुकता कार्यक्रम चला रहे हैं। विभिन्न शिविरों के दौरान एचआईवी/एड्स पर व्याख्यान तथा बातचीत के दौरा आयोजित किए जा रहे हैं । इस वर्ष 01 दिसंबर, 2016 को एड्स जागरुकता दिवस मनाया गया था जिसमें 17 निदेशालयों से 58,770 एनसीसी कैडेटों ने भाग लिया।

13.35 **दहेज विरोधी और कन्या-भ्रूण हत्या विरोधी शपथ:** पूरे देश में एन सी सी कैडेटों ने दहेज रोधी और कन्या-भ्रूण हत्या रोधी शपथ ली। रैलियों और जागरुकता कार्यक्रमों में लगभग 58,049 कैडेटों ने भाग लिया।

13.36 **नशा विरोधी रैली:** देश के प्रमुख नगरों एवं शहरों में नशा रोधी रैलियों का आयोजन किया गया जिसमें देश भर से लगभग 1,03,356 कैडेटों ने भाग लिया।

13.37 **पल्स पोलियो टीकाकरण:** एनसीसी कैडेटों ने राष्ट्रीय कार्यक्रम के अनुसार पूरे देश में सरकार द्वारा चलाए गए अनेक पोलियो उन्मूलन कार्यक्रमों में भाग लिया। 36,756 एनसीसी कैडेटों ने इस कार्यक्रम में सक्रियता से भाग लिया।

13.38 **कुष्ठ रोधी अभियान:** एन सी सी कैडेटों ने पूरे देश में कुष्ठ रोधी अभियानों का आयोजन किया तथा वे इस क्षेत्र में विभिन्न स्वयं सेवी/सरकारी संगठनों की सहायता कर रहे हैं।

13.39 **कैंसर जागरुकता कार्यक्रम:** 44,961 एन सी सी कैडेटों ने विभिन्न शहरों में आयोजित कैंसर जागरुकता कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

13.40 **तम्बाकू-रोधी अभियान:** 31 मई, 2016 को मनाए गए ष्तम्बाकू-रोधी दिवस (नो टोबेको डे)ष पर सभी निदेशालयों के लगभग 1,03,356 कैडेटों ने भाग लिया। इस दिन तंबाकू के कुप्रभावों के बारे में आम जनता में जागरुकता फैलाने के लिए सभी एनसीसी निदेशालयों में एनसीसी कैडेटों द्वारा विभिन्न रैलियों/स्ट्रीट नाटकों का आयोजन किया गया।

13.41 **राष्ट्रीय मतदाता दिवस:** 25 जनवरी, 2016 को मनाए गए राष्ट्रीय मतदाता दिवस में सभी एन सी सी निदेशालयों से लगभग 16053 एन सी सी कैडेटों ने सक्रियता से भाग लिया। इस दिन सभी राज्यों के एन सी सी निदेशालयों ने स्वस्थ प्रजातंत्र के लिए मतदान के महत्व को जनमानस तक पहुंचाने के लिए कई रैली/ नुक्कड़ नाटक आदि का प्रदर्शन किया।

13.42 **राष्ट्रीय युवा दिवस (12 जनवरी, 2017):** लगभग 3 लाख कैडेटों ने 18 लाख युवाओं/नागरिकों में डिजिटल भुगतान के बारे में जागरुकता प्रदान की ।

13.43 जनसामान्य में विभिन्न सामाजिक मुद्दों के प्रति

जागरुकता फैलाने के लिए एन सी सी ने सात दिनों का यू एन आब्जरवांस का पालन किया। ये अभी एन सी सी के नियमित सामाजिक सेवा और सामुदायिक विकास गतिविधियों में शामिल हैं और निम्नवत हैं :-

क्रम सं.	कार्यक्रम	दिनांक	भाग लेने वाले कैडेटों की संख्या
1.	विश्व वन दिवस	21 मार्च, 2016	3,25,556
2.	विश्व स्वास्थ्य दिवस	07 अप्रैल, 2016	लगभग 25,000
3.	पृथ्वी दिवस	22 अप्रैल, 2016	36,840
4.	तम्बाकू रोधी दिवस	31 मई, 2016	1,03,356
5.	ड्रग रोधी अंतर्राष्ट्रीय दिवस	26 जून, 2016	1,03,356
6.	हृदय रोग दिवस	29 सितम्बर, 2016	26,000
7.	विश्व एड्स दिवस	01 दिसम्बर, 2016	58,778

13.44 **गांवों तथा मलिन बस्तियों को गोद लेना:** एन सी सी ने देश के विभिन्न भागों में गांवों व मलिन बस्तियों के उत्थान और सर्वांगीण विकास के लिए 1215 गांवों/मलिन बस्तियों को गोद लिया है। इससे एनसीसी कैडेटों को समाज के विभिन्न वर्गों और गांवों में रहने वाले लोगों के साथ जुड़ने का अवसर भी मिलता है।

13.45 **स्वच्छ भारत अभियान:** स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत 8,18,889 एनसीसी कैडेटों ने 'स्वच्छ अभियान' एव साफ-सफाई, जागरुकता अभियान में भाग या। 01 से 15 अगस्त, 2016 स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए एन सी सी को प्रधानमंत्री द्वारा 'स्वच्छता पुरस्कार' प्रदान किया गया।

13.46 **राष्ट्रीय स्तर पर खेल गतिविधियां:** सभी एनसीसी निदेशालयों से एनसीसी कैडेट जिन राष्ट्रीय स्तर के खेल गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करते हैं, वे निम्नलिखित हैं:-

(क) **एनसीसी राष्ट्रीय खेल:** एनसीसी के राष्ट्रीय खेल 15 अक्तूबर से 26 अक्तूबर, 2016 तक नई दिल्ली में आयोजित किए गए एनसीसी राष्ट्रीय खेलों के एक भाग के रूप में 22 अगस्त से 02 सितम्बर, 2016 तक आसनसोल में निशानेबाजी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कुल 2108 कैडेटों ने फुटबॉल, हॉकी, वालीबॉल, हैडबाल, खो-खो, बास्केट बाल और निशानेबाजी प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

(ख) **जवाहर लाल नेहरु हॉकी कप टूर्नामेंट:** एनसीसी की कनिष्ठ छात्र, कनिष्ठ छात्रा और उप कनिष्ठ छात्र श्रेणियों की टीमों ने प्रतिष्ठित जवाहर लाल नेहरु हॉकी टूर्नामेंट-2016 में भाग लिया, जहां ये टीमें देश की कुल सर्वश्रेष्ठ टीमें देश की कुल सर्वश्रेष्ठ टीमों और कुछ विदेशी टीमों के साथ खेलीं।

(ग) **सुब्रतो कप फुटबॉल टूर्नामेंट:** एनसीसी की कनिष्ठ छात्र, कनिष्ठ छात्रा और उप कनिष्ठ छात्र टीमों ने प्रतिष्ठित सुब्रतों कप फुटबॉल टूर्नामेंट- 2016 में भाग लिया, जहां ये टीमें देश की कुछ सर्वश्रेष्ठ टीमों और कुछ विदेशी टीमों और कुछ विदेशी टीमों के साथ खेलीं । इसमें उत्तर-पूर्व निदेशालय का कनिष्ठ छात्रा दल एवं ओडिशा निदेशालय का उप कनिष्ठ छात्र दल सेमी फाइनल तक पहुंचे।

(घ) **अखिल भारतीय जीवी मावलंकर निशानेबाजी प्रतियोगिता:** गोली चालन (फायरिंग) एनसीसी की प्रशिक्षण गतिविधियों में एक प्रमुख गतिविधि हैं। एनसीसी खेल गतिविधियों में निशानेबाजी का विशेष रोचक स्थान रखती है। चयनित एनसीसी कैडेटों ने राष्ट्रीय रायफल एसोशिएसन (एनआरएआई) द्वारा आयोजित अखिल भारतीय जीवी मावलंकर निशानेबाजी प्रतियोगिता (एआईजीवीएमएससी) में भाग लिया। एनसीसी निशानेबाजी टीमें पिछले कई वर्षों से इस खेल में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। इस वर्ष भी एनसीसी निशानेबाजी टीम ने इस प्रतियोगिता में 09 स्वर्ण, 06 रजत और 03 कांस्य पदक जीते।

(च) **राष्ट्रीय निशानेबाजी चौंपियन प्रतियोगिता:** प्रतिवर्ष एनसीसी निशानेबाजी टीमें प्रतिष्ठित राष्ट्रीय निशानेबाजी चौंपियन प्रतियोगिता (एन सी सी) में भाग लेती है । इस वर्ष 45 एनसीसी निशानेबाज इस खेल के लिए चयनित हुए और निशानबाजी-दल ने 03 स्वर्ण, 02 रजत एवं 03 कांस्य पदक जीते।

NCC GIRLS EVEREST EXPEDITION
MAR – JUN 2016

14

विदेशों के साथ रक्षा सहयोग

अध्याय 14

विदेशों के साथ रक्षा सहयोग

14.1 रक्षा सहयोग में, रक्षा मंत्रालय, सशस्त्र सेनाओं और तटरक्षक बलों द्वारा विदेशी पक्ष के साथ कार्यकलापों में पहलों की संख्या को शामिल किया जाता है। इन पहलों में उच्च स्तरीय दौरे, प्रशिक्षण और विनिमय से क्षमता निर्माण, सैन्य-दर सैन्य सहयोग, संयुक्त अभ्यास, रक्षा उद्यम सहयोग के साथ-साथ अनुसंधान और विकास में सहयोग सम्मिलित हैं। यह वर्ष हमारे विस्तारित पड़ोसी देशों, अफ्रीका और हिन्द महासागर के साथ-साथ बड़ी शक्तियों के साथ चारों ओर भारत की रक्षा कूटनीतिक सहयोग की तीव्रता का गवाह रहा है।

14.2 **अफगानिस्तान** के साथ बड़े ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के साथ-साथ चल रहे राजनैतिक और आर्थिक सहयोग के आधार पर सहयोग को और सतत् रूप से विस्तारित किया गया है। भारत अफगानिस्तान में सुरक्षा स्थिति के स्थायित्व की दिशा में एएनए कार्मिकों को चिकित्सा सहायता के प्रावधानों के द्वारा और उसके साथ-साथ अफगान राष्ट्रीय सेना (एएनए) की सहायता द्वारा सतत् प्रयासरत है। अफगानिस्तान के चीफ ऑफ जनरल स्टाफ जनरल कदाम शाह शहिम ने 30 अगस्त से 2 सितंबर, 2016 तक भारत का दौरा किया था। भारत की ओर से एक बड़ा तकनीकी प्रतिनिधि मण्डल भी इस वर्ष अफगानिस्तान का दौरा करेगा।

14.3 जनरल कैनड़िड़ो पेरीरा डॉस सैन्टोस वैन-ड्यूनेम अंगोलियन मंत्री के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल ने 2-7 मई, 2016 के दौरान भारत का दौरा किया। वार्तालाप में भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण और पुनर्वास के साथ-साथ सीमा सुरक्षा सहयोग की संभावना से संबंधित पहलुओं को भी शामिल किया गया था।

14.4 इस वर्ष में भारत के **आस्ट्रेलिया** के साथ रक्षा सहयोग में अभूतपूर्व वृद्धि हुई थी। डीआरडीओ के अध्यक्ष और सचिव (रक्षा अनुसंधान और विकास) ने 18-21 अप्रैल, 2016 के दौरान आस्ट्रेलिया का दौरा किया था। अपर सचिव स्तर के 5वें स्तर की रक्षा नीति वार्तालाप 28 जून, 2016 को दिल्ली में आयोजित की गई थी। आस्ट्रेलियाई प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व आस्ट्रेलिया रक्षा मंत्रालय के उप-सचिव (सामरिक नीति और आसूचना) द्वारा किया गया। आस्ट्रेलिया के साथ वायु स्टाफ से वायु स्टाफ स्तर की वार्ता 26-28 जुलाई, 2016 को भारत में और नौसेना स्टाफ से नौसेना स्टाफ स्तर की वार्ता 10-12 अगस्त, 2016 को भारत में आयोजित की गई थी। भारत ने 12-22 सितंबर, 2016 को रॉयल आस्ट्रेलियन नौसेना द्वारा आयोजित केएकेएडीयू-16 एक बहुपक्षीय द्विवार्षिक नौसेना अभ्यास के साथ-साथ रॉयल आस्ट्रेलियन वायु सेना द्वारा आयोजित पिच ब्लैक-16, एक बहुपक्षीय द्विवार्षिक प्रमुख एयरोस्पेस संक्रियात्मक अभ्यास में भाग लिया था। भारतीय-आस्ट्रेलिया रक्षा अनुसंधान और सामग्री कार्यकारी समूह की प्रथम बैठक 27-28 अक्तूबर, 2016 को भारत में आयोजित की गई।

14.5 **बांग्लादेश** के साथ रक्षा सहयोग इस वर्ष 30 नवम्बर, से 1 दिसम्बर, 2016 तक रक्षा मंत्री की बांग्लादेश की एक सफल दौरे के साथ नई ऊंचाईयों पर पहुंच गया। यह भारतीय रक्षा मंत्री की बांग्लादेश

की प्रथम द्विपक्षीय यात्रा थी। दोनों पक्ष अपनी सशस्त्र सेनाओं के बीच प्रशिक्षण में सहयोग, रक्षा उद्यम के आदान-प्रदान और अपने संस्थागत रक्षा विनियोजन के द्वारा और कार्य क्षेत्र में वृद्धि पर सहमत हुए हैं। बांग्लादेश के द्वारा सशस्त्र सेना डिविजन (एएफडी) के प्रधान स्टाफ आफिसर (पीएसओ) के नेतृत्व में एक चार सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने 28-30 मार्च, 2016 तक गोवा में आयोजित डिफेंस एकस्पो में भाग लिया। बांग्लादेश की आजादी की लड़ाई में भारतीय सशत्र सेनाओं के जवानों और अधिकारियों ने भाग लिया और जिन्होंने सर्वोच्च बलिदान दिया, के सम्मान के भाग के रूप में, बांग्लादेश द्वारा दो भारतीय रक्षा कार्मिकों को "फ्रेन्ड्स ऑफ लिबरेशन वार ऑनर" से नवाजा गया। बांग्लादेश सरकार ने 1650 से अधिक सैनिकों और अधिकारियों जिन्होंने लिबरेशन वार में भाग लिया था को सम्मानित करने का प्रस्ताव दिया है। भारत ने भी बांग्लादेश में लिबरेशन वार संग्राहलय हेतु स्मरणीय तथ्यों की आपूर्ति की है। दो भारतीय तटरक्षक पोतों ने भी पहली बार सितंबर, 2016 में प्रोटोकाल दौरे के रूप में बांग्लादेश का दौरा किया। बांग्लादेश में 14-19 दिसंबर, 2016 में बांग्लादेश के विजय दिवस / विक्टरी डे पर एक भूतपूर्व युद्ध सैनिकों की अन्योन्य क्रिया आयोजित की गई थी। 'सम्प्रीति' संयुक्त अभ्यास के छठे दौर का आयोजन 6-20 नवम्बर, 2016 में बांग्लादेश में आयोजित किया गया। बांग्लादेश के एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मण्डल ने 4-10 दिसंबर, 2016 तक भारतीय रक्षा उद्यमों और डीआरडीओ का दौरा किया।

14.6 भारत-**भूटान** संबंध आपसी विश्वास और समझदारी का आदर्श उदाहरण है। कुछ वर्षों के दौरान भूटान के साथ द्विपक्षीय संबंधों में रक्षा के क्षेत्र में सहयोग एक महत्वपूर्ण के रूप में प्रकट हुआ है। रक्षा के क्षेत्र में सहयोग में सतत् रूप से विस्तारित हो रहा है , जिसमें भारतीय रक्षा प्रशिक्षण संस्थानों में भूटान के सशस्त्र बल कार्मिकों को प्रशिक्षण देना शामिल है।

14.7 18-20 अप्रैल, 2016 के दौरान रक्षा मंत्री ने **चीन** का प्रदत द्विपक्षीय दौरा किया और चीनी नेतृत्व के साथ द्विपक्षीय सहयोग पर बड़े स्तर पर वार्ताएं की गई। भारत और चीन के बीच 8वीं वार्षिक रक्षा और सुरक्षा वार्ता 8 नवम्बर, 2016 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। भारतीय पक्ष की ओर से रक्षा सचिव ने नेतृत्व किया। और चीनी प्रतिनिधि-मण्डल का नेतृत्व एडमिरल सुन जियांगु, चीन के केन्द्रीय सैन्य कमीशन के संयुक्त स्टाफ के उप-चीफ ऑफ स्टाफ के द्वारा किया गया था। दोनों पक्षों ने सीमा पर शांति और अमन बनाए रखने की महत्ता को प्राधिकृत किया और विभिन्न स्तरों पर लगातार आत्मविश्वास बढ़ाने वाले मानकों (सीबीएम) को बनाए रखने और उनके आदान-प्रदान पर सहमति प्रकट की। 6वें स्तर का द्विपक्षीय संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण अभ्यास "हैण्ड-इन-हैण्ड" 15-27 नवम्बर, 2016 के दौरान भारत में आयोजित किया गया था। पीएलए पश्चिमी थियेटर कमान के कमांडर जनरल झाओ जोंग्की ने 8-11 दिसंबर, 2016 तक भारत का दौरा किया। वर्ष भर विभिन्न प्रकार के कार्यात्मक आदान-प्रदान जारी रहें हैं। भारतीय प्रतिनिधिमण्डल ने चीन में झुहाई वायु प्रदर्शनी में भाग लिया और चीनी प्रतिनिधि मण्डल ने फरवरी, 2017 में बंगलुरू में एयरो इंडिया में भाग लिया।

14.8 5वीं भारत-**चैक गणराज्य** रक्षा समिति के बैठक में भाग लेने हेतु महानिदेशक (अधिग्रहण) के नेतृत्व में 14-15 नवम्बर, 2016 को चैक गणराज्य का दौरा किया और द्विपक्षीय सहयोग के आगे के विकास के लिए विभिन्न क्षेत्रों की पहचान की। सितंबर, 2016 में सेनाध्यक्ष ने चैक गणराज्य का दौरा किया।

14.9 **मिश्र** के साथ संबंध एक नियमित तीव्रीकरण का एक उदाहरण है। मिश्र के साथ अपर सचिव स्तरीय 6ठी संयुक्त रक्षा समिति (जेडीसी)की बैठक का आयोजन 27 अप्रैल, 2016 को नई दिल्ली में किया गया। मिश्र राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के एक प्रतिनिधि मण्डल ने भारत का दौरा किया था। अधिकारियों हेतु प्रशिक्षण के आदान-प्रदान

सहित कार्यकारिका स्तरीय अंतरक्रिया में विस्तार किया गया था।

14.10 भारत और **फ्रांस** रक्षा क्षेत्र में संतुलित और आपसी लाभकारी साझेदारी निर्मित करने में सतत् रूप से प्रयासरत् है। इसके निर्माण के रूप में वर्ष 2016 कई बड़े दौरों और गणतंत्र दिवस समारोहों में फ्रांस की सैन्य टुकड़ी की भागीदारी इसकी गवाह बनी और कई परिणाम प्राप्त हुए। रक्षा मंत्री य्वेस ली डेरियन 23-24 सितंबर, 2016 के दौरान भारत दौरे पर आए। इस दौरे के दौरान राफेल विमान की अधिप्राप्ति हेतु एक अंतर-सरकारी समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। द्विपक्षीय सैन्य अभ्यास "एक्स-शक्ति" जनवरी, 2016 में भारत में आयोजित किया गया। रक्षा सचिव द्वारा सह-अध्यक्षित रक्षा सहयोग पर उच्च समिति (एचसीडीसी) की 16वीं बैठक 9-10 मार्च, 2016 को नई दिल्ली में आयोजित की गई थी।

14.11 भारत-**जर्मनी** की उच्च रक्षा समिति (एचड़ीसी), की आठवीं बैठक रक्षा सचिव द्वारा सह-अध्यक्षित 14-15 जून, 2016 को बर्लिन में आयोजित की गई और दोनों पक्ष सहयोग को विस्तारित करने के विभिन्न पहलुओं पर सहमत हुए। प्रशिक्षण और रक्षा औद्योगिक पहलुओं को शामिल करते हुए कार्यकारी स्तर के प्रतिनिधि मण्डलों का आदान-प्रदान किया गया था। एक मजबूत रक्षा औद्योगिकीय समझौते हेतु एक समर्थ रूप-रेखा पर दोनों पक्षों की लगातार वार्ताएं चल रही है।

14.12 दिसंबर, 2016 में **इण्डोनेशिया** के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान सामने आए परिणामों और समझौते के आधार पर भारत के इण्डोनेशिया के साथ रक्षा सहयोगों का प्रोत्साहन मिला है। 5वीं भारत-इण्डोनेशिया संयुक्त रक्षा सहयोग समिति (जेड़ीसीसी) की 17-18 जनवरी, 2017 को आयोजित बैठक में रक्षा सचिव की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधिमण्डल ने इण्डोनेशिया का दौरा किया, जिसमें द्विपक्षीय रक्षा सहयोग हेतु विस्तारित एजेंडे को अंतिम रूप दिया गया। 10-23 मार्च, 2016 को इन्डोनेशिया में प्लाटून स्तरीय एक द्विपक्षीय संयुक्त अभ्यास "गरूड़-शक्ति-2016" का आयोजन किया गया था। ये भविष्य में इस अभ्यास को कंपनी स्तर तक विस्तारित करने पर सहमत हुए। आईएनएस सुमेधा ने एकीकृत चेतकानंद पी-81 एमपीए ने अप्रैल, 2016 में इंडोनेशिया द्वारा आयोजित बहुपक्षीय अभ्यास कोमोड़ो-2016 में भाग लिया। इंडोनेशिया ने फरवरी, 2016 में अंतर्राष्ट्रीय फ्लीट रिव्यू (आईएफआर) में भी भाग लिया। 24-26 अगस्त, 2016 को इण्डोनेशिया में 5वीं सेना-से-सेना स्टाफ वार्ता आयोजित की गई थी। 10-28 अक्तूबर, 2016 के दौरान भारत और इण्डोनेशिया की नौसेनाओं को भी समन्व्य निगरानी (कोरपेट) के 28वें चक्र का आयोजन किया गया था।

14.13 **इजराइल** के साथ रक्षा संबंध और मजबूत हुए है। रक्षा सचिवों द्वारा सह-अध्यक्षित, इजराइल के साथ रक्षा सहयोग पर संयुक्त कार्यकारी समूह की 12वीं बैठक 13 जुलाई, 2016 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। बैठक से भविष्य में आदान-प्रदान हेतु एक रोड मेप की रूपरेखा तैयार करने और सहयोग के क्षेत्रों की पहचान करने में सहायता मिलेगी। अप्रैल, 2016 में 9वीं भारत-इजराइल सेना स्टाफ वार्ता (एएएसटी) नई दिल्ली में नियोजित की गई। दिसंबर, 2016 में 9वीं भारत-इजराइल वायु सेना स्टाफ वार्ता इजराइल में आयोजित की गई।

14.14 भारत के **जापान** के साथ अच्छे और दोस्ताना संबंध है। द्विपक्षीय संबंधों में रक्षा सहयोग का एक महत्वपूर्ण पहलू है। जून, 2016 में सिंगापुर में संगरिला वार्ता के पहलुओं पर जापान के रक्षा मंत्री मेजर जनरल नाकातानी के साथ रक्षा मंत्री की एक द्विपक्षीय बैठक आयोजित की गई। मंत्री नाकातानी ने नियमित रक्षा मंत्रालयी आदान-प्रदान के एक भाग के रूप में 14 जुलाई, 2016 को भारत की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान रक्षा साझेदारी की सीमाओं को मजबूती प्रदान करने और चालू विस्तार को दर्शाते हुए एक संयुक्त बयान जारी किया गया। 16-18 फरवरी, 2016 के दौरान जापान में

वायु से वायु स्टाफ वार्ता प्रारंभ की गई। 10-17 जून, 2016 तक जापान के तट पर अमेरिका-भारत-जापान के बीच एक त्रि-पक्षीय अभ्यास मालाबार अभ्यास-16 का आयोजन किया गया। भविष्य में त्रिपक्षीय अभ्यास आयोजित किए जाने का निर्णय लिया। जापान में 23-25 नवम्बर, के दौरान चौथी सेना-से-सेना स्टाफ वार्ता आयोजित की गई थी। 29-31 मार्च, 2016 के दौरान जापान में छठी नौसेना-से-नौसेना स्टाफ वार्ता का आयोजन किया गया था। 17-20 अगस्त, 2016 को रक्षा उपस्कर और प्रौद्योगिकी सहयोग पर द्वितीय भारत-जापान समिति की बैठक नई दिल्ली में आयोजित की गई थी।

14.15 **कजाखस्तान** के साथ सहयोग काफी प्रगतिशील रहे हैं। कजाखस्तान में 2016 से प्रारंभ करते हुए एक वार्षिक घटना के रूप में 3-17 सितंबर, 2016 के दौरान आतंकवाद रोधी पर आधारित "प्रबल दस्तियाक" संयुक्त सैन्य अभ्यास आयोजित किया गया था। 2-5 जून, 2016 के दौरान 3 भारतीय कंपनियों ने काडेक्स-2016 में भाग लिया। 28 जुलाई से 10 अगस्त, 2016 तक गरूड़ के 11 सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने 'अंतर्राष्ट्रीय सेना गेम्स 2016 स्नीपर लाईन' में भाग लिया था। 26 सितंबर से अक्तूबर, 2016 के दौरान युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम के दौरान एनसीसी प्रतिनिधि मण्डल जिसमें 2 अधिकारी और 12 कैडेट शामिल हैं ने कजाखस्तान का दौरा किया।

14.16 **केन्या** के साथ रक्षा सहयोग प्रधानमंत्री की 11 जुलाई, 2016 को केन्या यात्रा के दौरान रक्षा के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित होने के साथ और मजबूत हुए। दोनों देश समझौता ज्ञापन की रूपरेखा के अंदर इसे विस्तारित करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।

14.17 भारत और क्रिगीस्तान रक्षा संबंधों की ओर सतत् रूप से कार्यरत है। मार्च और अप्रैल, 2016 के दौरान भारत में तीसरा संयुक्त सैन्य अभ्यास एक्स खंजर-III का आयोजन किया गया था। दिसंबर, 2016 में क्रिगीस्तान के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान एनसीसी पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे।

14.18 भारत और **मालदीव** रक्षा सहयोग के विस्तृत-क्षेत्र को साझा करते है। 11 अप्रैल, 2016 को मालदीव के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान रक्षा सहयोग हेतु एक द्विपक्षीय एक्शन प्लान पर हस्ताक्षर किए गए थे। जुलाई, 2016 में रक्षा सचिव ने रक्षा सहयोग के एक वृहत एजेंडा पर चर्चा और वार्षिक रक्षा वार्ता के उद्घाटन हेतु मालदीव की यात्रा की थी। मालदीव के साथ नौसेना से नौसेना स्टाफ वार्ता मार्च, 2016 में मालदीव में आयोजित की गई। भारत मालदीव में लगातार चिकित्सा कैंपों का आयोजन करता रहा है। क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण हमेशा से साझेदारी का एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है।

14.19 भारत और **मॉरीशस** चल रहे रक्षा और सुरक्षा मामलों में सहयोग सहित एतिहासिक घनिष्ठ संबंधों को साझा करते है। रक्षा मंत्री की दिसंबर, 2016 में मॉरीशस की यात्रा के दौरान रक्षा सहयोग को आगे मजबूती प्रदान करने के लिए गहन चर्चा की गई। रक्षा मंत्री गोवा शिपयार्ड द्वारा निर्मित एमसीजीएस गार्डियन को शामिल करने के समारोह में भी शामिल हुए, उन्हें दो चेतक हेलिकॉप्टर भी उनको सौंपे गए। इससे पूर्व जुलाई, 2016 में भारत ने मॉरीशस समुद्री निगरानी क्षमता में वृद्धि करने के लिए मॉरीशस सरकार को एक डार्नियर विमान की आपूर्ति की। भारतीय समुद्री शिखर सम्मेलन में भाग लेने हेतु अप्रैल 2016 में मॉरीशस गणराज्य की सरकार के समुद्री अर्थव्यवस्था, समुद्री स्त्रोत, मत्स्य पोत और बाहरी द्वीप समूह संबंधी मंत्री ने भारत की यात्रा की।

14.20 **मंगोलिया** के साथ रक्षा सहयोग में लगातार अच्छी प्रगति हो रही है। 25 अप्रैल, से 08 मई, 2016 के दौरान मंगोलिया में द्विपक्षीय सैन्य अभ्यास एक्स-नोमाडिक एलिफैन्ट (11वां सत्र) का आयोजन किया गया था। भारत ने जून, 2016 में मंगोलिया में वार्षिक रूप से आयोजित की जाने वाली बहु राष्ट्रीय अभ्यास खान क्यूऐस्ट में भाग लिया। 14 दिसंबर, 2016 को 8वीं भारत मंगोलिया संयुक्त कार्यकारी समूह (जेडब्ल्यूजी) की बैठक का आयोजन नई दिल्ली में

किया गया जिसमें द्विपक्षीय रक्षा सहयोग को विस्तारित करने वाले कार्यकलापों पर सहमति हुई।

14.21 **मोजांबिक** के साथ रक्षा संबंधं को 24-25 जून, 2016 में मापूतों में आयोजित भारत-मोजाबिंक संयुक्त रक्षा कार्यकारी समूह की तीसरी बैठक में और सुदृढ़ता प्रदान की गई। इस बैठक से समुद्री सुरक्षा पर सहयोग के साथ-साथ प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण सहित आपसी हित के विभिन्न क्षेत्रों की पहचान के द्वारा दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को प्रोत्साहन की आवश्यकता को बल मिलेगा।

14.22 **म्यांमार** के साथ रक्षा संबंधों ने लगातार प्रगति हुई है। 17-21 अक्तूबर, 2016 को म्यांमार के साथ क्षेत्रीय सीमा समिति की 9वीं बैठक इम्फाल (मंत्रीपुखरी) में आयोजित की गई। 5-7 जनवरी, 2017 को दूसरी सेना से सेना स्टाफ वार्ता और 18-20 जनवरी, 2017 को दूसरी वायु सेना से वायु सेना स्टाफ वार्ता म्यांमार में आयोजित की गई। रक्षा उद्यमों पर द्विपक्षीय समझौते से सैन्य बलों के बीच विस्तृत वार्ता से एक दूसरे के साथ संबंध और विकसित हुए।

14.23 भारत और **नेपाल** एतिहासिक और सांस्कृतिक लिंक के आधार पर अपने घनिष्ठ संबंधों को साझा करते हैं। भारत लगातार अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा उनके रक्षा बलों की क्षमता निर्माण हेतु नेपाल की सहायता में प्रयासरत् रहा है। फरवरी, 2016 में नेपाल के सेना प्रमुख ने भारत की यात्रा की और 11 से 14 नवम्बर, 2016 के दौरान भारत के सेनाध्यक्ष ने नेपाल की यात्रा की।

14.24 रक्षा संबंधों को और मजबूती प्रदान करने के लिए मई, 2016 में रक्षा मंत्री ने **ओमान** का दौरा किया। उनकी इस यात्रा के दौरान सैन्य सहयोग, समुद्री मुद्दों, विमान सुरक्षा आसूचना का आदान-प्रदान और समुद्र में अपराध की रोकथाम पर द्विपक्षीय समझौता ज्ञापनों / प्रोटोकाल पर हस्ताक्षर किए गए। जनवरी, 2016 में गोवा में 10वें दौर के संयुक्त नौसेना अभ्यास "नसीम अल-बहार" का आयोजन किया गया। 21 से 31 अगस्त, 2016 तक ओमानी रक्षा प्रतिनिधि मण्डल ने भारत का दौरा किया। प्रतिनिधि मण्डल ने विभिन्न डीपीएसयू और निजी उद्यमों का दौरा किया। ओमान के रॉयल सेना प्रमुख ने अक्तूबर, 2016 में भारत का दौरा किया।

14.25 **पुर्तगाल** के साथ हमारे मित्रवत् द्विपक्षीय संबंध है और जनवरी, 2017 पुर्तगाल के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा के दौरान रक्षा सहयोग पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर द्वारा इसे और विस्तारित किया गया।

14.26 भारत और **रूस** रक्षा संबंध पारस्परिक विश्वास और समझौते पर आधारित हमारी विशेष एवं प्राधिकृत भागीदारी को साझा करते हैं। रूस भारत को रक्षा उपस्करों का महत्वपूर्ण आपूर्तिकर्ता रहा है। यह मात्र इकलौता ऐसा देश है जिसके साथ भारत ने रक्षा मंत्री के स्तर पर सैन्य तकनीकी सहयोग पर भारत-रूस अंतर-सरकारी आयोग तथा एक संस्थागत वार्षिक रक्षा सहयोग तंत्र की स्थापना की है। 26 अक्तूबर, 2016 को नई दिल्ली में आईआरआईजीसी-एमटीसी के सफल आयोजन के साथ-साथ इसी महीने में गोवा में वार्षिक शिखर सम्मेलन के दौरान रक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण समझौते जिनमें एस-400 वायु रक्षा प्रणाली और जलपोतों की आपूर्ति हेतु अंतिम रूप देने के साथ यह वर्ष रक्षा सहयोग में बड़ी वृद्धि का गवाह बना। मास्को अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा सम्मेलन में भाग लेने हेतु रक्षा राज्य मंत्री ने 26-28 अप्रैल, 2016 तक रूस का दौरा किया। रक्षा सचिव द्वारा सह-अध्यक्षित भारत-रूस उच्च स्तरीय मॉनीटरिंग समिति की बैठक 6 जुलाई, 2016 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। अगस्त, 2016 में रूस में आयोजित सैन्य खेलों में भारतीय सेना ने भाग लिया। सितंबर-अक्तूबर, 2016 में रूस में भारत और रूस ने संयुक्त सैन्य अभ्यास इंदिरा का आयोजन किया गया। दिसंबर, 2016 में भारत में संयुक्त सैन्य अभ्यास इंदिरा का आयोजन किया गया।

जून, 2016 में उप सेना अध्यक्ष ने और अक्तूबर, 2016 में वायुसेनाध्यक्ष ने रूस का दौरा किया।

14.27 24-25 जुलाई, 2016 को रियाध में रक्षा सहयोग पर भारत-**सउदी अरब** संयुक्त समिति की दूसरी बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में रक्षा उद्यमों में प्रशिक्षण और सहयोग, तकनीकी आदान-प्रदान सहित दोनों देशों के बीच रक्षा समझौतों के विस्तार के मानकों के विस्तार पर सहमति हुई और रक्षा सहयोग में आपसी हितों के क्षेत्रों की पहचान करने में सहायता मिली।

14.28 भारत और **सेशल्स** विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग और अन्य आदान-प्रदानों के साथ उच्च स्तरीय दौरो द्वारा चिन्हित घनिष्ठ संबंधों को साझा करते हैं। मार्च, 2016 में रक्षा राज्य मंत्री ने सेशल्स में तटीय निगरानी रेडार प्रणाली (सीएसआरएस) के उद्घाटन समारोह में भाग लिया। 29 जून, 2016 को सेशल्स के राष्ट्रीय दिवस पर बैण्ड के साथ भारतीय नौसेना के एक पोत को तैनात किया गया।

14.29 भारत और **सिंगापुर** के बीच रक्षा संबंधों में हाल के वर्षों में निरंतर वृद्धि हुई है। 2-4 जून, 2016 को प्रथम द्विपक्षीय रक्षा मंत्रालयी वार्ता में भाग लेने हेतु रक्षा मंत्री ने भारत का दौरा किया। उन्होंने 15वीं सामरिक अध्ययन हेतु अंतर्राष्ट्रीय संस्थान (आईआईएसएस) एशिया सुरक्षा सम्मेलन - ''दी संगरी-ला वार्ता'' को भी सम्बोधित किया था। 19 जनवरी, 2017 को 11वीं भारत-सिंगापुर रक्षा नीति वार्ता में भाग लेने के लिए रक्षा सचिव ने सिंगापुर का दौरा किया। संयुक्त सचिव स्तरीय भारत सिंगापुर रक्षा कार्यकारी समूह की 9वीं बैठक 13 मई, 2016 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। जून, 2016 में रक्षा उद्यम कार्यकारी समूह की उद्घाटन बैठक का आयोजन सिंगापुर में किया गया। 22-24 जनवरी, 2017 के दौरान 5वीं सामरिक अध्ययन हेतु अंतर्राष्ट्रीय संस्थान (आईआईएसएस) ''फुलट्रान'' दी आईआईएसएस संगरी-ला डाइलॉग शेरपा में भाग लेने हेतु संयुक्त सचिव (पीआईसी) की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधि ने सिंगापुर का दौरा किया। 13-15 अप्रैल, 2016 को 11वीं नौसेना स्टाफ वार्ता का आयोजन सिंगापुर में किया गया। 10-12 अगस्त, 2016 को 9वीं वायु सेना स्टाफ वार्ता का आयोजन सिंगापुर में किया गया। 31 अक्तूबर से 5 नवम्बर, 2016 के दौरान दो देशों के बीच द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास (सिमबैक्स-16) का आयोजन भारत में किया गया। 27-30 नवम्बर, 2016 के दौरान दोनों देशों की सेनाओं के बीच आर्टिलरी अभ्यास का आयोजन भारत में किया गया। 9 नवम्बर से 8 दिसम्बर, 2016 के दौरान वायु सेनाओं के बीच संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण (जेएमटी)-2016 का आयोजन भारत में किया गया।

14.30 द्विपक्षीय संयुक्त कार्यकारी समूह की 7वीं बैठक में भाग लेने हेतु 22-23 जून, 2016 को रक्षा सचिव ने साऊथ अफ्रीका का दौरा किया। बैठक में दोनों देशों के बीच विभिन्न रक्षा सहयोग के कार्याकलापों के कार्यान्वयन हेतु एक रूप रेखा तैयार करने पर सहमति हुई और सहयोग के नए क्षेत्रों की पहचान में सहायता प्रात हुई।

14.31 भारत-**स्पेन** की संयुक्त कार्यकारी समूह की दूसरी बैठक 23 से 25 जनवरी, 2017 को मैड्रिड (स्पेन) में आयोजित की गई। बैठक में रक्षा सहयोग को विस्तारित करने के अलावा रक्षा उद्यमों में साझेदारी सहित क्षेत्रों की पहचान की गई।

14.32 भारत और **श्रीलंका** एतिहासिक और सांस्कृतिक संबंद्धता पर आधारित अपने घनिष्ठ संबंधों को साझा करते हैं। विभिन्न स्तरों पर अन्य आदान-प्रदानों और उच्च स्तरीय दौरों को शामिल करते हुए, रक्षा संबंध नियमित और वास्तविक हैं। गोवा शिपयार्ड लिमिटेड (जीएसएल) द्वारा निर्मित प्रथम दो एओपीवी के उद्घाटन समारोह में भाग लेने हेतु जून, 2016 में रक्षा सचिव ने श्रीलंका का दौरा किया। 3 नवम्बर, 2016 में रक्षा सचिव स्तरीय चतुर्थ वार्षिक वार्ता का आयोजन कोलंबों में किया गया जिसके आपसी हितों के विभिन्न मुद्दों और इसके अलावा द्विपक्षीय सहयोग को और गहरा करने पर

चर्चा की गई। नवम्बर, 2016 नौसेना अध्यक्ष ने श्रीलंका का दौरा किया और अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगोष्ठी - गेले वार्ता - 2016 में भी भाग लिया।

14.33 7-10 जून, 2016 तक वायु सेनाध्यक्ष ने स्वीडन का दौरा किया। रक्षा उपस्करों की आपूर्ति और प्रशिक्षण आदान-प्रदानों सहित स्वीडन के साथ रक्षा सहयोग स्थापित किए गए।

14.34 18 नवम्बर, 2016 को नई दिल्ली में आयोजित संयुक्त स्तरीय रक्षा परामर्शों की प्रथम स्तर की बैठक में भारत-स्विजरलैंड रक्षा सहयोग को बढ़ावा मिला, इस दौरान जिसमें रक्षा उद्यम अनुबंधों सहित समझौतों को विस्तारित करने पर सहमति हुई।

14.35 भारत और ताजिकिस्तान के बीच रक्षा संबंध और प्रगाढ़ हुए हैं। 1 से 4 नवम्बर, 2014 के दौरान संयुक्त सचिव द्वारा सह-अध्यक्षित 5वीं संयुक्त कार्यकारी समूह की बैठक का आयोजन ताजिकिस्तान में किया गया।

14.36 थाईलैंड के साथ रक्षा संबंध और प्रगाढ़ हुए हैं। भारतीय सेना की दस सदस्यीय टीम ने 20 जनवरी से 18 फरवरी, 2016 तक थाईलैंड में आयोजित बहु-राष्ट्रीय अभ्यास ''कोबरा-गोल्ड'' में भाग लिया। 16 से 29 जुलाई, 2016 तक सीआई/सीटी अनुभव को साझा करने हेतु एक प्लाटून स्तरीय अभ्यास संयुक्त प्रशिक्षण अभ्यास एक्समैत्री का थाईलैंड में आयोजन किया गया। 16-24 नवम्बर, 2016 तक भारतीय नौसेना (आईएन) और रॉयल थाई नौसेना के बीच समन्व्य गश्त (कोरपेट) की 23वीं साईकिल का आयोजन किया गया। 25-27 मई, 2016 को 8वीं नौसेना से नौसेना स्टाफ वार्ता भारत में आयोजित की गई। 7वीं भारतीय वायु सेना - रॉयल थाई वायु सेना स्टाफ वार्ता 6-8 सितंबर, 2016 को भारत में आयोजित की गई। अपर सचिव स्तरीय सह-अध्यक्षित 5वीं भारतीय-थाईलैंड रक्षा वार्ता 15 दिसंबर, 2016 को नई दिल्ली में आयोजित की गई जिसमें रक्षा सहयोग को आगे विस्तारित करने के विभिन्न मानकों पर सहमति हुई।

14.37 यह वर्ष भारत और **संयुक्त अरब अमीरात** के बीच रक्षा सहयोग के वास्तविक रूप से विस्तार का गवाह रहा है। 23 मई, 2016 को रक्षा मंत्री ने संयुक्त अरब अमीरात का दौरा किया और यूएई नेताओं के साथ व्यापक स्तर की वार्ता की। यात्रा के दौरान वर्गीकृत सूचना की सुरक्षा पर एक द्विपक्षीय समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। दिसंबर, 2016 में संयुक्त रक्षा सहयोग समिति (जेड़ीसीसी) की 8वीं बैठक अबुधाबी में आयोजित की गई। ये सीमावर्ती सैन्य से सैन्य सहयोग सहित व्यापक स्तर पर समझौतों को आगे ले जाने पर सहमति हुई। जनवरी, 2017 में यूएई के क्राउन प्रिंस की भारत यात्रा के दौरान रक्षा उद्यम के क्षेत्र में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

14.38 **यूनाइटेड़ किंगडम** के साथ रक्षा संबंध दोनों देशों की सशस्त्र सेना के बीच प्रशिक्षण और अन्य प्रोफेशनलों के आदान-प्रदानों यात्राओं के नियमित आदान-प्रदान से लगातार वृद्धि हुई है। जून, 2016 में सिंगापुर में संगरी-ला वार्ता के आधार पर यूके में रक्षा राज्य सचिव के साथ रक्षा मंत्री की एक द्विपक्षीय बैठक हुई। 15-16 नवम्बर, 2016 को रक्षा सचिव द्वारा सह-अध्यक्षित रक्षा परामर्शदात्री समूह (डीसीजी) की 17वीं बैठक नई दिल्ली में आयोजित की गई। भारतीय सेना ने 14-23 अक्तूबर, 2016 में यू.के. में आयोजित अभ्यास केम्बरिन पेटरोल में भाग लिया।

14.39 संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ रक्षा सहयोग 3 जून, 2015 को भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका रक्षा संबंध हेतु नई रूप रेखा के समझौते के आधार पर एक उच्च प्रक्षेप-पथ पर उत्थापित हुए हैं। 11 से 13 अप्रैल, 2016 तक अमेरिकी रक्षा सचिव डॉ. ऑशटन कार्टर ने भारत का दौरा किया। दोनों देशों ने अगस्त, 2016 में संभारिकी आदान-प्रदान समझौता ज्ञापन (एलईएमओए) पर हस्ताक्षर किए। संयुक्त राज्य अमेरिका ने भारत को रक्षा उद्यम में बड़े सहयोग को प्रोत्साहित करने के रूप एक बड़े रक्षा साझेदार बनाने की पहल की है। दोनों देशों ने मई,

2016 में अपने रक्षा और विदेश मंत्रालयों के सहयोग से अपनी प्रथम समुद्री सुरक्षा वार्ता नई दिल्ली में आयोजित की। सेना से सेना सहयोग में बड़ी तीव्रगति से वृद्धि हुई है। यूएसए में 17-30 जनवरी, 2016 को ''वज्र प्रहार 2016'' अभ्यास का आयोजन किया गया। 10-17 जून, 2016 को जापान के तट पर नौसेना अभ्यास ''मालाबार'' (भारत-अमेरिका-जापान) का आयोजन किया गया। 30 जून, से 4 अगस्त, 2016 तक यूएस द्वारा हवाई तट पर आयोजित बहुपक्षीय अभ्यास एक्स-आरआईएमपीएसी में भारतीय नौसेना ने भाग लिया। 27 जुलाई, 2016 को सचिव, रक्षा उत्पादन की अध्यक्षता में रक्षा प्रौद्योगिकी और व्यापार पहल (डीटीटीआई) समूह की पांचवी बैठक का नई दिल्ली में आयोजन किया गया। 17 से 18 नवम्बर, 2016 को महानिदेशक, अधिग्रहण की अध्यक्षता में रक्षा अधिप्राप्ति और उत्पादन समूह (डीपीपीजी) की बारहवीं बैठक नई दिल्ली में आयोजित की गई।

14.40 भारत-**वियतनाम** रक्षा संबंध इस वर्ष तेजी से प्रगाढ़ हुए हैं। रक्षा मंत्री ने एक नियमित द्विपक्षीय मंत्रालयी आदान-प्रदान के भाग के रूप में 5-8 जून, 2016 तक वियतनाम की यात्रा की। रक्षा मंत्री ने अपने समकक्ष और अन्य वियतनामी नेताओं के साथ बैठक के अतिरिक्त, रक्षा उद्यम सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक वाणिज्य सभा को भी संबोधित किया। 17-19 मई, 2016 तक वियतनाम में नौसेना से नौसेना स्टाफ वार्ता के आयोजन की शुरूआत की गई। 2-3 सितंबर, 2016 को प्रधानमंत्री ने अपनी यात्रा के दौरान वियतनाम हेतु 500 मिलियन अमेरिकी डालर की नई रक्षा लाईन ऑप क्रेडिट की घोषणा की। दो रक्षा संबंधी समझौते अर्थात शेयरिंग ऑप व्हाईट शिपिंग आसूचना पर तकनीकी समझौता और हाईस्पीड ऑफ-शोर गश्ती नौकाओं की आपूर्ति पर हस्ताक्षर किए गए। दिसंबर, 2016 में वियतनाम के रक्षा मंत्री जनरल एनजीओ ज्यूआन लीच द्वारा अध्यक्षित तीनों सेनाओं के प्रमुखों सहित एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मण्डल ने भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान भारतीय वायु सेना और वियतनाम लोक वायु रक्षा और वायु सेना के मध्य एक सहयोग कार्यक्रम (पीओसी) पर हस्ताक्षर किए गए।

15

समारोह और अन्य कार्यकलाप

अध्याय 15

समारोह और अन्य कार्य कलाप

15.1 रक्षा मंत्रालय स्वायत्त संस्थाओं को नियमित रूप से आर्थिक सहायता देकर अकादमिक तथा साहसिक दोनों प्रकार के कार्यकलापों को प्रोत्साहन देता है। ये संस्थाएं हैं :

(i) रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान, नई दिल्ली।

(ii) दार्जिलिंग और उत्तरकाशी स्थित पर्वतारोहण संस्थान।

(iii) पहलगांव स्थित जवाहर पर्वतारोहण एवं शीत क्रीडा संस्थान (जेआईएम)।

(iv) दिरांग स्थित राष्ट्रीय पर्वतारोहण एवं संबद्ध खेल संस्थान (एनआईएमएएस)।

15.2 समीक्षाधीन वर्ष के दौरान इन संस्थानों के महत्वपूर्ण कार्यकलाप आगे के पैराग्राफों में दिए जा रहे हैं।

रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (आईडीएसए)

15.3 नवम्बर, 1965 में स्थापित रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (आईडीएसए), सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम-III, 1860 (पंजाब संशोधन अधिनियम 1957) समय-समय पर यथासंशोधित, के तहत एक पंजीकृत संस्था है। यह संस्थान एक निर्दलीय, स्वायत्तशासी निकाय है जो रक्षा और सुरक्षा के सभी पहलुओं पर उद्देश्यपरक अनुसंधान तथा नीति संबंधित अध्ययनों के प्रति समर्पित है। इसका लक्ष्य रक्षा और सुरक्षा से संबंधित मुद्दों का सृजन और प्रचार-प्रसार करके राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा को बढ़ावा देना है।

15.4 आईडीएसए का वित्तपोषण पूर्ण रूप से रक्षा मंत्रालय द्वारा किया जाता है। आईडीएसए के विद्धान अकादमियों, रक्षा सेनाओं और सिविल सेवाओं से लिए जाते हैं। अध्ययन अवकाश पर 7 सेवारत अफसरों सहित 55 विद्धानों के अनुसंधान संकाय का गठन 13 केन्द्रों के अंतर्गत किया जाता है। संस्थान ने वर्ष के दौरान, अपने आगंतुक फैलोशिप कार्यक्रम के अंतर्गत विदेशों से 3 आगंतुक अभिसदस्यों और अपने प्रशिक्षुता कार्यक्रम के अंतर्गत 3 प्रशिक्षुओं का आतिथ्य भी किया जिससे संस्थान की पहुंच में सुधार होने के साथ-साथ पूरे विश्व में इसकी मान्यता में वृद्धि हुई है।

15.5 आईडीएसए भारत की सुरक्षा तथा विदेश नीति को प्रभावित करने वाली सभी क्षेत्रीय तथा वैश्विक घटनाओं का अध्ययन करता है। पड़ोस में होने वाले घटनाक्रम आईडीएसए विद्धानों के लिए प्राथमिक क्षेत्र रहा है। क्षेत्र और विश्व के साथ भारत का रिश्ता गहरा होने के साथ-साथ रणनीतिक समुदाय के साथ आईडीएसए की अन्योन्य क्रिया तदनुसार बढ़ी है। यह जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा, जल सुरक्षा और साइबर एवं अंतरिक्ष सुरक्षा जैसे अनेक सम-सामयिक विषयों पर शोध कर रहा है। संस्थान नई चुनौतियों के उद्भव और उनके प्रति भारत की अनुक्रिया पर निरंतर ध्यान केन्द्रित कर रहा है। रक्षा सुधारों सहित अधिप्राप्ति नीतियों एवं प्रक्रियाओं पर भी विशेष ध्यान दिया गया और सरकार द्वारा सुरक्षा वार्ताएं आरंभ की गई।

15.6 विदेशों के अनेक विद्वान आगंतुकों और प्रतिनिधि मंडलों का आईडीएसए में आतिथ्य किया गया। महान थिंक टैंकों और विश्वविद्यालयों को भी इसमें बुलाया गया था। आईडीएसए की वेबसाइट www.idsa.in शोध कर्ताओं, विद्यार्थियों और आम जनता के लिए सुरक्षा और रक्षा के व्यापक मुद्दों पर जानकारी का स्रोत बन गई है।

आडीएसए की पहुंच बढ़ाने के लिए ट्विटर जैसे सोशल मीडिया माध्यमों का व्यापक उपयोग किया गया है।

15.7 आईडीएसए का प्रमुख जोर नीतिगत अध्ययनों पर ध्यान केन्द्रित करना है। नीति निर्माताओं के साथ सम्पर्क बढ़ाने के लिए एक सुविचारित प्रयास किया गया। विभिन्न सरकारी विभागों की ओर से कई शोध परियोजनाएं चलाई गई।

आईडीएसए द्वारा 19-20 जनवरी, 2016 को ''पश्चिमी एशिया में विचारधारा, राजनीति और नई सुरक्षा चुनौतियों'' पर दूसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। भारत के उप राष्ट्रपति द्वारा उद्घाटन भाषण दिया गया।

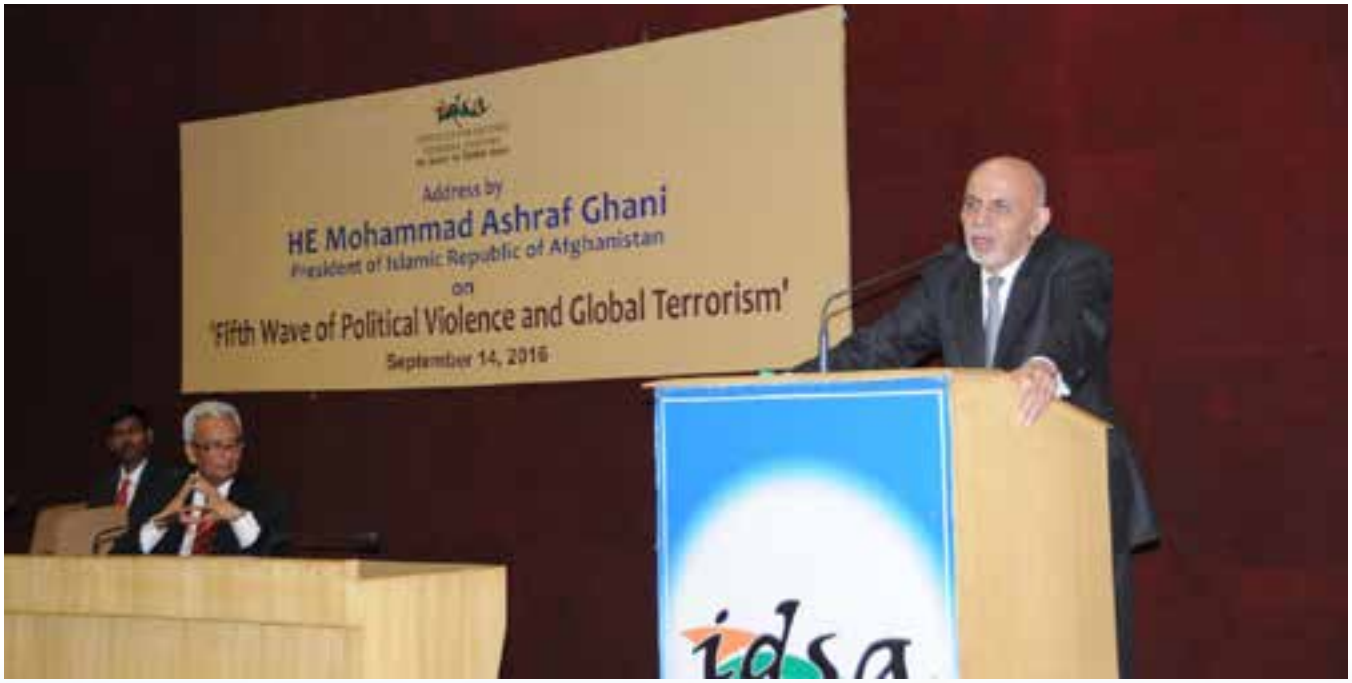

इस्लामिक गणराज्य अफगानिस्तान के राष्ट्रपति महामहिम मोहम्मद अशरफ गनी 14 सितम्बर, 2016 को ''राजनीतिक हिंसा और वैश्विक आतंकवाद का 5वां दौर'' पर व्याख्यान देते हुए।

15.8 **अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन :** रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (आईडीएसए) द्वारा कई अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया, जिनका विवरण निम्नलिखित है :-

- **19-20 जनवरी, 2016 :** ''पश्चिमी एशिया में विचारधारा, राजनीति और नई सुरक्षा चुनौतियों'' पर पश्चिमी एशिया पर दूसरा वार्षिक सम्मेलन।
- **9-11 फरवरी, 2016 :** ''साइबर स्पेस की सुरक्षा : एशियाई और अंतर्राष्ट्रीय संदर्शों में'' पर 18वां एशियाई सुरक्षा सम्मेलन।
- **24-26 फरवरी, 2016 :** ''वैश्विक नाभिकीय नियंत्रण में भारत की भूमिका'' पर आईडीएसए-पीआरआईओ सम्मेलन।
- **4 नवम्बर, 2016 :** ''वैश्विक मामलों में रूस : भारतीय और रूसी संदर्शों में'' पर आईडीएसए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन।
- **21 नवम्बर, 2016 :** ''भारत और महाशक्तियां : निरंतरता और बदलाव'' पर आईडीएसए-आईएफएस सम्मेलन।
- **23 नवम्बर, 2016 :** ''अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और उग्रवाद की चुनौती का समाधान'' पर आईडीएसए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन।

15.9 **गोलमेज वार्ताएं :** संस्थान ने वर्ष के दौरान कई गोलमेज वार्ताएं कीं, जिनमें से प्रमुख वार्ताओं का विवरण निम्नलिखित है :

- **21 दिसम्बर, 2015 :** ''मेक इन इंडिया को सुकर बनाने में डीआरडीओ की भूमिका'' पर एक गोलमेज वार्ता।
- **29 दिसम्बर, 2015 :** प्रो. माइकल पिल्सबरी, एक विख्यात रक्षा नीति सलाहकार के साथ एक गोलमेज वार्ता।
- **27 जनवरी, 2016 :** ''पश्चिमी एशिया में तुर्की की भूमिका'' पर एक तुर्की प्रतिनिधि मंडल के साथ एक गोलमेज वार्ता।
- **19 फरवरी, 2016 :** ''आसियान-भारत संबंध : एक नया प्रतिमान'' पर दिल्ली वार्ता VIII का शैक्षणिक सत्र।
- **03 मार्च, 2016 :** ''भारत-चीन संबंध, भारत-यूएस संबंध, भारत-पाकिस्तान संबंध, दक्षिणी एशिया और आतंकवाद/आईएसआईएस इत्यादि'' प्रकरणों पर प्रो. ली वानवु, एशियाई और प्रशांत अध्ययन विभाग प्रमुख, आईएफएफएएनएस, केएनडीए के नेतृत्व में कोरिया राष्ट्रीय कूटनीतिक अकादमी (केएनडीए) के एक छह सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ गोलमेज वार्ता।
- **17 मार्च, 2016:** 'भारत-जापान समुद्री, एचएडीआर आपरेशन, रक्षा प्रौद्योगिकी सहयोग, अफगानिस्तान में सहयोग की संभावनाएं और ऊर्जा सुरक्षा मुद्दों' पर टोकियो फाउंडेशन के एक तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ गोलमेज वार्ता।
- **21 अप्रैल, 2016 :** '' 'मेक इन इंडिया' में ओईएम भागीदारी को सुकर बनाते हुए'' पर प्रमुख विदेशी ओईएम के साथ गोलमेज वार्ता।
- **05 मई, 2016 :** ''आतंकवाद में उभरती हुई प्रवृत्तियों से संबंधित मुद्दों'' पर राष्टीय सुरक्षा परिषद, थाईलैंड के सुरक्षा विशेषज्ञों के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ गोलमेज वार्ता।
- **24 मई, 2016 :** ''भारत की राष्ट्रीय सामुद्रिक रणनीति, सामुद्रिक सुरक्षा की अवधारणा और परिभाषा, सामुद्रिक सुरक्षा की व्यवस्था, कूटनीति और अंतर्राष्ट्रीय पहलू तथा अन्य संबद्ध मुद्दों'' पर नीति विश्लेषण और विकास केन्द्र, इंडोनेशिया गणराज्य के विदेश मंत्रालय के एक

चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ गोलमेज वार्ता।

- **07 जून, 2016 :** यूनाइटेड किंगडम के आरसीडीएस (रॉयल कालेज आफ डिफेंस) के एक 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ एक गोलमेज वार्ता।

- **08 जून, 2016 :** विभिन्न संबद्ध मुद्दों पर तंजानिया राष्ट्रीय रक्षा कालेज (एनडीसी) के एक 15 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ गोलमेज वार्ता।

- **03 अगस्त, 2016 :** विभिन्न संबद्ध मुद्दों पर श्रीलंकाई सर्विसेज कमान तथा स्टाफ कालेज (डीएससीएससी) के एक 16 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल के साथ गोलमेज पारस्परिक वार्ता।

15.10 **वार्ताएं/द्विपक्षीय मेलजोल :**

- **3-4 दिसम्बर, 2015 :** ''पश्चिमी एशिया में जियो-स्ट्रेटेजिक डायनामिक्स : भारत-ईरान सहयोग'' पर आईडीएसए तथा राजनीतिक और अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान (आईपीआईएस) के बीच एक द्विपक्षीय वार्ता की गई।

- **1-2 मार्च, 2016 :** किंग्स कालेज, लंदन के सहयोग से रणनीतिक नाभिकीय वार्ता का दूसरा दौर आयोजित किया गया।

- **30 मार्च, 2016 :** डा. आयशा सिद्दीकी, पाकिस्तानी सुरक्षा विश्लेषक और मिलिट्री इंक की लेखिका ने ''पाकिस्तान में उभरते हुए सिविल मिलिट्री संबंध'' पर एक व्याख्यान दिया।

- **5 अप्रैल, 2016 :** राजदूत शमशेर मोबिन चौधरी, बांग्लादेश के पूर्व विदेश सचिव ने ''बांग्लादेश में राजनीति : समस्याएं और प्रवृत्तियां'' पर एक व्याख्यान दिया।

- **13 अप्रैल, 2016 :** बी.पी. कोईराला भारत-नेपाल फाउंडेशन कोअन एडवाइजरी ग्रुप, नई दिल्ली के सहयोग से नेपाल सरकार के फ्लैगशिप ''पब्लिक डेमोक्रेसी'' कार्यक्रम के उद्घाटन सम्मेलन का आयोजन किया गया।

- **12 अगस्त, 2016 :** श्री अमीर खुसरो मोहम्मद चौधरी, पूर्व वाणिज्यिक मंत्री (2001-2006) जो वर्तमान में बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) की स्थायी परिषद के सदस्य के साथ-साथ बीएनपी की चटगांव यूनिट के अध्यक्ष हैं, ने ''भारत-बांग्लादेश संबंधों की वर्तमान स्थिति'' पर एक व्याख्यान दिया।

- **23 अगस्त, 2016 :** सचिव (आर्थिक संबंध), विदेश मंत्रालय, भारत ने ''अफ्रीका के प्रति भारत का दृष्टिकोण : नया क्या ?'' पर एक व्याख्यान दिया।

- **14 सितम्बर, 2016 :** इस्लामिक गणराज्य अफगानिस्तान के अध्यक्ष महामहिम मो. अशरफ गनी ने ''राजनीतिक हिंसा और वैश्विक आतंकवाद का पांचवां दौर'' पर एक व्याख्यान दिया।

- **15 सितम्बर, 2016 :** उपनिदेशक, मैक्सिम शेपोवालेंको के नेतृत्व में रणनीतियों और प्रौद्योगिकियों के विश्लेषण केंद्र (सीएएसटी) के एक प्रतिनिधिमंडल ने रूसी-भारत रक्षा सहयोग की वर्तमान स्थिति और संभावनाओं तथा अन्य संबंधित मुद्दों पर द्विपक्षीय वार्ता करने के लिए आईडीएसए का दौरा किया।

- **23 सितम्बर, 2016 :** पेकिंग विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय और सामरिक अध्ययन संस्थान के अध्यक्ष प्रो. वांग जिसी के नेतृत्व में एक छह सदस्यीय चीनी प्रतिनिधिमंडल ने क्षेत्रीय सुरक्षा मुद्दों पर द्विपक्षीय मेलजोल के लिए आईडीएसए का दौरा किया।

- **27 अक्तूबर, 2016 :** ''सहक्रियाओं को सुदृढ़ बनाना'' पर रूसी सामरिक अध्ययन संस्थान (आरआईएसएस) के साथ द्वितीय भारत-रूस सामरिक वार्ता की गई।

- **17 नवम्बर, 2016 :** 17 नवम्बर, 2016 को आईडीएसए का 51वां स्थापना दिवस मनाया गया। उपाध्यक्ष, नीति आयोग ने ''राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास'' पर इस वर्ष का व्याख्यान दिया।

- **28 नवम्बर, 2016 :** अध्यक्ष, विकासशील देशों हेतु अनुसंधान एवं सूचना प्रणाली (आरआईएस) तथा पूर्व विदेश सचिव, भारत सरकार द्वारा ''अंतर्राष्ट्रीयतावाद का ह्रास'' पर 7वां वाई.बी. चाह्वाण स्मारक व्याख्यान दिया गया।

15.11 **प्रशिक्षण कार्यक्रम :** संस्थान द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है :

- **29 फरवरी-11 मार्च, 2016 :** वायुसेना प्रशिक्षण कार्यक्रम

- **29-31 मार्च, 2016 :** नौसैनिक आसूचना विशेषज्ञता पाठ्यक्रम हेतु रक्षा एवं सुरक्षा माड्यूल

- **17-21 अक्तूबर, 2016 :** सीमा सुरक्षा बल के डीआईजी हेतु रक्षा एवं सुरक्षा माड्यूल स्तर-II

पर्वतारोहण संस्थान

15.12 रक्षा मंत्रालय, संबंधित राज्य सरकारों के साथ मिलकर चार पर्वतारोहण संस्थान अर्थात पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग स्थित हिमालय पर्वतारोहण संस्थान (एचएमआई), उत्तराखंड में उत्तरकाशी स्थित नेहरू पर्वतारोहण संस्थान (एनआईएम) तथा जम्मू-कश्मीर में पहलगाम स्थित जवाहर पर्वतारोहण संस्थान, शीत क्रीड़ा संस्थान (जेआईएम एंड डब्ल्यूएस) तथा अरुणाचल प्रदेश के दिरांग में राष्ट्रीय पर्वतारोहण तथा संबद्ध क्रीड़ा संस्थान (एनआईएमएएस) चलाता है। ये संस्थान पंजीकृत समितियों के रूप में चलाए जाते हैं और उन्हें स्वायत्तशासी निकायों का दर्जा प्रदान किया गया है। रक्षा मंत्री इन संस्थानों के अध्यक्ष होते हैं और संबंधित राज्य के मुख्यमंत्री इन संस्थानों के उपाध्यक्ष होते हैं। इन संस्थानों का प्रशासन कार्यकारी परिषदों द्वारा चलाया जाता है जिनमें प्रत्येक संस्थान की आम सभा द्वारा चुने गए सदस्य, दानदाताओं और/अथवा पर्वतारोहण के उद्देश्य को बढ़ावा देने वाले व्यक्तियों में से नामित सदस्य तथा केन्द्र व राज्य सरकारों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं।

15.13 ये संस्थान पर्वतारोहण को एक खेल के रूप में प्रोत्साहन देते हैं, पर्वतारोहण को बढ़ावा देते हैं और युवाओं में साहसिक भावना उत्पन्न करते हैं। पर्वतारोहण संस्थानों के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:-

(क) पर्वतारोहण तथा चट्टानों पर चढ़ने की तकनीकों के विषय में सैद्धांतिक ज्ञान तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण देना;

(ख) युवाओं में पर्वतों तथा अन्वेषण के प्रति रुचि एवं प्रेम उत्पन्न करना;

(ग) शीत-क्रीड़ाओं के प्रति प्रोत्साहित करना तथा उनका प्रशिक्षण देना; और

(घ) हिमाचल क्षेत्र में प्रकृति कार्यशालाओं के जरिए पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी के संरक्षण की समझ पैदा करना।

15.14 ये पर्वतारोहण संस्थान आधारभूत और उन्नत पर्वतारोहण पाठ्यक्रम, अनुदेश पद्धति पाठ्यक्रम (एमओआई), खोज व बचाव और साहसिक क्रियाकलाप संबंधी पाठ्यक्रम आयोजित करते हैं। इन पाठ्यक्रमों में भारत के सभी भागों से प्रशिक्षुओं के साथ-साथ सेना, वायुसेना, नौसेना, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस, सीमा सुरक्षा बल, राष्ट्रीय कैडेट कोर के कार्मिक भी प्रशिक्षण लेते हैं। विदेशी नागरिकों को भी इन पाठ्यक्रमों में भाग लेने की अनुमति है। इन पाठ्यक्रमों में भाग लेने के लिए पाठ्यक्रम, अवधि, ग्रेडिंग, प्रतिभागी की आयु सीमा और अन्य ब्यौरा उन पर्वतारोहण संस्थानों की वेबसाइटों पर उपलब्ध है।

15.15 नियमित पाठ्यक्रम सभी संस्थानों में लगभग एक समान हैं। संस्थानों द्वारा अप्रैल, 2015 से दिसम्बर, 2016 तक आयोजित नियमित पाठ्यक्रमों और इन पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित पुरुषों और महिलाओं की संख्या सारणी संख्या 15.1 में दी गई है।

15.16 हिमालय पर्वतारोहण संस्थान द्वारा भी 120 व्यक्तियों के लिए 04 विशेष आधारभूत पर्वतारोहण पाठ्यक्रमों और 145 व्यक्तियों के लिए 5 विशेष साहसिक पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया।

15.17 राष्ट्रीय पर्वतारोहण संस्थान ने साहसिक प्रशिक्षण के 5 विशेष पाठ्यक्रमों, सीआरपीएफ हेतु विशेष प्रशिक्षण-सह-अभियान पाठ्यक्रम, एनडीआरएफ हेतु विशेष खोजी एवं बचाव प्रशिक्षण, विभिन्न संगठनों हेतु स्पोर्ट क्लाइम्बिंग एवं रॉक क्लाम्बिंग पाठ्यक्रमों का आयोजन किया जिसमें 253 व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया। एनआईएम ने भी दो अभियानों, भारतीय नौसेना के साथ 14 व्यक्तियों का माउंट सतोपंथ (7075 मीटर) के लिए प्रथम अभियान और भारतीय नौसेना के साथ 20 व्यक्तियों का माउंट मुकुट ईस्ट (7075 मीटर) के लिए दूसरे अभियान का आयोजन किया।

15.18 जवाहर पर्वतारोहण संस्थान ने भी देश के 24 दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए पहलगाम की टुलियन चोटी (21000 फुट) हेतु आईएमएफ द्वारा प्रायोजित एक अभियान का आयोजन किया।

15.19 एनआईएमएएस के दो अनुदेशकों ने 4कोर/71 इंफैन्ट्री डिवीजन दल के साथ माउंट गोरीचेन की चढ़ाई करने के अभियान में भाग लिया।

समारोह, सम्मान व पुरस्कार

15.20 गणतंत्र दिवस परेड, समापन समारोह, शहीद दिवस और स्वतंत्रता दिवस जैसे राष्ट्रीय समारोहों के आयोजन की जिम्मेदारी रक्षा मंत्रालय की है। वीरता तथा विशिष्ट सेवा पुरस्कार प्रदान किए जाने के लिए राष्ट्रपति भवन में रक्षा अलंकरण समारोहों का आयोजन भी रक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रपति सचिवालय के साथ मिलकर किया जाता है। वर्ष 2016-17 के दौरान आयोजित समारोह संबंधी आयोजनों का ब्यौरा आगामी पैराओं में दिया गया है।

15.21 **स्वतंत्रता दिवस ध्वजारोहण समारोह:** स्वतंत्रता दिवस समारोह का शुभारंभ, लालकिले पर स्कूली बच्चों द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं में समूह देशभक्ति गान के साथ हुआ। तीनों सेनाओं तथा दिल्ली पुलिस ने प्रधानमंत्री को गारद सम्मान दिया। तत्पश्चात, प्रधानमंत्री ने सेनाओं के बैंड द्वारा बजाए गए राष्ट्रीय गान के साथ ही लाल किले की प्राचीर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर इक्कीस तोपों की सलामी दी गई। प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्र को संबोधित किए जाने के बाद समारोह का

सारणी सं. 15.1

संस्थान	आधार-भूत पाठ्यक्रम		उन्नत पाठयक्रम		साहसिक पाठ्यक्रम		अनुदेश पद्धति पाठ्यक्रम		खोज व बचाव पाठ्यक्रम	
	पाठ्यक्रमों की संख्या	प्रशिक्षुओं की संख्या	पाठ्यक्रमों की संख्या	प्रशिक्षुओं की संख्या	पाठ्यक्रमों की संख्या	प्रशिक्षुओं की संख्या	पाठ्यक्रमों की संख्या	प्रशिक्षुओं की संख्या	पाठ्यक्रमों की संख्या	प्रशिक्षुओं की संख्या
एचएमआई	06	353	03	149	02	119	01	23	-	-
एनआईएम	05	381	03	116	05	265	01	30	01	50
जेआईएम	06	633	01	71	13	477	01	17	-	-
एनआईएमएएस	07	117	04	22	12	570	-	-	-	-

समापन विद्यालयों से आए बच्चों और एनसीसी कैडटों द्वारा राष्ट्रीय गान तथा गुब्बारे छोड़ने के साथ हुआ। बाद में दिन के दौरान, राष्ट्रपति ने उन जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए इंडिया गेट स्थित अमर जवान ज्योति पर फूल-माला चढ़ाई जिन्होंने मातृभूमि की आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए थे।

15.22 स्वतंत्रता दिवस-2016 के अवसर पर वीरता पुरस्कारों की घोषणा की गई जो सारणी संख्या 15.2 में दिए गए हैं।

सारणी सं. 15.2

पुरस्कार	पुरस्कारों की संख्या	मरणोपरांत
अशोक चक्र	01	01
शौर्य चक्र	14	07
सेना मेडल (जी)	63	12
नौसेना मेडल (जी)	02	-
वायु सेना मेडल (जी)	03	-

15.23 **विजय दिवस :** 16 दिसंबर, 2016 को विजय दिवस मनाया गया। इस अवसर पर रक्षा मंत्री ने इंडिया गेट स्थित अमर जवान ज्योति पर फूलमाला चढ़ाई।

15.24 **अमर जवान ज्योति समारोह, 2017 :** प्रधानमंत्री ने 26 जनवरी, 2017 को प्रातःकाल इंडिया गेट स्थित अमर जवान ज्योति पर पुष्पमाला चढ़ाई। उन जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दो मिनट का मौन रखा गया जिन्होंने देश की अखंडता की रक्षा में अपने प्राण न्यौछावर किए थे।

15.25 **गणतंत्र दिवस परेड, 2017 :** राजपथ पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के साथ ही गणतंत्र दिवस परेड का शुभारंभ हुआ। राष्ट्रपति के अंगरक्षकों ने सेनाओं के बैडों द्वारा बजाए गए राष्ट्र गान और 21 तोपों की सलामी के बाद राष्ट्रीय सलामी दी। इस अवसर पर अबूधाबी के युवराज और संयुक्त अरब अमीरात की सशस्त्र सेना के डिप्टी सुप्रीम कमांडर महामहिम शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान मुख्य अतिथि थे।

15.26 इस वर्ष भी, मुख्य अतिथि के देश की ओर से एक मार्चिंग दस्ते और बैंड ने गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया जैसाकि पिछले वर्ष किया गया था। इसके अलावा, तीनों सेनाओं के मेकेनाइज्ड दस्तें, मार्चिंग दस्तें और बैंड, डीआरडीओ का दस्ता, अर्द्ध-सैनिक बलों, दिल्ली पुलिस, एनसीसी, एनएसएस इत्यादि के मार्चिंग दस्ते और बैंड परेड का हिस्सा थे।

15.27 जिन पच्चीस बच्चों को वीरता पुरस्कार प्रदान किया गया उनमें से चार को मरणोपरांत वीरता पुरस्कार प्रदान किया गया।। इक्कीस वीरता पुरस्कार प्राप्त बच्चों ने सेना की सुसज्जित जीपों पर सवार होकर परेड में भाग लिया। राज्यों, केंद्रीय मंत्रालयों/ विभागों की झांकियां एवं विभिन्न विद्यालयों के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन परेड के अन्य आकर्षण थे। 23 झांकियों तथा स्कूली बच्चों के 4 कार्यक्रमों ने देश की सांस्कृतिक विविधता को प्रस्तुत किया। सेना के जवानों द्वारा मोटर साइकिल पर प्रदर्शन और तत्पश्चात् भारतीय वायुसेना के विमानों के प्रभावशाली फ्लाई पास्ट के साथ परेड का समापन हुआ। इस वर्ष, स्वदेशी रूप से निर्मित हल्के योद्धी विमान (एलसीए) तेजस ने पहली बार गणतंत्र दिवस परेड के दौरान फ्लाई पास्ट में भाग लिया।

15.28 गणतंत्र दिवस, 2017 के अवसर पर घोषित वीरता तथा विशिष्ट सेवा पुरस्कारों का ब्यौरा सारणी संख्या 15.3 में दिया गया है।

सारणी संख्या 15.3

पुरस्कार का नाम	कुल	मरणोपरांत
वीरता पुरस्कार		
कीर्ति चक्र	02	01
शौर्य चक्र	12	03
सेना मेडल/ नौसेना मेडल/ वायु सेना मेडल बार (वीरता)	03	-
सेना मेडल/ नौसेना मेडल/ वायु सेना मेडल(वीरता)	97	-
विशिष्ट पुरस्कार		
परम विशिष्ट सेवा मेडल	29	-
उत्तम युद्ध सेवा मेडल	05	-

पुरस्कार का नाम	कुल	मरणोपरांत
अति विशिष्ट सेवा मेडल बार	02	-
अति विशिष्ट सेवा मेडल	49	-
युद्ध सेवा मेडल	14	-
सेना मेडल/ नौसेना मेडल/ वायु सेना मेडल बार (कर्त्तव्यपरायणता)	04	-
सेना मेडल/ नौसेना मेडल/ वायु सेना मेडल(कर्त्तव्यपरायणता)	58	
विशिष्ट सेवा मेडल बार	04	-
विशिष्ट सेवा मेडल	119	-

15.29 **समापन समारोह, 2017:** समापन समारोह सदियों पुरानी उन दिनों की सैन्य परंपरा है जब सूर्यास्त होने पर सेना युद्ध बंद कर देती थी। समापन समारोह गणतंत्र दिवस समारोहों में भाग लेने के लिए दिल्ली में एकत्र हुई सैन्य टुकड़ियों के प्रत्यागमन का सूचक है। यह समारोह 29 जनवरी, 2017 को विजय चौक पर आयोजित किया गया जो गणतंत्र दिवस उत्सवों का पटाक्षेप था। इस समारोह में तीनों सेनाओं के बैंडों के साथ-साथ केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) और राज्य पुलिस बैंडों ने भाग लिया। समारोह के समापन के अवसर पर राष्ट्रपति भवन, नॉर्थ ब्लॉक, साउथ ब्लॉक, संसद भवन और इंडिया गेट की प्रकाश-सज्जा भी की गई।

15.30 **शहीद दिवस समारोह, 2017 :** 30 जनवरी, 2017 को, राष्ट्रपति ने राजघाट पर महात्मा गांधी की समाधि पर फूलमाला चढ़ाई। उप राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, रक्षा मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी पुष्पाजंलि अर्पित की। इसके बाद 1100 बजे उन वीरों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दो मिनट का मौन रखा गया जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए थे।

15.31 **सशस्त्र सेना झंडा दिवस (एएफएफडी):** संपूर्ण देश में प्रतिवर्ष की भांति 7 दिसम्बर, 2016 को सशस्त्र सेना झंडा दिवस मनाया गया। यह दिवस हमारी सीमाओं की अखंडता की सुरक्षा करने में हमारे बहादुर सैनिकों द्वारा किए गए बलिदानों को याद करने और विधवाओं, बच्चों, निशक्त तथा रुग्ण भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण के प्रति एकजुटता व समर्थन व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है।

राजभाषा प्रभाग

15.32 संघ सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु रक्षा मंत्रालय में राजभाषा प्रभाग कार्य कर रहा है। यह प्रभाग इस प्रयोजनार्थ राजभाषा अधिनियम और उसके अंतर्गत बनाए गए नियमों के प्रावधानों तथा इस संबंध में नोडल विभाग अर्थात राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों के संबंध में रक्षा मंत्रालय (सचिवालय), तीनों सेना मुख्यालयों, सभी अंतर-सेवा संगठनों तथा रक्षा उपक्रमों एवं मंत्रालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करता है। राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित कार्य में, सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग हेतु प्रत्येक वर्ष जारी किए गए निधारित लक्ष्यों को प्राप्त करना, मंत्रालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी, हिंदी टंकण तथा हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण प्रदान करना तथा स्टाफ को बिना झिझक हिंदी में कार्य करने के लिए सक्षम बनाने हेतु हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन करना शामिल है। मॉनीटरी कार्य में मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालयों, रक्षा उपक्रमों और प्रभागों/अनुभागों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण करना, मंत्रालय की दोनों राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की तिमाही बैठकें आयोजित करना, नई दिल्ली स्थित तीनों सेना मुख्यालयों तथा अंतर-सेवा संगठनों की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में मंत्रालय के प्रतिनिधि के रूप में प्रभाग के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा भाग लेना और सुधारात्मक उपाय करने के लिए उपर्युक्त कार्यालयों से प्राप्त तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा करना शामिल है।

15.33 **वार्षिक कार्यक्रम :** राजभाषा विभाग से प्राप्त वर्ष 2016-17 के वार्षिक कार्यक्रम को इसके अंतर्गत निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सभी रक्षा संगठनों को परिचालित किया गया। हिंदी में मूल पत्राचार बढ़ाने, राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी कागजातों को द्विभाषी रूप में जारी करने, हिंदी कार्यशालाएं नियमित रूप से आयोजित करने तथा हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण प्रदान करने पर बल दिया जा रहा है। विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की तिमाही बैठकों में इस संबंध में हुई प्रगति की नियमित रूप से समीक्षा की जा रही है।

15.34 **अनुवाद कार्य:** वर्ष के दौरान मंत्रालय के विभिन्न कार्यालयों तथा अनुभागों से काफी मात्रा में प्राप्त सामग्री का अनुवाद कार्य पूरा किया गया जिसमें संसद सदस्यों/ विशिष्ट व्यक्तियों से प्राप्त पत्र, रक्षा मंत्री/रक्षा राज्य मंत्री के कार्यालयों से जारी होने वाले पत्र, मंत्रिमंडल के विचारार्थ प्रस्ताव, लेखा परीक्षा पैरा, रक्षा संबंधी स्थायी समिति तथा परामर्शदात्री समिति के समक्ष रखे जाने वाले दस्तावेज तथा मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट, संसदीय प्रश्न, करार आदि शामिल थे।

15.35 **हिंदी सलाहकार समितियों की बैठक:** मंत्रालय में दो हिन्दी सलाहकार समितियां हैं, इनमें एक रक्षा विभाग, भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग तथा रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के लिए है तथा दूसरी रक्षा उत्पादन विभाग के लिए है जो शासकीय प्रयोजनों हेतु हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित मामलों पर मंत्रालय के संबंधित विभागों को सलाह देती हैं। रक्षा विभाग, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग और भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग के लिए हिन्दी सलाहकार समिति का पुनर्गठन रक्षा मंत्री की अध्यक्षता में किया गया है। पुनर्गठित समिति की परिचायक बैठक माननीय रक्षा मंत्री की अध्यक्षता में 07 मई, 2016 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। इस समिति का कार्यवृत्त परिचालित किया गया और लगभग सभी संबंधितों से की गई कार्रवाई टिप्पणियां प्राप्त हो गई हैं। समिति की अगली बैठक के आयोजन हेतु आवश्यक कार्रवाई आरंभ कर दी गई है।

15.36 **रक्षा संबंधी विषयों पर हिन्दी में पुस्तक लेखन हेतु प्रोत्साहन योजनाएं और गृह-पत्रिकाओं हेतु पुरस्कार योजना:** ब्लाक वर्ष 2011-13 हेतु योजना के अंतर्गत प्राप्त पुस्तकों का मूल्यांकन पूरा कर लिया गया है तथा मूल्यांकन समिति द्वारा श्री हरिशरण और श्री हर्ष कुमार सिन्हा द्वारा लिखित पुस्तक ''हिन्द महासागर चुनौतियां एवं विकल्प'' के लिए 50,000/- रुपए (पचास हजार रुपए) के प्रथम पुरस्कार और कैप्टन राजपाल द्वारा लिखित पुस्तक ''द्वितीय विश्वयुद्ध'' के लिए 30,000/-रुपए (तीस हजार रुपए) के द्वितीय पुरस्कार की अनुशंसा की गई।

15.37 **राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत रक्षा कार्यालयों को अधिसूचित किया जाना:** विभिन्न रक्षा कार्यालयों, जिनके 80% या इससे अधिक कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त हो गया है, के संबंध में राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचनाएं जारी की गई। नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित कार्यालयों को अपने कार्यालयों में अनुभागों/प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/ कर्मचारियों को अपना समस्त सरकारी कार्य हिन्दी में निपटाने हेतु नियम 8(4) के अंतर्गत विनिर्दिष्ट करने हेतु निदेश दिया गया।

15.38 **हिंदी पखवाड़ा:** अधिकारियों/कर्मचारियों को अपने रोजमर्रा के सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु मंत्रालय में 14 से 28 सितंबर, 2016 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के दौरान हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि तथा निबंध सहित कई प्रतियोगिताएं

आयोजित की गई। 200 से अधिक अधिकारियों/कर्मचारियों ने उपरोक्त प्रतियोगिताओं में भाग लिया और 110 सफल प्रतिभागी अधिकारियों/कर्मचारियों को नकद पुरस्कार/उपहार प्रदान किए गए।

15.39 **संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण:** गत वर्षों की भांति, वर्ष के दौरान संसदीय राजभाषा समिति ने इस वर्ष भी देश के विभिन्न भागों में स्थित कई रक्षा संगठनों का निरीक्षण दौरा किया। निरीक्षण प्रश्नावलियों की समीक्षा कर तथा अपेक्षित संशोधनों का सुझाव देकर मंत्रालय ने निरीक्षणाधीन कार्यालयों की सहायता की। निरीक्षण के दौरान कार्यालयों द्वारा दिए गए आश्वासनों को समिति के निदेशों और अपेक्षाओं के अनुरूप पूरा किया जा रहा है।

नि:शक्त व्यक्तियों का कल्याण

15.40 रक्षा मंत्रालय (रक्षा विभाग) तथा रक्षा उत्पादन विभाग के अंतर्गत सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों में समूह 'क', 'ख', और 'ग' में नि:शक्त व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व क्रमश: सारणी संख्या 15.4 और 15.5 में दिया गया है।

सारणी संख्या 15.4

सेवाओं में नि:शक्त व्यक्तियों के प्रतिनिधित्व को दर्शाने वाला वार्षिक विवरण (1 जनवरी, 2016 की स्थिति के अनुसार)

दृष्टि बाधित (वीएच)/श्रवण बाधित (एचएच)/ शारीरिक विकलांग (ओएच) का प्रतिनिधित्व (1.1.2016 की स्थिति के अनुसार)					कैलेंडर वर्ष 2015 में की गई नियुक्तियों की संख्या											
					सीधी भर्ती द्वारा				पदोन्नति द्वारा				प्रतिनियुक्ति द्वारा			
समूह	कुल	वीएच	एचएच	ओएच	कुल	वीएच	एचएच	ओएच	कुल	वीएच	एचएच	ओएच	कुल	वीएच	एचएच	ओएच
क	5339	1	0	28	180	1	0	3	483	0	0	2	1	0	0	0
ख	29256	19	37	260	192	1	1	10	2617	5	4	58	2	0	0	0
ग (सफाई कर्मचारी को छोड़कर)	135645	314	339	1067	6004	25	35	85	2713	5	5	32	2	0	0	0
ग (सफाई कर्मचारी)	49132	179	227	273	1464	8	19	26	506	2	3	27	1	0	0	0
कुल	**219372**	**513**	**603**	**1628**	**7840**	**35**	**55**	**124**	**6319**	**12**	**12**	**119**	**6**	**0**	**0**	**0**

सारणी संख्या 15.5

रक्षा उत्पादन विभाग के अंतर्गत सम्बद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों में सेवाओं में नि:शक्त व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व दर्शाने वाला वार्षिक विवरण

(1 जनवरी, 2016 की स्थिति के अनुसार)

दृष्टि बाधित (वीएच)/श्रवण बाधित (एचएच)/ शारीरिक विकलांग (ओएच) का प्रतिनिधित्व (1.1.2016 की स्थिति के अनुसार)					कैलेंडर वर्ष 2015 में की गई नियुक्तियों की संख्या											
					सीधी भर्ती द्वारा				पदोन्नति द्वारा				प्रतिनियुक्ति द्वारा			
समूह	कुल	वीएच	एचएच	ओएच	कुल	वीएच	एचएच	ओएच	कुल	वीएच	एचएच	ओएच	कुल	वीएच	एचएच	ओएच
(1)	**(2)**	**(3)**	**(4)**	**(5)**	**(6)**	**(7)**	**(8)**	**(9)**	**(10)**	**(11)**	**(12)**	**(13)**	**(14)**	**(15)**	**(16)**	**(17)**
क	2497	01	06	18	04	00	00	00	24	00	00	00	--	--	--	--
ख	33898	18	21	207	22	00	04	11	76	00	00	00	--	--	--	--
ग (सफाई कर्मचारी को छोड़कर)	60662	137	185	1116	10	05	00	05	81	01	08	23	--	--	--	--
ग (सफाई कर्मचारी)	141	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	--	--	--	--
कुल	**97198**	**156**	**212**	**1341**	**36**	**05**	**04**	**16**	**181**	**01**	**08**	**23**	**--**	**--**	**--**	**--**

15.41 **सशस्त्र सेनाएं:** नि:शक्त व्यक्ति (समान अवसर, अधिकारों की संरक्षा तथा पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 की धारा 33 और 47 के तहत किए गए प्रावधान नि:शक्त व्यक्तियों के भर्ती तथा सेवा में बनाए रखने संबंधी मामलों में सुरक्षोपायों का निर्धारण करते हैं। तथापि, सशस्त्र सेनाओं के कार्मिकों द्वारा की जाने वाली ड्युटियों की प्रकृति को देखते हुए, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा जारी की गई विशेष अधि सूचना के जरिए सभी योधी-पदों को संगत धाराओं की प्रयोजनीयता से छूट दी गई है।

15.42 **रक्षा उत्पादन विभाग:** रक्षा मंत्रालय के तहत सार्वजनिक क्षेत्र के सभी उपक्रमों में नि:शक्त व्यक्तियों को आरक्षण का लाभ उपलब्ध कराने के लिए नि:शक्त व्यक्ति (समान अवसर, अधिकारों का संरक्षण एवं पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 के प्रावधानों का अनुपालन किया जा रहा है। सरकार द्वारा जो रियायतें और छूट निर्धारित की गई है, उनके अलावा भी बहुत-सी रियायतें एवं छूट नि:शक्त व्यक्तियों को प्रदान की जाती हैं।

15.43 **रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन:** रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन नि:शक्त व्यक्तियों के कल्याण के संबंध में सरकार की नीतियों एवं अनुदेशों को लागू करने में वचनबद्ध है। सरकार के अनुदेशों के अनुसार भर्ती एवं पदोन्नति में 3% आरक्षण नि:शक्त व्यक्तियों को प्रदान किया जा रहा है।

भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग

15.44 **नि:शक्त सैनिकों के लिए विशेष चिकित्सा सेवा:** युद्ध के दौरान या दुर्घटनाओं एवं अन्य कारणों से कुछ सैनिक नि:शक्त हो जाते हैं और उन्हें सेवा से बाहर निकाल दिया जाता है। इन भूतपूर्व सैनिकों को स्वावलंबी बनाने के लिए विशेष चिकित्सा देखभाल और प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। ऐसे कार्मिकों की देखरेख एवं पुनर्वास मोहाली और किर्की स्थित विशेष संस्थाओं अर्थात पैराप्लेजिक पुनर्वास केन्द्र, सैंट डंस्टन आफ्टर केयर आर्गनाइजेशन, देहरादून में किया जाता है जिनका वित्त-पोषण केंद्रीय सैनिक बोर्ड सचिवालय द्वारा सशस्त्र सेना झण्डा दिवस निधि से किया जाता है।

15.45 **कृत्रिम अंग केन्द्र:** नि:शक्त ईएसएम को नवीनतम कृत्रिम अंग उपचार मुहैया कराने हेतु भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना के अंतर्गत पैनलबद्धता के लिए 03 नवम्बर, 2016 को 40 शहरों में एंडोलाइट और ओटोबोक कंपनियों के 53 कृत्रिम अंग केन्द्रों को अनुमोदित किया गया है।

16

सतर्कता यूनिटों के कार्यकलाप

अध्याय 16

सतर्कता यूनिटों के कार्यकलाप

16.1 रक्षा मंत्रालय के सतर्कता प्रभाग को रक्षा मंत्रालय और इसके अधीन आने वाली विभिन्न यूनिटों के कर्मचारियों के भ्रष्ट आचरणों, कदाचार और अनियमितताओं से जुड़ी शिकायतें निपटाने का कार्य सौंपा गया है। यह रक्षा मंत्रालय की ओर से सतर्कता संबंधी मामलों और शिकायतों पर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई), केन्द्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) इत्यादि के साथ मध्यस्थता के लिए नोडल प्वाइंट के रूप में कार्य करता है। भारत में सतर्कता प्रभाग भ्रष्टाचार को रोकने के उद्देश्य से उपायों की पहल तथा प्रक्रियाओं की समीक्षा करता है।

16.2 प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से, रक्षा विभाग का सतर्कता विंग, भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग और रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग का सतर्कता कार्य भी देखता है। रक्षा उत्पादन विभाग में अलग सतर्कता विंग मौजूद है।

16.3 केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निदेशानुसार, रक्षा मंत्रालय के अधीन सभी विभागों/संगठनों/यूनिटों अर्थात सेना, नौसेना, वायुसेना, डीआरडीओ, डीजीबीआर, सीजीडीए तथा डीजीएएफएमएस आदि में 'सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने तथा भ्रष्टाचार उन्मूलन में लोक भागीदारी' विषय पर 31 अक्तूबर से 5 नवंबर, 2016 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया और अपने कर्मचारियों में सतर्कता जागरूकता बढ़ाने के लिए बड़े पैमाने पर कार्यकलाप जैसे वर्कशॉप, पैम्फ्लेट का वितरण, बैनरों/पोस्टरों का प्रदर्शन, वाद-विवाद, व्याख्यान, निबंध तथा पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आदि का आयोजन किया गया।

रक्षा विभाग

16.4 सभी स्टेकहोल्डरों में भ्रष्ट आचरणों के प्रति जागरूकता लाने के लिए रक्षा मंत्रालय में पारदर्शिता, निष्पक्ष व्यवहार, जवाबदेही और सत्यनिष्ठा सुनिश्चित करने के लिए बराबर प्रयास किए जा रहे हैं।

16.5 मुख्य सतर्कता अधिकारी, सतर्कता कार्य से संबंधित विभिन्न रिपोर्टों/मामलों/अन्य कार्यों को समय पर पूरा करने के प्रयोजन से सभी संबंधित कार्यालयों के संपर्क में रहते हैं।

16.6 मंत्रालय संबंधित स्कंधों/प्रभागों में लंबित मामलों सहित विभिन्न चरणों में लंबित सतर्कता मामलों पर कड़ी निगरानी रखता है, ताकि इन मामलों का समयबद्ध तरीके से निपटान किया जा सके। लंबित मामलों की स्थिति की मुख्य सतर्कता अधिकारी द्वारा उपयुक्त अंतराल पर मानीटरी की जाती है।

16.7 केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त (सीवीसी) द्वारा कुल 11 शिकायतें और 3 सीटीई पैरा विचारार्थ भेजे गए थे, जिन पर कार्रवाई शुरू की गई। उपर्युक्त के अतिरिक्त मंत्रिमंडल सचिवालय/पीएमओ की एक शिकायत सहित दो और शिकायतें तथा डीओपीटी से एक शिकायत प्राप्त हुई थीं। केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो से दो शिकायतें प्राप्त हुई थीं। रिपोर्ट अवधि के दौरान केन्द्रीय सतर्कता आयोग/मुख्य सतर्कता अधिकारी के परामर्श से 15 मामलों को बंद कर दिया गया था। वर्ष 2016 के दौरान 4 अधिकारियों के विरूद्ध अभियोजन मंजूरी जारी की गई थी। वर्ष 2016 के दौरान समूह 'क' के 16 अधिकारियों

के विरूद्ध अनुशासनिक कार्रवाई को अंतिम रूप दिया गया। इनमें से 5 अधिकारी को बर्खास्त किया गया तथा 6 मामलों में शास्ति लगाई गई थी। 02 अधिकारियों को आरोप मुक्त किया गया और एक अन्य मामलों में चेतावनी दर्ज की गई थी। अन्य मामलों में, लगाई गई शास्ति के खिलाफ की गई दो अपीलों पर भी वर्ष के दौरान निर्णय लिया गया था।

रक्षा उत्पादन विभाग

16.8 **आयुध निर्माणी बोर्ड (ओएफबी):** सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2016 ओएफबी की पूरे देश में स्थित यूनिटों में मनाया गया था। विभागाध्यक्ष द्वारा सभी यूनिटों के कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई गई थी। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं अर्थात स्लोगन लेखन, वाद-विवाद, सतर्कता से संबंधित विषयों पर क्षेत्रीय भाषा हिंदी व अंग्रेजी में निबंध लेखन आदि का आयोजन किया गया था तथा विजेताओं को पुरस्कार दिए गए थे। सतर्कता संबंधी अधिकारियों ने स्थानीय यूनिटों के कर्मचारियों को सतर्कता मामलों के बारे में जागरूक किया। जन-जागरण के लिए लोक स्थलों पर बैनर/पोस्टर भी लगाए गए थे।

16.9 ओएफबी/सतर्कता ने विभिन्न पांच स्थलों पर आयुध निर्माणियों के अधिकारियों तथा उप सचिव (सतर्कता)/डीडीपी के साथ परस्पर कार्य सत्र का आयोजन किया था ताकि अधिप्राप्ति, खरीद, श्रम संविदाकारों आदि के साथ कार्यकलाप करने के बारे में सतर्कता के दृष्टिकोण से अपनी सरकारी ड्यूटियों का निर्वहन करते समय अधिकारियों को संवेदनशील बनाया जा सके।

16.10 नवंबर, 2016 में एनएडीपी/अंबाझरी में सीवीओ/ओएफबी द्वारा जांच अधिकारी तथा प्रस्तुतकर्ता अधिकारी के रूप में अपने कार्यों का निष्पादन करने के लिए उन्हें प्रशिक्षण दिया गया था।

16.11 इस वर्ष के दौरान 69 निरोधात्मक जांच तथा 248 एपीआर जांच आयोजित की गई थीं।

16.12 सीवीओ/ओएफबी ने कमियों को प्रभावी तौर पर दूर करने के लिए एसआरओ का पुनरीक्षण करने का सुझाव दिया था। गुणता और अधिप्राप्ति नियमावलियों में स्थापित वेंडरों की विभिन्न परिभाषाओं में संशोधन करने के सुझाव दिए गए थे। श्रमिकों/सेवा संविदाओं के बारे में मौजूदा मानकों का कड़ाई से अनुपालन करने का परामर्श दिया गया था।

16.13 इस अवधि के दौरान, भ्रष्टाचार संभावित क्षेत्रों में 589 नेमी तौर पर/औचक जांच की गई थी, इनमें से 14 मामलों में गहन जांच की गई थी। इस अवधि के दौरान, 230 शिकायतों का निवारण किया गया था।

16.14 21 मामलों की जांच की गई थी इनमें से 9 मामलों में अनुशासनिक कार्रवाई किए जाने के लिए तथा 10 मामलों में प्रशासनिक कार्रवाई किए जाने के लिए भेजा गया था।

16.15 भविष्य निधि ट्रस्ट, सीएसआर कार्यकलापों आदि जैसे कल्याणकारी कार्यों पर किए गए व्यय की जांच की गई थी। कार्यप्रणाली संबंधी अध्ययन किए गए थे तथा उप संविदाकारों को सामान जारी करने, वेंडरों का पंजीकरण करने, आरटीजीएस भुगतान करने, बैंक गारंटियों का रख-रखाव करने की प्रक्रिया को कारगर बनाने के उपायों को कार्यान्वित किया गया था। महत्वपूर्ण कार्यकर्ताओं/स्टेक होल्डरों के साथ कई कार्यशालाएं आयोजित की गई थीं।

16.16 **भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल):** बीईएल के निगमित कार्यालय, सभी यूनिटों/सब-यूनिटों में 31 अक्टूबर, 2016 से 5 नवंबर, 2016 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया था।

16.17 विश्व बैंक के सहयोग से बेंगलुरू सतर्कता अध्ययन सर्कल द्वारा आयोजित 2850 कार्यपालकों/अकार्यपालकों ने लोक खरीद कार्यक्रम प्रमाण-पत्र पूरा किया। बेंगलुरू स्थित सतर्कता अध्ययन सर्कल ने बीईएल में 28 जुलाई, 2016 को एक बैठक आयोजित की थी तथा निदेशक/वित्त सलाहकार, डिलोटी टच तोहमस्तु इंडिया एलएलपी द्वारा ''प्रौद्योगिकी अपराध तथा निवारण रणनीति'' पर बात-चीत का आयोजन किया गया था। 9 सतर्कता अधिकारियों को आईएसओ 9001: 2015 मानकों पर अर्हक आंतरिक आडिटर्स के रूप में प्रमाणित किया गया था।

16.18 **बीईएल ने सतर्कता कार्य के लिए आईएसओ**

9001: 2015 प्रमाणन, 3 जून, 2016 को प्राप्त किया था। बेंगलुरू परिसर में 12 अप्रैल, 2016 को शिकायत मानिटरिंग प्रणाली का शुभारंभ किया गया था। संविदा नियमावली, खरीद प्रक्रिया, भर्ती नीति, सुरक्षा नियमावली जैसी विभिन्न नियमावलियों को संशोधित कर जारी किया गया था। बीईएल की गाजियाबाद यूनिट द्वारा 'संविदा कामगारों के लिए दिशा-निर्देश तथा लाभकारी सूचना' पर एक सूचना पुस्तिका जारी की गई थी। इस वर्ष के दौरान 1550 नियमित तथा 604 औचक निरीक्षण किए गए थे।

16.19 इन हाउस सतर्कता पत्रिका 'जागृति' का 8वां, 9वां और 10वां अंक प्रकाशित किया गया था। 05.11. 2016 को घंटाशाला गांव में सतर्कता जागरूकता ग्राम सभा का आयोजन किया गया था। इसमें केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त मुख्य अतिथि थे। 29 संविदाओं के बारे में सीटीई प्रकार की गहन परीक्षाएं आयोजित की गई थी।

16.20 **गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लि. (जीआरएसई):** जीआरएसई ने 31 अक्टूबर, 2016 से 31 नवंबर, 2016 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया था। जीआरएसई ने अक्टूबर, 2016 को आयोजित सतर्कता अध्ययन सर्कल कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया था।

16.21 भर्ती किए गए नए अधिकारियों को सतर्कता विभाग से प्रशिक्षण दिलवाया गया था।

16.22 ई-अधिप्राप्ति सेल के सभी अधिकारियों को आई.डी तथा डिजिटल हस्ताक्षर उपलब्ध कराए गए थे ताकि वे पोर्टल पर स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकें। सीएमडी के साथ सीवीओ की संरचित बैठकें नियमित अंतरालों पर की गई थी, ताकि सतर्कता मामलों की स्थिति से अवगत कराया जा सके। निरोधात्मक उपायों के रूप में फाइलों का सत्यापन तथा औचक निरीक्षण किया गया था।

16.23 **गोवा शिपयार्ड लिमिटेड (जीएसएल):** मुख्य सतर्कता आयुक्त के निदेशों के अनुसार जीएसएल में 31 अक्टूबर से 5 नवंबर, 2016 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया था। इस सप्ताह के दौरान विश्वविद्यालय छात्रों के लिए आउटडोर वाग्मिता प्रतियोगिता कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इसके अतिरिक्त जीएसएल कर्मचारियों, शिक्षुओं एवं जीएसएल/ सीआईएसएफ यूनिट के लिए पोस्टर प्रतियोगिता, स्लोगन प्रतियोगिता, हिंदी/अंग्रेजी में निबंध प्रतियोगिता जैसी इन-हाउस प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। जीएसएल परिसर में दसवीं व ग्यारहवीं के विद्यार्थियों के लिए निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था। हाल ही में तैनात किए गए सीआईएसएफ के कार्मिकों के लिए संवेदनशील कार्यक्रम आयोजित किया गया था ताकि भ्रष्टाचार को समाप्त करने में उनका भी सहयोग मिल सके।

16.24 हाल ही में भर्ती किए गए अधिकारियों, प्रबंधन प्रशिक्षणार्थियों, पर्यवेक्षकों तथा लिपिक वर्ग के लिए एक निरंतर आधार पर सतर्कता जागरूकता मामले पर अभिविन्यास, व्याख्यान तथा प्रस्तुतिकरण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। दो अतिथि व्याख्यान आयोजित किए गए थे। इनमें से पहला व्याख्यान सचिव, लोक उद्यम चयन बोर्ड ने अनुशासनिक कार्रवाई, शास्ति लगाना, निलंबन, अभियोजन की मंजूरी देना, तथा सतर्कता अनापत्ति देने सहित महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर दिया तथा दूसरा अतिथि व्याख्यान डीजीएसएंडडी के निदेशक (क्यूए) ने सरकार द्वारा शामिल किए जा रहे जीईएम सॉफ्टवेयर को शामिल किये जाने के प्रस्ताव पर तथा लोक अधिप्राप्ति पर भारत सरकार द्वारा की जा रही नई पहल पर दिया गया था।

16.25 वर्ष के दौरान 'सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने तथा भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए आम जनता की भागीदारी' पर विशेष बल दिया गया था। केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त के दिशा-निर्देशों और अनुदेशों की चूक/उल्लंघन की पहचान करने के लिए समय पर हस्तक्षेप करने के उद्देश्य से विभिन्न क्षेत्रों में नियमित रूप से काफी निरीक्षण, औचक जांच तथा सीटीई (प्रकार) के निरीक्षण किए गए थे। प्रक्रिया और कार्यप्रणाली को आसान बनाने के लिए सुव्यवस्थित ढंग से सुधार करने का सुझाव भी दिया गया था।

16.26 हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड (एचएसएल): 31 अक्टूबर से 5 नवंबर, 2016 के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया था। एचएसएल के डिग्री कॉलेज के छात्रों के लिए वाग्मिता प्रतियोगिता, एचएसएल के अधि कारियों के लिए निबंध, लेखन तथा स्लोगन लेखन प्रतियोगिता तथा 4 नवंबर, 2016 को सभी अधिकारियों

के लिए एक सेमिनार का आयोजन किया गया था। इस सेमिनार में अतिथि वक्ता के तौर पर हैदराबाद स्थित सीबीआई के संयुक्त निदेशक थे।

16.27 इस वर्ष के दौरान सीटीई प्रकार की तीन रिपोर्ट तैयार की गई थीं। सक्रिय सतर्कता के लिए प्रस्तावित एक नई पहल के रूप में आईएनएस केसरी पर रैंप की मरम्मत, एमवी नानकावरी पर एचटी तथा एलटी कूलर प्लेटों पर मेंटल स्प्रे करने, दर संविदा, एमवी नानकावरी के अलार्म पैनल की अधिप्राप्ति फाइल तथा 11184 पर एके 630 तोपों का संस्थापन तथा समेकन संबंधित विभिन्न फाइलों का यादृच्छिक तौर पर सत्यापन किया गया था।

16.28 **माझगांव डाक लिमिटेड (एमडीएल):** सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान इन हाउस सतर्कता पत्रिका 'सुचरिता-खण्ड XIX' का प्रकाशन किया गया था; सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई गई थी तथा पूर्व-सीटीई/ सीवीसी ने अधिप्राप्ति पर अपना व्याख्यान दिया तथा सीवीओ ने कार्यपालकों से बातचीत की।

16.29 6 अप्रैल, 2016 को सीबीआई के साथ सतर्कता समन्वय बैठक की गई थी। एक बैठक वेंडरों के लिए भी की गई थी। 204 वार्षिक संपत्ति रिटर्न की भी संवीक्षा की गई थी।

16.30 **भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड (बीईएमएल):** बीईएमएल लिमिटेड में 31 अक्तूबर, 2016 से 5 नवंबर, 2016 तक 'सत्यनिष्ठा प्रोत्साहन तथा भ्रष्टाचार समाप्त करने में जन-भागीदारी' विषय पर सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। सप्ताह के दौरान विशेष रूप से संगठन के कार्यपालकों और कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा की शपथ व नागरिकता की शपथ दिलाई गई थी। इसके अतिरिक्त बीईएमएल ने बाह्य गतिविधियों के रूप में विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों के 3217 छात्रों और 124 स्टॉफ को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के एक भाग के रूप में कई कार्यक्रम आयोजित करके सत्यनिष्ठा शपथ और नागरिकता की शपथ दिलाई गई थी। इसके अतिरिक्त बीईएमएल से संबद्ध 190 फर्मों ने भी सतर्कता जागरूकता सप्ताह में भाग लिया था और सत्यनिष्ठा की शपथ तथा नागरिकता की शपथ ली थी। बीईएमएल के कर्मचारियों और अधिकारियों तथा आम जनता के लिए भी नुक्कड़ नाटक और प्रहसन का आयोजन किया गया था।

16.31 सतर्कता के एक उपाय के रूप में एक करोड़ से अधिक की सभी निविदाएं सत्यनिष्ठा पैक्ट के अधीन रखी गई हैं। वर्ष के दौरान 228 वार्षिक संपत्ति रिटर्न (एपीआर) की संवीक्षा की गई थी तथा 281 औचक जांच, 283 आवधिक जांच, 504 खरीद आदेश जांच, 637 प्रतिपूर्ति दावे तथा 2 सीटीई प्रकार की जांच भी की गई थी। निविदाओं को प्राप्त करने, चिकित्सा केन्द्र में सामान तथा दवाइयां जारी करने, परिवहन वाहनों की बुकिंग करने तथा उनके दावों का निपटान आदि करने की प्रक्रिया में सुधार करने की सिफारिश की गई थी तथा कार्यान्वित की गई थी। इसके अतिरिक्त सभी के लाभ के लिए विभिन्न चरणों के अधीन निविदा श्रेणीकरण पर केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त के परिपत्र एसआरएम प्लेटफार्म, सतर्कता पोर्टल तथा बीईएमएल बुलेटिन बोर्ड पर अपलोड किए गए थे।

16.32 **मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि):** मिश्र धातु निगम लिमिटेड में 31 अक्तूबर, से 5 नवंबर, 2016 के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया था, इस दौरान 'सत्यनिष्ठा बढ़ाने तथा भ्रष्टाचार समाप्त करने में जन-भागीदारी' विषय पर विशेष बल दिया गया था। माननीय उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर भागीदारों और कर्मचारियों की सूचना तथा संवेदनशील बनाने के लिए 'आईटीआई अधिनियम पर हस्तपुस्तिका' बांटी गई थी। इस अवसर पर इन-हाउस पत्रिका 'जागृति' का चौथा अंक निकाला गया था।

16.33 मुख्य सतर्कता अधिकारी ने अंतरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार रोधी एजेंसी (आईएसीए) द्वारा 1 से 12 फरवरी, 2016 तक लग्जमवर्ग, आस्ट्रिया में सीवीसी द्वारा प्रायोजित सतर्कता से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। सीवीओ मिधानि ने अध्यक्ष होने के नाते 8 जुलाई, 2016 को हैदराबाद में सतर्कता अध्ययन सर्कल की मनाई गई तेरहवीं वर्षगांठ में सक्रिय रूप से समन्वय का कार्य किया। इस अवसर पर सीवीसी मुख्य अतिथि थे तथा उन्होंने सभा को संबोधित किया। इस दौरान 'भ्रष्टाचार पर

काबू पाने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोग' पर भी विचार-विमर्श किया गया था।

16.34 प्रबंधन को अधिप्राप्ति, भर्ती नियमों, टेंडर करते समय गोपनीय सूचना का संरक्षण तथा, नियमावलियों का पुनरीक्षण, दिहाड़ी मजदूरों का ईएसआई/पीएफ का भुगतान करने संबंधी मुद्दों पर लगभग 14 प्रणाली सुधार परामर्श दिए गए हैं। वर्ष के दौरान बड़ी अधिप्राप्ति फाइलों, छोटे टेंडर प्रत्युत्तर फाइलों तथा आपरेशन, आसूचना आदि क्षेत्र पर आधारित अन्य फाइलों की संवीक्षा की गई थी। एक करोड़ से अधिक की अधिप्राप्ति को सत्यनिष्ठा पैक्ट (आईपी) के अधीन रखा गया है। वर्ष के दौरान 47 संविदाओं के लिए आईपी समझौते किए गए थे। संवेदनशील पदों/क्षेत्रों में कार्यरत 18 अधिकारियों के क्रमावती स्थानांतरण किए गए थे। वर्ष के दौरान 130 कार्यपालकों की वार्षिक संपत्ति रिटर्न के औचक निरीक्षण किए गए थे व उसकी जांच की गई थी।

16.35 **भारत डायनामिक्स लिमिटेड (बीडीएल):** बीडीएल/सतर्कता का मुख्य रूप से जोर सतर्कता पर निवारक/सक्रिय/पूर्व सूचक सर्तकता पर रहा है। इसे प्राप्त करने के लिए प्रबंधन को प्रणालीगत सुधारों/सुझावों सहित विभिन्न सतर्कता रिपोर्टें भेजी गई थीं।

16.36 आईएमएम नियमावली तथा वर्कर्स नियमावली में संशोधन किया गया था तथा अधिप्राप्ति का 90 प्रतिशत लक्ष्य ई-खरीद के माध्यम से हासिल किया गया था। बिलों की प्रभावी ट्रैकिंग के लिए संविदाकारों के बिलों की स्वीकृति के लिए ऑनलाइन प्रणाली (एफटीएस) भी शुरू की गई थी। कंप्यूटर युक्त फाइल ट्रैकिंग प्रणाली भी शुरू की गई थी। सत्यनिष्ठा पैक्ट के लिए थ्रेसहोल्ड मूल्य को 2 करोड़ रुपए तक संशोधित किया गया है। ई-भर्ती प्रणाली भी शुरू की गई है।

16.37 **गुणता आश्वासन महानिदेशालय (डीजीक्यूए):** डीजीक्यूए के मुख्यालय, तकनीकी निदेशालयों/ प्रशासनिक निदेशालयों सहित सभी यूनिटों/ स्थापनाओं में 31 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 2016 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया था।

16.38 वर्ष के दौरान 'अस्थायी ड्यूटी तथा ट्रेड निरीक्षण पर टीए/डीए दावा' संबंधी विषयों पर प्रणाली सुधार पर अध्ययन करने का आदेश दिया गया था ताकि भ्रष्टाचार के संभावित क्षेत्रों या संदेहास्पद क्षेत्रों का पता लगाया जा सके और भ्रष्टाचार की किसी भी प्रकार की गुंजाइश को रोकने के लिए किए जाने वाले उपायों के लिए सुझाव/ सिफारिश की जा सके।

16.39 **वैमानिकी गुणता आश्वासन महानिदेशालय (डीजीएक्यूए):** 31 अक्तूबर से 5 नवंबर 2016 तक मनाए गए सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान सतर्कता जागरूकता कार्यकलापों के एक भाग के रूप में समुचित स्लोगन वाले बैनर लगाए गए थे तथा इन-हाउस बातचीत का आयोजन भी किया गया था।

16.40 डीजीएक्यूए की फील्ड स्थापनाओं द्वारा जारी किए गए निरीक्षण टिप्पणियों की एक सक्रिय तथा निरोधात्मक उपाय के रूप में मुख्यालय में लगातार निगरानी की जाती है। मुख्यालय में एसएजी स्तर का अधिकारी तथा फील्ड स्थापनाओं में पर्याप्त रूप से वरिष्ठ स्तर का अधिकारी सतर्कता संबंधी मामलों पर नजर रखता है। सीवीसी के अनुदेशों के अनुसार उन फील्ड स्थापनाओं तथा मुख्यालय में उन अधिकारियों की पहचान की गई थी जो संवेदनशील हैं और इन पदों पर आसीन अधिकारियों की प्रत्येक/दो/तीन वर्षों में तैनाती बदल दी जाती है, ताकि इनके निहित स्वार्थों को आगे बढ़ने से रोका जा सके।

16.41 **रक्षा उत्पादन विभाग द्वारा की गई कार्रवाई:** सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रमों तथा आयुध निर्माणी बोर्ड के विभिन्न कार्यकलापों में पारदर्शिता का स्तर बढ़ाने के लिए कार्रवाई योग्य बातों की पहचान की गई थी तथा इन्हें सभी सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रमों तथा आयुध निर्माणी बोर्ड को आवश्यक कार्रवाई करने के लिए भेजा गया था, जिनमें आंतरिक संगठन लेखा परीक्षा, 90 प्रतिशत संविदाओं को सत्यनिष्ठा पैक्ट के अधीन लाना, शनैःशनैः वेंडर विकास के माध्यम से सीमित /एकल टेंडर के हिस्से को कम करना, 90 प्रतिशत अधिप्राप्ति ई-अधिप्राप्ति (मूल्य द्वारा) के माध्यम से करना, डीपीएसयू में अधिप्राप्ति तरीके को सुकर बनाना तथा सभी वर्कस तथा अधिप्राप्ति नियमावलियों को अद्यतन करने का कार्य शामिल है।

16.42 29 फरवरी, 2016 को सचिव रक्षा उत्पादन के साथ सभी डीपीएसयू/ओएफबी के सीवीओ की ढांचागत बैठक की गई थी। इस बैठक के दौरान कार्रवाई योग्य मुद्दों के कार्यान्वयन पर हुई प्रगति तथा सतर्कता संबंधी मुद्दों की पुनरीक्षा की गई थी। सत्यनिष्ठा पैक्ट पर हस्ताक्षर करने के लिए मौजूदा थ्रेसहोल्ड वैल्यू की भी पुनरीक्षा की गई थी ताकि 90 प्रतिशत का लक्ष्य हासिल किया जा सके तथा 90 प्रतिशत तक संविदाओं को सत्यनिष्ठा पैक्ट के अधीन लाने के लिए प्रत्येक डीपीएसयू/ओएफबी के बारे में आईपी के लिए थ्रेसहोल्ड वैल्यू में संशोधन करने का सुझाव दिया गया था जिसे अधिकांश डीपीएसयू ने अपनाया है।

16.43 ओएफबी अधिकारियों के साथ उप-सचिव (सतर्कता)/डीडीपी ने चेन्नई, कानपुर, कोलकाता, नागपुर तथा पुणे में पांच विभिन्न स्थानों पर पारस्परिक सत्र का आयोजन किया था ताकि अधिप्राप्ति खरीद तथा श्रम संविदाओं आदि से संबंधित अपनी ड्यूटी का निर्वहन करते समय नियमों/दिशा-निर्देशों की उपयोज्यता के बारे में सतर्कता दृष्टिकोण/महत्वपूर्णता के प्रति उन्हें संवेदनशील बनाया जा सके। लगभग 117 अधिकारियों ने पारस्परिक सत्र में एक साथ भाग लिया।

16.44 वर्ष 2016 के दौरान डीडीपी/सतर्कता ने ओएफबी/डीजीक्यूए के समूह 'क' अधिकारियों के संबंध में तथा दण्डात्मक सतर्कता के अंतर्गत डीपीएसयू के बोर्ड स्तर के अधिकारियों के खिलाफ निम्नलिखित कार्रवाई की है:-

क्रम. सं.	की गई कार्रवाई	शामिल अधिकारियों की संख्या
1	बड़ी शास्ति लगाई गई	14
2	लघु शास्ति लगाई गई	6
3	चेतावनी जारी की गई	0
4	बड़ी शास्ति चार्जशीट जारी की गई	10
5	लघु शास्ति चार्जशीट जारी की गई	1

17

महिला कल्याण और सशक्तिकरण

अध्याय 17

महिला कल्याण और सशक्तिकरण

17.1 राष्ट्रीय रक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका में निरन्तर वृद्धि हो रही है। महिलाओं को रक्षा उत्पादन यूनिटों, रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं और सशस्त्र सेनाओं में नियुक्त किया जाता है। सशस्त्र सेनाओं की उड़ान, संभारिकी और विधि जैसी विभिन्न शाखाओं में महिलाओं की भर्ती शुरू करने से उनके लिए व्यापक भूमिका की परिकल्पना की गई है।

भारतीय सेना

17.2 **सेना में महिला अफसर:** सशस्त्र सेनाओं में महिला अफसर लगभग 80 वर्षों से सेवा कर रही हैं और उन्होंने बड़ी सक्षमता व विशिष्टता के साथ सेवा की है। इन्हें सैन्य परिचर्या सेवा में 1927 में तथा चिकित्सा अफसर संवर्ग में 1943 में शामिल किया गया था। सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा में स्थाई और अल्पकालीन सेवा कमीशन, (एसएससीओ)दोनों प्रकार के अफसर हैं।

17.3 एक महत्वपूर्ण उपाय के रूप में, सेना में महिला के अल्पकालीन सेवा कमीशन की अवधि को 10 वर्ष से बढ़ाकर 14 वर्ष कर दिया गया है जिससे सेना में और अधिक महिलाएं भर्ती होंगी। इसके अलावा, उनके पदोन्नति के अवसरों में पर्याप्त रूप से वृद्धि की गई है। वे पहले केवल एक पदोन्नति अर्थात 5 वर्ष की सेवा के बाद मेजर रैंक में पदोन्नति के लिए पात्र थीं। उन्हें अब 2, 6 तथा 13 वर्ष की संगणनीय सेवा के बाद क्रमश: कैप्टन, मेजर तथा लेफ्टि. कर्नल तक के समय-मान में बड़ी पदोन्नति दी जाती है। यह स्थाई सेवा कमीशन अफसरों को उपलब्ध पदोन्नतियों के समान है। इसके अलावा, लिंग समानता सुनिश्चित करने की दृष्टि से सेना में अल्पकालीन सेवा कमीशन में महिला अफसरों की प्रशिक्षण अवधि 24 सप्ताह से बढ़ाकर 49 सप्ताह कर दी गई जो अल्पकालीन सेवा कमीशन के पुरूष अफसरों के समान है।

17.4 राष्ट्र की रक्षा और देश की प्रादेशिक अखंडता का संरक्षण करने में सशस्त्र सेनाओं की भूमिका और जिम्मेदारी को दृष्टिगत रखते हुए, सेनाओं में महिलाओं की भर्ती और रोजगार संबंधी भावी नीति का निरूपण नवंबर, 2011 में किया गया है, जो इस प्रकार है:-

(i) तीनों सेनाओं में, जिन शाखाओं/संवर्गों में महिला अफसरों को इस समय भर्ती किया जा रहा है वहां उन्हें अल्कालिक कमीशन अफसर (एसएससीओ) के रूप में भर्ती किया जाता रहे;

(ii) महिला एस एस सी ओ तीनों सेनाओं की विशिष्ट अर्थात सेना की जज एडवोकेट जनरल और सेना शिक्षा कोर और नौसेना तथा वायु सेना में उनके तदनुरूप शाखाओं; नौसेना में नेवल कंस्ट्रक्टर वायु सेना में लेखा शाखा में पुरूष एस एस सी ओ के साथ स्थाई कमीशन प्रदान किए जाने के लिए विचारार्थ पात्र होंगी।

(iii) उपर्युक्त के अलावा, वायु सेना में तकनीकी, प्रशासन, संभारिकी तथा मौसम विज्ञान शाखाओं में स्थाई कमीशन प्रदान किए जाने हेतु महिला एस एस सी ओ पुरूष एस एस सी ओ के साथ विचारार्थ पात्र होंगी।

17.5 स्थाई कमीशन प्रदान किया जाना, उम्मीदवार की रजा मंदी और प्रत्येक सेना द्वारा यथानिर्धारित सेना विशेष की आवश्यकताओं, रिक्तियों की उपलब्धता, उपयुक्तता, उम्मीदवार की मेरिट की शर्त के अध्यधीन है।

भारतीय नौसेना

17.6 भारतीय नौसेना महिलाओं के कल्याण, बेहतरी और मर्यादा के लिए वचनबद्ध है। भारतीय नौसेना महिला कर्मचारियों और महिला परिवार के सदस्यों का हर समय उच्च मनोबल और उत्साह बनाए रखने हेतु अधिकतम सहायता उपलब्ध कराने हेतु सतत् प्रयासरत् है। भारतीय नौसेना ने महिला कार्मिकों का अधिकार सुनिश्चित करने और संबंधित इकाईयों पर कार्यकलापों में सक्रिय भागीदारी / कार्य करने हेतु ठोस प्रयास किए हैं। महिला सशक्तिकरण और महिला कर्मचारियों हेतु सुरक्षित कार्यकारी वातावरण सुनिश्चित करने हेतु निम्नलिखित उपाय कार्यान्वित किये गए हैं :

(क) महिलाओं को कार्य स्थल पर स्वतंत्रता देकर सकारात्मक वातावरण तैयार करना और पुरूषों के समान समकक्षता प्रदान करना जिसके द्वारा उनकी पूर्णक्षमता का अहसास कराते हुए महिलाओं का विकास करना।

मॉरिशश में नौसेना पोतयान महारेई की सभी महिला चालक दल

(ख) यूनिट / स्थापना के कार्यकलापों में अथवा सभी स्तरों पर निर्णय लेने में महिला कर्मचारियों की समान भागीदारी / सहभागिता प्रदान करना।

(ग) सभी कर्मचारियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करने हेतु कार्य स्थल पर अनुकूल सुग्राही माहौल बनाना।

(घ) कार्य स्थल पर महिला कर्मचारियों का सभी प्रकार के उत्पीड़न चाहे शारिरीक अथवा मानसिक हो/बल प्रयोग का उन्मूलन।

17.7 **महिला अफसर:** महिलाओं को नौसेना में कार्यपालक (प्रेक्षक, ए.टी.सी, विधि और संभारिकी संवर्ग), शिक्षा शाखा और इंजीनियरी शाखा (नौसेना वास्तुशिल्प) में अल्प सेवा कमीशन अफसरों के रूप में भर्ती किया जा रहा है। सरकार ने कार्यपालक शाखा (विधि संवर्ग), शिक्षा शाखा और इंजीनियरिंग शाखा (नौसेना वास्तुशिल्प) को पुरूष एवं महिला दोनों अल्प सेवा कमीशनप्राप्त अफसरों को भविष्यलक्षी प्रभाव से स्थायी कमीशन प्रदान करना अनुमोदित कर दिया है। मार्च, 2016 में नौसेना शस्त्रास्त्र निरीक्षणालय (एनएआई) संवर्ग में समुद्री टोही यानों में पायलट के रूप में अल्पसेवा कमीशन प्राप्त महिला अफसरों को शामिल करने की अनुमति प्रदान की गई। वर्ष 2017 के मध्य से उन्हें शामिल करना प्रारंभ हो जाएगा।

17.8 एकीकृत मुख्यालय रक्षा मंत्रालय (नौसेना) और सभी कमानों और बाहरी इकाईयों में "विशाखा दिशा निर्देश" और महिलाओं का कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न (निवारण, प्रतिषेध और प्रतितोप) अधिनियम 2013 को कार्यान्वित किया गया है। महिला कर्मचारियों के कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न की शिकायतों की जांच हेतु तीनों कमानों में समिति गठित की गई है।

कल्याणकारी कार्यकलाप

17.9 **नौसेना रेजिमेंटल प्रणाली (एनआरएस):** रक्षा सेवाओं में पारम्परिक सदभाव और भाईचारे को ध्यान

में रखते हुए और इसे बनाए रखने के लिए, तथा मारे गए नौसेना कार्मिकों की विधवाओं / निकट संबंधियों को पूर्ण सक्रिया और विस्तारित सहायता उपलब्ध कराने हेतु संस्थागत रूप में जनवरी, 11 में एक नवल रेजिमेंटल प्रणाली (एनआरएस) स्थापित किया गया था। इस प्रणाली के अंतर्गत, सात कमान रेजिमेंटल प्रणाली अधिकारी (सीआरएसओ) और उनकी टीमें, नौसेना साथियों की मृत्यु अमूर्त चाहे व्यक्ति की मृत्यु कार्य के दौरान हुई हो अथवा सेवानिवृति के पश्चात उनके कल्याण तथा समय पर सभी प्राधिकृत देयता को ठीक-ठीक पहुंचाने के लिए प्रत्येक के परिवार तक पहुंचती है।

17.10 **विधवाओं तक पहुंचना:** एकीकृत मुख्यालय रक्षा मंत्रालय (नौसेना) में भूतपूर्व सैनिक कार्य निदेशालय (डीईएसए), नोसैनिक कार्मिक जिनकी कार्य के दौरान अथवा सेवानिवृति के पश्चात मृत्यु हुई है, की विधवाओं के पुर्नस्थापन और पुर्नवास का कार्य करता है। वर्तमान में, विभिन्न छात्रवृति योजनाओं, रोजगार के अवसरों, वित्तिय और कानूनी मामलों में मामला-दर-मामला आधार पर मामलों में सहायता उपलब्ध कराई जा रही है।

17.11 **भविष्य मामला निवारण तंत्र:** नौसैनिकों के बीच भ्रातृत्व-कल्याण हेतु भविष्य में उठने वाले मामलों के सहज निवारण की सुविधा हेतु निम्नलिखित कदम उठाए गए है:-

(क) भूतपूर्व सैनिक कार्य निदेशालय (डीईएसए) ने नौसेना तक पहुंच के लिए वीर नारी 24x7 टोल फ्री हेल्पलाईन की स्थापना की है। इसमें कार्य समय से इतर समय के दौरान पहुंच के लिए एक एकीकृत आवाज रिकार्डिग सुविधा है।

(ख) पेंशन संबंधित मुद्दों के समाधान के लिए कमोडोर ब्यूरो ऑफ सेलर्स टोल फ्री हेल्प लाईन

(ग) आईआरएफसी वेबसाईट के द्वारा महत्वपूर्ण मामलों का निवारण।

(घ) इंटरनेट द्वारा डीईएसए के संपर्क हेतु ई-मेल्स आईडी।

भारतीय वायु सेना

17.12 **लड़ाकू विधा में महिला पायलटों को शामिल करना:** भारतीय वायुसेना महिलाओं को बेहतर अवसर प्रदान करने में अग्रणी रही है ओर इसने उड़ान तथा ग्राउंड ड्यूटी शाखाओं में महिला अफसरों की भर्ती का मार्ग प्रशस्त किया है। वर्ष 1993 से महिलाओं को लड़ाकू विधा के अतिरिक्त भारतीय वायुसेना की सभी शाखाओं में अल्प सेवा कमीशन प्राप्त अफसरों के रूप में शामिल किया जा रहा है। भारतीय वायुसेना ने हाल ही में पांच वर्ष की अवधि के लिए प्रायोगिक आधार पर महिलाओं को शामिल करने के लिए अल्प सेवा कमीशन योजना में संशोधन किया है। तीन महिला अफसरों के प्रथम बैच को 18 जून, 2016 को लड़ाकू विधा में कमीशन दिया गया है।

भारतीय वायुसेना की महिला पायलटें कॉकपिट में

17.13 लड़ाकू विमान में महिला पायलटों के कार्य निष्पादन का मूल्यांकन ऐसे किन्ही कारकों को सुनिश्चित करने के लिए किया जाना है जो निम्नलिखित के विशेष संदर्भ में लड़ाकू विधा में महिलाओं को भावी नियुक्ति के लिए प्रतिबंधात्मक समझी जा सकती हैं :-

(क) भावी लड़ाकू नियुक्ति सिद्धांतों पर प्रभाव

(ख) एयरो-मेडिकल मुद्दे

(ग) काकपिट इरगोनोमिक्स और एयरक्रू क्लादिंग

17.14 इस स्कीम का आरंभिक उद्देश्य इस प्रयोग के परिणामों के आधार पर उड़ानशाखा में महिलाओं की नियुक्ति योग्यता के लिए भारतीय वायु सेना की भावी लड़ाकू नियुक्ति सिद्धांतों और नीतियों की जांच को

सुविधाजनक बनाना था। इस योजना के कार्यान्वयन से महिलाएं अब, भारतीय वायुसेना की सभी शाखाओं और विधाओं में प्रवेश के लिए पात्र हैं, जो सशस्त्र सेनाओं में पहली बार हो रहा है।

भारतीय तटरक्षक

17.15 भारतीय तटरक्षक ने 1997 से जनरल ड्यूटि में स्थायी सहायक कमान्डेंट और एविएशन कैडर (पाइलेट) के रूप में महिला अधिकारियों को शामिल करना प्रारंभ किया गया है। अब तक कुल 130 महिला अधिकारियों को शामिल किया गया है जिनमें जनरल ड्यूटि और एविएशन कैडर में शॉर्ट सर्विस एपॉइंटिंस (एसएसए) की महिला अधिकार भी सम्मिलित है। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि आईसीजी में महिला अधिकारियों की संख्या कुल संख्या का लगभग 10% है।

17.16 सेना ने महिला अफसरों के कल्याण एवं सशक्तिकरण के लिए कई सक्रिय कदम उठाए गए हैं। उन्हें युद्धक भूमिदाओं में तैनात किया गया है जिसमें पायलट आबजर्वर्स और एविएशन सपोर्ट सेवाएं शामिल हैं। उन्हें समानरूप से अन्तरदायित्वपूर्ण कार्य में तटीय सुरक्षा तंत्र में तैनात किया गया है। पुरूष अफसरों के समान महिला अफसरों को भी दूरस्थ स्टेशनों में तैनात किया गया है। इसके अतिरिक्त, तटरक्षक स्टोर डिपुओं में समान नियुक्तियां भी कुछ विशेष महिला अफसरों को सौंपा गया है। इन सभी उपायों से कैरियर प्रोन्नति के लिए और सेवा में बेहतरी के लिए महिला अफसरों के समान अवसर प्राप्त हुए।

17.17 प्रधान मंत्री की महिलाओं के सशक्तिकरण की नीतियों के अनुरूप, भारतीय तटरक्षक ने अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संक्रियाओं के लिए महिला अफसरों को प्रतिनियुक्त करना आरंभ किया है। इस संबंध में, भारतीय तटरक्षक महिला अफसर (डिप्टी कमांडेंट) 16 से 21 अक्तूबर, 2016 तक मालदीवी ईईजेड की निगरानी करने के लिए माले, मालदीव में तैनात तटरक्षक ड्रोनियर विमानकर्मी दल की सदस्य थी।

भारतीय तटरक्षक के महिला अफसर महिलाओं के सशक्तिकरण के रूप में मालदीव में भारतीय तटरक्षक विमान के चालक दल का एक भाग

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

17.18 एक नियोजक के रूप में रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन एक स्वस्थ और सुरक्षित कार्य वातावरण सृजित करने के लिए प्रतिबद्ध है जिससे कि कर्मचारी प्रतिकूल, अशोभनीय और भेदभावपूर्ण व्यवहार से मुक्त होकर कार्य कर सकें ताकि वे बिना किसी पूर्वाग्रह, लिंग आधारित भेदभाव और यौन-उत्पीड़न के भय से रहित होकर कार्य करने में समर्थ हो सकें। यह सुनिश्चित किया जाता है कि महिला कर्मचारियों को उनके कौशल और ज्ञान में वृद्धि तथा उनकी सामर्थ्य को पूरा करने के समान अवसर प्रदान किए जाएं। इसके परिणामस्वरूप डीआरडीओ में अनेक महिला वैज्ञानिक शीर्ष पदों तक पहुंची हैं और उन्होंने संगठनात्मक उद्देश्यों को प्राप्त किया है।

17.19 प्रत्येक वर्ष रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन पूरे देश में राष्ट्रीय स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाता है। विशाखापटनम में एनएसटीएल द्वारा 'वैज्ञानिक महिलाएं और डीआरडीओ - अनुसंधान और प्रबंधन का नियोजन (स्वधर्म - 2016)' पर एक दिवसीय राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला का आयोजन किया गया था जिसमें पूरे देश से डीआरडीओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं से 250 से अधिक महिला वैज्ञानिकों, प्रौद्योगिकीविदों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया।

रक्षा उत्पादन विभाग

17.20 **आयुध निर्माणी बोर्ड (ओएफबी):** आयुध निर्माणी बोर्ड ने पहले ही कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (निवारण, निषेध और समाधान) अधिनियम, 2013 का कार्यान्वयन किया है। सभी आयुध निर्माणियां महिला कर्मचारियों के लिए उचित कार्यस्थल, पृथक शौचालय, विश्रामगृह, शिशु गृह आदि जैसी मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करते हैं।

17.21 **हिंदुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड (एचएएल):** 31 दिसम्बर, 2016 की स्थिति के अनुसार एचएएल में महिला कर्मचारियों की संख्या 2445 है। सभी महिला कर्मचारियों को उनके कैरियर में आगे बढ़ने के समय अवसर प्रदान किए जाते हैं। कंपनी की सभी महिला कर्मचारियों को सभी सांविधिक कल्याण सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। एचएएल सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाएं (डब्ल्युआईपीएस) मंच का एक सदस्य है। कंपनी विज्ञापन आदि के जरिए मंच को वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

17.22 **भारत इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड (बीईएल):** बीईएल में महत्वपूर्ण नेतृत्व पदों सहित 2100 महिला कर्मचारी हैं जो कारोबार की वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भर्ती, कैरियर उन्नयन, शिक्षण और विकास में निष्पक्ष अवसर प्रदान किए जाते हैं। कार्यालय में महिलओं के यौन, उत्पीड़न पर रोकथाम के लिए 'शिकायत समिति' गठित की गई है और बीईएल को एक सुरक्षित स्थान बनाने के लिए जागरुकता पैदा की गई है।

17.23 **गार्डन रीच शिप बिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड (जीआरएसई):**

- महिला प्रतिनिधित्व 4.75%
- महिला भर्ती 6.38%
- जीआरएसई डब्ल्यूआईपीएस चौप्टर स्थापित
- सामान्य ईमेल सृजित
- सीएसआर के अधीन परियोजनाएं
  - स्थानीय विद्यालयों में 21 बालिका शौचालय निर्माणाधीन
  - प्रशिक्षण उपस्कर और अवसंरचना के उन्नयन के लिए महिला आईटीआई कोलकाता को अंगीकार किया गया।
  - आईआईसीपी, तारातला में 3 कक्षाओं जिनमें 50% बालिकाएं थी, को अंगीकार किया गया।
  - 304 अपंग महिलाओं को सहायक उपकरण/साधन प्रदान किए गये हैं।
  - अल्पसंख्यक समुदाय को शामिल करते हुए कोलकाता, मेतियाबुर्ज क्षेत्र के 20 आंगनवाड़ी केंद्रों को अंगीकार किया गया।

17.24 **गोवा शिपयार्ड लिमिटेड (जीएलएल):** यौन उत्पीड़न की रोकथाम और शिकायतों के निवारण के लिए एक 'शिकायत समिति' का गठन किया गया है जिसमें 50 प्रतिशत से अधिक महिला प्रतिनिधि और एक स्वतंत्र स्थानीय एनजीओ प्रतिनिधि होता है।

17.25 **हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड (एचएसएल):** कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न निषेध संबंधी एक आंतरिक शिकायत समिति गठित की गई है। चार महिला अधिकारियों को मिलाकर एक 'जेन्डर बजटिंग प्रकोष्ठ' का गठन किया गया है जो सभी जेन्डर अनुक्रियाशील बजटिंग पहलों के लिए नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करेगा। महिला कर्मचारियों को उचित स्तर पर चयन समितियों और डीपीसी में सदस्यों के रूप में शामिल किया जाता है।

17.26 **माझगांव डाक लिमिटेड (एमडीएल):** वर्ष के दौरान एमडीएल ने महिला कर्मचारियों के सशक्तीकरण के निम्नलिखित उपाय किए हैं:-

(क) महिला कर्मचारियों को कार्यस्थल पर यौन-उत्पीड़न पर जागरुकता के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया; महिला कर्मचारियों के लिए कार्य जीवन संतुलन; कार्यस्थल पर तनाव प्रबंधन; आईआईएम इंदौर में तैयारशुदा एमडीपी कार्यक्रम; और महिला कर्मचारियों के लिए अग्निशमन, स्वास्थ्य और सुरक्षित कार्य जीवन संतुलन।

(ख) यौन उत्पीड़न की शिकायतों के निपटान और निवारण के लिए आंतरिक शिकायत समिति गठित की गई है।

17.27 **बीईएमएल लिमिटेड:** बीईएमएल महिला कर्मचारियों को चयन, भर्ती, पदोन्नतियों, कैरियर विकास और निर्णय लेने में समान अवसर प्रदान करता है, सभी प्रयोज्य सांविधिक उपबंधों का अनुपालन किया जा रहा है। कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न (निवारण, प्रतिबंध और प्रतितोष) अधिनियम, 2013 के अनुसार सभी परिसरों में उनके नियंत्रणाधीन कार्यालयों सहित आंतरिक शिकायत समितियां विद्यमान हैं। 31 दिसम्बर, 2016 की स्थिति के अनुसार बीईएमएल में अधिकारियों सहित महिला कर्मचारियों की संख्या 276 है।

17.28 **भारत डायनामिक्स लि. (बीडीएल):** 1 दिसम्बर, 2016 की स्थिति के अनुसार बीडीएल में 341 महिला कर्मचारी हैं। कंपनी ने अपने स्थायी आदेशों, सीडीए नियमों में संशोधन किया और ''कार्यस्थल में महिला कर्मचारियों के यौन उत्पीड़न का निषेध'' पर एक अध्याय शामिल किया गया। शिकायतों की जांच करने के लिए एक वरिष्ठ महिला अधिकारी की अध्यक्षता में 'शिकायत समिति' गठित की गई है। कार्यकारी और गैर-कार्यकारी महिला कर्मचारियों को श्रमिक संघों और अधिकारी एसोसिएनों में नामित किया जाता है। कंपनी डब्लूआईपीएस में भागीदारी के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराती है।

17.29 **मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानी):** मिधानी ने अपनी सभी महिला कर्मचारियों के कल्याण के लिए नियमों के अनुसार सभी सुविधाएं प्रदान की हैं। वर्तमान में कंपनी मे 72 महिला कर्मचारी हैं, जिनमें 26 कार्यकारी, 2 गैर यूनियनीकृत पर्यवेक्षक और 44 गैर-कर्मचारी शामिल हैं।

17.30 गुणता आश्वासन महानिदेशालय (डीजीक्यूए): महिला सशक्तिकरण और कल्याण के संबंध में भारत सरकार और अन्य सांविधिक प्राधिकारियों द्वारा समय-समय पर जारी दिशानिर्देशों और नीतियों के अनुसार सभी अवसरों और हितलाभों का कार्यान्वयन किया जा रहा है।

भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग

17.31 भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग, लगभग 30 लाख भूतपूर्व सैनिकों के पुनर्वास और कल्याण का निपटान करता है जिसमें सशस्त्र सेनाओं के पूर्व कार्मिकों की विधवाएं और उनके आश्रित सदस्य शामिल हैं। विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत लड़कियों और महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। केन्द्रीय सैनिक बोर्ड (केएसबी) भूतपूर्व सैनिकों की पुत्रियों के विवाह, विधवा पुनर्विवाह और विधवाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है। नियमों के अनुसार विधवाएं दोहरी पारिवारिक पेंशन प्राप्त करने हेतु भी पात्र हैं।

17.32 प्रधानमंत्री छात्रवृत्ति योजना (पीएमएसएस) के तहत उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति राशि प्रदान की जाती है। पीएमएसएस के तहत कुछ छात्रवृत्तियों की संख्या 4000 से बढ़ाकर 5500 कर दिया गया है जो लड़कों और लड़कियों में समान रूप से विभाजित की जाती है।

17.33 भूतपूर्व सैनिकों की विधवाएं पुनर्वास महानिदेशालय (डीजीआर) के तहत पुनर्वास प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु पात्र हैं। डीजीआर की विभिन्न रोजगार योजनाओं जैसे कोल टिप्पर योजना, ऑयल उत्पाद एजेंसी, अतिरेक वाहन, सफल बूथ इत्यादि मैं ईएसएम की विधवाओं को प्राथमिकता दी जाती है। युद्धक विधवाएं ईसीएचएस के अंतर्गत अंशदान के भुगतान में छूट प्राप्त है।

44

रक्षा मंत्रालय के विभागों के कार्यों की सूची

क. रक्षा विभाग

1 भारत और उसके प्रत्येक भाग की रक्षा करना, इसमें रक्षात्मक तैयारियां तथा ऐसे सभी काम आते हैं जो युद्ध के समय युद्ध को ठीक ढंग से चलाने तथा युद्ध के बाद सेना को कारगर ढंग से विसंघटित करने के लिए सहायक हैं।

2. संघ की सशस्त्र सेनाएं अर्थात सेना, नौसेना वायु सेना।

3. रक्षा मंत्रालय के समेकित मुख्यालय जिनमें सेना मुख्यालय, नौसेना मुख्यालय, वायुसेना मुख्यालय और रक्षा सेवा मुख्यालय भी शामिल हैं।

4. सेना , नौसेना और वायुसेना के रिजर्व।

5. प्रादेशिक सेना।

6. राष्ट्रीय कैडेट कोर।

7. सेना, नौसेना और वायुसेना से संबंधित कार्य।

8. रिमाउंट, वेटरनरी और फार्म संगठन।

9. कैंटीन भंडार विभाग।

10. रक्षा प्राक्कलनों में वेतनभोगी सिविलियन सेवाएं।

11. हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण और नेवीगेशनल चार्ट बनाना।

12. छावनियों की स्थापना, छावनी क्षेत्रों की हदबंदी और कुछ क्षेत्रों को उसकी सीमा के बाहर निकालना, ऐसे क्षेत्रों के स्थानीय स्वायत्त शासन, ऐसे क्षेत्रों में छावनी बोर्डों का गठन तथा प्राधिकारी और उनकी शक्तियां तथा उनमें आवास संबंधी विनियम (इसमें किराया नियंत्रण भी शामिल है)।

13. रक्षा प्रयोजनों के लिए भूमि और संपत्ति का अर्जन, अधिग्रहण, अभिरक्षा और उसकी वापसी। अनधिकृत अधिभोगियों को रक्षा भूमि और संपत्ति से बेदखल करना।

14. रक्षा लेखा विभाग।

15. खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग को जिस खाद्य सामग्री की खरीद का काम सौंप गया है उसे छोड़कर, सेना की जरूरतों की पूर्ति के लिए खाद्य सामग्री की खरीद और उसका निपटान।

16. तटरक्षक संगठन से संबंधित सभी मामले जिनमें निम्नांकित भी शामिल हैं –

(i) तेल बिखराव के प्रति समुद्री क्षेत्र की निगरानी।

(ii) बंदरगाहों के जल क्षेत्र और अपतटीय खोज और उत्पादन प्लेटफार्मों, तटीय रिफाइनरियों और अनुषंगी सुविधाओं जैसे कि सिंगल बॉय मूरिंग (एस बी एम), क्रूड तेल टर्मिनलों (सी ओ टी) और पाइपलाइनों के 500 मीटर के भीतर के सिवाए विभिन्न समुद्री क्षेत्रों में तेल बिखराव के प्रति उपाय।

(iii) तटीय तथा विभिन्न समुद्री क्षेत्रों के

समुद्री पर्यावरण में तेल प्रदूषण को दूर करने के लिए केन्द्रीय समन्वय एजेंसी।

(iv) तेल बिखराव आपदा हेतु राष्ट्रीय आकस्मिकता योजना का कार्यान्वयन, और

(v) तेल बिखराव रोकथाम और नियंत्रण कार्य हाथ में लेना, देश में जलपोतों और अपतटीय प्लेटफार्मों का निरीक्षण कार्य करना, इसमें वाणिज्य, पोत परिवहन अधिनियम, 1958 (1958 का 44) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के अनुसार बंदरगाहों की सीमाओं के भीतर का क्षेत्र शामिल नहीं है।

17. देश में गोताखोरी और संबंधित कार्यकलापों से संबंद्ध मामले।

18. केवल रक्षा सेवाओं के लिए अधिप्राप्ति।

19. सीमा सड़क विकास बोर्ड और सीमा सड़क संगठन से संबंधित सभी कार्य।

ख. रक्षा उत्पादन विभाग

1. आयुध निर्माणी बोर्ड और आयुध निर्माणियां

2. हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड

3. भारत इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड

4. माझगांव डाक लिमिटेड

5. गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड

6. गोवा शिपयार्ड लिमिटेड

7. भारत डायनामिक्स लिमिटेड

8. मिश्र घातु निगम लिमिटेड

9. गुणता आश्वासन महानिदेशालय और वैमानिक गुणता आश्वासन महानिदेशालय सहित रक्षा गुणता आश्वासन संगठन।

10. मानकीकरण निदेशालय सहित रक्षा उपस्करों और भंडारों का मानकीकरण।

11. भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड

12. हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड

13. वैमानिकी उद्योग का विकास और नागर उड्डयन मंत्रालय तथा अंतरिक्ष विभाग से संबंधित प्रयोक्ताओं को छोड़कर अन्य के बीच समन्वय।

14. सिविल उपयोग के लिए विमान और विमान के घटकों का उत्पादन ।

15 रक्षा उपस्करों का स्वदेशीकरण, विकास तथा उत्पादन और रक्षा उपस्करों के निर्माण में निजी क्षेत्र की भागीदारी।

16. रक्षा निर्यात और रक्षा उत्पादन में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग।

ग. रक्षा अनुसंधन तथा विकास विभाग

1. विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रही प्रगति का राष्ट्रीय सुरक्षा पर होने वाले प्रभाव का जायजा लेकर रक्षा मंत्री को उसकी जानकारी और सलाह देना।

2. हथियारों , हथियार-प्लेटफार्मों , सैन्य संक्रियाओं, निगरानी , सहायता और संभारिकी आदि से संबंधित सभी वैज्ञानिक पहलुओं के संबंध में और संघर्ष के सभी संभावित क्षेत्रों में रक्षा मंत्री , तीनों सेनाओं और अंतर सेवा संगठनों को सलाह देना।

3. ऐसी प्रौद्योगिकियों, जिनका भारत को निर्यात विदेशी सरकारों के राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी नियंत्रण का विषय है, के अर्जन के बारे में विदेशी सरकारों के साथ समझौता प्रलेखों से संबंध सभी

मामलों पर रक्षा मंत्रालय की नोडल समन्वय एजेंसी के रूप में विदेश मंत्रालय की सहमति लेकर कार्य करना।

4. राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित क्षेत्रों में वैज्ञानिक अनुसंधान तथा डिजाइन, विकास, परीक्षण और मूल्यांकन संबंधी कार्यक्रम तैयार करना और उसे कार्यान्वित करना।

5. विभाग की एजेंसियों, प्रयोगशालाओं, स्थापनाओं, रेजों, सुविधाओं, कार्यक्रमों और परियोजनाओं का निर्देशन और प्रशासन ।

6. वैमानिकी विकास एजेंसी।

7. सैन्य विमानों के डिजाइन, उड़ान योग्यता का प्रमाणन, उनके उपस्करों तथा भंडारों से संबंधित मामले।

8 संसाधन जुटाने के लिए विभाग के कार्यकलापों से तैयार प्रौद्योगिकियों के संरक्षण और हस्तांतरण से संबंधित सभी मामले।

9. रक्षा मंत्रालय द्वारा प्राप्त की जाने वाली सभी शस्त्र प्रणालियों और तत्संबंधी प्रौद्योगिकी के अधिग्रहण और मूल्यांकन के कार्यों में भाग लेना तथा वैज्ञानिक विश्लेषण में सहायता करना।

10. उत्पादन यूनिटों और उद्यमों द्वारा सशस्त्र सेनाओं के लिए उपस्कर और भंडारों के विनिर्माण या विनिर्माण के प्रस्तावों के लिए प्रौद्योगिकी के आयात के प्रौद्योगिकीय तथा बौद्धिक संपदा संबंधी सभी पहलुओं पर सलाह देना।

11. पेटेंट अधिनियम 1970 (1970 का 39) की धारा 35 के अंतर्गत प्राप्त मामलों पर कार्रवाई करना।

12. राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करने वाले विभिन्न पहलुओं पर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी अध्ययन और जनशक्ति को प्रशिक्षण संबंधी अध्ययन और जनशक्ति को प्रशिक्षण देने के लिए व्यक्तियों, संस्थानों तथा कार्पोरेट निकायों को वित्तीय तथा अन्य सामग्री संबंधी सहायता देना।

13 अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर विदेश मंत्रालय के परामर्श करके निम्नलिखित मामलों सहित राष्ट्रीय सुरक्षा में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की भूमिका से संबद्ध मामले :-

(i) अन्य देशों और अंत: सरकारी एजेंसियों के अनुसंधान संगठनों से संबंधित मामले विशेष रूप से जो अन्य कार्यों के साथ-साथ राष्ट्रीय सुरक्षा के वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकीय पहलुओं से संबंधित हैं।

(ii) इस विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत कार्यरत भारतीय वैज्ञानिकों के तहत कार्यरत भारतीय वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकी-विदों को प्रशिक्षण और विदेशी छात्रवृत्ति उपलब्ध कराने के लिए विदेश स्थित विश्वविद्यालयों , शैक्षिक और अनुसंधान-उन्मुख संस्थाओं के साथ व्यवस्था करना।

14. विभाग के बजट से निर्माण कार्य करना और भूमि खरीदना जो विभाग के बजट के नामे डाले जाते हैं।

15. विभाग के नियंत्रणाधीन कार्मिकों से संबंधित सभी मामले।

16. इस विभाग के बजट से सभी प्रकार के भंडारों, उपकरणों और सेवाओं का अर्जन।

17. विभाग से संबंधित वित्तीय मंजूरिया।

18. राष्ट्रीय सुरक्षा के वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय पहलुओं को प्रभावित करने वाले कार्यकलापों से

संबंधित भारत सरकार के किसी अन्य मंत्रालय, विभाग, एजेंसी के साथ समझौता अथवा व्यवस्था करके इस विभाग को सौंपे गए और इस विभाग द्वारा स्वीकार किए गए कोई भी अन्य कार्य।

घ. भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग

1. भूतपूर्व सैनिकों से संबंधित मामले, जिनमें पेंशनभोगी भी शामिल हैं।
2. भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना।
3. पुनर्वास महानिदेशालय तथा केन्द्रीय सैनिक बोर्ड से संबंधित मामले।
4. निम्नलिखित का प्रशासन :
   (क) सेना के वास्ते पेंशन विनियम, 1961 (भाग 1 और 2);
   (ख) वायुसेना के वास्ते पेंशन विनियम, 1961 (भाग 1 और 2);
   (ग) नौसेना पेंशन विनियम, 1964; और
   (घ) सशस्त्र सैन्य कार्मिकों को हताहत पेंशनरी अवार्डों के हकदारी विनियम, 1982

घ. रक्षा (वित्त) प्रभाग

1. सभी रक्षा मामलों की वित्त संबंधी जांच करना।
2. रक्षा मंत्रालय और सेना मुख्यालयों के विभिन्न अधिकारियों को वित्तीय सलाह देना।
3. रक्षा मंत्रालय के एकीकृत वित्त प्रभाग के रूप में कार्य करना।
4. व्यय संबंधी सभी योजनाओं/प्रस्तावों को तैयार करना और उनके कार्यान्वयन में सहायता करना।
5. रक्षा योजनाएं तैयार करने और उनके कार्यान्वयन में सहायता करना।
6. रक्षा सेनाओं के लिए रक्षा बजट और अन्य प्राक्कलन, रक्षा मंत्रालय के सिविल प्राक्कलन, रक्षा पेंशनरों के संबंध में प्राक्कलन तैयार करना और बजट के अनुरूप योजनाओं की प्रगति पर निगरानी रखना।
7. बजट बनाने के बाद यह सुनिश्चित करना कि व्यय न तो बहुत कम हो और न ही अनपेक्षित रूप से अधिक हो।
8. सशस्त्र सेना मुख्यालयों की शाखाओं के प्रमुखों को अपने वित्तीय दायित्व का निर्वाह करने के लिए सलाह देना।
9. रक्षा सेवाओं के लिए लेखा प्राधिकारी के रूप में कार्य करना।
10. रक्षा सेवाओं के लिए विनियोजन लेखा तैयार करना।
11. रक्षा लेखा महानियंत्रक के माध्यम से रक्षा व्यय के भुगतानों और आंतरिक लेखापरीक्षा के दायित्व का निर्वाह करना।

परिशिष्ट II

1 जनवरी, 2016 से आगे पदासीन मंत्री, सेनाध्यक्ष और सचिव

रक्षा मंत्री

श्री मनोहर पर्रीकर — 9 नवम्बर, 2014 से आगे

रक्षा राज्य मंत्री

राव इंद्रजीत सिंह — 27 मई, 2014 से 05 जुलाई, 2016

डॉ. सुभाष रामराव भामरे — 05 जुलाई, 2016 से आगे

रक्षा सचिव

श्री जी मोहन कुमार,
25 मई, 2015 से आगे

सचिव रक्षा उत्पादन

श्री अशोक कुमार गुप्ता
25 मई, 2015 से आगे

सचिव, भूतपूर्व सैनिक कल्याण

श्री प्रभु दयाल मीणा
1 नवम्बर, 2014 से आगे

सेनाध्यक्ष

जनरल दलबीर सिंह
पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, वीएसएम एडीसी
1 जनवरी, 2014 से 31 दिसम्बर, 2016 तक

जनरल बिपिन रावत
यूवाईएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम, एसएम, वीएसएम
01 जनवरी, 2017 से आगे

नौसेनाध्यक्ष

एडमिनरल आर के धवन
पीवीएसएम, एवीएसएम, वाईएमएम, एडीसी
17 अप्रैल, 2014 से 31 मई, 2016 तक

एडमिनरल सुनील लांबा
पीवीएसएम, एवीएसएम, एडीसी
01 जून, 2016 से आगे

वायुसेनाध्यक्ष

एयर चीफ मार्शल अरूप राहा,
पीवीएसएम, एवीएसएम, वीएम, एडीसी
01 जनवरी, 2014 से 31 दिसम्बर, 2016 तक

एयर चीफ मार्शल बी एस धनोआ,
पीवीएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम, वीएम, एडीसी
01 जनवरी, 2017 से आगे

सचिव (रक्षा अनुसंधान एवं विकास)

डॉ. एस क्रिस्तफर
29 मई, 2015 से आगे

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार

श्री जी.एस. रेड्डी
5 जून, 2015 से आगे

सचिव रक्षा वित्त

श्रीमती एस एस मोहंती
01 अक्तूबर, 2015 से 31 मई, 2016 तक

सुश्री शोभना जोशी
01 जून, 2016 से 31 अगस्त, 2016

श्री एस के कोहली
30 सितम्बर, 2016 से आगे

परिशिष्ट III

रक्षा मंत्रालय की महत्वपूर्ण लेखा परीक्षा टिप्पणियों का सारांश

2016 का रिपोर्ट नं. 17

1. स्वदेशी विमान वाहक पोत के निर्माण पर निष्पादन लेखापरीक्षा

स्वदेशी विमान वाहक के निर्माण हेतु परियोजना अनुमोदन मंत्रिमंडल सुरक्षा समिति द्वारा मई 1999 में किया गया था जिसे अक्तूबर में संशोधित 2014 तथा जुलाई में संशोधित किया गया। 37 टन के 500 में की गई थी। 1990 जहाज की आवश्यकता की पहचान। तथापि, प्रारंभिक स्टॉफ मांग, 14 वर्ष बाद में प्रख्यापित की गई थी। बाहय डिजाईन अनुबंधों को अंतिम रूप देने तथा प्रमुख प्री 2004 अगस्त लांच उपकरण की आपूर्ति में विलंब ने चरण 1 अनुबंध की समय-सीमा बढ़ा दी। चरण-1 में निर्माण तथा आउटफिटिंग हेतु प्रयुक्त किए जाने वाले प्रति टन मानव घंटे के गलत अनुमान के कारण शिपयार्ड को लगभग 476 करोड़ का अनुचित लाभ दिया गया। मंत्रालय 15 और पोत निर्माणी, पोत निर्माणी अनुबंधों में प्रगति रिपोर्टिंग के अनिवार्य प्रारूप को शामिल न करने के कारण जहाज के निर्माण की भौतिक स्थिति का आकलन करने में सक्षम नहीं हैं। वाहक के लिए चयनित विमान मिगइंजनों, के29, एयरफ्रेम तथा फ्लायवायर प्रणाली में दोषों के कारण परिचालनात्मक कमियों-बाय-के बीच निर्धारित विकल्प खण्ड विम 2016 तथा 2012 का सामना कर रहा है। की सुपुर्दगी, आइएसी के सुपुर्दगी कार्यक्रम से बहुत पहले है जो कि कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा में 2023 प्रस्तावित की गई थी। आईएनएस विक्रमादित्य के सेवा में होने तथा आईएनएस विराट के 2016-17 स्वदेशी विमान वाहक की सुपुर्द में बंद होने की संभावना के साथ समय सीमा में निरंतर तबदीली का नौसैनिक क्षमताओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

2. मल नावों की सुपुर्दगी न होना

समुद्री प्रदूषण से बचने के लिए भारतीय नौसेना द्वारा शुरू किया गया मल नावों का अधिग्रहण पोत प्रांगण का अपेक्षित क्षमता निर्धारण करने में भारतीय नौसेना की विफलता के कारण अभी फलीभूत होना है जिसके परिणामस्वरूप नावों के निर्माण पर 25. करोड़ खर्च करने के बाद भी समुद्री प्रदूषण 97 की रोक का मुख्य उद्देश्य पूरा नहीं हुआ।

3. एक विमान के लिए युद्ध सामग्री की अधिप्राप्ति पर - 9. करोड़ का 97 परिहार्य व्यय

इस तथ्य के बावजूद कि एक पहले अनुबंध के अन्तर्गत विकल्प खण्ड 27 मार्च 2010 तक वैध था, मंत्रालय ने फर्म को मूल्य वृद्धि देते हुए मिग 29 के/केयूबी हेतु युद्ध सामग्री की आपूर्ति के लिए फर्म के साथ 8 मार्च 2010 को एक ठेका किया जो केवल पहले अनुबंध के विकल्प खण्ड की वैधता की साप्ति पर ही भुगतान योग्य थी, जिसके परिणाम स्वरूप 9.97 करोड़ का परिहार्य व्यय हुआ।

4. मैग्नेट्रॉन्स की अधिप्राप्ति में अतिरिक्त व्यय

एकीकृत मुख्यालय ने (नौसेना) रक्षा मंत्रालय 8. करोड़ के अतिरिक्त व्यय पर एक विशेष फर्म से 68 किंग हेलिकॉप्टर रडार प्रणाली के-सी ट्रांसमीटर रिसीवर यूनिटों (टीआरयू) के नवीनीकरण के लिए मैग्नेट्रॉन की अधि प्राप्ति की। नवीनीकरण के बावजूद 17 टीआरयू की आवश्यकता के प्रति केवल पांच टीआरयू प्रयोज्य थे जिसके परिणामस्वरूप सी-किंग हेलिकॉप्टरों का केवल स्थज्ञनीय मिशनों हेतु सीमित उपयोग किया जा सका।

5. नौसैनिक जहाजों के लिए रेडियो प्रापक प्रकाशस्तंभों की परिहार्य अधिप्राप्ति

नौसेना के अन्तर्गत विभिन्न निदेशालयों/स्थापनाओं एवं जहाजों में समन्वय के अभाव में 6. करोड़ 19 मूल्य के पांच रेडियो प्रापक प्रकाशस्तंभों की परिहार्य अधि प्राप्ति हुई।

6. पम्पों की अधिप्राप्ति में निर्णीत हर्जाने न लगाना

रक्षा मंत्रालय ने पम्पों की सुपुर्दगी में निर्णीत हजाने के साथ विस्तार प्रदान किया। इसके अतिरिक्त (नौसेना) एकीकृत मुख्यालय रक्षा मंत्रालय, विलंबित आपूर्तियों के लिए फर्म पर 1. करोड़ की राशि 56 को उदग्रहित करने में विफल रहा। (एलडी) के निर्णीत हर्जाने

7. विमान उतरने के प्रभारों में संशोधन न करने के कारण 6. करोड़ की कम 18 वसूली

भारतीय नौसेना द्वारा भारतीय विमानपतन आर्थिक नियामक प्राधिकरण को पूंजीगत व्यय (एईआरए) से गोवा 2013 वमें जुलाई तथा अनुरक्षण प्रभारों के ब्यौरे समय पर प्रस्तुत न करने के कारण विमानपतन के प्रभारों की विमान उतरने के लिए संशोधित टैरिफ दरों से वंचित रहे जिसके परिणामस्वरूप 6.18 करोड़ की कम वसुली हुई।

8. तटरक्षक द्वारा एयर एनक्लेव की स्थापना हेतु भूमि के अधिग्रहण पर 5.73 करोड़ का निष्फल व्यय

नौसेना द्वारा 'अनापत्ति प्रमाणपत्र' की आवश्यकता वाली राजपत्र अधिसूचना का संज्ञान लेने में रक्षा मत्रालय/ तटरक्षक/रक्षा सम्पदा कार्यालय की विफलता के कारण विशाखापत्तनम पतन न्यास से 5.73 करोड़ की लागत से प्राप्त भूमि पर तटरक्षक के लिए एअर एनक्लेव नहीं बन सका। इसके परिणामस्वरूप निवेश के निष्फल रहने के साथ-साथ तटरक्षक की परिचालनात्मक तैयारी भी प्रभावित हुई।

वर्ष 2016 की लेखा परीक्षा प्रतिवेदन सं. 18

प्रतिवेदन के संबंध में

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का यह प्रतिवेदन वायु सेना, सैन्य अभियांत्रिक सेवाओं, हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के लेनदेन तथा रक्षा मंत्रालय के संबंधित अभिलेखों की नमूना लेखा परीक्षा से उद्भूत हुए मामलों से संबंधित है। लेखा परीक्षा द्वारा इंगित किए जाने के उपरांत रुपए 11.20 करोड़ की राशि वसूल की गई। लेखा परीक्षा प्रतिवेदन में उल्लिखित कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्षों का विवरण अनुवर्ती अनुच्छेदों में दिया गया है-

I. वायुसेना मुख्यालय संचार स्क्वाड्रन (ए एच सी एस) की लेखा परीक्षा

वर्तमान अति विशिष्ट व्यक्ति (वी आई पी) फ्लीट का प्रयोग कम था तथा 1998 के सी ए जी के लेखा परीक्षा प्रतिवेदन में जांचा गया इसका प्रयोग और कम हो गया था। सार्थक उड़ान प्रयास पायलटों के प्रशिक्षण में लगे थे यद्यपि एम्ब्रेअर वायुयान तथा एम आई-8 हैलिकॉप्टर के लिए प्रशिक्षण वायुसेना आदेशों में विहित प्रशिक्षण से कम था।

वाणिज्यिक वायु सेवाओं से जुड़े मार्गों पर अन्य अधिकृत व्यक्तियों (ओ ई पी) द्वारा वी आई पी फ्लीट के मात्र अपरिहार्य स्थिति में प्रयोग की पुष्टि हेतु नियंत्रण-तंत्र कार्य नहीं कर रहे थे। 32.25 करोड़ के राशिगत अवरोधन शुल्कों को उठाया/वसूला नहीं गया था।

वरिष्ठ सेवा अधिकारियों के लिए वी आई पी उड़ानों के प्राधिकरण के लिए कार्यप्रणाली का अनुपालन नहीं किया गया था। इसके अतिरिक्त, एक्शन टेकन नोट में एम ओ डी द्वारा दिए गए आश्वासन के बावजूद, विमान-वहन के प्रयोक्ताओं से क्षतिपूर्ति अनुबंधपत्र तथा ड्यूटी उड़ान प्रमाण पत्रों को प्राप्त नहीं किया जा रहा था।

II. सी-17 ग्लोबमास्टर III वायुयान का अधि ग्रहण एवं परिचालन

आई ए एफ ने विदेश सेना बिक्री (एफ एम एस) रूट के अन्तर्गत संयुक्त राज्य अमरीका की सरकार (यू एस जी) से यू एस डी 4,116 मिलियन (18645.85 करोड़) की कुल लागत पर दस सी-17 ग्लोबमास्टर प्प्प् वायुयान तथा सहायक उपकरण अधिप्राप्त किए (जून 2011)। विशिष्ट अवसंरचना को पूरा करने में विलम्ब हुआ था तथा पायलटों एवं लोडमास्टरों के प्रशिक्षण हेतु अपेक्षित सिम्युलेटरों के स्थापन में भी विलम्ब हुआ था। सी-17 वायुयान की परिचालनात्मक क्षमताएं आंशिक रूप से उपयुक्त खंड़जा वर्गीकरण संख्या (पी सी एन) सहित

रनवे की अनुपलब्धता तथा वायुसेना के विभिन्न बेसेज पर जमीनी उपकरण के अभाव के कारण निम्न प्रयोज्य थीं।

III. 14 अतिरिक्त डॉर्नियर वायुयान की अधि प्राप्ति

भारतीय वायुसेना (आई ए एफ) ने डॉर्नियर वायुयान की आवश्यकता के आंकलन के लिए संभावित प्रयोज्यता दर से कम पर किया जो 891 करोड़ लागत के 14 अतिरिक्त वायुयान की अधिप्राप्ति में फलीभूत हुआ।

IV. 'एक्स' सिस्टम का नवीनीकरण

आई ए एफ के समय पर अनुबंध निर्धारित करने में असफल रहने पर ओ ई एम द्वारा दर संशोधन के परिणामस्वरूप 19.31 करोड़ का अतिरिक्त व्यय हुआ। अप्रैल 2009 में 104 'एक्स' सिस्टम की कुल तकनीकी जीवनावधि (टी टी एल) समाप्त हो गई, किन्तु छः वर्षों से अधिक बीत जाने तथा 101.52 करोड़ का व्यय करने के उपरांत भी, 'एक्स' सिस्ट की क्षमता संदेहास्पद थी।

V. हैंगर्स के अधिक प्रावधान के परिणामस्वरूप 24.28 करोड़ का परिहार्य व्यय

आवश्यकता की असंगत प्रक्षिप्ति के परिणामस्वरू हैंगर्स का अधिक प्रावधान 24.28 करोड़ की परिहार्य लागत पर हुआ।

VI. निविदा प्रारूपित करने में अनियमितताओं के परिणामस्वरूप अधिक भुगतान

संविदा में मध्यम हल्के हेलिकॉप्टर (एम एल एच) के अधिष्ठापन हेतु अवसंरचना के निर्माण हेतु अनियमित मूल्य समायोजन खण्ड का अंतर्निवेश 4.27 करोड़ का अतिरिक्त भुगतान में फलीभूत हुआ, क्योंकि अनुबंधकर्ता सतत रूप से सीमेंट का अधिक प्रयोग करता पाया गया था।

VII. एक सभाभवन में 200 सीटों की क्षमता का अधिक प्रावधान

ग्वालियर में वायुसेना स्टेशन, महाराजपुर के लिए मार्च 2013 में संस्वीकृत सभाभवन में आवास के मानदण्ड ख्र रक्षा सेवाएं 2009 से विचलन के कारण 200 सीटों की क्षमता का अधिक प्रावधान किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप संस्वीकृति में 1.29 करोड़ का अतिरिक्त प्रावधान हुआ।

VIII. 1 करोड़ की लागत 10 पर स्थायी परिसम्पत्तियों का परिहार्य सृजन

वायुसेना स्टेशन (ए एफ एस) तंजावुर ने असाधारण परिस्थितियों के लिए अभिप्रेत प्रावधानों के प्रयोग द्वारा अस्थायी कर्मीदल रहित वायु वाहन (यू ए वी) स्क्वाड्रन के आवास हेतु जो ए एफ एस में मात्र दो माह के लिए संचालित रही, स्थायी अवसंरचना सृजित की।

IX. एक्सेस कंट्रोल सिस्टमों का अप्रभावकारी प्रयोग

13.65 करोड़ में 100 ए एफ इकाईयों के लिए अधि प्राप्त एक्सेस कंट्रोल सिस्टम (ए सी एस) में कमियां थीं। इसके अतिरिक्त, इसकी प्रयोज्यता की वृद्धि हेतु अतिरिक्त 7.38 करोड़ में पूरक सुविधाओं की अधिप्राप्ति के बावजूद, ए सी एस की प्रयोज्यता अप्रभावकारी थी।

X. परिवहन भत्ते का अनियमित भुगतान

यद्यपि ए एफ अधिकारी/वायु सैनिक पूरे कलैण्डर माह के लिए अपने नियमित ड्यूटी के स्थान से अनिस्थित थे, फिर भी उन्हें परिवहन भत्ते का भुगतान किया गया, जो रक्षा मंत्रालय तथा वायुसेना मुख्यालय के आदेशों के विरूद्ध था।

XI. विद्युत कर के भुगतान के कारण 131.45 लाख का परिहार्य व्यय

भारत के संविधान के अनुच्छेद 287 के तहत विद्युत कर की छूट का प्रावधान उपलब्ध होने के बावजूद, वायुसेना स्टेशन, नई दिल्ली ने अप्रैल 2009 से दिसंबर 2014 के दौरान नई दिल्ली नगर निगम को विद्युत कर के रूप में 131.45 लाख का भुगतान किया।

XII. एयरो इंजन की मरम्मत पर 80.07 लाख का परिहार्य व्यय

अप्राधिकृत वाहनान्तरण के विरूद्ध अनुबंधात्मक प्रावधानों के अनुपालन को सुनिश्चित करने में भारतीय वायुसेना (आई ए एफ) की निष्फलता के कारण मार्ग मे क्षतिग्रस्त एयरो इंजन की मरम्मत पर परिहार्य भुगतान हुआ।

2016 का रिपोर्ट नं. 19

महानिदेशक पुनर्वास के कार्य

महानिदेश पुनर्वास (डीजीआर) की स्थापना सेवानिवृत होने वाले/सेवानिवृत्त सेना कार्मिकों को प्रशिक्षण के माध्यम से अतिरिक्त कौशल से शक्ति संपन्न करने और आगे राजगार/स्वरोजगार योजनाओं के माध्यम से दूसरी जीविका चुनने में उनकी सहायता करने के उद्देश्य से की गई थी। तथापि हमने देखा कि डीजीआर भूतपूर्व सैनिकों के पुनर्नियोजन तथा पुर्नवास के इन लक्ष्यों को पूरा नहीं कर सका। गत पांच वर्षों के दौरान प्रशिक्षण पर 90.98 करोड़ का व्यय किए जाने के बाद भी यह सुनिश्चित करने कि प्रशिक्षित कार्मिक अतंत: पुनर्नियुक्त किए गए थे, के लिए कोई तंत्र स्थापित नहीं हुआ था। डीजीआर द्वारा चलाए जा रहे वर्तमान रोजगार एवं स्वरोजगार योजनाएं 10 वर्षों से अधिक पुरानी थीं और इसलिए कार्य संचालन के बदलते परिवेश में इन योजनाओं की प्रभावकारिता नष्ट हो चुकी थी। हमने पाया कि गत दस वर्षों में रोजगार अथवा स्वरोजगार की कोई नई योजनाएं आरंभ नहीं की गई थीं।

(पैराग्राफ 2.1)

भारतीय सेना में राशन का आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन अनुवर्ती लेखापरीक्षा

मंत्रालय ने मार्च 2013 में दी गई स्वीकृति तथा आश्वासन के बावजूद राशन के आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन के क्रियाकलापों से सीधे संबंधित पी ए सी की 12 में से केवल दो सिफारिशें कार्यान्वित की । परिणामत: राशन के संभरण/अधिप्राप्ति, जांच, वितरण से संबंधित क्रियाकलापों को नहीं सुधारा जा सका तथा सैनिकों का संतुष्टि स्तर, विशेषकर उत्तरी तथा पूर्वी कमान में, निम्न रहा ।

(पैराग्राफ 2.2)

इस्तेमाल के दौरान अनुकूल नहीं पाई गई पर्यावरणिक नियंत्रण इकाइयों की अधिप्राप्ति

इंजन के निरंतर अतितापन के बावजूद प्रयोक्ता परीक्षण दल ने इन्फैन्ट्री युद्ध वाहनों में फिट करने हेतु पर्यावरणि ाक नियंत्रण इकाईयों (ईसीयू) की अधिप्राप्ति की सिफारिश की। तदनुसार, 2009 और 2010 में 219.48 करोड़ मूल्य की 2,077 ईसीयू की अधिप्राप्ति की गई थी। तथापि आईसीवी इंजनों के अतितापन एवं उनकी कार्यकुशलता की कमी के कारण ईसीयू को फिट नहीं किया जा सका था। अत: ईसीयू किसी प्रभावी प्रयोग के बिना पड़े हुए थे।

(पैराग्राफ 2.3)

सेना के कनिष्ठ कमीशन अधिकारियों को दिए गए क्षेत्र भत्ते पर आयकर की गैर कटौती

भुगतान एवं लेखा अधिकारी (अन्य रैंको), आहरण और संवितरण अधिकारियों के रूप में, सेना में कनिष्ठ कमीशन अधिकारियों से तय छूट सीमा से अधिक के क्षेत्र भत्ते पर आयकर की वसूली नहीं कर पाए। इस तरह के गैर-वसूली वाले कर की राशि 2008-09 से 2012-13 तक की अवधि के दौरान 5.05 करोड़ तक पहुंच गई।

(पैराग्राफ 2.4)

परीक्षण प्रयोजन के लिए रेडियो सेटों की अनुचित खरीद

सेना मुख्यालय ने 2006 में क्षेत्र परीक्षणों के लिए आवश्यकता से अधिक 21.90 करोड़ मूल्य के 322 रेडियो सेटों की अधिप्राप्ति की। बख्तरबंद लड़ाकू वाहनों के लिए अधिप्राप्त इन सेटों का परीक्षणों के लिए प्रयोग नहीं किया गया था तथा इन्हें स्टार ट मार्क प्प विशिष्टताओं के संगत बनाने के लिए उन्नयन आवश्यक है, जिसके लिए 11.27 करोड़ के अतिरिक्त व्यय की आवश्यकता है।

(पैराग्राफ 3.1)

निजी संस्थान में सेवा कार्मिकों की अनियमित रूप से तैनाती

यद्यपि सेना आयुर्विज्ञान कॉलेज अपनी खुद की शिक्षण सुविधाएं स्थापित करने में प्रक्रियाधीन था। मंत्रालय नं पांच वर्षों की अवधि के लिए सरकारी अस्पतालों के आंशिक संकाय का उपयोग करने की संस्वीकृति दी। तथापि सेना मुख्यालय ने विभिन्न कोर/इकाइयों से लिपिकीय काम के लिए सेवा कार्मिकों को तैनात किया, जो मंत्रालय की संस्वीकृति में शामिल नहीं था।

(पैराग्राफ 3.2)

लेखा परीक्षा के कहने पर वसूलियां/ बचतें और लेखाओं में समायोजन

लेखा परीक्षा टिप्पणियों के आधार पर लेखापरीक्षित इकाईयों ने अधिदत्त वेतन और भत्तों, विविध शुल्कों, प्रशिक्षण शुल्कों की वसूली की थी, अनियमित संस्वीकृतियों को रद्द कर दिया और वार्षिक लेखाओं में संशोधन किया, जिससे 184.73 करोड़ का शुद्ध प्रभाव रहा।

(पैराग्राफ 3.4)

परिचालन सैन्य आवश्यकताओं के लिए संस्वीकृत कार्यों के पूरा होने में अत्यधिक विलंब

एक भूमिगत आपरेशन थियेटर (यूजीओटी) का निर्माण करने में सैन्य अभियंता सेवाओं द्वारा दस वर्षों का अत्यधिक विलंब हुआ, जिससे प्रचालन में लगे सैन्य दल को इस सुविधा से वंचित होना पड़ा। एक सैन्य अस्पताल (एमएच) की परिचालन सैन्य आवश्यकताओं के लिए यह कार्य संस्वीकृत किया गया था तथा 1.54 करोड़ की लागत पर निर्माण कार्य पूरा किया गया था, तब तक एमएच को एक अलग जगह पर ले जाया गया था। परिसंपतियां अब अप्रयुक्त पड़ी हुई हैं।

(पैराग्राफ 4.1)

पुलों के लिए अनुचित स्थलों का चुनाव

महानिदेशक सीमा सड़क मुख्यालय द्वारा अव-मृदा जांच (एसएमआई) कराए बिना ही स्थलों के चुनाव के परिणामस्वरूप, बाद में कार्य को समय पूर्व बंद करना पड़ा क्योंकि मृदा स्तर को पुलों के निर्माण हेतु अनुपयुक्त पाया गया था। एसएसआई के लिए दिए गए विशिष्ट अनुदेशों के गैर-अनुपालन के परिणामस्वरूप 2.53 करोड़ का व्यर्थ व्यय हुआ।

(पैराग्राफ 5.1)

उचित आवश्यकता के आकलन के बिना क्रेनों की खरीद

महानिदेशक सीमा सड़क ने दोलेटिस क्रेनों की मांग के प्रति सात क्रेनों की अधिप्राप्ति की, जिनकी क्षमता विभिन्न सीमा सड़क परियोजनाओं के लिए मांगी गई और अनुमोदित क्षमता से दोगुने से भी अधिक थी। विशाल आकार और अपर्याप्त आवश्यकता के अभाव के कारण 2012 में अधिप्राप्त की गई 6.81 करोड़ की लागत वाली क्रेनों का 86 प्रतिशत तक कम उपयोग हुआ।

(पैराग्राफ 5.2)

सामग्री की निष्फल खरीदारी

यह जानने के बावजूद कि सी-103 सामग्री स्क्रैमजेट इंजन द्वारा पैदा किए गए उच्च तापमान को सहन नहीं कर सकती, रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला ने स्क्रैमजेट परियोजना के विकास के लिए 4.83 करोड़ मूल्य की 1329 किलोग्राम सी-103 सामग्री की खरीदारी की, जो अवांछित था तथा अंततः व्यर्थ साबित हुआ।

(पैराग्राफ 6.2)

आयुध निर्माणी संगठन

विलंब से आदेश देने के कारण अतिरिक्त व्यय

निर्माणी एवं बोर्ड के विभिन्न स्तरों पर चूक के कारण आयात के आदेशों को अंतिम रूप देने में विलंब के फलस्वरूप गन कैरिज निर्माणी द्वारा उच्चतर दरों पर 25 पूर्ण रूप से निर्मित तोपों की अधिप्राप्ति पर 4.58 करोड़ का अतिरिक्त व्यय हुआ।

(पैराग्राफ 7.2)

उपस्करों की अधिप्राप्ति एवं स्थापना में विफलता के कारण बचत की हानि

कम्पयूटेड रेडियोग्राफी प्रणाली एवं (ii) एलआईएनएसी मशीन की समय पर अधिप्राप्ति एवं स्थापना में ओएफबीएल की विफलता के कारण मंहगी एक्सरे फिल्म तथा भरे हुए सेल के एक्सरे हेतु रसायन की खपत के परिणामस्वरूप 4.62 करोड़ की राशि बचाने का अवसर हाथ से निकल गया।

(पैराग्राफ 7.3)

एक मशीन के परिचालन में विफलता

मशीन के निष्पादन के बिना जांच किए हुए वाहन निर्माणी जबलपुर के द्ववारा 6.32 करोड़ मूल्य के एक मशीन की स्वीकृ एवं बाद में इसके रख-रखाव में लापरवाही के परिणामस्वरूप यह मशीन जून, 2012 के बाद खराब हो गई।

(पैराग्राफ 7.4)

अस्वीकृत फ्यूज को न बदलने के कारण सामान का अवरोधन

फ्यूज की आपूर्ति के अनुबंध की शर्तों को लागू कराने एवं प्रतिकार शर्तों का पालन करवाने में आयुध निर्माणी, चांदा की असफलता के परिणामस्वरूप 6.05 करोड़ के अस्वीकृत फ्यूज बेकार पड़े रहे।

(पैराग्राफ 7.6)

रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम

रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों (डीपीएसयू) द्वारा आपूर्ति में विलम्ब

सेना योजना (2007-12) के दौरान रक्षा पी एस यू द्वारा अति महत्वपूर्ण शस्त्रों व उपकरणों की आपूर्ति में अत्यधिक विलंब ने भारतीय सेना के आधुनिकीकरण तथा क्षमता संवर्धन योजना को बाधित किया। लेखपरीक्षा ने देखा कि 30,098 करोड़ मूल्य के अनुबंध, जो XI सेना योजना के दौरान मंत्रालय द्वारा किए गए डी पी एस यू अनुबंधों के कुल मूल्य का 63 प्रतिशत था, विलंबित हुए थे। विलंब के लिए मुख्य कारण विकास के लिए लिया गया अनुचित समय, पायलट नमूने के सफल मूल्यांकन में विलंब, विदेशी विक्रेताओं पर डी पी एस यू की भारी निर्भरता, संविदात्मक शर्तों में अस्पष्टता आदि। रक्षा तैयारी को प्रभावित करने के अलावा इस विलंब का डी पी एस यू को किए गए भुगतानों पर ब्याज की हानि के रूप में वित्तीय प्रभाव भी था। रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता का लक्ष्य भी प्राप्त नहीं किया गया था।

(पैराग्राफ 8.1)

सीमाशुल्क की छूट का लाभ न उठाने के कारण परिहार्य हानि - मिश्र धतु निगम लिमिटेड

मिश्र धातु निगम लिमिटेड द्वारा छूट का लाभ उठाने में विफलता और पहले अदायगी एवं बाद में प्रतिदाय का दावा करना, जो असफल रहा, के परिणामस्वरूप 1.30 करोड़ का परिहार्य अतिरिक्त व्यय हुआ।

(पैराग्राफ 8.2)

नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की रिपोर्टों/ लोक लेखा समिति की रिपोर्टों में की गई टिप्पणियों के संबंध में वर्ष 2016-17 के लिए की गई कार्रवाई संबंधी टिप्पणियां (ए टी एन एस) नोट की स्थिति

क्रम संख्या	वर्ष	पैराओं/लोक लेखा समिति की रिपोर्टों का व्योरा जिनपर 31.12.2016 को की गई कार्रवाई लंबित थी।			
		उन एटीएन की संख्या जो लेखा परीक्षा को एक बार भी नहीं भेजी गई	लेखा परीक्षा को भेजी गई ए टी एन की संख्या	उन ए टी एन एस की संख्या जो भेजी गई लेकिन अभ्युक्तियों के साथ वापस भेज दी गई और लेखा परीक्षा जिनकी मंत्रालय द्वारा पुन: प्रस्तुत करने की प्रतीक्षा कर रहा है	उन ए टी एन एस की संख्या जिनका लेखा परीक्षा द्वारा अंतिम रूप से पुनरीक्षण कर लिया गया है लेकिन जो मंत्रालय द्वारा लोक लेखा समिति को प्रस्तुत नहीं की गई हैं
1	1989			1	
2	1990	0		1	
3	1991	2			
4	1993	2			
5	1997				1
6	1998	1	1		
7	2001	2			
8	2003	1			1
9	2004	3			
10	2005	1	1		
11	2006	0		1	
12	2007	3			
13	2008	2			
14	2009	3			1
15	2010	0	1		
16	2011	11	1	5	2
17	2012	5	4		5
18	2013	9	5	5	3
19	2014	23	17	12	15
20	2015	23	13	18	3
21	2016	33	5	5	3
	कुल	124	48	48	34

प्रशिक्षण अभ्यास के दौरान एक्सप्लोसिव रिएक्टिव आर्मर प्लेटों के साथ टी-90 टैंक

पृष्ठ कवर - स्वदेशी निदेशित मिसाइल विध्वंसक - आईएनएस - चेन्नई

डिजाइन और मुद्रण विबा प्रेस प्रा. लि., नई दिल्ली